परम पूज्य आचार्य उमास्वामी महाराज द्वारा विरचित
महान ग्रन्थराज श्री तत्त्वार्थ सूत्र जी

अध्याय 1

# तत्त्व विज्ञान

अनूठा स्वाध्याय with QR Codes,Graphics & Visualization

प्रवचन कर्ता

अर्हं योग प्रणेता
मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

ज्ञान पब्लिशिंग हाउस

कृति : तत्त्व विज्ञान
आशीर्वाद : परम पूज्य सन्त शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
प्रवचन : अर्हं योग प्रणेता मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

संयोजन : टीम अर्हं

मूल्य : स्वाध्याय एवं भक्ति (पुनः प्रकाशन हेतु रुपए 300/- मात्र)

संस्करण : प्रथम, 2024

प्रकाशक : ज्ञान पब्लिशिंग हाउस
5, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली- 110002
001-47034999, 9811692060
E-mail- books@gyanbooks.com

आईएसबीएन : 978-93-6208-139-1

पुण्यार्जक : गुरुभक्त परिवार
माता श्रीमति शान्ति कासलीवाल जैन
श्री शरद राज कासलीवाल जैन, व्रती श्रीमति रजनी कासलीवाल जैन
श्री अंशुल-श्रीमति अभिलाषा (पुत्र - पुत्रवधू)
कु. रेनेसा, कु. उर्विका (पोतियाँ)
रोहिणी दिल्ली

प्राप्ति स्थान :
1. आर्हत विद्या प्रकाशन गोटेगाँव
मोबाइल: 9425837476
2. आचार्य अकलंक देव जैन विद्या शोधालय समिति
109, शिवाजी पार्क, देवास रोड, उज्जैन
मोबाइल: 9425092483

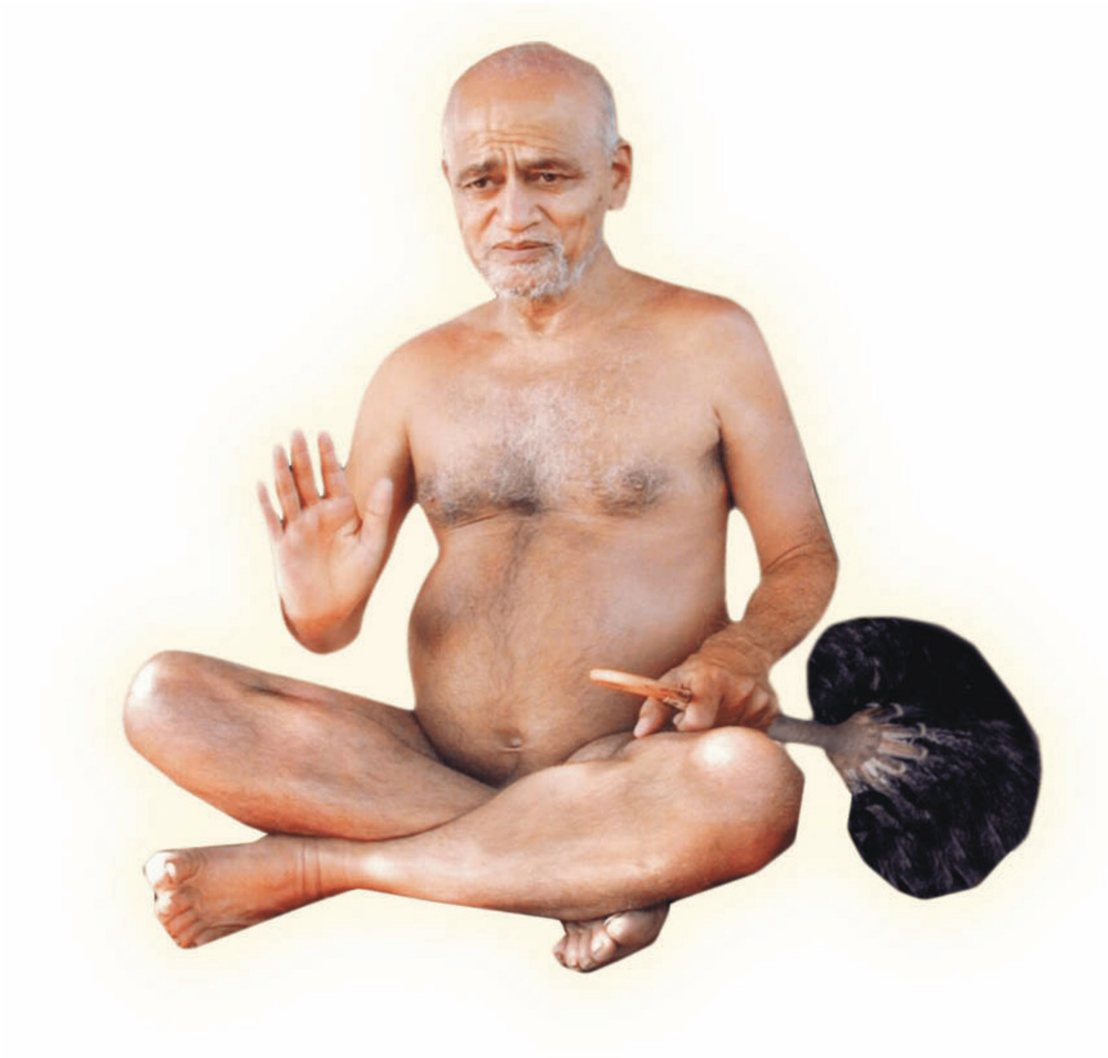

परम पूज्य सन्त शिरोमणि आचार्य
श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

अर्हं योग प्रणेता
मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

## अर्हं योग प्रणेता मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

| | |
|---|---|
| पूर्व नाम | : ब्र. सर्वेश जी |
| पिता-माता | :श्री वीरेन्द्रकुमार जी जैन, श्रीमती सरितादेवी जैन |
| जन्म | : 13.09.1975, भाद्रपद शुक्ल अष्टमी |
| जन्म स्थान | : भोगाँव, जिला-मैनपुरी (उ.प्र.) |
| शिक्षा | : बी. एस. सी. ( अंग्रेजी माध्यम) |
| भाई | : सचिन जैन |
| बहिन | : सपना जैन |
| गृहत्याग | : 09.08.1994 |
| क्षुल्लक दीक्षा | : 09.08.1997, नेमावर |
| ऐलक दीक्षा | : 05.01.1998, नेमावर |
| मुनि दीक्षा | : 11.02.1998, माघसुदी 15, बुधवार, मुक्तागिरिजी |
| दीक्षा गुरु | : संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज |

# प्रस्तावना

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के ज्ञानध्यानतपोरत शिष्य अर्हं योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी एवं आंग्ल भाषा के अद्वितीय, न्यायविद् दार्शनिक चिंतक विद्वान है। उनके द्वारा संस्कृत, प्राकृत, आंग्ल एवं हिंदी भाषा में मौलिक कृतियों का प्रणयन हुआ है, अनेक ग्रंथों पर टीकायें रची गयी हैं तथा अनेक रचनाओं का हिंदी पद्यानुवाद किया गया है। श्रमण संस्कृति के संरक्षक, ओजस्वी वाणी के धनी, सर्वस्नेहि, आदरणीय पूज्यपाद मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज एक दिव्य युग पुरुष हैं जिनके सौम्य-स्वभाव व सकारात्मक ऊर्जा से कोई भी व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

यह संकलन मुनि श्री 108 प्रणम्य सागर जी महाराज के मुजफ्फरनगर 2020 के चातुर्मास प्रवास के दौरान तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय एक पर दिए गए प्रवचनों का है। मुनि श्री बोलचाल की भाषा और तत्कालीन सामाजिक उदाहरण देते हुए कठिन विषय को भी सरल बना कर जीवन्त बना देते हैं। धर्म और दर्शन ही नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के आधार हैं। अतः मूल्यों की रक्षा के लिए युवा पीढ़ी को धर्म/दर्शन का अवबोध करना आवश्यक है।

जब हम किसी भी ग्रन्थ को खुद से पढ़ते हैं तो कम समझ आता है, प्रवचन सुनते हैं तो थोड़ा ज्यादा समझ आता है। लेकिन प्रवचन के साथ अगर visualization भी सामने हो तो ज्यादा अच्छे से समझ आता है। अक्सर युवा पीढ़ी या अन्य लोग स्वाध्याय करने से डरते हैं, उनको technology के through पढ़ने से यह समझ आएगा कि ये चीजें इतनी कठिन भी नहीं है और वास्तव में उपयोगी हैं। जिस imagination को लेकर मुनिश्री बोल रहे हैं, टीम अर्हं की अपने अथक परिश्रम से यह कोशिश रही है कि इस पुस्तक में इन तत्त्वार्थ सूत्रों की वाचना को इस तरह से प्रस्तुत करें कि आज की पीढ़ी modern science के साथ-साथ जैन science को अच्छे से समझ सके इसलिए इन सिद्धान्तों के सारांश को समझाने और उनकी तरफ आकर्षित करने के लिए इसको Graphics and pictures की मदद से visualize (दिखाने) करने की कोशिश की गयी है ताकि विषय सभी वर्गों को रुचिकर लगे और समझ में आ पाए / और सभी सुधीजन इसको पढ़ने के लिए प्रेरित हो ताकि यह ज्ञान लम्बे समय तक उनकी memory में set हो जाए। युवा पीढ़ी भी इसको समझ कर इसके सूत्रों के अर्थ को समझ कर आत्मसात कर सके। मोक्ष मार्ग को लेकर इस स्वाध्याय से youngsters के कई doubts clear होंगे। अपने ज्ञान को जांचने के लिए objective ओर subjective अभ्यास पत्र हैं जिसमें अध्याय से सम्बंधित प्रश्न हैं जो विषय को मजबूत बनाने में मदद करेंगे। सूत्रों के अर्थ को संक्षेप में समझने के लिए प्रत्येक प्रवचन के बाद summary भी दी हुई है।

आचार्य उमास्वामी द्वारा विरचित सृजित तत्त्वार्थ सूत्र जैनागम का प्रमुख ग्रन्थ है। कहीं-कहीं किसी विषय पर मतभेद होते हुए भी जैन धर्म के सभी वर्गों ने इसे सामान्य रूप में माना है। इसके कर्त्ता के विषय में मतभेद है। कोई आचार्य गृद्ध पिच्छाचार्य और कोई आचार्य उमा स्वामी को इसके कर्ता मानते हैं। लेकिन

गुरुवर मुनिश्री प्रणम्यसागरजी जी ने कई तथ्य देकर समझाया कि इतिहास से यह बात भी सिद्ध हुई है कि गृद्ध पिच्छाचार्य और उमा स्वामी महाराज एक ही हैं। कहते हैं कि किसी भव्यजीव के मोक्ष सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर में आचार्य श्री

ने इसकी रचना की थी। जिसे मुनि श्री ने एक कथानक दे कर समझाया है।

इस तत्त्वार्थ सूत्र में दस अध्याय हैं और सब मिला कर के लगभग 357 सूत्र हैं। तत्त्वार्थ सूत्र का दूसरा नाम मोक्ष शास्त्र भी है। मोक्ष मार्ग का वर्णन करते हुए अन्ततः मोक्ष की व्याख्या करना इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है इसलिए इसे मोक्ष शास्त्र भी कहा जाता है। इसमें जैन धर्म की मूलभूत मान्यताओं का सुन्दर वर्णन है। बहुत से धर्मानुरागी भाई-बहन इसका रोज ही पाठ करते हैं। दशलक्षण पर्व में तो दस दिन तक इसका विशेष रूप से पठन/पाठन होता है। इस ग्रन्थ में सात तत्त्व जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष का निरूपण किया गया है। इस प्रकार दस अध्यायों में सात तत्त्वों का सूत्रात्मक रूप में वर्णन है। यह संकलन तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम अध्याय पर है जिसमें कि 33 सूत्र हैं।

निसर्ग से सम्यग्दर्शन right belief होने के लिए जिन-बिम्ब के दर्शन और जाति स्मरण भी एक कारण है।

संसार में चार प्रकार के निक्षेप चलते हैं। मुनिश्री ने सभी निक्षेपों को जिस ढंग से समझाया है वह पढ़ने योग्य है और उसका picturization सभी वर्गों को आकर्षित करेगा। जैसे- स्थापना निक्षेप

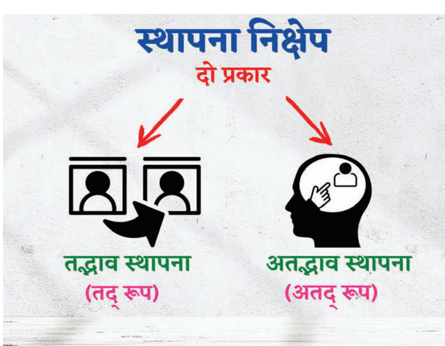

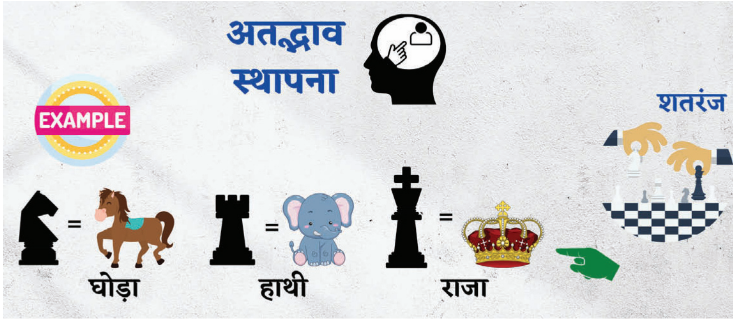


modern science के पास संख्यात को नापने की unit है, असंख्यात और अनन्त को नापने की unit अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान से शुरू होती है।

'तत्त्वार्थ सूत्र' जैन धर्म का encyclopedia है। मुनिश्री की अवधारणा है कि जैन धर्म को समझने के लिए तत्त्वार्थ सूत्र एक कुंजी है। सभी सुधी श्रावकों को इसका श्रद्धा भक्ति पूर्वक मनन, चिन्तन और अध्ययन करना चाहिए। जो

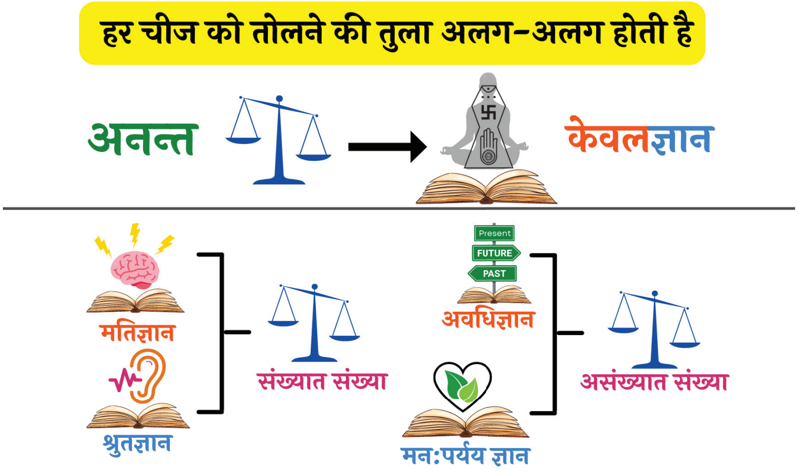


भव्य जीव इसका नित्य भाव पूर्वक पाठ करते हैं उन्हें एक उपवास का फल बताया है।
मुनि श्री के प्रवचनों का संपादन करते समय उनकी कथन शैली का यथासंभव ध्यान रखा गया है। इस पुस्तक के प्रकाशन में जो त्रुटियाँ हमारी दृष्टि में आने से रह गयी हैं उनकी ओर हमारा ध्यान आकर्षित करें। टीम अर्हं इस हेतु आपके सहयोग का स्वागत करती है।

पूज्य मुनिश्री प्रणम्य सागर जी के चरणों में सादर वन्दन, बारम्बार नमन्।

-टीम अर्हं

# अनुक्रमणिका


| | |
|---|---|
| प्रवचन 01 | 1 |
| सारांश | 23 |
| अभ्यास प्रश्न पत्र | 25 |
| प्रवचन 02 | 27 |
| सारांश | 48 |
| अभ्यास प्रश्न पत्र | 50 |
| प्रवचन 03 | 53 |
| सारांश | 76 |
| अभ्यास प्रश्न पत्र | 79 |
| प्रवचन 04 | 82 |
| सारांश | 103 |
| अभ्यास प्रश्न पत्र | 106 |
| प्रवचन 05 | 109 |
| सारांश | 130 |
| अभ्यास प्रश्न पत्र | 133 |
| प्रवचन 06 | 136 |
| सारांश | 163 |
| अभ्यास प्रश्न पत्र | 165 |

प्रवचन 07 ..........................................168
सारांश ..........................................190
अभ्यास प्रश्न पत्र ..........................................193

प्रवचन 08 ..........................................196
सारांश ..........................................217
अभ्यास प्रश्न पत्र ..........................................220

प्रवचन 09 ..........................................223
सारांश ..........................................246
अभ्यास प्रश्न पत्र ..........................................249

प्रवचन 10 ..........................................252
सारांश ..........................................279
अभ्यास प्रश्न पत्र ..........................................283

# प्रवचन: 1

**मोक्ष मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम्।**
**ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वन्दे तद्गुणलब्धये।।**

देवाधिदेव आदिम तीर्थंकर श्री ऋषभनाथ भगवान की जय। वर्तमान शासन नायक श्री वर्धमान महावीर भगवान की जय। परमपूज्य आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज की जय।

## तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थ के रचयिता कौन? आचार्य गृद्ध पिच्छ महाराज/उमास्वामी

आचार्य गृद्धपिच्छ महाराज द्वारा विरचित यह तत्त्वार्थ सूत्र है, जिसका कम से कम नाम तो सभी लोग सुने ही हुए हैं। जिस तत्त्वार्थ सूत्र में दस अध्याय हैं और सब मिला कर के लगभग 357 सूत्र हैं। पहला अध्याय जिसमें कि 33 सूत्र हैं। पहला अध्याय जहाँ से ज्ञान की शुरुआत होती है, मोक्षमार्ग की शुरुआत होती है। इस प्रथम अध्याय का प्रथम सूत्र है:-

**सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः ॥ 1.1॥**

**सम्यक् + दर्शन + ज्ञान + चारित्राणि + मोक्षमार्गः**

**लक्ष्य ज्ञात यदि हो गया, मारग को पहिचान।**
**सम्यक दृग ज्ञानाचरण, सच्चा मारग जान॥**

"सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र इन तीनों के मिलने से मोक्ष का मार्ग बनता है। इस मोक्ष मार्ग से इस तत्त्वार्थ सूत्र का प्रारम्भ होता है"। गृद्ध पिच्छाचार्य ने इस तत्त्वार्थ सूत्र का लेखन किया है, उनकी यह रचना मानी जाती है। कुछ लोगों का यह कहना है कि गृद्ध पिच्छाचार्य और उमा स्वामी आचार्य ये दोनों अलग-अलग हैं लेकिन इतिहास से यह बात भी सिद्ध हुई है कि गृद्ध पिच्छाचार्य और उमा स्वामी महाराज एक ही हैं। फिर भी यदि हम पूर्व में प्रमाणिक साहित्य है, उसमें यदि हम आचार्यों के द्वारा तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थ का जहाँ कहीं पर भी reference दिया जाता है, उसको यदि हम ध्यान में रखते हुए सुनते हैं, देखते हैं, तो विद्वानों ने इस बात को खोजा है कि तत्त्वार्थ सूत्र के कर्त्ता आचार्य गृद्धपिच्छ महाराज हैं।

SCAN TO WATCH

गृद्ध पिच्छ यह नाम ही पूर्व आचार्यों के द्वारा लिया गया है। श्री षट्खण्डागम ग्रन्थ की जो धवला टीका है उसमें आचार्य वीरसेन महाराज ने गृद्ध पिच्छ नाम ही लिया है।

यह धवला टीका के वाक्य हैं। वहाँ पर उन्होंने आचार्य उमा स्वामी यह नाम नहीं लिया। गृद्ध

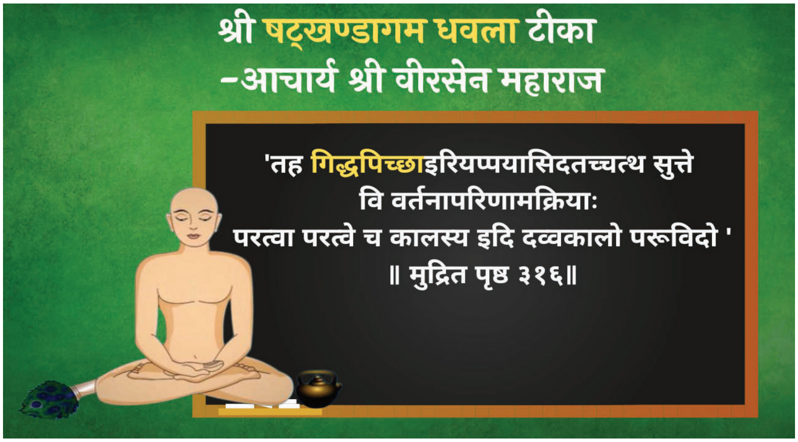


पिच्छाचार्य के द्वारा प्रकाशित, प्रतिपादित यह तत्त्वार्थ सूत्र है, ऐसा उन्होंने कहा। फिर एक आचार्य हुए, आचार्य विद्यानन्दी महाराज, जो ईसा की सातवीं शताब्दी के महाराज हैं, उन्होंने भी गृद्ध पिच्छाचार्य नाम लिखा। "तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक" ग्रन्थ है, जो इसी तत्त्वार्थ सूत्र की एक बहुत बड़ी टीका है। उन आचार्य विद्यानन्दी महाराज ने

**एतेन गृद्धपिच्छाचार्यपर्यन्तमुनिसूत्रेण व्यभिचारता निरस्ता**

इस तरह से करके जो वाक्य लिखा है, उससे भी यही सिद्ध हुआ कि उन्होंने भी तत्त्वार्थ सूत्र

के कर्ता का नाम गृद्धपिच्छ माना है और फिर एक वादिराज मुनि महाराज हुए, जिन्होंने भी बहुत से स्तोत्र लिखे हैं, न्याय ग्रन्थों की भी टीकाएँ की हैं और एक स्तोत्र जिनका प्रसिद्ध है- एकीभाव स्तोत्र, उन्होंने भी गृद्धपिच्छ यह नाम ही लिया है। ऐसे पूर्व आचार्यों के द्वारा लिए गए नामों को ध्यान में रखते हुए हमें भी यही समझना है कि तत्त्वार्थ सूत्र के कर्ता का नाम गृद्धपिच्छ मुख्यता से लिया जाता है। उमास्वामी यह नाम भी मिलता है और यह नाम गृद्धपिच्छ का एक विशेष्य के रूप में है। गृद्धपिच्छ उसका विशेषण बना दिया जाता है। लेकिन वस्तुत: अगर हम देखें तो जो पूर्व आचार्यों ने तत्त्वार्थ सूत्र कर्त्ता का नाम लिया है, वह गृद्धपिच्छ ही लिया है, यह हमें ध्यान में रखना है।

## आत्मा का हित किस में ? मोक्ष में !

इतनी बात को ध्यान में रखते हुए अब हम सूत्र पर कुछ विचार करेंगे। सूत्र में मोक्षमार्ग बताया जा रहा है। प्रथम अध्याय का सबसे पहला सूत्र है और उसमें सर्वप्रथम चर्चा की कि हम आपको मोक्ष का मार्ग बताने वाले हैं। इसकी उत्थानिका बनाते हुए आचार्य पूज्यपाद महाराज ने

सर्वार्थसिद्धि में ऐसी भूमिका बनाई है कि कोई भव्य जीव किसी रम्य स्थान पर जहाँ पर एक आचार्य परमेष्ठी विराजमान हैं, उनके पास पहुँचता है और पहुँच करके उनसे प्रश्न करता है-

- किन्नू खलु आत्मने हितम्? आत्मा का हित किसमें है? वे कहते हैं- मोक्ष। मोक्ष में ही आत्मा का हित है।
- फिर पूछा जाता है कि- मोक्षस्य मार्ग: किं? मोक्ष का मार्ग क्या है? वह बताना शुरू करते हैं कि यह 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्ग:'

इस तरह की एक भूमिका भी हमें पढ़ने को मिलती है, जो आचार्य सर्वार्थसिद्धि में, सर्वप्रथम ये जो टीका लिखी गई तत्त्वार्थ सूत्र की, उसमें लिखते हैं।

## तत्त्वार्थ सूत्र की रचना का कारण

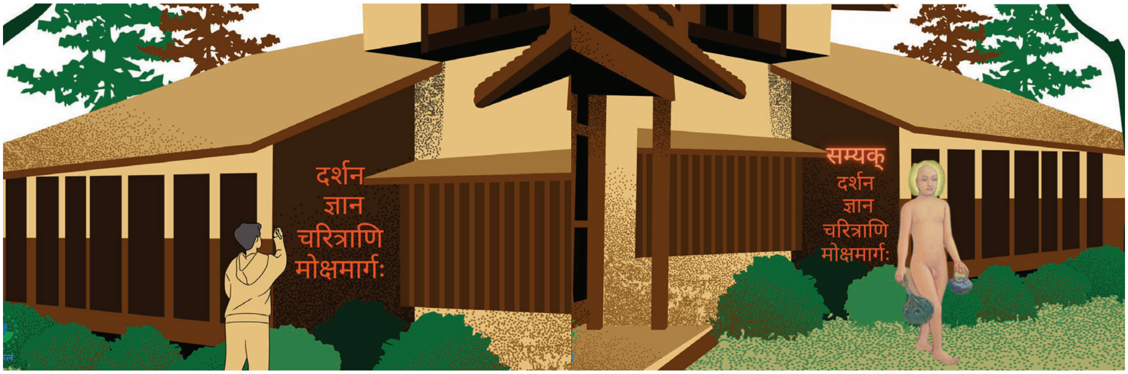

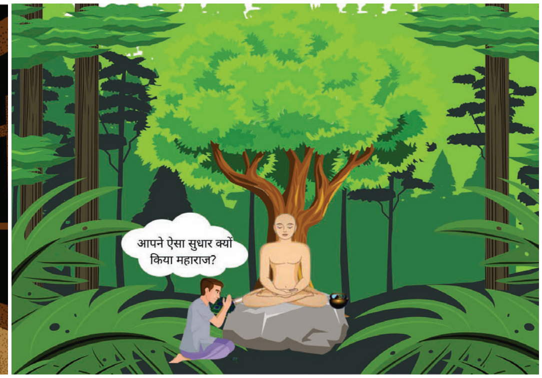


SCAN TO WATCH

एक और हमें कथानक सा मिलता है, जिसमें यह बताया जाता है कि कभी, कहीं पर, किसी स्थान पर एक श्रावक ने अपनी दीवार पर एक पंक्ति लिख रखी थी- दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्ग: एक मुनि महाराज आहार के लिए आए थे, उन्होंने उस पंक्ति को देखा। आहार के लिए आए थे। आहार के उपरान्त जब वे गए तो उन्होंने उस पंक्ति के आगे एक सम्यक् शब्द जोड़ दिया। उसके बाद में उस व्यक्ति ने घर पर आ करके देखा क्योंकि उस समय तो वह घर पर नहीं था तो उसने पूछा कि यह सम्यक् शब्द किसने जोड़ दिया? बताया गया कि मुनि महाराज का आज आहार था, वे पधारे थे। कहाँ गए? वापस जंगल में गए। वह उनको खोजता हुआ पहुँचा। उनके पास जाकर के प्रश्न किया कि प्रभु! आपने इसमें ऐसा सुधार क्यों कर दिया? उसका कारण फिर बताया गया और फिर उसके बाद में वह तत्त्वार्थ सूत्र की रचना उसके निमित्त से हुई। यह भी कहीं न कहीं इस कथानक से मिलता है, जो आचार्य पूज्यपाद महाराज ने लिखा है कि कोई भव्य जीव किसी रम्य स्थान पर गया और वहाँ पर आचार्य महाराज के निकट जा कर के पूछा। मतलब यह है कि कहीं न कहीं यह बात सिद्ध होती है कि किसी भव्य जीव के निमित्त से ही इस तत्त्वार्थ सूत्र की रचना हुई है और आगे के कुछ और विद्वानों ने उस भव्य जीव का नाम भी लिखा है। अब उसका उल्लेख उन्हें कहाँ से मिला? यह नहीं कहा जा सकता। कन्नड़ ग्रन्थों में बालचन्द्र जी की एक कन्नड़ी टीका है, उन्होंने जो लिखा है उसमें एक सिद्धैया नाम लिखा हुआ है। एक श्रुतसागर सूरी हुए हैं, उन्होंने एक भव्य जीव का नाम लिखा है, वह द्वैयाक करके लिखा है। सत्य क्या है? नहीं कहा जा सकता, लेकिन इतना जरूर है कि कहीं न कहीं इस घटना के पीछे, इस तत्त्वार्थ सूत्र की रचना के पीछे, किसी भव्य जीव की पृच्छना जुड़ी हुई है।

## विसंवाद मोक्ष में नहीं मोक्षमार्ग में है

लेकिन जब हम इससे भी आगे और थोड़ा सा देखते हैं, आचार्य अकलंक महाराज को जिन्होंने सर्वार्थसिद्धि के बाद में एक "तत्त्वार्थ राजवार्तिक" ग्रन्थ के नाम से रचना की, यही तत्त्वार्थ सूत्र की टीका तो उसमें वह ऐसा कुछ भी उल्लेख नहीं करते हैं। उसमें वे सीधा-सीधा शुरु करते हैं-

'श्रेयो मार्ग प्रतिपित्सा आत्मा द्रव्य प्रसिद्ध्यै'। जिसे आत्मा की सिद्धि हो गई है, जो आत्म द्रव्य को मानने लगा है, उसके लिए मोक्ष का मार्ग प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न हो जाती है और इसी हेतु वह मोक्ष मार्ग का यहाँ पर प्ररूपण किया जा रहा है। फिर पूछा जाता है कि मोक्षमार्ग का ही प्ररूपण क्यों कर रहे हो? पहले मोक्ष का प्ररूपण क्यों नहीं किया? पहले मोक्ष की व्याख्या कर देते, पहले मोक्ष दिखा देते, उसके बाद में मोक्ष का मार्ग बताते। वे कहते हैं कि पहले मोक्ष मार्ग इसलिए बताया जा रहा है कि दुनिया में जो अन्य और भी लोग हैं, अन्य और भी दर्शन हैं, अन्य और भी मत हैं, वे कभी भी मोक्ष के प्रति कोई विसंवाद नहीं रखते हैं। विसंवाद यदि उत्पन्न होता है, तो मोक्ष मार्ग के प्रति होता है। बहुत सारे दर्शन हैं, मत हैं, मोक्ष को सब मान रहे हैं। किसी न किसी रूप में मोक्ष को सबने माना है लेकिन जब मोक्षमार्ग की बात आती है, तो सबके रास्ते अलग-अलग हो जाते हैं, मार्ग में विसंवाद होता है। उदाहरण देते हैं- जैसे आपको यहाँ से पाटलिपुत्र जाना है, राजवार्तिक में पाटलिपुत्र का उदाहरण दिया। मान लो आपको यहाँ से पटना जाना है या दिल्ली जाना है। रास्ते उसके अलग-अलग हो सकते हैं, रास्ते के विषय में विवाद हो सकता है कि हमें इसी रास्ते से जाना है, हमें इस रास्ते से जाना है लेकिन मोक्ष तो सब मान रहे हैं कि हाँ! कोई न कोई इस आत्मा के लिए अगर सुख का स्थान है, तो वह मोक्ष है; यह सबने माना है। इसलिए मोक्ष की बात बाद में, पहले बात की जा रही है- मोक्षमार्ग की।

## जैन दर्शन और अन्य दर्शनों में मोक्ष-मार्ग में विसंवाद

इस अभिप्राय को ध्यान में रखते हुए जब आगे बढ़ते हैं तो पूछा गया कि मोक्षमार्ग के विषय में क्या विसंवाद है? सबके अभिप्राय अलग-अलग हैं। दुनिया में अनेक मत हैं; उनमें से कुछ मुख्य-मुख्य मतों के बारे में आपको भी बताया जा रहा है।

एक बौद्ध मत है- जो कहता है कि 'प्रदीप निर्वाण कल्पं आत्मनिर्वाणं'। दीपक के निर्वाण होने की तरह आत्मा का निर्वाण हो जाता है यानि दीपक जिस तरह से बुझ करके शान्त हो जाता है, ऐसे ही आत्मा का निर्वाण हो जाता है। तात्पर्य यह है कि दीपक बुझने के बाद में फिर कहीं नहीं जाता, न दिशा में, न विदिशा में, न ऊपर, न नीचे; वह वहीं के वहीं शान्त हो जाता है। ऐसे ही बौद्ध मानते हैं कि आत्मा वहीं की वहीं शान्त हो गई, उसके बाद में कुछ बचता नहीं है। आत्मा की सन्तति आगे नहीं रहती है, उसी का नाम निर्वाण है। यानि एक तरह से देखा जाए, तो आत्मा के अभाव का नाम मोक्ष माना जाता है। हमें सबके अभिप्रायों को समझना चाहिए तब आपको समझ में आएगा कि जैन दर्शन में अन्य दर्शनों की अपेक्षा से क्या विशेषता है? जो बड़े-बड़े मत हैं, जो आज भी प्रचलित हैं, उनमें किस तरह से मोक्ष की अवधारणा है? और किस तरह से वह मोक्ष मानते हैं? अगर हम उसको समझेंगे तो हमें पता पड़ेगा कि ये सिर्फ कल्पनाएँ हैं, वास्तविकता से परे हैं। आत्मा का एक तरह से शान्त हो जाना, आत्मा की सन्तति कुछ

SCAN TO WATCH

होना ही नहीं, आत्मा का कोई उस समय पर फिर अस्तित्व बचना ही नहीं; जैसे- दीपक बुझ गया अब कुछ नहीं बचा, उसी तरीके से आत्मा का हो जाने का नाम मोक्ष है। आपके दिमाग में आ रहा है बौद्ध मत सही है कि नहीं? कोई तर्क-वितर्क करने की जरूरत है? अगर आपके दिमाग खुले हुए होंगे तो थोड़ा सा अपने आप ही आपको लगने लगेगा कि यह कल्पना ही असत् है। असत् का मतलब बात तो कही गई लेकिन बात में कुछ दम नहीं है। ऐसा अगर मोक्ष होगा तो उस मोक्ष में भला क्या मिलेगा? जहाँ हम इतने हाथ-पैर पटक रहे हैं मोक्ष जाने के लिए और मोक्ष जाने के बावजूद भी उस आत्मा की भी कोई सन्तति नहीं रही, उसकी कोई भी स्थिति नहीं रही तो ऐसे मोक्ष से भला क्या होने वाला है? यह बौद्ध मत है।

एक सांख्य मत है- जो बहुत कुछ आज एक तरीके से देखा जाए हिन्दू मत है, यह सांख्य मत ही कहलाता है और हिन्दू मत में कई सारी शाखाएँ हैं- सांख्य है, वैषेशिक है, मीमांसा है, योग है और इन सब के भी अपनी अलग-अलग अवधारणाएँ हैं। हिन्दू भी एक मत नहीं है। अनेक-अनेक तरह के हिन्दू शाखाओं में कई तरीके की branches हैं, उनमें एक सांख्य मत माना जाता है और वह कहता है कि आत्मा का भी निर्वाण होता है और वह निर्वाण किस तरह से होता है?

SCAN TO WATCH

ऐसे मान कर चलो जैसे आपको स्वप्न आते हैं, तो स्वप्न में आप के अन्दर किसी भी प्रकार का कोई विवेक नहीं रहता है। इसी तरीके से निर्वाण में जो चेतना है, उसकी कोई अभिव्यक्ति नहीं होती है कि मैं क्या हूँ? क्या नहीं हूँ? कोई अभिव्यक्ति नहीं होती है। मतलब कि वहाँ पर आपको, उस चेतना को उस मोक्ष में किसी भी तरह कोई ज्ञेय का ज्ञान नहीं होगा, किसी भी पदार्थ का ज्ञान नहीं होगा। जब आपको मोक्ष होगा तो वहाँ पर अनभिव्यक्त चेतना होगी।

योग मत है अब एक योग दर्शन है जो कहता है- आत्मा कैसी है? चैतन्य स्वरूप है। सांख्य भी कहता है- आत्मा चैतन्य रूप है। लेकिन चेतना कैसी है? वह चेतना को चेतना तो मानते हैं

| विभिन्न मत | मोक्ष स्वरुप |
|---|---|
| साँख्य मत | 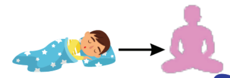 स्वप्न के समान ज्ञान रहित अवस्था |
| योग दर्शन | 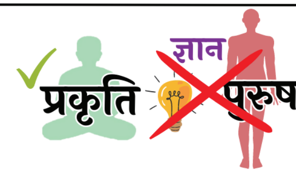  |
| वैशेषिक मत | आत्मा के नौ विशेष गुणों का अभाव होना |

लेकिन चेतना में ज्ञान है, ऐसा नहीं मानते हैं। ज्ञान तो उस चेतना में कहीं दूसरी जगह से आकर के चिपक जाता है। जिसे कहा जाता है एक पुरुष और एक प्रकृति, इन दोनों के संयोग से उस चेतना में ज्ञान की प्राप्ति होती है। जब मोक्ष होगा तो ज्ञान नहीं रहेगा। किसी भी प्रकार के ज्ञेय; ज्ञेय मतलब जो जानने योग्य पदार्थ हैं, मोक्ष में उन पदार्थों का आपकी चेतना में किसी भी तरीके का ज्ञान नहीं रहेगा।

ऐसा मोक्ष पसन्द है आपको? ज्यादा न्याय ग्रन्थ पढ़ कर और बहुत सारा दर्शन शास्त्र पढ़ कर भी, तर्क-वितर्क करके भी, इन मतों का खण्डन कर के क्या मिलेगा? अगर हम थोड़ा सा अपने दिमाग से यह सोचने लग जाएँ कि हमें कौन सा मोक्ष पसन्द है, तो मैं आपको दो-चार तरीके की मोक्ष की दुकानें दिखा रहा हूँ। मतलब दुकान में दो-चार तरीके के माल दिखा रहा हूँ और जैसा आपको पसन्द आया है, उस दुकान से आप ले लेना, उस दुकान पर से उस माल को ले लेना। अतः एक सांख्यों का मोक्ष है- जिसमें जैसे हम स्वप्नविद में बिल्कुल विवेक से रहित होते हैं, निद्रा में हमारी चेतना की कोई अभिव्यक्ति नहीं होती है, उसी तरीके से मोक्ष में बिल्कुल ज्ञान से रहित हो जाते हैं, वे ऐसा मानते हैं। अगर आप भी ऐसा ही मोक्ष चाह रहे हो, तो फिर आप जैन धर्म छोड़कर के सांख्य मत को अपना लेना, जैसा आपको मोक्ष अच्छा लगे। माल क्या-क्या है दुनिया में? सब आपको दिखाया जा रहा है। एक और मत है जिसका नाम है- वैशेषिक दर्शन। कौन सा दर्शन है? यह भी एक मत है।

एक वैशेषिक दर्शन है- आत्मा के नौ विशेष गुण होते हैं। कितने? नौ और उन विशेष आत्मा के गुणों का विच्छेद हो जाता है, अभाव हो जाता है, तो उसका नाम है- मोक्ष। बुद्धि, सुख-दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार ये आत्मा के नौ गुण हैं। जब इन आत्मा के गुणों का

आत्मा से अभाव हो जाएगा तो मोक्ष हो जाएगा मतलब आत्मा में बुद्धि नहीं रहेगी। वह भी यह मानता है कि बुद्धि आत्मा में अलग से आई है, बुद्धि आत्मा का स्वभाव नहीं है, सुख भी नहीं है आत्मा में, कुछ भी नहीं है आत्मा में और जो आत्मा के विशेष गुण हैं उनका अभाव होना है मतलब विशेष गुणों का अभाव होने के बाद में जो आत्मा बचेगी, उसका नाम मोक्ष है।

आप सोचे, विचार करे कि कोई भी वस्तु जो होती है अगर उसके हम विशेष गुणों का अभाव कर देंगे तो वस्तु ही नहीं बचती है क्योंकि कोई भी पदार्थ में विशेष भी होगा तो सामान्य होगा; विशेष कभी भी सामान्य के बिना नहीं होता और सामान्य कभी भी विशेष की बिना रह नहीं सकता। विशेषता से रहित कोई भी वस्तु सामान्य रूप में भी रह नहीं सकती है। कुल मिला कर के हमें तो ऐसा लगता है जितने भी लोगों ने मोक्ष माना है सबने मोक्ष में ज्ञान नहीं माना है। ज्ञेय का ज्ञान आत्मा में और ज्यादा हो जाता है, ऐसा नहीं माना है और सबने जो भी मोक्ष माना है उसमें एक ऐसी अवस्था मान ली है कि जिसमें हमें कुछ आत्मा की अभिव्यक्ति होती ही नहीं है। इस अवस्था का नाम मोक्ष कहा जा रहा है। लोग बुद्धि से रहित, ज्ञेयों के आकार के ज्ञान से रहित, शून्य अ अवस्था का नाम मोक्ष मानते हैं।

## जैन दर्शन में मोक्ष

SCAN TO WATCH

लेकिन आप के यहाँ मोक्ष कैसा है? जैनों के यहाँ मोक्ष कैसा है? बहुत ही विशिष्ट है! लड्डु सरीखा मीठा है। जब किसी का मोक्ष हो जाता है तभी तो लड्डु चढ़ाते हैं। भरा हुआ है- लड्डु की तरह, आत्मा के गुणों से भरा हुआ है, ज्ञान से भरा हुआ है। मतलब आत्मा का मोक्ष होने पर ज्ञान तो और कई गुणा बढ़ जाता है और यह जो हमारा सामान्य ज्ञान है इससे भी विशिष्ट ज्ञान हो जाता है और उस ज्ञान में सारा लोक झलकता है, अलोक झलकता है। ऐसा विशिष्ट ज्ञान उस आत्मा के अन्दर आता है, उसका नाम मोक्ष है। सुन रहे हो? सुन भी लो और सुना भी देना दूसरों को, जो दुनिया में अपने-अपने तरीके का मोक्ष माने बैठे हैं। उनसे कह देना कि तुम्हें कौन सा मोक्ष अच्छा लग

रहा है? इस तरह की जानकारी भी होना जरूरी है शायद किसी का मन बन जाए। किसी बच्चे को भी यह बात अच्छी लग सकती है, कोई भी पढ़े-लिखे व्यक्ति को यह बात अच्छी लग सकती है कि मोक्ष में वास्तव में क्या होना चाहिए?

- न मोक्ष में ज्ञान का अभाव होता है
- न मोक्ष में अस्तित्व का अभाव होता है
- न मोक्ष में सुख का अभाव होता है
- बल्कि ये चीजें तो और ज्यादा अभिव्यक्त होती हैं
- ज्ञान केवल ज्ञान बन जाता है
- सुख अनन्त सुख के रूप में होता है

## हम मोक्ष क्यों जाना चाहते हैं?

अतः मोक्ष में जहाँ पर आत्मा का अस्तित्व जो इस रूप में हो ऐसे मोक्ष की यदि इच्छा हो, ऐसे मोक्ष के अनन्त सुख की इच्छा हो, मोक्ष में मिलने वाला जो सुख है वह बिल्कुल अनाकुल सुख है, निराकुल सुख है, ऐसे निराकुल सुख की इच्छा हो तब तो कोई मोक्षमार्ग बताया जाए। नहीं तो पता पड़ा पूरी history तो बता दी, पूरी mapping तो समझा दी, जाना कहीं से कहीं तक नहीं है, इच्छा कुछ भी नहीं है। इसलिए यह बताया जा रहा है कि मोक्ष में क्या है आखिर? क्यों हम मोक्ष जाना चाहते हैं? सबसे पहली जो चीज है वह यह है कि हमें पहले पता हो कि सुख वास्तव में है कहाँ? क्या हम सुख के लिए मोक्ष प्राप्त करते हैं? आपके मन में भाव आएगा, सुख मिलेगा? हाँ! सुख मिलेगा, कैसा मिलेगा? बहुत अद्भुत मिलेगा। कैसा अद्भुत? जो यहाँ पर आपको अपने मन से, अपनी इन्द्रियों से बाहर इन्द्रियों के विषयों से जो नहीं मिल रहा है, उससे कुछ अद्वितीय तरीके का, अद्भुत तरीके का सुख है वह। कैसे पता पड़ेगा कि वह अद्भुत है?

## हर जीव क्या चाहता है?

SCAN TO WATCH

यह सोचने की कोशिश करो कि आखिर आदमी यहाँ पर वस्तुतः देखा जाए तो क्या चाहता है? ज्ञान चाहते हो। क्या चाहते हो बताओ? ज्ञान चाहते हो। पक्का! ज्ञान ही चाहते हो। अगर मान लो मैंने तुमको ज्ञानी बना दिया और तुम्हारा शरीर रोगी बना दिया फिर क्या करोगे? वैसे मैं कोई हूँ नहीं बनाने वाला। तुम कह रहे हो न! ज्ञान ही चाहता हूँ, फिर क्या करोगे? फिर कोई दूसरी चीज नहीं माँगोगे? चिल्लाओगे नहीं? क्या चाहते हो? दुनिया में हर आदमी हर जीव क्या चाहता है? जीव की इच्छा शक्ति कहाँ जाती है? जीव क्या बार-बार प्राप्त करने की इच्छा करता है? अगर आप

बारीकी से विचार करेंगे तो आपको पता पड़ेगा कि जीव न तो ज्ञान चाहता है, न कोई भोग चाहता है, न कोई इच्छाओं की पूर्ति चाहता है, जीव कुल मिलाकर के सुख चाहता है और सुख भी कैसा चाहता है? दुःख न हो उसमें। जीव की परिभाषा यही है, संसारी जीव की परिभाषा है यह। क्या चाहते हो? दुनिया में हर आदमी हर जीव क्या चाहता है? जीव की इच्छा शक्ति कहाँ जाती है? जीव क्या बार-बार प्राप्त करने की इच्छा करता है? अगर आप बारीकी से विचार करेंगे तो आपको पता पड़ेगा कि जीव न तो ज्ञान चाहता है, न कोई भोग चाहता है, न कोई इच्छाओं की पूर्ति चाहता है, जीव कुल मिलाकर के सुख चाहता है और सुख भी कैसा चाहता है? दुःख न हो उसमें। जीव की परिभाषा यही है, संसारी जीव की यह परिभाषा है।

'दुःखात् विभेसति सुखम् अभिवांछति'- जो दुःख से डरता है और सुख की इच्छा करता है, वही

## 'दुःखात् विभेसति सुखम् अभिवांछति'

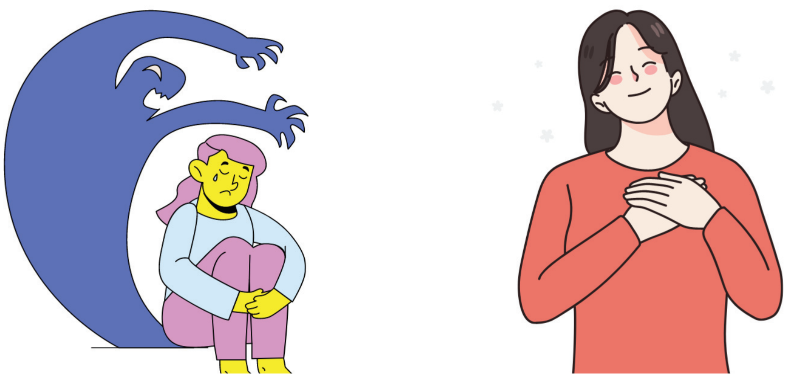

जीव है और जीव का यही एक परिणाम होता है हर जीव, हर प्राणी सुख चाहता है। कैसे भी मिले, सुख मिले। आप कह रहे हो कि हम ज्ञान चाहते हैं। जब तक ज्ञान मिलेगा आप ज्ञान लेते रहोगे। मैं आपको शाम तक वैसे ही सुनाता रहूँ बिठा करके, बैठे रहोगे? ज्ञान मिल रहा है न! ज्ञान चाह रहे हो और शाम तक भी न छोड़ा मैंने तो? कुछ नहीं चाहोगे फिर? न सोना चाहोगे, न उठना चाहोगे, न कुछ खाना चाहोगे, कुछ नहीं चाहोगे, ज्ञान चाहिए। बोलने से पहले सोचा करो, क्या चाह रहे हैं? ज्ञान भी तब तक जब तक कि उस ज्ञान से हमें सुख मिल रहा है या ज्ञान से हमें कोई सुख की इच्छा पैदा की जा रही हो तब तक वह ज्ञान अच्छा है लेकिन जैसे ही हमारे बैठने, उठने, खाने, पीने, सोने इन सब क्रियाओं में हमें उनकी याद आएगी तो हमारा सब ज्ञान-ध्यान अलग धरा रह जाएगा। इसलिए ज्ञान की भी कोई इच्छा नहीं करता है। ज्ञान की इच्छा करने का मतलब है हमेशा जाग्रत रहना। क्योंकि ज्ञान कब मिलेगा? जब आप जाग्रत रहोगे, जागते रहोगे। रात भर जागते रहोगे? एक रात जाग लोगे, दूसरी रात भी जागते रहोगे? सोओगे नहीं? सोने का मतलब क्या है? आप जानते हैं कि सोने में हमारा ज्ञान काम करता है।

कुछ नहीं! बिल्कुल अचेतन से हो जाते हैं, जड़वत पड़े रह जाते हैं। लेकिन फिर भी हम जान-बूझ कर के सोने की तैयारी करते हैं और सोते हैं। फिर ज्ञान की इच्छा कहाँ हुई? अगर केवल ज्ञान ही चाहिए तो ज्ञान तो जब तक आप जाग्रत रहोगे, तभी तक मिलेगा लेकिन आप जानबूझ कर के सोते भी हो, खाते भी हो, ज्ञान से अलग हट कर के भी शून्य में कहीं एकान्त में घूमने के लिए भी जाते हो और सब बातें भूलने के लिए theatre में भी चले जाते हो। अगर ज्ञान चाहिए होता, तो ये सब क्यों करते आप?

## आदमी संसारिक सुख किसी भी कीमत पर छोड़ना नहीं चाहता

इसलिए आदमी को ज्ञान भी नहीं चाहिए। चाहिए क्या? सुख चाहिए। जैसे मिले तैसे, खाने से मिले, सो कर के मिले, मर करके भी मिले तो। क्या चाहिए? सुख चाहिए। तभी तो आदमी suicide करता है, दुःख सहा नहीं जाता उससे। तभी तो वह दुःख को नष्ट करने के लिए कि भाई! अब यह दुःख हमसे सहन नहीं हो रहा है, अब यह दुःख चला जाए, चाहे भले ही यह संसार चला जाए, पर्याय चली जाए लेकिन वह मरता है। मरना किसके लिए? वह सुख के लिए ही मरता है। जिसके अन्दर तीव्र वेदना होने लग जाती है, tension इतना बढ़ जाता है कि उसकी रातों की नींद चली जाती है, दिन में भी वह विक्षिप्त जैसा हो जाता है, तो उसके लिए वह दुःख सहन नहीं होता तब वह मरने की इच्छा करता है। आप सोचे ऐसी भी वेदनाएँ होती हैं, ऐसे भी लोग देखे हैं और ऐसी वेदनाएँ कई बार ऐसे तीव्र कर्म के उदय से भी हो जाती हैं जिन्हें सोच भी नहीं सकते हैं।

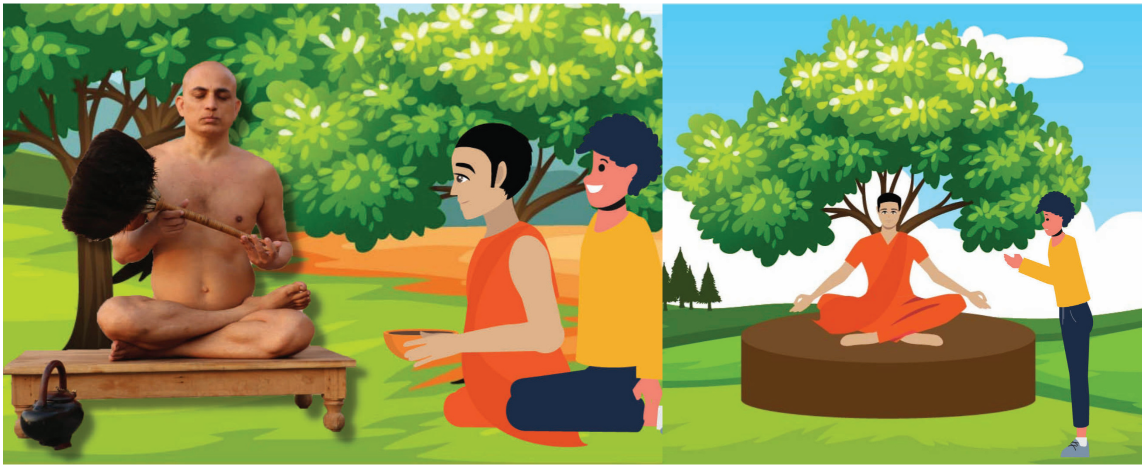

SCAN TO WATCH

एक व्यक्ति था, सागर की बात है (सागर सुना है M.P. में) बहुत अच्छा व्यक्ति था, सज्जन व्यक्ति था। मुझे जब एक बार बुखार आया तो मेरे लिए बहुत अच्छा एक वैद्य लेकर के आया और जो बुखार मेरा महीनों से ठीक नहीं हो रहा था वह उसने ठीक कराया, औषधि दिलाई, सब कुछ कराया। जब उसको

बुखार आया तो वह उसी वैद्य के पास गया। उसका उस वैद्य पर विश्वास था। न जाने क्या कर्म का उदय आया कि उसने उस वैद्य की जब दवाई खाई तो दवाई के बाद में ऐसा reaction हुआ कि उसके अन्दर इतनी गर्मी बढ़ गई कि वह भीतर से तड़पता था। मेरे पास आया एक बार कहने लगा महाराज! मेरी इच्छा होती है मैं मर जाऊँ, train के नीचे चला जाऊँ। उसको समझाया नहीं भाई! ऐसा नहीं करना, ऐसे नहीं करना लेकिन आखिरकार उसको वह वेदना सहन नहीं हुई और दो महीने बाद उसने वह कदम उठा ही लिया। अब आप समझो! किस-किस तरीके की वेदनाएँ होती है और ये वेदनाएँ सिर्फ कुछ नहीं; बुखार आया था उसको दवाई reaction कर गई थी, उसके अन्दर इतनी पीड़ा होती थी कि वह सहन नहीं कर पा रहा था और उसने suicide कर ली इसलिए कह रहा हूँ मरता भी है आदमी तो किसके लिए? सुख के लिए। खाते हो, किसके लिए? सबसे ज्यादा चाहत की चीज हमारे अन्दर होती है, तो क्या होता है? सुख। इतना पहले confirm कर लो क्या चाहते हैं हम? सुख चाहते हैं। अब यह बात अलग है कि उस सुख की चाहत में, उस सुख की प्राप्ति में जो हम उपाय करते हैं, उन उपायों से हमें कितना सुख मिलता है? कितना मिल पाता है? और उस सुख के साथ भी हमारे अन्दर कितना दुःख रहता है? यह सब भी हम महसूस करते रहते हैं लेकिन हमें कुछ और उस सुख से हटकर के जानने की या हमें उस कोई नए रास्ते पर चलने की हमारे अन्दर कोई जिज्ञासा होती नहीं है। इसलिए कहा जा रहा है जो मोक्ष में सुख है, वह कैसा है?

## सुख का लक्षण? निराकुलता

SCAN TO WATCH

आचार्य कहते हैं "निराकुलत्वैक लक्षणं हि सौख्यं"। ?निराकुलता का मतलब आज की पीढ़ी को कैसे समझाया जाएगा? कोई भी anxiety नहीं, कोई भी excitement नहीं। क्या समझे? सुख के लिए भी किसी भी प्रकार की तड़पन नहीं। अरे भाई! सुख की प्राप्ति में भी और सुख के समय पर भी तड़पन

हो तो फिर सुख काहे का? उसको क्या बोलते हैं? निराकुल सुख। वह निराकुलता अगर आपको समझनी हो, जब आप बिल्कुल खा-पी लेते हो, बढ़िया आपके अनुकूल मिल जाये, पेट भर जाए आपका फिर जो आपको लगता है- अहा! निराकुलता अब है। जैसा ठण्डा-ठण्डा पानी, गर्म-गर्म भोजन, जैसे चाहिए था वैसा सब मिल गया, फिर जो आपके अन्दर आती है- उसका नाम क्या है? निराकुलता। फिर कभी आँख भी लग जाती है, नींद भी आ जाती है, उसका नाम क्या है? निराकुलता। देखो! कैसे सो रहा है? चैन की नींद सो रहा है। एक समझने के लिए निराकुलता क्या है? लेकिन उसमें भी आकुलता है। क्या आकुलता है भाई? सोने में भी आकुलता है! जितनी देर सो रहा है उतनी देर तो निराकुल है लेकिन उसमें भी याद रखता है कि मुझे उठना है। एक घण्टे बाद उठना है कि चार घण्टे बाद उठना है, उसमें भी आकुलता रहती है। कब तक सोएगा और अगर ज्यादा सोएगा तो कोई दूसरा उसे सोने नहीं देगा। कहाँ सुख? कुल मिला कर के हम कभी-कभी यह realise तो करते हैं कि सुख है, तो निराकुलता में है लेकिन वह निराकुलता भी एक तरह से आकुलता की कमी होती है। perfect निराकुलता जो होती है, वह नहीं मिलती है। जो बहुत ज्यादा आकुलता है, बहुत ज्यादा आकुलता है, उसमें कमी हो गई। मान लो आपको बहुत भूख लगी थी, बहुत भूख लगी थी, आपने भोजन कर लिया तो शान्ति हो गई। क्या हो गई? वह आकुलता कम हो गई। ऐसा नहीं है कि आकुलता मिट गई, मिट जाती तो दोबारा भूख ही नहीं लगती। मिटी नहीं वह, उस समय पर वह आकुलता बुझ गई, थोड़ी देर के लिए शान्त हो गई तो हम उसको क्या समझ लिए? निराकुल हो गए। लेकिन वह भी निराकुलता कोई 100% नहीं है। बस इतना है कि पहले बहुत थी अब थोड़ी सी कम हो गई। उसमें भी मान लो आप तो सोच लिए थे चलो हमारी निराकुलता हो गई, पूरी हो गई। उसी समय पर कोई घर में आया और कोई अच्छा बाहर बाजार का मिष्ठान लेकर के आया। उसने डिब्बा खोला और आपने देखा, फिर शुरू हो गयी। अभी तो निराकुलता थी न और जैसे ही वह डिब्बा देखा, जैसे ही वह व्यंजन देखा वह आकुलता फिर शुरू हो गयी। किसका नाम आकुलता? पाने की इच्छा। हाँ! यह भी मिल जाए तो निराकुलता तो कहाँ आई

आपके अन्दर यह तो सोचो।

## क्या करोड़पति होने से निराकुलता आती है?

यह बात अलग है कुछ देर के लिए हमने अपनी आकुलता को कम कर लिया, निराकुल नहीं हुए। निराकुल क्या चीज हो गई? अब यह विचार करने की बात है।

- जहाँ पर कुछ भी करना न हो, पूर्ण शान्ति, पूर्ण सन्तुष्टि, पूर्ण सुख की अवस्था हो उसका नाम है- निराकुलता। उसको बोलते हैं सुख।

वह सुख कहाँ मिलेगा? कहाँ मिलेगा? मोक्ष में। मोक्ष कैसे मिलेगा? कब मिलेगा? अब इस जन्म में तो मिलने वाला है नहीं तो कब मिलेगा? जब मिले तब मिले लेकिन हम जान तो ले, अपने अन्दर इस बात का निर्णय तो कर ले कि संसार का कोई भी सुख निराकुल सुख नहीं है। निर्णय कर लो पहले। हाँ! अब इतना बड़ा मोक्ष की बात करें और हम मोक्षमार्ग तो सब बता दे और आपको पता ही न हो कि मोक्ष में होता क्या है? मोक्ष के सुख के प्रति कोई लालसा न हो तो मोक्षमार्ग की भी प्ररूपणा करने से भी मतलब क्या निकलेगा? इसलिए पहले अध्याय में मोक्षमार्ग को जानने के लिए उपाय तो सब बाद में होंगे, पहले यह निर्णय तो हो जाए कि वास्तव में मोक्ष में सुख होता है।

SCAN TO WATCH

हमें तो अभी यही लग रहा है- लखपति हैं तो करोड़पति बन जाएँ, करोड़पति हैं तो अरबपति बन जाएँ, अरबपति हैं तो खरबपति बन जाएँ, इसी में सुख लग रहा है। यह हम क्या कर रहे हैं? यह हम आकुलता मिटा रहे हैं कि बढ़ा रहे हैं? बढ़ा रहे हैं। मतलब सब गलत रास्ते पर चल रहे हैं। यह सब सुखी होने का

रास्ता है कि दुःखी होने का रास्ता है? और फिर भी किये जा रहे हो। कह रहे हो दुःखी होने का रास्ता है, तो मतलब यह नहीं चाहेंगे कि हम लखपति से करोड़पति बन जाएँ। पक्का कर लो फिर कि महाराज! हमें इतना ही आशीर्वाद दो कि हम लखपति हैं तो लखपति ही बने रहे, करोड़पति हैं तो करोड़पति बने रहे, हमें अरबपति नहीं बनना ऐसा आशीर्वाद तो कोई भी माँगता ही नहीं। कोई ऐसा आशीर्वाद तो लेने ही नहीं आया आज तक कि महाराज हम हजारपति हैं तो हजारपति ही बना रहूँ, मैं लखपति हूँ तो लखपति ही बना रहूँ, मुझे आकुलता बढ़ानी नहीं है। क्योंकि मैंने देख लिया है आकुलता में दुःख है और यह संसार को एक तरीके से बढ़ाने का मार्ग है। आकुलता में कोई सुख नहीं है और आकुलता इसी से बढ़ती चली जाती है। अगर हम आज लखपति हो गए तो फिर कल हमें करोड़पति बनने की इच्छा होगी और करोड़पति हो गए तो अरबपति की इच्छा होगी और यही आकुलता हमारे लिए दुःख का कारण है। लेकिन फिर भी हर कोई जैसे बने तैसे, बैंकों से loan भी लेना पड़े, company से उधार भी लेना पड़े तो भी अपनी नई company को चलाने के लिए हम करोड़ों, हजारों करोड़ रुपये का loan लेकर के भी बनना चाहते हैं। खरबपतियों की list में आना चाहते हैं, भले ही हम उसमें success हो या न हो। जैसे अनिल अम्बानी, कमाओ नाम, बनो बड़ा, जैसे बने तैसे बनो बड़ा। क्या है यह? यह सोच ही अपनी इतनी उल्टी है और इसी उल्टी सोच के कारण से ही तो आदमी दुःख के मार्ग पर चल रहा है और सोचता है कि हमें सुख मिलेगा जबकि सुख किसका नाम है? यह सिद्ध हो रहा है सुख किसका नाम है? निराकुलता का। क्या निराकुल होने के लिए आपको करोड़पति होना जरूरी है? क्या निराकुल होने के लिए आपको लखपति होना जरूरी है? क्या जरूरी है? निराकुल होने के लिए आपके पास दो-चार बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ होना जरूरी है। क्या जरूरी है?

## मोक्ष मार्ग के three components- सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र

क्या जरूरी है आपके लिए? सोचने की बात है। ये चीजें निराकुल होने के लिए कोई जरूरी नहीं हैं। ये चीजें तो आकुलता को बढ़ाने वाली है लेकिन हमारे सबके दिमाग में यही है सुख

मिलेगा तो इन्हीं चीजों से मिलेगा। इसलिए हम कभी मोक्ष में सुख है, इस बात का सही निर्णय नहीं ले पाते, सही विश्वास नहीं जमा पाते अन्यथा हम क्या करेंगे? अभी हम जो आगे के लिए gear लगाते थे, अब हम reverse gear लगाना शुरु कर देंगे। जहाँ हैं या वहीं पर stop होना शुरु कर देंगे, कुछ तो करना पड़ेगा। अतः मोक्ष का मार्ग अगर हमें अपनाना है, तो पहले यह निर्णीत कर लेना है कि

- निराकुलता का नाम मोक्ष है और उसी निराकुलता को प्राप्त करने के लिए जो रास्ता बताया गया है उसका नाम है- मोक्ष का मार्ग।

### अब यह मार्ग किस रास्तों से होकर के जाता है?

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र और ये तीनों अलग-अलग नहीं हैं और जब तक अलग-अलग हैं तब तक भी मोक्ष मार्ग नहीं है। इसलिए 'सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि' तीन हैं, तीनों

को मिला दिया गया लेकिन मोक्षमार्गः "मार्गः" यह एक वचन में हैं लेकिन तीन को मिलने से मार्ग बना है इसलिए चारित्राणि यहाँ पर बहुवचन है और मोक्ष मार्ग में एक वचन है। थोड़ा संस्कृत पढ़े हो? एकवचन-बहुवचन तो पढ़ा ही होगा। बस! इतना ही बहुत है। एक वचन का मतलब एक और बहुवचन का मतलब बहुत सारी चीजें जहाँ पर होंगी। मार्ग तो एक है इसलिए "मार्गः" लिखा है; 'मार्गाः' नहीं लिखा जैसे रामः रामौ रामाः, मार्गः मार्गौ, मार्गाः। तो मार्गाः नहीं लिखा, बहुत से मार्ग नहीं हैं मार्ग तो एक है लेकिन वह कैसे बन रहा है? तीन चीजों के मिलने से बन रहा है- सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र।

## सम्यग्दर्शन क्या है?

आपके दिमाग में वह प्रश्न बना रहना चाहिए कि जब मुनि महाराज किसी के घर पर आहार करने पहुँचे थे तो उन्होंने उसके आगे सम्यक् शब्द क्यों जोड़ा? क्या दर्शन, ज्ञान, चारित्र ही मोक्ष का मार्ग नहीं हो जाता लेकिन उन्होंने उसके आगे एक सम्यक् शब्द जोड़ा-समीचीन, सम्यक् शब्द यह प्रशंसा के अर्थ में आता है, समीचीनता के अर्थ में आता है, शुद्धि के अर्थ में आता है, सही के अर्थ में आता है। दर्शन से मतलब यहाँ पर देखना नहीं है; दर्शन का मतलब यहाँ विश्वास

SCAN TO WATCH

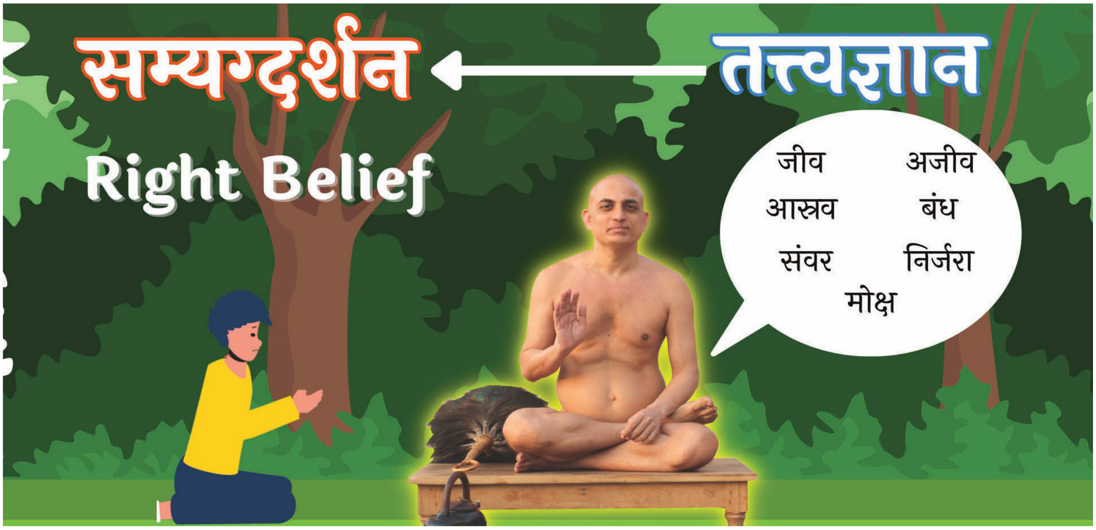

करना है, श्रद्धान करना है, to believe, सही तरीके से सही चीज पर believe करना। इसका नाम क्या है? सम्यग्दर्शन। पहले ज्ञान का उपयोग करो, ज्ञान से चीजों को जानो, मोक्ष जानो। कितने लोगों ने क्या-क्या मोक्ष बता रखा है उसके बारे में जानो, फिर मोक्ष का मार्ग जानो और उस मोक्ष का मार्ग जानने के लिए हमें किस तरह से तत्त्व बताए गए हैं उनका भी ज्ञान करो और सब ज्ञान करने के बाद में फिर उस पर proper तरीके से believe करो। बिल्कुल वह right believe होना चाहिए, फिर उसमें किसी भी तरीके की कमी-बेशी नहीं होना चाहिए। उसका नाम है-सम्यग्दर्शन। जब सम्यग्दर्शन है, तो सम्यग्ज्ञान है। कैसे सम्यग्ज्ञान है?

## सम्यग्ज्ञान क्या है?

- सम्यग्दर्शन होने पर आपका वह ज्ञान फिर जो वस्तुएँ जैसी हैं—
- जिस पदार्थ का जैसा स्वभाव है वैसा ही आप यथार्थ में जानेंगे, इसी का नाम सम्यग्ज्ञान है। संसार को भी सही ढंग से जानेंगे तो मोक्ष को भी सही ढंग से जानेंगे।
- संसार किस वस्तु का नाम है? चार गतियों में घूमने का नाम संसार है।
- मोक्ष किसका नाम है? निराकुल आत्म सुख को प्राप्त करने का नाम मोक्ष है।
- मोक्ष का मार्ग क्या है? सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र मोक्ष का मार्ग है।
- संसार का रास्ता क्या है? मिथ्या दर्शन, मिथ्या ज्ञान, मिथ्या चारित्र संसार का मार्ग है

सब चीजों को सही-सही ढंग से जानोगे कोई छोटा भी जीव है, कोई बड़ा भी जीव है, आप जानोगे यह कौन सी इन्द्रिय का जीव है? किस गति का जीव है? इसके पास में क्या-क्या पर्याप्तियाँ हैं? क्या-क्या प्राण हैं? क्या इसका ज्ञान है? क्या इसका सुख है? यह सब जानने में यथार्थ रूप से आने लग जाता है। उसका नाम क्या है? सम्यग्ज्ञान। आपकी physics, chemistry से क्या मिलता है? कौन सा ज्ञान मिलता है? न जीव विज्ञान पढ़कर कभी जीवों का सही ज्ञान हुआ, न भौतिकी विज्ञान पढ़कर कभी भौतिक पदार्थों का सही ज्ञान हुआ। क्योंकि कभी भी, किसी भी भौतिकी पदार्थ में कभी न कोई द्रव का सही लक्षण बताया गया, न द्रव का परिवर्तन कैसे होता है यह बताया गया, सिवाय ठोस, द्रव, गैस इसी में पूरी भौतिकी निपट जाती है। कोई भी रसायन विज्ञान में कभी न यह बताया गया कि किस तरह के रसायन बनाने के लिए हमें किस तरह की प्रक्रिया करनी चाहिए? तब उससे ऐसे रसायन बनते हैं जिससे कि हम एक धातु को दूसरे धातु में परिवर्तित कर सके।

पत्थर को सोना बना सके, ऐसा भी ज्ञान होता है, उसको बोलते हैं- रसायन विज्ञान जो पहले चला करता था। यह ज्ञान इतना सा है कि carbon और oxygen मिला दिया तो carbon dioxide हो गया, hydrogen और oxygen तो $H_2O$ हो गया, इसमें कितना सा ज्ञान है?

SCAN TO WATCH

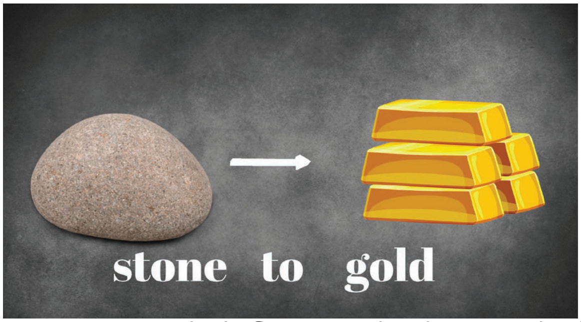


पहले ऐसा रसायन विज्ञान होता था कि रसायन बनाए जाते थे कि आपको सोना बनाने की कला सिखाई जाती थी, सोना बना सकते हो आप। पत्थर को सोना बना सकते हो, शास्त्रों में सब है। यह रसायन विज्ञान इस का नाम था, इसका नाम chemistry था। अब क्या organic और क्या inorganic? कोई चीजें काम की तो कहीं से कहीं तक है ही नहीं। आप यह सोचे कि जिस ज्ञान में हमें जीव का यथार्थ ज्ञान हो जाए, इसके पास सुनने की क्षमता है

कि नहीं, जानने की क्षमता कितनी है, मान लो मच्छर है, मक्खी है कितनी इन्द्रियाँ हैं? किसके कान हैं कि नाक है कि आँख हैं। कितने ही ऐसे जैनी होंगे इनसे पूछ लो कि मक्खी कौन सी इन्द्रिय जीव है? इतना न बता पाएँगे, यह स्थिति है। आपने कौन सा जीव विज्ञान पढ़ लिया, कौन से जीव विज्ञान में आपने कितने जीवों के बारे में क्या जान लिया? शरीर का dissection करते हो, शरीर की विज्ञान के बारे को जानते हो उसका नाम जीव विज्ञान कहते हो। जीव विज्ञान किसे बोलते हैं? जीव मतलब आत्मा का ज्ञान कुछ हो तो उसका नाम जीव विज्ञान है न। मोक्ष में जो कुछ है वह तो है ही लेकिन पहले अपने ज्ञान को सम्यग्ज्ञान बनाओ। सम्यग्ज्ञान का मतलब क्या है? जो चीजें जैसी हैं उन्हें वैसा ही जानना। क्या हम वैसा जानते हैं? क्या हम मक्खी को सही ढंग से जानते हैं? क्या मच्छरों को सही ढंग से जानते हैं? उल्टा यह और जान लिया इनसे मलेरिया होता है, इनको मारो। मारने के उपाय जान लिये, यह लगा दो इससे मर जाएगा, यह हिला दो इससे मर जाएगा, यह जान लिया।

क्या जाना तुमने? chemistry पढ़ाई गई इसलिए chemistry से यह खोजा गया है बस! मोक्ष का मार्ग तब पता पड़ेगा जब आपके अन्दर सम्यग्ज्ञान आएगा। सम्यग्ज्ञान किसका नाम है? जो चीजें जैसी हैं उन्हें वैसा ही जानो। संसार को भी, मोक्ष को भी, जीव को भी, अजीव को भी, जो जैसा है उसको

यथार्थ में वैसा जानने का नाम सम्यग्ज्ञान है।आपके अन्दर सम्यग्ज्ञान आएगा। सम्यग्ज्ञान किसका नाम है?

## सम्यग्चारित्र क्या है?

जब सम्यग्ज्ञान हो जाए तो अब अपने दुःख को दूर करने के लिए जो हम क्रिया करेंगे, जो हम आचरण करेंगे उसका नाम है- सम्यग्चारित्र। किस को दूर करने के लिए? संसार के दुःख को दूर करने के लिए, संसार की आकुलताओं को दूर करने के लिए अब जो हम क्रिया करेंगे, चारित्र लेंगे वह उस ज्ञानवान जीव का क्या कहलाता है? सम्यग्चारित्र कहलाता है। जब ये तीनों चीजें एक साथ होंगी तब कहा जाएगा हाँ! यह मोक्ष मार्ग पर है, यह मोक्ष मार्ग का मार्गी है, यह मोक्ष मार्ग का पथिक है, तीनों चीजें होनी चाहिए। तुम्हारा नम्बर तो मोक्ष मार्ग में कहीं से कहीं तक है ही नहीं। अगर सम्यग्दर्शन हो भी गया, सम्यग्ज्ञान हो भी गया तो भी गृहस्थ के लिए सम्यग्दृष्टि हो जाने पर भी जब तक उसके अन्दर चारित्र नहीं आता वह मोक्ष मार्ग पर चलता ही नहीं और अगर थोड़ा चारित्र आया तो इसका मतलब है कि वह लंगड़ा करके चलने लगा, कम से कम चलने तो लगा। अतः कैसे कहा जाए कि आप मोक्ष मार्गी हो?

## सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र तीनों connected है

आज हर सम्यग्दृष्टि घर में रह कर भी अपने लिए घोषणा कर रहा है कि मैं मोक्ष मार्गी हूँ, मोक्ष मार्गी हूँ। इस सूत्र से तो कहीं नहीं fit बैठता कि मोक्षमार्गी हूँ। अगर यहाँ अलग-अलग लिखा होता सम्यक् दर्शनं, सम्यक् ज्ञानं, सम्यक् चारित्रं च मोक्षमार्गः तो फिर कुछ बात बनती कि सम्यग्दर्शन भी मोक्ष का मार्ग है, सम्यग्ज्ञान भी मोक्ष का मार्ग है और सम्यग्चारित्र भी तीनों अलग-अलग भी मोक्ष के मार्ग हैं। भैया! तुम्हें दर्शन लेना है तुम दर्शन ले लो, तुम्हें ज्ञान लेना है तुम ज्ञान ले लो, तुम्हें चारित्र लेना है चारित्र ले लो। यहाँ ऐसा कुछ है ही नहीं और ये तीनों आपस में connected हैं। सम्यग्दर्शन होगा तो सम्यग्ज्ञान होगा। सम्यग्ज्ञान के साथ जो आचरण होगा तो वह सम्यग्चारित्र होगा। ये तीनों इसलिए एक-दूसरे के बाद लिखे हुए हैं। यह क्रम यूँ ही नहीं है, यह क्रम भी logically है।

- सम्यग्दर्शन होने पर ही सम्यग्ज्ञान होता है।
- सम्यग्ज्ञानी का जो आचरण होता है, उसी का नाम सम्यग्चारित्र होता है।
- तब जाकर तीनों मिल कर के एक मोक्ष का मार्ग बनता है और जो उस रास्ते से सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र का पालन करते हुए चलता है उसको मोक्ष की प्राप्ति होती है, अनन्त सुख उसको मिलेगा।

आप लोग विचार करें कि हमको मोक्ष मार्गी कहा जाये कि नहीं कहा जाए? अब जबरदस्ती कहना हो तो कह लो। अब वह भी जबरदस्ती तो तब बनेगा जैसे मान लो कोई राजा है। अब

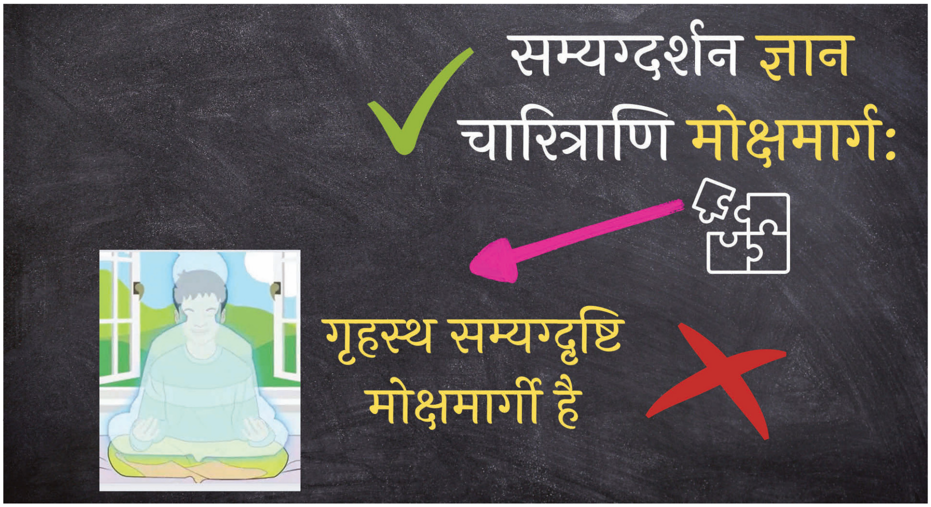


राजा तो राजा है लेकिन राजा का बेटा है कोई तो उसको भी लोग राजा कहने लग जाते हैं। क्यों कह लेते हैं भाई? राजा का बेटा है, योग्यता है। योग्यता है सही कह रहे हैं। योग्यता है उस राजा के जाने के बाद में राजा तो यही बनेगा। मतलब उसमें भी राजा बनने की योग्यता है इसलिए उसको पहले से भी राजा कह दिया जाता है लेकिन वास्तव में तो वह राजा अभी नहीं है। अगर तुमको भी मोक्ष मार्गी कहा जाएगा तो इसलिए कहा जाएगा अगर तुम्हें सम्यग्दर्शन हो गया, सम्यग्ज्ञान हो गया तो आगे यह भी सम्यग्चारित्र लेगा। अगर ऐसा उसके अन्दर सम्यक् दर्शन, ज्ञान के साथ में भाव होगा यह सम्यग्चारित्र लेगा। चारित्र लेने वाला तो यही होगा क्योंकि इसके अन्दर सम्यग्दर्शन है इसलिए उसको पहले से मोक्षमार्गी अगर कहा जाए चल सकता है, राजपुत्रवत्।लेकिन अभी राजा मत समझ लेना और राजा के सामने यह नहीं कहना कि मैं राजा हूँ अब यह भी फिर सोचने की बात है न। राजा के सामने अगर आप कहो कि मैं राजा हूँ तो फिर गड़बड़ हो जाएगा। राजा ने ही तो आपको राजा बनने की अनुमति दी है कि हाँ आप भी राजा कहला सकते हो, आपको भी हम राजा बनने के ख्वाब दिखा रहे हैं, आप भी राजा बनोगे, हमारे बाद आप ही राजा हो। लेकिन राजा के ही सामने खड़े मत हो जाना और जब ऐसी गलती आप लोग कर जाते हो तो वह आपके लिए फिर अज्ञानता सिद्ध हो जाती है। मतलब कि एक योग्यता होना सही बात है। हाँ! योग्य है लेकिन योग्य होने का मतलब यह तो नहीं हो गया कि वह हो ही गया। मोक्ष मार्ग गृहस्थों में होने की योग्यता होती है। होगा तब जब वह सम्यग्चारित्र लेगा। अगर वह चाहेगा, सम्यग्चारित्र की इच्छा करेगा तो ही तो मोक्षमार्गी होगा। अब राजा हो कर के वह राजा बनना ही न चाहे तो राजा का पुत्र होकर के फिर राजा पुत्र होने से राजा थोड़ी न हो जाएगा। आखिर राजा की तरह उसे कुछ सीखना तो पड़ेगा। अस्त्र-शस्त्र चलाना सीखना पड़ेगा, राजनीति सीखनी पड़ेगी, कूटनीति सीखनी पड़ेगी, न्याय सीखने पड़ेंगे, राज्य संचालन के तरीके सीखने पड़ेंगे। वह सब भी तो सीखना पड़ेगा और वह कुछ

SCAN TO WATCH

सीखना न चाहे। बस! राजा का पुत्र हूँ तो राजा हो गया तो ऐसे कैसे राजा हो गया भाई? इसलिए जो व्यक्ति सम्यग्दृष्टि, ज्ञानी होने के बाद में चारित्र की इच्छा करेगा वही व्यक्ति वस्तुतः मोक्ष मार्गी कहलायेगा और जिसमें चारित्र की इच्छा नहीं है वह मोक्ष मार्गी भी नहीं है। यह सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्राणि मोक्षमार्गः इस सूत्र का एक छोटा सा सारांश है। छोटा सा है भले एक घण्टा हो गया है लेकिन यह एक छोटा सा सारांश है। छोटा सा इसलिए कह रहा हूँ कि इतने बड़े-बड़े आचार्य हुए हैं कि उन्होंने इसकी व्याख्या करने में पन्ने के पन्ने नहीं, किताबों की किताबें भर दी है इस एक सूत्र की व्याख्या करने में। इसलिए कह रहा हूँ यह तो कुछ भी नहीं है, तो इतना भी जानना बहुत समझना।

---

# सारांश 01

1. प्रवचन में हमने जाना कि
2. तत्त्वार्थ सूत्र को मोक्ष शास्त्र भी कहते हैं
3. इसमें १० अध्याय और 357 सूत्र हैं
4. इसके रचयिता गृद्धपिच्छ आचार्य उमास्वामी हैं
5. इतिहास से यह सिद्ध है कि गृद्ध पिच्छाचार्य और उमा स्वामी महाराज एक ही हैं।
6. हमने जाना कि तत्त्वार्थ सूत्र की रचना किसी भव्य जीव की पृच्छना के कारण से हुई
7. आचार्य पूज्यपाद महाराज विरचित सर्वार्थसिद्धि ग्रन्थ इसकी पहली टीका है
8. प्रथम अध्याय का प्रथम सूत्र है - सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग:
9. अर्थात सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र तीनों से मिलकर मोक्ष का मार्ग बनता है। इसीलिये आचार्य महाराज ने मोक्ष से पहले मोक्षमार्ग की प्ररूपणा की है
10. सभी मतों ने ये तो माना है कि मोक्ष में सुख है पर सबका मोक्ष अलग अलग है जैसे
11. बौद्ध मत में आत्मा के अभाव का नाम मोक्ष माना जाता है
12. सांख्य मत में ज्ञान के अभाव का नाम मोक्ष है।
13. वैशेषिक दर्शन में आत्मा के नौ विशेष गुणों के अभाव का नाम मोक्ष है यानि आत्मा में बुध्दि नहीं रहती
14. जैन मत में मोक्ष में आत्मा के गुणों में उत्कृष्टता आ जाती है।
15. ज्ञान केवलज्ञान बन जाता है, सुख अनन्त सुख के रूप में हो जाता है।
16. जीव कुल मिलाकर सुख चाहता है और सुख भी कैसा? उसमें दुःख न हो।
17. संसारी जीव क्या चाहता है?
18. वह सुख की इच्छा करता है, ऐसा सुख जिसमें दुःख ना हो
19. ज्ञान की इच्छा लिए उसे हमेशा जाग्रत रहना होगा
20. इसलिए वह ज्ञान भी सिर्फ तब तक चाहता हैं जब तक उसमें सुख हो
21. यहाँ तक कि वह आत्महत्या जैसे कर्म भी सुख की अभिलाषा में करता है
22. हमने सीखा कि निराकुलता का मतलब है आकुलता में कमी, पूर्ण शान्ति, पूर्ण सन्तुष्टि, पूर्ण सुख की अवस्था
23. संसार का कोई भी सुख निराकुल सुख नहीं है
24. इसलिए आकुलता संसार को बढ़ाने का मार्ग है, दुःख का कारण है
25. वहीं सुख निराकुलता का नाम है और वह निराकुल सुख मोक्ष में ही होता है
26. इसलिए निराकुलता को प्राप्त करने के रास्ते का नाम ही मोक्ष मार्ग है

और वह है सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग:

27. सम्यक् शब्द समीचीनता, शुद्धि और सही के अर्थ में आता है

28. दर्शन का यहाँ मतलब विश्वास करना है, श्रद्धान करना है, to believe
29. अतः सम्यग्दर्शन में right belief, सही श्रद्धान होता है
30. पहले ज्ञान का उपयोग करके मोक्ष मार्ग जानो फिर उस पर believe करो
31. सम्यग्ज्ञान से जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही यथार्थ जानते हैं
32. सांसारिक ज्ञान में न तो जीव विज्ञान में जीव यानि आत्मा के बारे में कुछ बताते हैं; मात्र शरीर तक ही सीमित रहते हैं
33. और न ही भौतिकी में द्रव्य आदि बताते हैं, सिर्फ द्रव, तरल और ठोस आदि ही बताते हैं
सम्यग्ज्ञान प्राप्त करने के बाद जीव; संसार के दुःख को दूर करने के लिए जो आचरण करता है, वह सम्यग्चारित्र है
34. सम्यग्दर्शन के बाद सम्यग्ज्ञान होता है और उसके पश्चात् सम्यग्चारित्र होगा। यह क्रम है।
जो व्यक्ति सम्यग्दृष्टि, ज्ञानी होने के बाद में चारित्र की इच्छा करता है वही वस्तुतः मोक्ष मार्गी होता है
25. चार गतियों में घूमने का नाम ही संसार है और मिथ्या दर्शन, मिथ्या ज्ञान, मिथ्या चारित्र संसार का मार्ग हैं
26. गृहस्थों में सम्यग्चारित्र के आभाव में मोक्षमार्ग संभव नहीं है
परन्तु राजपुत्रवत् योग्यता होने के कारण; सम्यग्दृष्टि गृहस्थ को भी मोक्षमार्गी कह सकते हैं

# अभ्यास प्रश्न पत्र

प्रश्न 1 - श्रीधवला टीका के रचियता कौन थे?
1. आचार्य जिनसेन
2. आचार्य वीरसेन
3. आचार्य अमितगति

प्रश्न 2 - 'सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्राणि ______' - रिक्त स्थान की पूर्ति करें।
1. ज्ञान मार्गः
2. धर्म मार्गः
3. मोक्ष मार्गः

प्रश्न 3 - 'सिद्धैया' शब्द कौनसी भाषा के टीका ग्रंथ में पाया जाता है?
1. हिंदी
2. मराठी
3. कन्नड़

प्रश्न 4 - आचार्य पूज्यपाद महाराज द्वारा रचित ग्रंथ का क्या नाम है?
1. तत्त्वार्थ श्लोकवर्तिक
2. सर्वार्थसिद्धि
3. एकीभाव स्तोत्र

प्रश्न 5 -हर जीव क्या चाहता है?
1. महत्व
2. सुख
3. ज्ञान

प्रश्न 6 - सुख का क्या लक्षण है?
1. ज्ञानार्जन
2. नौकर चाकर
3. निराकुलता

प्रश्न 7 -'सम्यक्' का अर्थ-
1. समीचीन
2. समता
3. समाधान

प्रश्न 8 -सम्यक् दर्शन' में 'दर्शन' का अर्थ क्या है?
1. दृष्टि
2. श्रद्धान
3. देखना

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE
उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

# अभ्यास प्रश्न पत्र 'विषयक'

प्रश्न - 1 श्री षट्खण्डागम ग्रंथ की धवला टीका में आचार्य वीरसेन महाराज ने तत्वार्थ सूत्र जी के रचयिता का नाम क्या लिया है?

प्रश्न - 2 तत्त्वार्थ सूत्र की रचना के पीछे क्या कारण है?

प्रश्न - 3“तत्त्वार्थ राजवार्तिक” ग्रन्थ में तत्त्वार्थ सूत्र की टीका किस भाव से शुरु होती है?

प्रश्न - 4 मोक्ष से पहले मोक्षमार्ग की प्ररूपणा क्यों की गयी है?

प्रश्न - 5 मोक्ष मार्ग विषय में विभिन्न दर्शनों में जो विसंवाद है एक-एक वाक्य में लिखें ।

1. बौद्ध धर्म
2. सांख्य दर्शन
3. वैशेषिक दर्शन
4. जैन दर्शन

प्रश्न - 6 ‘गृहस्थ सम्यग्दृष्टि’ मोक्षमार्गी है या नहीं है? प्रवचन को ध्यान से पढ़िए और अपने जवाब को स्पष्टता से समझाइये।

प्रश्न - 7 जैनों के यहाँ मोक्ष कैसा है?

प्रश्न - 8 संसार के सुख में और मोक्ष के सुख में क्या अंतर है?

प्रश्न - 9 मोक्ष मार्गी कौन कहलाएगा?

प्रश्न - 10 प्रथम सूत्र में मोक्षमार्ग में एकवचन के प्रयोग का क्या प्रयोजन है?

# प्रवचन: 2

## तत्त्वार्थ सूत्र या मोक्ष शास्त्र

आचार्य गृद्धपिच्छ देव विरचित तत्त्वार्थ सूत्र है इसे मोक्ष शास्त्र भी कहते हैं और तत्त्वार्थ सूत्र भी कहते हैं। इसका नाम मोक्ष शास्त्र है क्योंकि इसमें मोक्षमार्ग का वर्णन है और अन्तिम अध्याय में मोक्ष तत्त्व का भी वर्णन है। मोक्ष मार्ग से पहला सूत्र प्रारम्भ होता है और मोक्ष के साथ में अन्तिम अध्याय का प्रथम सूत्र प्रारम्भ होता है। मोक्ष मार्ग का वर्णन करते हुए अन्ततः मोक्ष की व्याख्या करना इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है इसलिए इसे मोक्ष शास्त्र भी कहा जाता है।

## तत्त्वार्थ, श्रद्धा एवं सम्यग्दर्शन

सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र ही मोक्ष का मार्ग है। अब हम आगे के सूत्र की ओर बढ़ते है।

SCAN TO WATCH

तो अगले सूत्र में कहा जा रहा है कि वह मोक्ष का मार्ग जो सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र है उसमें सबसे पहला जो सम्यग्दर्शन है उसका हमें कुछ ज्ञान कराया जाए, उसका लक्षण बताया जाए कि वह सम्यग्दर्शन क्या होता है? अगला सूत्र:

**तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥ 1.2 ॥**

**तत्त्वार्थ + श्रद्धानं + सम्यक् +दर्शनम्**

**मात्र तत्व या अर्थ पे,श्रद्धा से ना होय।**
**तत्त्वारथ श्रद्धान से, सम्यक दर्शन होय ॥ 1.2 ॥**

क्या कहा गया? सम्यग्दर्शन तत्त्वार्थ की श्रद्धान का नाम है मतलब तत्त्वार्थ की श्रद्धा करना ही सम्यग्दर्शन है। अब हम सीखें कि हमें अगर सम्यग्दृष्टि बनना है, सम्यग्दर्शन अपने अन्दर धारण करना है, तो हमारा तत्त्वार्थों पर सही श्रद्धान होना चाहिए जो हमें इस तत्त्वार्थ सूत्र में बताया जा रहा है। तत्त्वार्थ क्या है? यह आगे बताया जाएगा लेकिन फिर भी सर्वप्रथम यहाँ पर तत्त्वार्थ की श्रद्धा को सम्यग्दर्शन कहा है। मतलब सम्यग्दर्शन का जो सम्बन्ध है, वह श्रद्धा से है और श्रद्धा किस पर होनी चाहिए? तत्त्वार्थ पर होनी चाहिए, यह बताया गया है। यहाँ पर इस सूत्र में तीन चीजें हैं- तत्त्वार्थ, श्रद्धा और सम्यग्दर्शन। सम्यग्दर्शन एक कार्य है जिसे हम अपना लक्ष्य कह सकते हैं श्रद्धा उसकी प्रतीति है जो हमें लक्ष्य की प्राप्ति होना है, यह उसका मुख्य

लक्षण है। किस पर श्रद्धा करनी? यह उसका अधिकरण है हमें तत्त्वार्थों पर श्रद्धा करनी है। तीन चीजें हैं, किस पर श्रद्धा करनी? सम्यग्दर्शन क्या करने पर होता? और जो श्रद्धा करने पर, तत्त्वार्थ की श्रद्धा करने पर होता उसका नाम क्या होता? सम्यग्दर्शन यानी समीचीन श्रद्धा का नाम ही देखा जाए तो सम्यग्दर्शन है क्योंकि कल आपको बताया था कि दर्शन मतलब श्रद्धा ही होती है, आस्था ही होती है। अब अगर हम इस दृष्टि से देखें तो इस सूत्र का अर्थ क्या निकलता है? सम्यग्दर्शन का मतलब क्या हो गया? तत्त्वार्थों की श्रद्धा ही सम्यक् श्रद्धा है। समीचीन श्रद्धा! और सम्यक् का अर्थ होता है जो श्रद्धा प्रशंसनीय हो, इसलिए सम्यक् शब्द आता है। हर कहीं पर हम श्रद्धा करते हैं। वह श्रद्धा काम की नहीं होती। जो श्रद्धा मोक्ष मार्ग में उपयोगी हो उसको सम्यक् कहा जाएगा। ऐसी श्रद्धा जो मोक्ष मार्ग के लिए उपयोगी होती है और जो प्रशंसा के लिए है जिसकी बड़े-बड़े ज्ञानी पुरुष भी प्रशंसा करे, उसका नाम है- सम्यक् श्रद्धा या सम्यग्दर्शन।

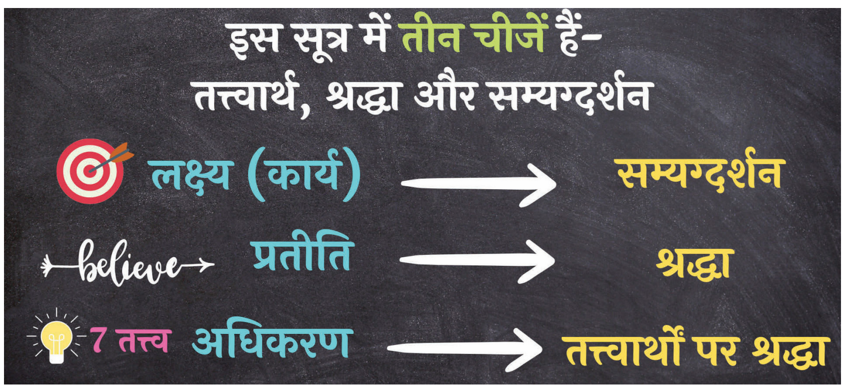


## वस्तु की परिभाषा

SCAN TO WATCH

अब वह सम्यग्दर्शन और उसके लिए होने वाली श्रद्धा किस पर हो? यह मुख्य विषय है। आचार्य कहते हैं- तत्त्वार्थ पर हो। तत्त्वार्थ क्या है? तत्त्वार्थ को समझने से पहले हम यह समझें कि हमें अगर यहाँ पर सम्यग्दर्शन समझाया जा रहा है, तो क्या सम्यग्दर्शन की यह परिभाषा ही है और जो परिभाषा होती है वह उसका लक्षण होती है। क्या बोलते है उसको? उसका लक्षण। लक्षण जो होता है वह अपने-आप में विशिष्ट होता है। लक्षण से ही हम उस लक्ष्य की जानकारी रख पाते हैं। हर वस्तु को जानने के लिए उसका एक लक्षण होना चाहिए और उस लक्षण को ही परिभाषा कहा जाता है। Definition जो depend करती है Definition depends on the characteristics of that thing. वह उसके उन मूलभूत गुणों पर depend करती है कि जिसके बिना वह वस्तु ही न

> "Definition depends on the characteristics of that thing."

हो और जिसके होने पर ही वह वस्तु हमारे सामने आ जाए। कोई भी चीज हो, चाहे वह वस्तु हो, चाहे वस्तु का कोई भी गुण धर्म हो, उसकी परिभाषा सटीक, सार्थक इस तरह से होनी चाहिए कि वह हर जगह पर लगे और कोई भी उस परिभाषा को किसी भी परिस्थिति में खण्डित न कर पाए। उसको कहते हैं- definition. आचार्यों ने सही परिभाषा को सही लक्षण को बताने के लिए हमें सिखाया है और वह मैं भी आपको सिखाने जा रहा हूँ । कभी भी किसी भी परिभाषा को यदि आपको समझना है, तो उसमें आप देखे कि उसमें तीन प्रकार के दोष नहीं होना चाहिए। तीन प्रकार के दोषों से रहित जो चीज होगी वह सही उसकी परिभाषा होगी। कितने दोष? तीन दोष।

> "परिभाषा सटीक, सार्थक होनी चाहिए, किसी भी परिस्थिति में खण्डित न हो"

1. पहला दोष है- **अव्याप्ति दोष**,
2. दूसरे दोष का नाम है- **अतिव्याप्ति दोष**,
3. तीसरे दोष को बोलते हैं- **असंभवी दोष**,

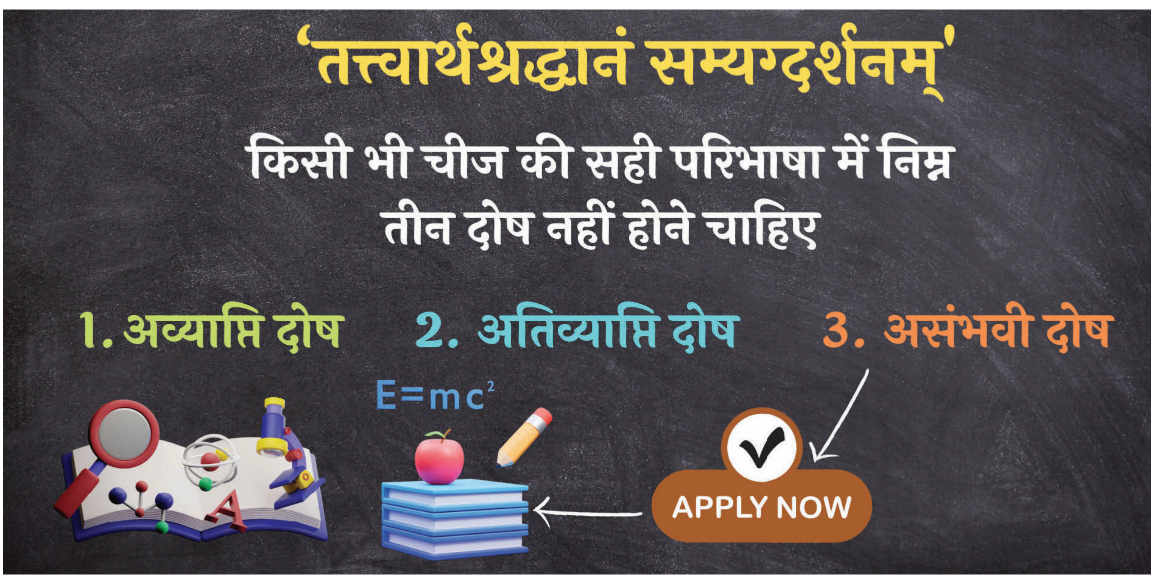


असंभव दोष या असंभवी दोष एक ही बात है। यह तीन दोषों से रहित कोई भी definition होनी चाहिए। अगर आपको कोई भी Science, कभी भी किसी भी substance की कोई भी definition बताए तो आप उसमें ये तीन चीजें देखें। यह law सबके लिए हैं। कोई भी चीज आपको अगर कोई भी definition दिखा रहा है आपकी physics में, chemistry में कहीं पर भी या आपको किसी चीज की कोई definition मिलती है, तो आप उसको इन तीन कसौटियों पर कसे। मैं तो यहाँ पर केवल सम्यग्दर्शन को कसूँगा। जिनके पास knowledge हो वह अपनी physics की, chemistry की किसी भी चीज पर इस definition को,

इस लक्षण को और इन दोषों से रहित होने के भाव को उस पर कसे तब समझेंगे कि हमें क्या सही सिखाया जाता है, हमें क्या गलत सिखाया जाता है।

अव्याप्ति दोष- व्याप्ति का मतलब होता है जो हमेशा उस लक्ष्य में व्याप्त रहे। उसको बोलते हैं- व्याप्त। लक्ष्य का मतलब समझ रहे हैं? जैसे मान लो हमारे सामने अभी लक्ष्य क्या है? सम्यग्दर्शन। अतः सम्यग्दर्शन हमारा लक्ष्य हो गया। इसके अलावा जो चीजें होंगी वे कहलाएँगी- अलक्ष्य। वे लक्ष्य नहीं है। वह क्या कहलाया? अलक्ष्य। Simple सी बात है। कोई भी चीज जिसकी हम definition बना रहे हैं वह हमारा क्या हो गया? लक्ष्य, target. आचार्य कहते हैं- जिसकी हम definition बना रहे हैं वह अव्याप्ति दोष से रहित होना चाहिए मतलब उस definition के अन्दर हर परिस्थिति में, हर काल में, हर state में वह applicable होनी चाहिए। ऐसा नहीं है कुछ time तक तो रहे फिर बाद में वह definition उसमें लागू न हो। इसको भी समझने के लिए आपको एक उदाहरण देते हैं। गाय तो सब जानते हैं न? गैय्या! The cow.

| | |
|---|---|
| **1. अव्याप्ति दोष** | **गुण जो उस लक्ष्य में हमेशा व्याप्त न रहे**<br>**e.g. गाय चितकबरी होती है** 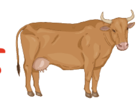 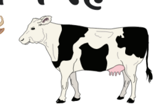 |
| **2. अतिव्याप्ति दोष** | **लक्ष्य के साथ-साथ जब लक्षण, अलक्ष्य में भी हो**<br>**e.g. गाय दूध देती है** |
| **3. असंभवी दोष** | **जो लक्षण वस्तु में संभव ही न हो**<br>**e.g. गाय हमारी माता है** |

अब देखो! यदि हमें गाय को पहचानना है, तो उसका भी कोई लक्षण होगा। क्या लक्षण है गाय का? आपको क्या पढ़ाया जाता है आपको? गाय दूध देती है। दूध देना तो उसका कोई लक्षण नहीं हुआ। दूध तो भैंस भी देती है, दूध तो बकरी भी देती है। गाय हमारी माता है। फिर आपकी माता अपनी भी तो है, गाय ही माता हो गयी तो फिर अपनी माँ को माँ नहीं मानोगे क्या? यह तो कोई लक्षण नहीं हुआ। गाय का कुछ लक्षण तो होगा। अगर आपने कह दिया कि गाय का लक्षण माता है, तो जिससे आप पैदा हुए उसको माँ नहीं कहोगे। अब उसको भी माँ कहो

और उसको भी माँ कहो तो फिर गाय का लक्षण माँ कैसे हुआ। अगर दूध देना ही गाय का लक्षण हो गया तो दूध देने वाला गाय भी है, भैंस भी है, बकरी भी है, ऊँट भी है (ऊँट से मतलब ऊँटनी)। कहने का मतलब यह है कि यह कोई लक्षण इसलिए नहीं क्योंकि यह लक्षण लक्ष्य के साथ-साथ अलक्ष्य में भी जा रहे हैं। जैसे- दूध देना, यह लक्षण गाय के साथ-साथ भैंस, बकरी, सब में लग रहा है। यह कहलाया लक्ष्य के साथ-साथ जब लक्षण, अलक्ष्य में चला गया तो यह कहलाता है- अतिव्याप्ति दोष। इसको क्या बोला? दूसरे नंबर वाला- अतिव्याप्ति। अव्याप्ति क्या हो गया? अगर आपने कोई लक्षण गाय का ऐसा बनाया कि मानो वह गाय कौन होती है? जो चितकबरी होती है, उसे गाय कहते हैं। चितकबरी होने का मतलब ऐसी भी गाय होती है जो चितकबरी न हो तो वह लक्षण उस गाय में नहीं घटेगा जो चितकबरी नहीं है। चितकबरी का मतलब जिसके कहीं-कहीं spot दिखाई देते हैं। यह भी कोई लक्षण नहीं हुआ। अगर हम ऐसा लक्षण बनाएँ तो यह कहलाएगा- अव्याप्ति लक्षण। यह लक्षण जो चितकबरापन है, यह तो सभी गायों में भी नहीं बैठ रहा है मतलब गाय में भी सब में नहीं बैठ रहा है, तो यह कहलाया- अव्याप्ति। मतलब जिस लक्ष्य में भी है, तो वह लक्ष्य में भी सभी पूरे लक्ष्य में हमेशा नहीं है। लक्ष्य में भी वह एक देश व्याप्त है ऐसा कहा जाएगा तो इसलिए इसको क्या बोलेंगे? अव्याप्ति दोष। अगर हमने गाय का लक्षण बनाया दूध देना या सींग होना, जिसके सींग हो वह गाय हो

SCAN TO WATCH

## आत्मा के लक्षण की परीक्षा

| | | |
|---|---|---|
| 1. अव्याप्ति दोष | केवलज्ञान आत्मा का लक्षण है | संसारी जीवों में घटित नहीं होता |
| 2. अतिव्याप्ति दोष | आत्मा का लक्षण अमूर्त है | धर्म, अधर्म आदि द्रव्य भी अमूर्त हैं<br>धर्म द्रव्य अधर्म द्रव्य आकाश द्रव्य |
| 3. असंभवी दोष | आत्मा का लक्षण जड़ है | जड़ अजीव द्रव्य ही होते हैं |

तो यह कहलाएगा- अतिव्याप्ति लक्षण। यह क्या हो गया? क्योंकि यह गाय के अलावा अन्य पशुओं में भी पाया जा रहा है अथवा हमने गाय का लक्षण बना दिया जो पशु हो वह गाय है, तो पशु तो दूसरे भी होते हैं। पशु लक्षण यह बना दिया तो यह भी उसके लक्षण नहीं बनेगा तो यह क्या हो गया? अतिव्याप्ति दोष। ये तो दो दोष हो गए।

असम्भव दोष ऐसे ही तीसरा असंभव दोष। असंभव दोष का मतलब यह हो गया अगर हमने

उस गाय का लक्षण यह बना दिया कि जो गाय होती है, वह मनुष्य होती है या माँ होती है, तो क्या हो जाएगा यह असम्भव दोष है। गाय कभी माँ नहीं होती है। माँ वह होती है जिससे हम उत्पन्न होते हैं। गाय कैसे माँ हो गई? यह उसका असम्भव दोष हो गया। इस तरह के जो दोष होते हैं, उन दोषों से सहित कोई भी परिभाषा होती है, तो वह परिभाषा नहीं होती है। उसका कोई गुण-धर्म वैसा हो सकता है लेकिन वह गाय की परिभाषा नहीं है। गाय का कोई विशिष्ट गुण हो सकता है कि सब पशुओं में हम गाय को विशिष्ट सम्मान देते हो या आदर देते हो, यह बात अलग है लेकिन वह उसका कोई लक्षण नहीं है। इसको बोलते हैं- अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असम्भव दोषों से रहित लक्षण बनाना। अभी लक्षण तो बना नहीं जो लक्षण आपने दिए थे वे सब असम्भव हैं। अब आप जब भी कोई लक्षण बनाए तो उसमें हमें इन तीनों दोषों से रहित होकर के बनाना तो हमें बताना कि आपने क्या गाय का लक्षण बनाया। सींग नहीं मारती? ऐसा कुछ नहीं है। मरखनी गाय भी होती हैं सींग मारने वाली होती है।

## आत्मा का लक्षण ?

अच्छा! चलो एक चीज और इसी तरीके से समझते हैं जैसे- आत्मा। धीरे-धीरे अब थोड़ा अपने विषय पर आते हैं। आत्मा! आत्मा का लक्षण अगर हमने यूँ कहा कि आत्मा का लक्षण अमूर्त है। क्या बोला? अमूर्त है। यह लक्षण आत्मा का अमूर्त होकर के भी निर्दोष लक्षण नहीं होगा। क्यों नहीं होगा? क्योंकि अमूर्त तो दूसरी और भी चीजें हैं। आकाश भी अमूर्त है, धर्म-अधर्म द्रव्य भी अमूर्त है, तो यह अमूर्त आत्मा का फिर लक्षण नहीं बना। फिर यह क्या कहलाया? अमूर्त आत्मा का लक्षण कहना यह हो गया- अतिव्याप्ति दोष। क्या दोष हो गया? अतिव्याप्ति

दोष। अगर हमने कहा कि आत्मा का लक्षण सब कुछ जानना, सब कुछ देखना है या हमने कहा केवलज्ञान आत्मा का लक्षण है। यह क्या हो गया? यह अव्याप्ति दोष हो गया क्योंकि जिनमें केवलज्ञान नहीं है, तो क्या वे आत्मा नहीं है? अगर आत्मा को पहचानने के लिए हमें केवलज्ञान की जरूरत पड़े तो क्या जिनके पास केवलज्ञान नहीं है क्या वे आत्मा नहीं होंगे। केवलज्ञान के बिना भी आत्माएँ होती हैं। अतः आत्मा का लक्षण केवलज्ञान नहीं हुआ। यह अगर लक्षण बना दिया तो यह अव्याप्ति दोष हो गया। फिर कहते हैं- अगर हमने कह दिया आत्मा का लक्षण जड़ है, तो यह असम्भव दोष हो गया। जड़ कभी आत्मा का लक्षण नहीं हो सकता क्योंकि जड़ अगर आत्मा का लक्षण हो गया तो फिर जड़ का लक्षण और आत्मा

कालक्षण दोनों एक हो जाएँगे फिर दुनिया में सब जड़ ही होगा, चेतना नाम की कोई चीज नहीं होगी। इसलिए ये जो लक्षण बनाए गए, ये सब क्या कहलाए? ये सब सदोष लक्षण कहलाये। अब आत्मा का लक्षण क्या होता है? यह आप ढूँढना? बाद में मिलेगा आपको कहीं न कहीं। लेकिन ये जो लक्षण बताए गए वे लक्षण नहीं हैं। आप दूसरे अध्याय में पढ़ना आपको लक्षण मिलेगा और जो पढ़ चुके हैं उनसे कभी पूछना। थोड़ा हम भी बता देंगे ऐसी कोई बात नहीं है। आप कहोगे महाराज इतना क्यों हमें परेशान कर रहे हो। आत्मा का लक्षण न तो केवलज्ञान है, न अमूर्त है। आत्मा का लक्षण है- 'उपयोगो लक्षणं' दूसरे अध्याय में आप पढ़ेंगे। क्या पढ़ेंगे? उपयोगो लक्षणं। आत्मा का लक्षण क्या है? उपयोग, उपयोग स्वभाव। ज्ञानोपयोग, दर्शनोपयोग यह है। यह हर आत्मा में पाया जाएगा इसलिए वह उसका लक्षण है, इसके बिना कभी आत्मा नहीं होगी। चाहे वह केवल ज्ञानी आत्मा हो, चाहे वह सामान्य से निगोद पर्याय में रहने वाली आत्मा हो, चाहे पशु हो, चाहे मनुष्य हो सब आत्माओं में यह उपयोग लक्षण पाया जाएगा इसलिए यह निर्दोष लक्षण है। इसी तरीके से यहाँ सम्यग्दर्शन का लक्षण बताया जा रहा है। जैनाचार्य जब भी कोई परिभाषा बनाते हैं, अकाट्य बनाते हैं। तीन प्रकार के दोषों से रहित बनाते हैं। इसलिए जैनाचार्यों की विशेषताएँ होती हैं। वे पण्डितों के भी पण्डित होते हैं। न्याय के माध्यम से भी उन्हें कोई किसी भी तरीके से बाधित नहीं कर सकता है। इस न्याय के अनुसार तत्त्वार्थ सूत्र में जो सम्यग्दर्शन की परिभाषा है, यह है 'तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यक् दर्शनं' यह परिभाषा अव्याप्ति, अतिव्याप्ति, असम्भव तीनों दोषों से रहित है। तत्त्वार्थ का श्रद्धान होना चाहिए, इसका नाम है- सम्यग्दर्शन।

SCAN TO WATCH

## तत्त्वार्थ का अर्थ/तत्त्वार्थ का श्रद्धान

तत्त्वार्थ इस शब्द के बारे में आपको बताते हैं

**तत्त्व + अर्थ = तत्त्वार्थ**

SCAN TO WATCH

तत्त्व और अर्थ इन दो शब्दों से मिलकर के तत्त्वार्थ शब्द बनता है। तत्त्व का मतलब होता है- उसका भाव। अर्थ का मतलब होता है- पदार्थ, वस्तु। भाव भी हो और उस भाव से सहित वस्तु भी हो, पदार्थ भी हो, उन दोनों का श्रद्धान करने का नाम है- तत्त्वार्थ का श्रद्धान। तत्त्वार्थ कहने से एक तरह से ऐसे आ गया जैसे हम लोग कभी बोलते हैं- भावार्थ। इसका भावार्थ क्या है? भावार्थ का मतलब होता है कि वह तो भावार्थ में चला गया कि इसका भावपूर्ण अर्थ क्या है? लेकिन यहाँ पर तत्त्वार्थ का मतलब भावार्थ तो आ रहा है लेकिन इसमें sense दूसरा आ रहा है। यहाँ भावार्थ का मतलब आ रहा है- भाव से सहित अर्थ, भाव से सहित पदार्थ। अर्थ मतलब पदार्थ। मतलब जो substance हैं उसकी जो अपनी गुणवत्ता है

और जो पदार्थ है, उन दोनों को श्रद्धा में लाओ। तत्त्वार्थ का मतलब क्या हो गया? तत्त्व और अर्थ। इन दोनों को क्या बोलते हैं? तत्त्वार्थ। अब इस तत्त्वार्थ का मतलब हो गया कि जो भाव है और भाव से सहित पदार्थ हैं, हमें दोनों को लेकर के चलना है, एक को लेकर के नहीं चलना है। क्योंकि भाव के बिना पदार्थ नहीं होता और पदार्थ के बिना उसका भाव नहीं होता। भाव और पदार्थ दोनों के साथ-साथ रहते हैं।

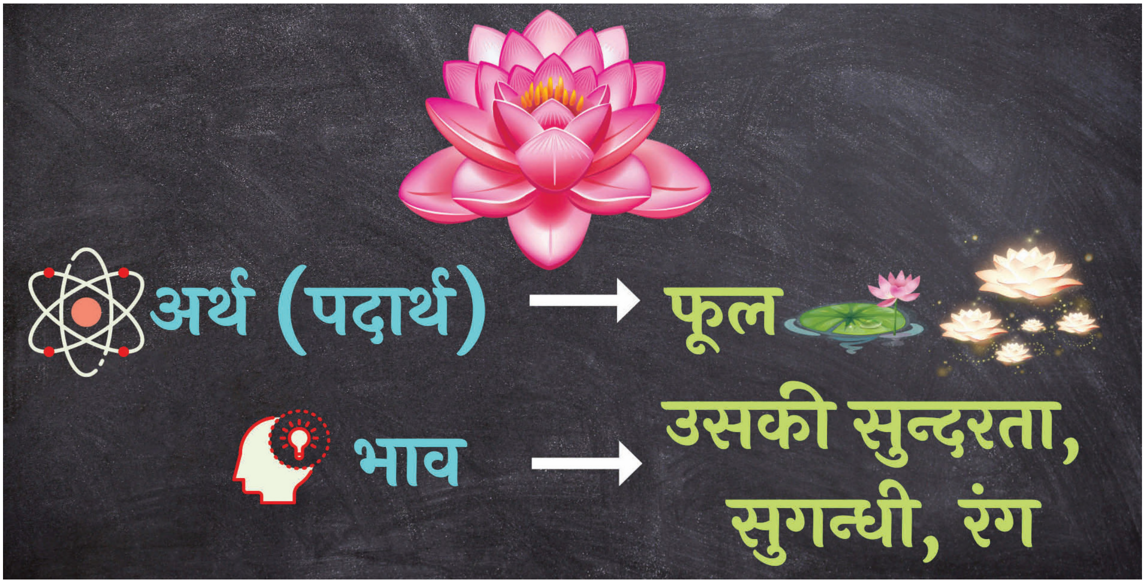


कोई भी चीज हो, मान लो कमल का फूल है। फूल क्या हो गया? यह अर्थ हो गया, एक पदार्थ हो गया। उसका भाव क्या हो गया? उसकी सुन्दरता, उसकी सुगन्धी यह उसका भाव हो गया। उसका रंग, यह सब क्या हो गया? उसका भाव हो गया। हमें एक चीज को नहीं पकड़ना कि हम केवल उसकी सुन्दरता पकड़े, केवल उसकी सुगन्धी को पकड़े या उसके केवल रूप-रंग को ग्रहण करे, उसी को माने और उस वस्तु को न माने तो ऐसा तो नहीं होगा। वस्तु है, तो उस वस्तु का कोई न कोई भाव तो होता ही है। हमने सुन रखा है, जान भी रखा है, दो ही प्रकार के पदार्थ हैं–

SCAN TO WATCH

1.जीव और 2.अजीव

जीव एक पदार्थ हो गया और उस जीव का जो भाव है वह क्या हो गया? जानना, देखना। यह उसका क्या हो गया? भाव हो गया।
अगर हम केवल जानने-देखने को ही श्रद्धा में लाए, माने और जीव आत्मा रूपी पदार्थ को न माने तो आपकी श्रद्धा अधूरी कहलाएगी, श्रद्धा आपकी बराबर नहीं कहलाएगी। यदि हम

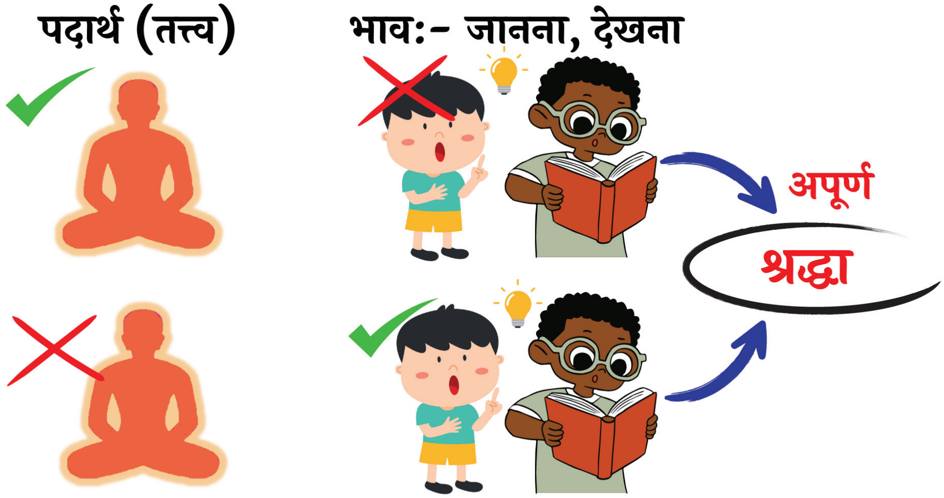


केवल जीव आत्मा को माने और उसके भाव को न माने, जानना-देखना जो उसकी गुणवत्ता है उसको न माने तो भी आपकी श्रद्धा पूरी नहीं कहलाएगी। दोनों चीजों को मानना है; भाव को भी और भाव से सहित जो पदार्थ है उसको भी, इसका नाम यहाँ पर भावार्थ है।

इस तत्त्वार्थ का भावार्थ क्या निकला? कि भाव से सहित जो पदार्थ है उसकी श्रद्धा का नाम सम्यग्दर्शन है। जीव का तो यह भाव हो गया। पुद्गल का भाव क्या होता है? जो पुद्गल के अन्दर स्पर्श, रस, गंध, वर्ण होते हैं ये उसके भाव हो गए और जो पुद्गल पदार्थ है, वह अर्थ हो गया तो अर्थ को भी जानो और उसके जो गुण धर्म है, भाव हैं उनको भी जानो। उनकी भी श्रद्धा करो तो यह कहलाएगा तत्त्वार्थ का श्रद्धान करना।

### सम्यग्दर्शन - परिभाषाएँ अलग-अलग क्यों ?

तत्त्वार्थ इस शब्द का जब हमने अर्थ जान लिया, अब हमें यह देखना है कि हमारे सामने जो यह लक्षण आ रहा है 'तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्' अब सम्यग्दर्शन के इस लक्षण को हम देखें

कि रत्नकरण्डक श्रावकाचार पढ़ रहे थे तो वहाँ पर तो कुछ और कहा था। वहाँ क्या कर रहे थे?

**'श्रद्धानं परमार्थाना, माप्तागम-तपोभृताम्'।**
**'त्रिमूढ़ापोढ़-मष्टाङ्ग, सम्यग्दर्शन-मस्मयम्'॥**

परमार्थ भूत, आप्त, आगम और गुरु का श्रद्धान करने का नाम सम्यग्दर्शन कहा जा रहा था। वहाँ पर तो सम्यग्दर्शन कुछ ऐसे बताया जा रहा था और यहाँ पर कह रहे हैं 'तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्' समझ तो यह आता ही नहीं कि आचार्य आपस में करते क्या रहते हैं। एक ही धर्म है, एक ही धर्म को बताने वाले एक ही तीर्थंकर हैं और ये सब अलग-अलग तरीके की परिभाषाएँ बनाते रहते हैं। ये दो परिभाषाएँ ही मुख्य हैं। बाकी की जो और परिभाषाएँ समयसार कलश इत्यादि में या समयसार वगैरह में मिलती हैं वे अलग अपेक्षा से हैं। वह यहाँ कोई भी प्रयोजनीय नहीं है क्योंकि वस्तुतः सम्यग्दर्शन को समझने के लिए जो सैद्धान्तिक परिभाषाएँ हैं, वे यही दो हैं। वह आध्यात्मिक परिभाषा है। उनका सिद्धान्त से इतना लेना-देना नहीं है। जो समयसार में बताई गई परिभाषाएँ हैं, समयसार कलश के अन्दर वे अलग परिभाषाएँ हैं, जो आत्मा की प्रतीति या आत्मा की ही केवल रुचि-रूप श्रद्धा और आत्मा का ही केवल विनिश्चिति इस तरह की जो परिभाषाएँ अध्यात्म ग्रन्थों में बताई गई हैं वे एक अलग रूप हैं, उन्हें अभी हमें अभी किसी भी विचार में लाना ही नहीं है क्योंकि वह अलग ही विषय है, अध्यात्म का विषय अलग है। ये

SCAN TO WATCH

**सैद्धान्तिक परिभाषाएँ**

1. **'श्रद्धानं परमार्थाना, माप्तागम-तपोभृताम्'।**
   **'त्रिमूढ़ापोढ़-मष्टाङ्ग, सम्यग्दर्शन-मस्मयम्'।।**
2. **'तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्'**

**आध्यात्मिक परिभाषा**

1. **समयसार ,**
2. **समयसार कलश**

जो सैद्धान्तिक परिभाषाएँ हैं ये दो ही मिलती हैं, इनको हम अपनी चालू भाषा में कह सकते हैं- देव-शास्त्र-गुरु का श्रद्धान करना, ऐसा बोलते हैं; यह सम्यग्दर्शन है। यहाँ बोलते हैं- तत्त्वार्थ का श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन है।

हम अगर इन दोनों परिभाषाओं को देखे और बारीकी से विचार करेंगे तो हमें पता पड़ेगा कि इन दोनों में भी कोई अन्तर नहीं है केवल कहने का ढंग अलग-अलग है। आप बताओ कहाँ से शुरु करें? तत्त्वार्थ में देव-शास्त्र-गुरु को गर्भित करें या देव-शास्त्र-गुरु में तत्त्वार्थ को गर्भित करें? कुछ भी कर सकते हो आप और आपको करना भी चाहिए। आपको पूरी खुली छूट है,

क्योंकि दो आचार्य या अनेक भी आचार्य मिलकर के सिद्धान्त विरुद्ध कोई भी बात कभी कह नहीं सकते। बस कहने का ढंग, प्ररूपणा की एक शैली अलग-अलग हो सकती है। समझाने का एक तरीका अलग-अलग हो सकता है और वह भी तरीका जिस तरह के श्रोता होते हैं उसके अनुसार वह चीज समझाने में भी आ जाती है। आचार्यों का यह भी अभिप्राय रहा है, श्रोताओं के अनुसार भी वे अपने नाम, शैली को बदल लेते हैं।

## तत्त्वार्थ में देव शास्त्र गुरु के दर्शन

तत्त्वार्थ में भी देव शास्त्र गुरु हैं और देव शास्त्र गुरु में भी तत्त्वार्थ है। कैसे हैं? तत्त्वार्थ को अगर जानना है तो एक सूत्र आपको पहले और पढ़ना पड़ेगा तब तो आपको समझ में आएगा कि तत्त्वार्थ ही नहीं मालूम अभी तो आपने केवल इतना भावार्थ समझा है। तत्त्व और अर्थ का नाम तत्त्वार्थ है। अब तत्त्वार्थ हैं कितने? तत्त्व कितने है यह आगे बताया जा रहा है-

**जीवा-जीवा-स्रवबन्धसंवर निर्जरा मोक्षास्तत्त्वम् ॥ 1.4 ॥**

**जीव + अजीव + आस्रव + बन्ध + संवर + निर्जरा + मोक्षः+तत्त्वम्**

**जीवाजीवास्रव तथा, बन्ध तत्त्व बतलाय।**
**संवर निर्जर मुक्ति सह, तत्त्व सप्त कहलाय ॥ 1.4 ॥**

एक सूत्र बीच में है- "तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥1.3॥" यह सूत्र बाद में ले लेंगे। हमें आपको अभी तत्त्वार्थ के बारे में बताना था इसलिए मैंने यह सूत्र पहले ले लिया है। इसलिए आगे वाले सूत्र पर दृष्टि डाले, इसकी चर्चा हम बाद में करेंगे। तत्त्वार्थ क्या कहते हैं? मैं वह सूत्र बता रहा था। आगे के सूत्र में लिखा हुआ है न- जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष। ये

क्या हैं? तत्त्व हैं। इन्हीं को तत्त्वार्थ कहते हैं, कोई अलग चीज नहीं है।
तत्त्व और तत्त्वार्थ एक ही बात है। अब यहाँ पर हम देखे कि ये सात तत्त्व हैं, इन्हीं को तत्त्वार्थ कहा जा रहा है और इन सात तत्त्वों में ही हमें देव-शास्त्र-गुरु को गर्भित करना है। सबसे पहला तत्त्व क्या है? और अन्तिम तत्त्व क्या है? मोक्ष तत्व। देव का मतलब क्या है? परमार्थभूत देव किसे कहते हैं? अब उन देवों को जो हम रत्नकरण श्रावकाचार में पढ़ चुके हैं, वह देव का मतलब क्या है? अरिहन्त-सिद्ध का नाम यहाँ पर देव है। देव में क्या आ गए? अरिहन्त-सिद्ध। अरिहन्त-सिद्ध किस रुप हैं? मोक्ष रुप हैं। सिद्ध तत्त्व का मतलब क्या हो गया? मोक्ष तत्त्व। अरिहन्त भी उसके बिलकुल निकट है। अरिहन्त और सिद्ध क्या हो गए? ये मोक्ष रुप हैं। मोक्ष किस को होगा? जीव को होगा। जीव को मोक्ष किससे होगा? अजीव से होगा।

SCAN TO WATCH

जो अजीव उसके साथ जुड़ा हुआ है उससे ही तो मुक्ति मिलेगी उसका नाम मोक्ष हो गया। जीव-अजीव, मोक्ष यह हमें अरिहन्त और सिद्ध को देखते ही समझ में आ जाने चाहिए थे। अरिहन्त का दर्शन किया, सिद्ध का स्वरुप ध्यान में आया कि यह कैसी आत्मा जिनके अन्दर कोई अजीव पदार्थ है ही नहीं क्योंकि कर्म जो है वह भी अजीव है। शरीर है वह भी अजीव है, तो अरिहन्त को देखकर के भी हमें यह भास होता है कि वह उस शरीर में रहे हैं लेकिन उस शरीर से बिल्कुल भिन्न हैं क्योंकि शरीर की सब इन्द्रियों ने काम करना बन्द कर चुकी हैं। द्रव्य इन्द्रिय, भाव इन्द्रिय सब से वे रहित हो गए हैं। अतः भिन्न है बिलकुल और कर्मों से भी बिलकुल भिन्न है। जो कर्म बचे हैं वे अन्तिम सांसें गिन रहे हैं। एक तो मरा होता है और एक अधमरा होता

है। जिसके कर्म सब मर गए वह तो पूरा मर गया, पूरे कर्म मर गए जिसके वे तो हो गए सिद्ध और जिनके कर्म आधे मर गए, आधे मरने ही वाले वाले हैं वे हो गए अरिहन्त। जिन्होंने आधे मार दिए, कर्मों के आधे तो प्राण निकाल ही दिए. थोड़ी सी आयु बची है जब तक आधे और निकल जाएँगे। वे हो गए? अरिहन्त। इनमें हमें दिख रहा है। क्या दिख रहा है? मोक्ष तत्त्व भी दिख रहा है, जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व अलग-अलग दिख रहा है। अब आगे आओ-

## गुरु में क्या देखना?

गुरु किसको बोलते हैं? गुरु को देखकर के भी आपको कभी तत्त्व का ज्ञान हो सकता है। गुरु ने क्या कर लिया? क्या कर रहे हैं? गुरु को देखकर के संवर और निर्जरा तत्त्व का ज्ञान होना चाहिए। गुरु में क्या दिखना चाहिए? संवर और निर्जरा। अब आप कहोगे हमें तो पता ही नहीं संवर, निर्जरा क्या है? संवर, निर्जरा क्या है? वह पता पड़ जाएगा। जो हमारी आत्मा में कर्म आते हैं उनको रोकना संवर है और जो बंधे हुए कर्म है उनका थोड़ा-थोड़ा सा उन बंधनों का टूटना ये निर्जरा है।

ये संवर और निर्जरा घटित होगी तो कहाँ होगी? गुरु में। गुरु में दिखेगा आपको, संवर भी दिखेगा, निर्जरा भी दिखेगी। देखने की दृष्टि चाहिए और दृष्टि को बनाने के लिए knowledge चाहिए। अभी तक नहीं दिखता होगा, अब दिखने लगेगा।

SCAN TO WATCH

अब जब संवर , निर्जरा सिद्ध हो गया तो यह संवर, निर्जरा आखिर किसके साथ सम्बन्ध रखता है? यह तो एक अभावात्मक चीज है। संवर किसका? आस्रव के रुकने का नाम संवर। गुरु किस को रोक रहे हैं? आस्रव को रोक रहे हैं। आस्रव किसका? पाप का, पुण्य का। ये सब आस्रव रोकना, इसका नाम क्या है? संवर। निर्जरा किसकी कर रहे हैं? जो पहले का बंधा हुआ था उसकी निर्जरा कर रहे हैं तो बंध भी आ गया साथ में। क्या देखना है आपको? अगर आपको positive way में देखना है गुरु को या गुरु में positive attitude से देखना है, तो देखना संवर, निर्जरा कर रहे हैं और negative way में देखना है, तो ये आस्रव नहीं कर रहे हैं या आस्रव

को रोक रहे हैं या बंध को तोड़ रहे हैं। ये बंध और आस्रव तत्त्व दोनों दिखाई देंगे आपको। अगर ये दोनों चीजें नहीं हो रही हैं तो संवर, निर्जरा ही तो हो रही है। संवर, निर्जरा का सम्बन्ध किससे है? ये दोनों विरोधी तत्त्व हैं- संवर और निर्जरा। किसके विरोधी हैं? जैसे आप लोग पर्युषण पर क्या करते हो? क्रोध-क्षमा, मान-मार्दव इन दोनों के बारे में सुनते हो। क्रोध का अभाव मतलब क्षमा। क्षमा का सद्भाव मतलब क्रोध का अभाव। क्रोध उसका एक negative aspect हो गया है, क्षमा उसका एक positive aspect हो गया। इसी तरीके से आस्रव- इसका रुकना, संवर; बंध- इसका टूटना, निर्जरा। ये निर्जरा और संवर उसका एक positive form हो गया और आस्रव और बंध ये उसका negative भाव हो गया। रोकना किसको? आस्रव को, क्रोध को। हो गए सातों तत्त्व कि बचे हैं कुछ ?। अब जो बचे रह जाएँ, उसके लिए तो अभी एक तत्त्व अपने पास बचा है- आगम, शास्त्र।

अब जो बचे रह जाएँ, उसके लिए तो अभी एक तत्त्व अपने पास बचा है- आगम, शास्त्र। शास्त्र पढ़ोगे तो शास्त्र में तो सब कुछ मिलेगा। सातों तत्त्वों का भी ज्ञान मिलेगा और देव शास्त्र गुरु का भी ज्ञान मिलेगा। बस इस तरीके से उसको मिला कर के, जोड़ कर के ज्ञान करना, कराना यह हमारा काम है। क्या हो गया? तत्त्वार्थ में देव शास्त्र गुरु अन्तर्निहित हैं यह हमें स्पष्ट हो गया। इसलिए तत्त्वार्थ का श्रद्धान कहना या देव-शास्त्र-गुरु का श्रद्धान कहना एक बात है।

## तत्त्वार्थ का श्रद्धान रुप सम्यग्दर्शन

अब हम थोड़ा उल्टा भी चलते हैं। जब तत्त्वार्थ में देव-शास्त्र-गुरु मिले हैं तो देव-शास्त्र-गुरु में भी तत्त्वार्थ मिलना चाहिए। कैसे? बात वही है अब आप अरिहन्त को सीधे देखो। अभी तो आप क्या देख रहे थे? मोक्ष तत्त्व देख रहे थे तब आपको सिद्ध-अरिहन्त दिखे। अब जब

आप अरिहन्त-सिद्ध देखोगे तो आपको क्या दिख रहा है? मोक्ष दिख रहा है। गुरु देखोगे तो क्या दिख रहा है? संवर, निर्जरा दिख रही है। जब तुम आपस में एक-दूसरे को देखोगे तो क्या दिखेगा? सब दिखेगा। जीव-अजीव, आस्रव-बंध सब दिखेगा। बस! सात तत्त्व हो गये। आपस में एक दूसरे को देखो सब क्या कर रहे हैं? सब आस्रव-बंध ही कर रहे हैं। किसके कारण से कर रहे हैं? जो अजीव है उसके कारण से कर रहे हैं। कौन कर रहा है? सब जीव ही तो हैं जो यह कर रहे हैं। बस तो इस जीव-अजीव के कारण से आस्रव और बंध कर रहे हैं यह आपस में देखो । गुरु में देखो- संवर-निर्जरा कर रहे हैं और भगवान में देखो- वे मोक्ष रूप हैं। कोई अन्तर नहीं है। तत्त्व इसी का नाम है। अगर हमको इस तरह से तत्त्वार्थ का श्रद्धान रूप सम्यग्दर्शन आने लगेगा तो हम इस लक्षण को कहीं पर भी fit कर सकते हैं। अब देखो! सम्यग्दर्शन जहाँ-जहाँ होता है, वहाँ-वहाँ से शुरु करो।

## सम्यग्दर्शन चारों गतियों में होता है

आपको पता है सम्यग्दर्शन कहाँ-कहाँ होता है? सम्यग्दर्शन चारों गतियों में होता है। देव गति में भी होता है, नरक गति में भी होता है, तिर्यंच गति में भी होता है और मनुष्य गति में भी होता है और जहाँ पर भी तिर्यंच या मनुष्य गति में होगा तो नियम से उन्हीं मनुष्यों को, उन्हीं तिर्यंचों को होगा जो तिर्यंच मन सहित हैं, मनुष्य तो सब मन सहित होते ही हैं।

तिर्यंचों में भी जो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच हैं उनमें होगा बस! इतनी उसकी शर्त है बाकी तिर्यंच गति में भी होता है। शास्त्रों में लिखा है तिर्यंच को भी सम्यग्दर्शन होता है। देव-नारकियों की बात तो हम बाद में कर लेंगे। मनुष्य में तो होता ही है, पशु को सम्यग्दर्शन होता है। तिर्यंच में किसी भी मछली को, कुत्ते को, शेर को, मगरमच्छ को, किसी को भी हो सकता है। जो भी संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव हैं। चाहे वह जलचर हो, चाहे थलचर हो, चाहे नभचर हो अब उनको भी सम्यग्दर्शन हो रहा है, तो यह परिभाषा उनमें भी घटित होगी। कौन सी? कुछ तो हुआ उनको!

क्या हुआ? अब महाराज! उनको तत्त्वार्थ का श्रद्धान तो हो नहीं सकता क्योंकि उन्हें तो सात

तत्त्वों के नाम ही नहीं आएँगे। हम तो फिर भी बोल लिये, पढ़ लिए, उनको क्या पढ़ने में आएगा? चलो! मान लिया उन्हें तत्त्वार्थ के नाम नहीं आएँगे तो मैंने मान लिया। वे नहीं बोल पाएँगे या सात तत्त्व नहीं समझ पाएँगे। क्या definition है? क्या सब कुछ है? उन्हें यह कुछ नहीं पता पड़ेगा लेकिन अगर देव, गुरु उनकी श्रद्धा में बैठ गए तो उन्हें जो प्रतीति होगी वही प्रतीति होगी जो प्रतीति आपको हो रही है। यह उनकी श्रद्धा में बैठ सकता है।

कोई भी तिर्यंच भगवान की प्रतिमा को देख कर के भी यह स्मरण में ले आता है, यह तो मैंने पहले कहीं देखा है और बिना सिखाये उसके अन्दर यह भी आ जाता है कि यही भगवान हैं। गुरु को देखकर के भी वह समझ सकता है, अरे! यह कोई, कुछ है, विशिष्ट चीज है। पिच्छी, कमण्डल हाथ में हैं, निर्ग्रन्थ गुरु हैं, यह कुछ अलग चीज है। उसके अन्दर अपने आप कुछ भाव-भासना हो सकती है और वह मान सकता है कि यही हमारे लिए हितकारी है और वह श्रद्धा कर लेता है। इस तरह की जब उसके अन्दर प्रतीति आ जाती है, तो वह प्रतीति देव-शास्त्र-गुरु की प्रतीति हो गई और जहाँ देव-शास्त्र-गुरु की हो गई तो वहाँ तत्त्वार्थों की भी हो गई, व्याख्यान करना जरूरी नहीं है। यह जो सम्यग्दर्शन का लक्षण है, यह पशुओं में भी घटित हो जाएगा, नारकियों में भी घटित हो जाएगा। कहीं पर भी यह अतिव्याप्ति दोष से सहित नहीं होगा।

## सम्यग्दृष्टि जीव की प्रतीति में क्या आएगा?

अब आप बताओ कि यह लक्षण कहाँ घटित नहीं होगा? कोई जीव सम्यग्दृष्टि हो और उसमें तत्त्वार्थ की श्रद्धा कैसे बनेगी? यह बताओ? ऐसा कोई उदाहरण दो? नीचे की तरफ देख लिया हमने; पशुओं में, नारकियों में, नारकियों में भी जो लड़ रहे हैं, रहे हैं, मर रहे हैं, पिट रहे हैं, कट रहे हैं, सब कुछ कर रहे हैं लेकिन जिसको सम्यग्दर्शन हो जाता है, तो उसके अन्दर यह प्रतीति रहती है। प्रतीति समझ रहे हो न मतलब इस तरीके का आभास रहता है कि यह मेरी आत्मा, यह मेरा शरीर ये दोनों भिन्न हैं और इस शरीर के कारण से मुझे यह सब दुःख हो रहा है। मैं नरक गति में यह दुःख भोग रहा हूँ, अपने पाप कर्म का दुःख भोग रहा हूँ। यह सब उसकी प्रतीति में आ रहा है लेकिन फिर भी सब करेगा।

प्रतीति में किसके आएगा? जो सम्यग्दृष्टि होगा। करेगा सब वही क्योंकि वह तो भव प्रत्यय है। भव प्रत्यय का मतलब होता है- जैसा भव मिला है, उसके कारण से जो पर्याय मिली है वह तो उसको भोगना ही है। वह तो उसको करना है ही है। जैसे पक्षी, पक्षी होगा तो उड़ने का काम करेगा ही, उसे उड़ना सिखाना नहीं पड़ता है, वह अपने आप उड़ेगा। यह कहलाता है- भव प्रत्यय। इसी तरीके से नारकीय है, तो वह नारकी एक दूसरे नारकी को देख करके मारेगा, काटेगा, गाली देगा, सब कुछ करेगा, जैसे सब कर रहे हैं लेकिन भीतर जो सम्यग्दृष्टि होगा उसके अन्दर क्या होगा? यह मैं अपने पाप कर्म का फल भोग रहा हूँ, मैं यहाँ पर अभी कोई संवर-निर्जरा नहीं कर सकता। उसकी प्रतीति में यह बात आएगी कि मुझे इन कर्मों का फल भोगना है मतलब अगर उसने इतनी भी प्रतीति चल रही है, तो कर्म मतलब सब कुछ आ गया। कर्म कहने से ही आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष सब कुछ आ गया। आत्मा और

कर्म अगर हमने दो चीजें अपनी प्रतीति में लायी तो सब कुछ आ गया। सातों तत्त्व आ गए इसमें क्योंकि कर्म ही अजीव है, उसी के आस्रव है, उसी के बंध हैं। हम उसको रोक नहीं पा रहे, निर्जरा कर नहीं पा रहे हैं, मोक्ष हम को होना नहीं, यह भी प्रतीति अगर आ रही है, तो हम सात तत्त्व जान गये। नारकी जीव भी तत्त्व की श्रद्धा इस रूप में रखता है। देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा भी रखेगा उसे वहाँ सब याद आएगा कि मैंने उनकी बात नहीं मानी थी इसलिए यह सब आज मुझे भोगना पड़ रहा है। वह भी श्रद्धा उसके अन्दर रहेगी। यह तो हो गयी नीचे की बात।

## परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन

अब चलो ऊपर। आपसे मैं पूछता हूँ कि अरिहन्त भगवान सम्यग्दृष्टि हैं कि कौन हैं? उनके पास भी सम्यग्दर्शन है कि नहीं? सिद्धों के पास भी कुछ होता है कि नहीं होता है? उनके पास भी होता है- सम्यग्दर्शन तो वे भी क्या करते रहते हैं? तत्त्व का श्रद्धान करते रहते हैं क्या? देव-शास्त्र-गुरु का श्रद्धान कर रहे हैं। क्या कर रहे हैं वे? अब सम्यग्दर्शन का लक्षण तो उनमें भी घटित होना चाहिए। 'तत्त्वार्थश्रद्धानं

सम्यग्दर्शनम्' देव शास्त्र गुरु का श्रद्धान सम्यग्दर्शन है, तो अब उनमें क्या होगा? अरे! मार्ग है, तो मोक्ष में भी सम्यग्दर्शन नहीं है क्या? अरिहन्तों में भी सम्यग्दर्शन है कि नहीं? समझो! उनमें वह सम्यग्दर्शन किस रूप होगा? अब यह सोचने की कोशिश करो। देखो! हम आज अभी जान रहे हैं, श्रद्धा कर पा रहे हैं लेकिन हमारी श्रद्धा कैसी है? थोड़े ज्ञान के साथ में है क्योंकि हमारे ज्ञान का क्षयोपशम थोड़ा है। जिन अरिहन्तों को, हर जीवात्मा जैसी अमूर्त है वैसी ही कर्म से

सहित है, तो कर्म से सहित उसके परिणाम उसके भाव सब कुछ स्पष्ट दिखाई दे रहा है। उन्हें उसकी प्रतीति कितनी उत्कृष्ट हो रही होगी यह सोचो। उन्हें जीव-अजीव आदि सब पदार्थ कितने स्पष्ट दिख रहे होंगे और उसके कारण से जो उनको प्रतीति में आ रहा है, उसका नाम सम्यग्दर्शन है।
इसको शास्त्रों में एक नाम दिया गया- परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन। परमावगाढ़! वे इतने ज्यादा उसमें, प्रतीति में अवगाहित हो गए, इतना परम अवगाढ़ हो गया उसमें कि उनकी वह प्रतीति कभी भी छूटेगी नहीं। हमारी प्रतीति तो छूट ही जाती है। सोते समय कुछ ध्यान रहता है? खाते समय कुछ ध्यान रहता है? भोग भोगते समय कुछ याद रहता है? प्रतीति कहाँ चली जाती है? क्या सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि हो जाता है? हो तो नहीं जाता लेकिन फिर भी उस प्रतीति में अन्तर तो आ जाता है। वह अवगाढ़ नहीं हैं। वह प्रतीति सम्यग्दृष्टि गृहस्थ जीव की भी सोते, खाते, भोग करते समय पर रहेगी क्योंकि यह सम्यग्दर्शन का लक्षण है लेकिन वह अवगाढ़ रूप से वैसी नहीं रहेगी जैसी उसकी विवेक के साथ में, ज्ञान दशा के साथ में रहती है।

उन केवली भगवान के, अरिहन्त, सिद्ध आत्माओं में वह प्रतीति ऐसी हो गई जैसा मैंने सोचा था वैसा दिख रहा है। बात तो वही है हम तो यहाँ केवल सोच करके श्रद्धा कर रहे हैं। ज्ञान में विचार करके श्रद्धा कर रहे हैं और जिसकी श्रद्धा कर रहे हैं वे सब दिखने लग जाए तो आप सोचो कितनी अच्छी प्रतीति होगी। वह प्रतीति, वह श्रद्धा उन अरिहन्त और सिद्धों में है।

## अरिहन्त, सिद्ध आत्माओं की श्रद्धा परमावगाढ़ है

SCAN TO WATCH

फिल्म देखने जाते हो? जब आपको कोई फिल्म के बारे में बता रहा हो। नयी movie आई है, यह hero है, यह उसमें मतलब scene हैं। ये-ये उसमें action हैं। ये उसमें songs हैं। अब आपने यह सब सुन लिया, सुन लिया यह तो लग गया कि हाँ! अच्छी है फिल्म देखना जरूर है लेकिन अभी दिख तो नहीं रही है। आपकी श्रद्धा में आ गई, रुचि बन गई, आपके अन्दर उसका एक भाव आ गया। लेकिन यह सब कुछ क्या है? अभी अप्रत्यक्ष है। जब आप theatre में गए, सामने वही action देखा, वही song सुना तब जो आपको प्रतीति होगी वह पहले हो रही थी? आप कहोगे वह तो मुझे पहले ही मालूम था यही गाना आएगा। इसमें यही गाना था लेकिन उसमें और इसमें बहुत अन्तर हो गया। इसी तरीके से, ये तो छोटे-छोटे उदाहरण हैं तुम्हारी बुद्धि में कुछ तो घुस जाए। अरिहन्त भगवान जिन्हें तीन लोक के सभी जीव दिख रहे हैं, एक-एक जीव दिख रहा है। हम तो सुन रहे हैं जीव और सामने बैठे हुए जीव को भी हम जीव नहीं मानते फिर भी उसे थप्पड़ मारते हैं और फिर भी हम कहते हैं हमारी जीव पर श्रद्धा है और उनको तो जीव दिख ही रहा है कि यह जीव है, यह कर्म है, यह कर्म के इतने बंध इतनी निर्जरा है, इसके इतने आस्रव हो रहे हैं, इतने कारण हैं। सब उनको स्पष्ट दिख रहा है, उनकी प्रतीति तो

तत्त्वार्थ के रूप में बिल्कुल अवगाढ़ हो गई है मतलब जिसे बोलते हैं एकदम दृढ हो गई, लीन हो गई। उन्हें करना नहीं पड़ रहा है वे उसमें बिल्कुल लीन हो गए। हमें करना पड़ता है। हमें क्या करना पड़ता है? हाँ! हमें श्रद्धा करनी पड़ती है। उन्हें श्रद्धा परमावगाढ़ हो गई इसलिए बोलना पड़ता है। अब तो बोलो इसको बोलते हैं- **सम्यग्दर्शन का लक्षण अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असम्भव इन दोषों से रहित है।** असम्भव इसलिए भी नहीं है क्योंकि सम्यग्दर्शन होता है। क्यों नहीं होगा? क्या सभी लोग इसी तरीके की मिथ्या चीजों पर ही श्रद्धा किए रहते हैं और अगर दुनिया में मिथ्या चीजें हैं तो सम्यक् चीजें भी होंगी।

जो सम्यक् चीजों पर श्रद्धा करेंगे, अच्छी सही चीजों पर श्रद्धा करेंगे वे सम्यग्दर्शन को प्राप्त करेंगे और जो इस पर श्रद्धा नहीं करेंगे उनके अन्दर मिथ्यात्व रहेगा वे मिथ्या दृष्टि कहलाएँगे, वह मिथ्या दर्शन के भाव में रहेंगे। असम्भव तो कुछ नहीं है और यह देखने में भी आता है कि कितने ही जीवों में कितनी दृढ श्रद्धा देखने को मिलती है- अरिहन्त भगवान के प्रति, गुरु के प्रति, शास्त्र के प्रति, ज्ञान के प्रति, चारित्र के प्रति। यह सब क्या है? यह सब सम्यग्दर्शन के ही परिणाम हैं। इस तरह से हम इस सम्यग्दर्शन के लक्षण को समझे और जो बीच में एक सूत्र था- निसर्ग और अधिगम वाला, इस सूत्र की चर्चा आप से कल की जाएगी। तत्त्वार्थ का सम्बन्ध इन सात तत्त्वों से है इसलिए आपको यह सूत्र बीच में बताया गया। अब आ गया समझ में?

## सात तत्त्वों में सामान्य-विशेष

सबको ध्यान में रखना है, सबको सम्यग्दर्शन प्राप्त करना है यदि मोक्ष के मार्ग पर चलना है और वह इतनी सरलता से प्राप्त होगा कि बस आपको केवल अपनी श्रद्धा दृढ बनानी है। किस पर? सात तत्त्वों पर। उसका सामान्य रूप देखे तो देव-शास्त्र-गुरु हैं और विशेष रूप देखे तो

सात तत्त्व हैं और उन सात तत्त्वों में भी अगर हम सामान्य-विशेष घटित करना चाहे तो जीव-अजीव ये दो तो हो गए सामान्य और आस्त्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष ये उसके हो गए विशेष क्योंकि सामान्य की जो विशेषताएँ हैं, सामान्य के ही मिलने-बिछड़ने से जो पर्याय बन रही है वही विशेष कहलाती हैं। जीव-अजीव इन दो द्रव्यों पर, दो तत्त्वों पर अगर हमारी श्रद्धा हुई तो यह हमारी सामान्य पर श्रद्धा हुई और जब हमने इन पाँच और तत्त्वों को भी इनके साथ जोड़ लिया तो हमारी सामान्य, विशेष सम्पूर्ण तत्त्वार्थों पर पूर्ण श्रद्धा हुई। इस तरह से अपनी श्रद्धा को श्रद्धा के ही रूप में ढालना। श्रद्धा का मतलब प्रतीति में लाना, वैसा ही आपको महसूस होना चाहिए। अपने भी जीवात्मा को उसी रूप में प्रतीति में लाओ। मैं जीव आत्मा ही हूँ, शरीर तो शरीर ही है, जानने से नहीं काम बनेगा। काम किससे बनेगा? श्रद्धा! श्रद्धा का मतलब मान लेना और जहाँ मान लेते हैं, मान लेने का मतलब हमने ठान लिया। मानना और ठानना एक ही बात होती है।

SCAN TO WATCH

जान लेना तो कोई भी का जान सकता है लेकिन मान लेना सबके बस की बात नहीं होती है और मानने वाला ही उसको ठान लेगा। नहीं! जीव मतलब जीव ही होता है, अजीव मतलब अजीव होता है, जीव माने जीव ही होता है,कर्म मतलब कर्म ही होता कर्म ही होता है। वे कैसे जीव हैं? वह हमें पता है। कैसे कर्म हैं? वह हमें पता है। इस तरह की जो दृढ प्रतीति लाता है, उसी को सम्यग्दर्शन होता है। जानना तो एक उपाय है। किसके लिए? श्रद्धा को बनाने के लिए। इसलिए श्रद्धा को पहले रखा है, सम्यग्दर्शन को पहले रखा है। पूज्यता सम्यग्दर्शन में है, ज्ञान में नहीं है इसलिए सम्यग्दर्शन पहले रखा गया है, सम्यग्ज्ञान बाद में है। जो पूज्य होता है, उसको पहले रखा जाता है। ज्ञान से अगर इस तरीके की श्रद्धा बन गई तो सम्यग्दर्शन हो गया और सम्यग्दर्शन हो गया फिर उसके बाद में जो आपके अन्दर ज्ञान की परिणति चलेगी वह सम्यग्ज्ञान कहलाएगी तब आपका ज्ञान भी पूज्य हो जाएगा। इसलिए सम्यग्दर्शन पहले है, ज्ञान बाद में है लेकिन ज्ञान के माध्यम से ही सम्यग्दर्शन होगा, अज्ञान के माध्यम से नहीं होगा। इतना ही समझना यह आज तत्त्वार्थ सूत्र के दो सूत्र समझे, बीच का जो सूत्र रह गया उसकी चर्चा बाद में करेंगे।

---

# सारांश

1. तत्त्वार्थ सूत्र में गृद्ध पिच्छाचार्य ने प्रारम्भ में मोक्ष मार्ग का वर्णन करते हुए अन्ततः मोक्ष की व्याख्या की है इसलिए इसे मोक्ष शास्त्र भी कहते हैं
2. "तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यक् दर्शनं" में सम्यग्दर्शन का लक्षण बताया
- अर्थात तत्त्वार्थ की सही श्रद्धा करना ही सम्यग्दर्शन है।
3. इस सूत्र में सम्यग्दर्शन- कार्य या लक्ष्य है; श्रद्धा - लक्ष्य की प्रतीति है और तत्त्वार्थ अधिकरण है
4. सम्यक् श्रद्धा का अर्थ है समीचीन श्रद्धा या प्रशंसनीय श्रद्धा जो मोक्ष मार्ग के लिए उपयोगी होती है
5. वस्तु का लक्षण ही उसकी परिभाषा है जो उसके मूलभूत गुणों पर depend करती है और यह किसी भी परिस्थिति में खण्डित नहीं होती
6. हमने देखा कि किसी वस्तु की सही परिभाषा को समझने के लिए उसे तीन दोषों से रहित होना चाहिए
7. यह law सभी परिभाषाओं के लिए है चाहे वो physics, chemistry की definition हों या सम्यग्दर्शन की
8. पहला दोष है अव्याप्ति दोष जिसमें लक्षण लक्ष्य में भी एक देश में व्याप्त है जैसे चितकबरी गाय
- व्याप्ति का अर्थ है जो हमेशा लक्ष्य में व्याप्त रहे।
9. दूसरा दोष है अतिव्याप्ति दोष जिसमें लक्षण लक्ष्य के साथ अलक्ष्य में भी घटित होता है जैसे गाय का लक्षण है सींग होना
10. तीसरा दोष है असम्भवी दोष जिसमें लक्षण असम्भव हो जैसे गाय का लक्षण है माँ होना
11. तीनों दोषों को आत्मा के लक्षण से समझने के लिए
- अगर केवलज्ञान आत्मा का लक्षण है तो इसमें अव्याप्ति दोष है
- अमूर्तपना है तो इसमें अतिव्याप्ति दोष है
- और अगर जड़त्व है तो इसमें असम्भव दोष है
12. वास्तव में आत्मा का लक्षण है - उपयोग जैसे ज्ञानोपयोग, दर्शनोपयोग
13. तत्त्वार्थ सूत्र में सम्यग्दर्शन की परिभाषा तीनों दोषों से रहित है।
14. तत्त्वार्थ का भावार्थ- भाव से सहित जो पदार्थ है उसकी श्रद्धा का नाम सम्यग्दर्शन है। क्योंकि भाव के बिना पदार्थ नहीं होता, पदार्थ के बिना उसका भाव नहीं होता।
15. सम्यग्दर्शन को समझने के लिए दो सैद्धान्तिक परिभाषाएँ हैं।
- तत्त्वार्थ सूत्र के अनुसार तत्त्वार्थों का श्रद्धान सम्यग्दर्शन होता है

16. तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यक दर्शनं
17. और रत्नकरण श्रावकाचार के अनुसार देव-शास्त्र-गुरु पर श्रद्धान सम्यग्दर्शन है
- श्रद्धानं परमार्थानां माप्तागं तपोव्रतां
- त्रिमूरामूढ़ मष्टांगम् सम्यक् दर्शन मस्मयम्

18. दोनों ही परिभाषाएं एक दूसरे का पूरक हैं बाकि की जो परिभाषाएँ समयसार में हैं वे आध्यात्मिक हैं।
19. हमने समझा की वास्तव में दोनों परिभाषाएँ एक ही हैं
20. हमने समझा किस तरह से हम देव-शास्त्र-गुरु में ही तत्त्वार्थ निहित हैं
21. सिद्ध भगवान में कर्म रूप अजीव तत्त्व से रहित आत्मा देखें I
22. आत्मा का जड़ के अलग होने में मोक्ष देखें
23. अरिहंत भगवान में शरीर (अजीव पदार्थ) में रहकर शरीर से भिन्नता देखें
24. गुरु में संवर और निर्जरा देखें
25. संवर यानी आत्मा में आते कर्मों को रोकना, आस्रव को रोकना
26. निर्जरा = बंधे कर्म का टूटना
27. संवर और निर्जरा विरोधी हैं आस्रव और बंद के
28. अतः हम कह सकते हैं कि संवर से पाप और पुण्य का आस्रव रोक रहे हैं और पहले से बंधे हुए कर्म की निर्जरा कर रहे हैं
29. हम यदि में देखेंगे तो हमें जीव-अजीव, आस्रव-बंध सब दिखेगा।
30. इसी तरह हम तत्त्वर्थों में भी देव-शास्त्र-गुरु देख सकते हैं
31. जीव तत्त्व और अजीव तत्त्व के अलग होने पर मोक्ष तत्त्व देखने पर सिद्ध-अरिहन्त यानि देव में दिखता है
32. संवर, निर्जरा, आस्रव का रोकना, बंध का हटाना हमें गुरु में दिखता है
33. शास्त्र में हमें तत्वार्थ और देव-शास्त्र-गुरु दोनों का ज्ञान मिलेगा
34. हमने जाना की सम्यग्दर्शन चारों गतियों में होता है- देव गति, नरक गति, मनुष्य गति और संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच गति
35. सम्यग्दृष्टि जीव की प्रतीति में क्या आएगा? आत्मा और कर्म का आभास
36. भव प्रत्यय- जैसा भव मिला है, उसके कारण से जो पर्याय मिली है, उसको भोगना ही भव प्रत्यय है।
37. अरिहन्त और सिद्ध में परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन होता है
38. यानि वे इतने ज्यादा प्रतीति में अवगाहित हो गए, इतना परम अवगाढ़ हो गया उसमें कि उनकी वह प्रतीति कभी भी छूटेगी नहीं
39. सम्यग्दर्शन का सामान्य रूप है देव-शास्त्र-गुरु पर दृढ श्रद्धा
40. सम्यग्दर्शन का विशेष रूप है सात तत्त्व पर दृढ श्रद्धा
41. सामान्य रूप में दो ही तत्व हैं जीव और अजीव, और विशेष रूप से ५ तत्त्व और हैं

# अभ्यास प्रश्न पत्र

प्रश्न 1 -तत्त्वार्थ सूत्र को और क्या कहते हैं?
1. मोक्ष मार्ग शास्त्र
2. मोक्ष शास्त्र
3. मोक्ष मार्ग प्रकाशक

प्रश्न 2 -'तत्त्वार्थ_____ सम्यग्दर्शनम्' - रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये-
1. श्रद्धानं
2. ज्ञानं
3. दर्शनं

प्रश्न 3 -पहला दोष कौनसा है?
1. असंभवी दोष
2. अतिव्याप्ति दोष
3. अव्याप्ति दोष

प्रश्न 4 -दूसरा दोष कौनसा है?
1. अतिव्याप्ति दोष
2. अव्याप्ति दोष
3. असंभवी दोष

प्रश्न 5 -तीसरा दोष कौनसा है?
1. संभावित दोष
2. असंभव दोष
3. उपरोक्त में से कोई नहीं

प्रश्न 6 -'गाय हमारी माँ होती है।' - यह कौनसा दोष है?
1. अतिव्याप्ति दोष
2. असंभवी दोष
3. अव्याप्ति दोष

प्रश्न 7 -'केवल ज्ञान आत्मा का लक्षण है।' यह कैसा है?
1. सदोष
2. निर्दोष
3. पर्याप्त

प्रश्न 8 -तत्त्वार्थ शब्द कैसे बनता है?
1. तत्त्व + अर्थ
2. तत् + व + अर्थ
3. तत् + व् + अर्थ

प्रश्न 9 -तत्त्व का क्या मतलब होता है?
1. भाव
2. श्रद्धान
3. पदार्थ

प्रश्न 10 -अर्थ का क्या मतलब होता है?
1. भाव
2. श्रद्धान
3. पदार्थ

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE
उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

प्रश्न 11- अरिहन्त-सिद्ध किस रूप हैं?
1. मोक्ष
2. बंध
3. आस्रव

प्रश्न 12-'तत्त्वार्थश्रद्धानं ________'- रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये।
1. सम्यग्ज्ञानम्
2. सम्यग्दर्शनम्
3. सम्यग्चारित्रम्

प्रश्न 13-नारकियों में सम्यक् दर्शन हो सकता है।
1. सही
2. गलत

प्रश्न 14-सम्यग्दर्शन किसके माध्यम से नहीं होगा?
1. ज्ञान के
2. अज्ञान के

प्रश्न 15-जैसा भव मिला है, उसके कारण से जो पर्याय मिली है वह तो उसको भोगना ही है। -ये क्या कहलाता है?
1. भव प्रत्यय
2. किस्मत
3. विधि का विधान

प्रश्न 16-क्षमा का सद्भाव मतलब क्या होता है?
1. क्रोध का भाव
2. अशांत मन

प्रश्न 17-'आस्रव रोकने का नाम क्या है?
1. निर्जरा
2. मोक्ष
3. संवर

प्रश्न 18-जीवाजीवास्रव बन्धसंवरनिर्ज्जरा मोक्षास्तत्त्वम्।। - यह कौनसा सूत्र है?
1. दूसरा
2. तीसरा
3. चौथा

प्रश्न 19-इनमें से कौनसा तत्व नहीं है?
1. पाप
2. बन्ध
3. अजीव
4. जीव

प्रश्न 20-सम्यग्दर्शन कौनसे तिर्यंचों को होता है?
1. संज्ञी पंचेन्द्रिय
2. असंज्ञी पंचेन्द्रिय

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE
उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

# अभ्यास प्रश्न पत्र 'विषयक'

प्रश्न - 1 तव्वार्थ सूत्र जी को मोक्ष-शास्त्र क्यों कहा जाता है?

प्रश्न - 2 किसी वस्तु की सही परिभाषा में कौन से दोष नही होने चाहिये? उदाहरण सहित लिखें।

प्रश्न - 3 सम्यग्दर्शन का लक्षण क्या है?

प्रश्न - 4 "तत्त्वार्थ का श्रद्धान" से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न - 5 "तत्त्वार्थ में भी देव शास्त्र गुरु है और देव शास्त्र गुरु में भी तत्त्वार्थ है"। ये कथन कैसे सिद्ध होता है?

प्रश्न - 6 भव प्रत्यय क्या होता है?

प्रश्न - 7 परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन क्या होता है? परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन किस को होता है?

प्रश्न - 8 सम्यग्दर्शन कौन-कौन सी गति में होता है और किस प्रकार होता है?

प्रश्न - 9 क्या अरिहंत सिद्ध आत्माओं के पास सम्यग्दर्शन होता है? अगर होता है तो कौन सा सम्यग्दर्शन होता है?

प्रश्न - 10 सम्यग्दर्शन को सम्यग्ज्ञान से पूर्व क्यों कहा गया है?

प्रश्न - 11 सम्यग्दर्शन की २ सैद्धांतिक परिभाषाएँ लिखिए। और उनका चिंतन कीजिए

# प्रवचन: 3

## सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति में हेतु और उसके प्रकार

**तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥1.3॥**

**तत् + निसर्गात् + अधिगमात् - वा**

**पर से या पर ज्ञान बिन, उपजे सम्यकदर्श।**
**भेद अधिगमज निसर्गज, देते सबको हर्ष ॥1.3॥**

यहाँ पर सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति में क्या हेतु है ? क्या कारण है? यह बताया जा रहा है। सम्यग्दर्शन, एक तो निसर्ग से उत्पन्न होता है और एक अधिगम से उत्पन्न होता है। निसर्ग माने होता है- स्वभाव और अधिगम माने होता है- पर उपदेश पूर्वक होने वाला ज्ञान। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति इन दोनों ही कारणों से होती है। मतलब सम्यग्दर्शन स्वभाव से भी उत्पन्न हो सकता है, उपदेश से जो ज्ञान उत्पन्न होता है उससे भी हो सकता है और होता है। सम्यग्दर्शन कैसे प्राप्त होता है? उसकी यही हेतु है। यही उसके मुख्य कारण हैं। कारणों का ज्ञान होने पर ही कार्य की प्राप्ति की जा सकेगी। इसलिए इन दोनों हेतुओं को ध्यान में रखते हुए ही तीन प्रकार के सम्यग्दर्शनों को जानना चाहिए

1. एक कहलाता है- उपशम सम्यग्दर्शन
2. दूसरा कहलाता है- क्षयोपशम सम्यग्दर्शन

तत् ⟶ सम्यग्दर्शन (तीनों ही प्रकार के)
निसर्गाद ⟶ निसर्ग (स्वभाव) से
वा ⟶ अथवा
अधिगमाद ⟶ अधिगम (पर उपदेश) से उत्पन्न होते हैं

3. और तीसरा कहलाता है- क्षायिक सम्यग्दर्शन

ये तीनों प्रकार के जो सम्यग्दर्शन उत्पन्न होते हैं, इनके पीछे दो कारण होते हैं-
1) निसर्ग 2) अधिगम

SCAN TO WATCH

तीनों ही प्रकार के सम्यग्दर्शन, दोनों ही कारणों से होते हैं यानि उपशम सम्यग्दर्शन भी निसर्ग से होगा, अधिगम से होगा। क्षयोपशम सम्यग्दर्शन भी निसर्ग से होगा, अधिगम से होगा क्षायिक सम्यग्दर्शन भी निसर्ग से होगा, अधिगम से होगा। अब यहाँ पर विचारणीय बात यह है कि निसर्ग का मतलब क्या और अगर कोई सम्यग्दर्शन निसर्ग से ही होता है, तो क्या उसमें अधिगम की आवश्यकता होती है या नहीं होती है? या जो सम्यग्दर्शन अधिगम से होता है, तो वह अधिगम से ही होता है, उसमें भी कुछ निसर्गपना होता है या नहीं होता? हमें यह जानना है कि यहाँ पर दो प्रकार के हेतु दिए गए हैं। "तत् निसर्गात् अधिगमात् वा" ऐसा लिखा है। 'तत्' मतलब 'वह सम्यग्दर्शन' निसर्ग से, 'वा' मतलब 'अथवा' होता है अथवा अधिगम से उत्पन्न होता है। 'जायते यह क्रिया पद उसमें जोड़ लिया जाएगा, उत्पन्न होता है। सूत्र जो होते हैं, वे इसी तरह की संक्षिप्त होते हैं। क्रिया आदि पदों की अधिकता से उपयोग सूत्रों में नहीं होता। अतः सम्यग्दर्शन निसर्ग से भी होता है,अधिगम से भी होता है।

## क्या अधिगम के बिना केवल निसर्ग से सम्यग्दर्शन हो सकता है ?

अब हम थोड़ा इन दोनों के बीच का जो difference है, उसको जानने की कोशिश करते हैं कि - निसर्ग का मतलब स्वभाव है और अधिगम का मतलब पर उपदेश है। यह व्याख्या आचार्यों के द्वारा जो की गई है, वह सबके लिए मान्य है और सभी आचार्यों ने इसी परिभाषा को माना है। अब प्रश्न यह होता है कि क्या सम्यग्दर्शन हमें स्वभाव से उत्पन्न हो सकता है ? स्वभाव से मतलब ? कुछ किये बिना, बिना पुरुषार्थ के। स्वभाव का मतलब क्या है यहाँ? कुछ हम करे नहीं, कोई पुरुषार्थ नहीं करे या कोई भाव नहीं करे। क्या सम्यग्दर्शन अपने आप स्वभाव से उत्पन्न हो जाएगा? और दूसरा जो होता है, वह अधिगम से होता है, पर-उपदेश से होता है। दूसरे का उपदेश मिले तो भी हो सकता है और दूसरे का उपदेश नहीं मिले तो भी हो सकता है। जब दूसरे का उपदेश नहीं मिल कर होगा तो वह निसर्ग से होगा और जो दूसरे के उपदेश के साथ होगा, वह अधिगम से होगा। विचारणीय बात यह है कि ऐसा भी होता है कि सम्यग्दर्शन उपदेश के बिना भी हो सकता है। समझ में आया?

## भ्रान्ति- निसर्ग से पहले अधिगम सम्यग्दर्शन होता है ?

अब जब यहाँ पर ऐसी बात आती है, तो अपने चिन्तन से, बहुत से विद्वानों का ऐसा कहना होता है कि जो अधिगम सम्यग्दर्शन है, वह तो सम्यग्दर्शन के लिए कारण है ही लेकिन जो निसर्ग है वह तब कारण है जब पहले कभी अधिगम हो चुका हो। यानी हमने कभी न कभी पर उपदेश सुना होगा फिर बाद में सम्यग्दर्शन होने के बाद भी हमने उस सम्यग्दर्शन को छोड़ दिया होगा और जब वह सम्यग्दर्शन हमें फिर कभी होगा तो उसमें यह संभावना है कि पर उपदेश के बिना भी निसर्ग से, स्वभाव से हमको सम्यग्दर्शन हो जाए।

लेकिन एक बार तो पर उपदेश होना जरूरी है, बिना उपदेश के तो आपको कभी कोई ज्ञान नहीं हो सकता और ज्ञान के बिना तत्त्वों का श्रद्धान हो नहीं सकता तो सम्यग्दर्शन कैसे होगा? यह कुछ विद्वानों का ऐसा मानना है। मैं विद्वानों का मानना गलत नहीं कह रहा हूँ, आप डरे नहीं। जो विद्वानों ने कहा है, इस अभिप्राय को भी आपको ध्यान में रखना है। यानि अधिगम सम्यग्दर्शन तो होना ही चाहिए क्योंकि पर-उपदेश किये बिना आपको तत्त्व का ज्ञान नहीं होगा। तत्त्व का ज्ञान हुए बिना तत्त्व का श्रद्धान नहीं होगा और उस तत्त्व का श्रद्धान ही सम्यग्दर्शन बनाएगा जिसमें पहले ज्ञानपूर्वक श्रद्धा की गई हो या कम से कम ज्ञान तो किया गया हो। विद्वानों का कहना है कि वर्तमान में अगर कभी आपके लिए बिना उपदेश के सम्यग्दर्शन होगा तो वह तभी सम्भव है जब आपने पहले कोई ज्ञान प्राप्त कर लिया होगा। मतलब अधिगम तो हो ही चुका होगा, अधिगम तो अवश्य ही होगा। निसर्ग तो तभी होगा जब अधिगम पहले हो चुका होगा। अन्यथा स्वभाव से अपने आप बिना ज्ञान के कुछ भी नहीं होता। सुन रहे हैं? ऐसा विद्वानों का मानना है। सर्वार्थसिद्धि आदि ग्रन्थों में भी विद्वानों ने विशेषार्थ में यह सब लिख रखा है, आप

पढ़ लेना। समझ में आ रहा है? अब क्या समझाया जाए आपको? अब यही ठीक है, तो फिर कुछ आगे समझाने की कोई जरूरत है ही नहीं। लेकिन एक बात यह जरूर दिमाग में आती है, चिन्तन में आती है, गुरु महाराज भी कहते हैं कि जब सम्यग्दर्शन आज हमें अधिगम से हो रहा है या पहले भी हमें अधिगम से ही हुआ और आज अगर हमें कोई निसर्ग से हो रहा है, तो उसमें भी अधिगम पहले हो चुका है, तो फिर अधिगम का ही role रहा न? निसर्ग का तो कोई महत्व ही नहीं रहा।

## स्वभाव से भी सम्यग्दर्शन होता है और उपदेश से भी होता है

SCAN TO WATCH

आज यदि हमको वर्तमान में कभी भी आपको निसर्ग से सम्यग्दर्शन हो गया तो इसका मतलब है- पहले आपने कभी ज्ञान लिया था, उपदेश सुना था, आज उपदेश की जरूरत नहीं पड़ी क्योंकि पहले आप उपदेश सुन चुके हो, यह कहने का मतलब है। मतलब है। उस उपदेश के कारण से ही आपको वर्तमान में निसर्ग मतलब स्वभाव से सम्यग्दर्शन हो जाएगा, बिना उपदेश के हो जाएगा लेकिन पहले आप का उपदेश सुनना जरूरी है। ऐसा वे कहते हैं। कौन? कुछ विद्वान लोग। प्रश्न यह होता है, चिन्तन में यह आता है कि जब हर सम्यग्दर्शन अधिगम से ही हो रहा है, तो फिर यह दो भेद क्यों करे जा रहे हैं? वर्तमान की अपेक्षा से निसर्ग हुआ और पूर्व की अपेक्षा से अधिगम हुआ है, फिर तो यह मानना चाहिए। ऐसा तो नहीं हम कह सकेंगे कि सम्यग्दर्शन के दो भेद या दो कारणों से सम्यग्दर्शन जो हो रहा है, वे दोनों कारण अलग-अलग हैं। फिर तो एक ही कारण से हो रहा है, मुख्य तो अधिगम ही हो गया। क्योंकि एक बार आपको अधिगम से हो गया था, छूट गया। आज फिर स्वभाव से आपको सम्यग्दर्शन हो गया तो हम उसको निसर्ग कह तो दिये लेकिन वह हुआ तो पहले के अधिगम के कारण से था। कारण तो अधिगम ही रहा, निसर्ग क्या रहा फिर उसमें? भले ही आज हो रहा हो।सुन रहे हैं, आप न भी सुनेंगे तो बहुत सारे लोग सुन रहे हैं। किसी न किसी के कान में एकदम से झनझनाहट भी होगी और किसी न किसी की नींद एकदम से उड़ भी जाएगी क्योंकि आज तक जो सुन रखा है, उसको ऐसा लग रहा है महाराज कुछ अलग कहने वाले हैं। हाँ! कहना भी है। इसलिए बात शुरू की जा रही है, भूमिका बनाई जा रही है।

अगर हम कहे कि सम्यग्दर्शन आज हो रहा है, तो पहले कभी अधिगम हुआ है। पहले अधिगम से हुआ है, तो फिर अधिगम से ही हो गया न? फिर निसर्ग कहने की जरूरत ही क्या है? यह जो सूत्र है, इसमें निसर्ग शब्द का जो महत्व है, वह नहीं बनता है और कहीं भी आचार्यों ने यह नहीं लिखा कि वर्तमान में, वर्तमान पर्याय की अपेक्षा से तो निसर्ग जानना और पूर्व पर्याय की अपेक्षा से अधिगम जानना। ऐसा कोई स्पष्ट उल्लेख तो पढ़ने में आया नहीं। इससे भी हम यह नहीं कह सकते हैं कि इस तरह की जो धारणा बन रही है या समझाया जा रहा है या जो चिन्तन

दिया जा रहा है, यह सही है। हो सकता है सही लेकिन सही नहीं भी हो सकता है क्योंकि अगर हम सूत्र देखे और सूत्र की व्याख्या देखें तो सम्यग्दर्शन के दो कारण हैं। स्वभाव से भी

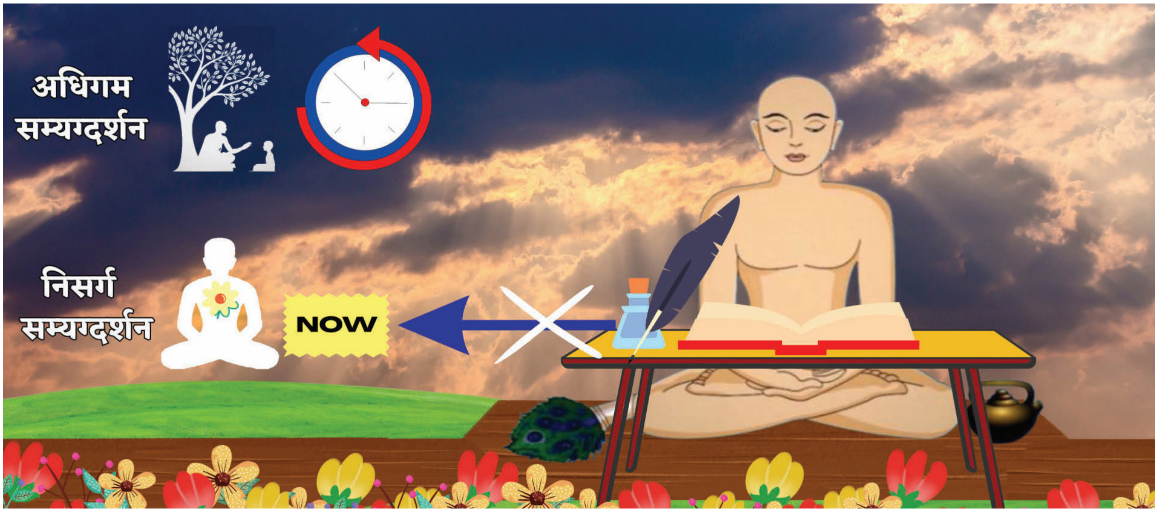


सम्यग्दर्शन होता है और उपदेश से भी होता है। मान लोगे? फिर आपको यह मानना पड़ेगा, उपदेश के बिना भी किसी को सम्यग्दर्शन हो सकता है। जब आप यह मान लोगे कि हाँ! महाराज इसमें भी क्या बात है? फिर आपके दिमाग में आएगा जब उपदेश ही नहीं मिला तो तत्त्व का श्रद्धान कैसे हो जाएगा? क्योंकि उसको तत्त्व का ज्ञान तो है ही नहीं। फिर आप कहोगे नहीं! महाराज! फिर तो पण्डित जी कह रहे थे, वही वाली बात ठीक है। आपकी बात जम नहीं रही। सोच लो! अगर उपदेश से होने वाला सम्यग्दर्शन, हमारे लिए अधिगम कहलाता है, तो हम यह भी ध्यान रखे कि निसर्ग में केवल उपदेश की मना की गई है। निसर्ग मतलब जिस स्वभाव से है, उस स्वभाव का मतलब यह है कि उसमें अन्य किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। अन्य किसी तरह के प्रयास करके आपको पढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन अन्य चीजे तो है, जिसके कारण से वह होता है। एक पर-उपदेश ही सब कुछ तो नहीं है।

## पर उपदेश निसर्ग से सम्यग्दर्शन उत्पत्ति में कारण नहीं

SCAN TO WATCH

पर-उपदेश के बिना और भी बहुत से कारण होते हैं, जिनसे भी सम्यग्दर्शन होता है। आगे आपको बताएँगे सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के कितने कारण हैं उसमे से दो जाति स्मरण, जिन बिम्ब का दर्शन यह भी सम्यग्दर्शन में कारण होता है, इससे भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है। अब जिनेन्द्र भगवान का बिम्ब हैं और उसको देखने से किसी को सम्यग्दर्शन हो जाए। फिर आप वही शर्त लगा दोगे कि जिन-बिम्बों को देखने से उसी को सम्यग्दर्शन होगा जिसने पहले कभी तत्त्व का श्रद्धान कर

रखा हो। क्योंकि भगवान तो कोई बोल नहीं रहे हैं और जिन बिम्ब देखने से सम्यग्दर्शन हो गया तो फिर आपको तत्त्व का श्रद्धान कैसे हो गया? क्योंकि तत्त्व का ज्ञान तो हुआ ही नहीं, भगवान तो कुछ बोल ही नही रहे है। वह तो बिम्ब है, प्रतिबिम्ब है, प्रतिमा है। उसको देखने से कैसे सम्यग्दर्शन हो जाएगा?

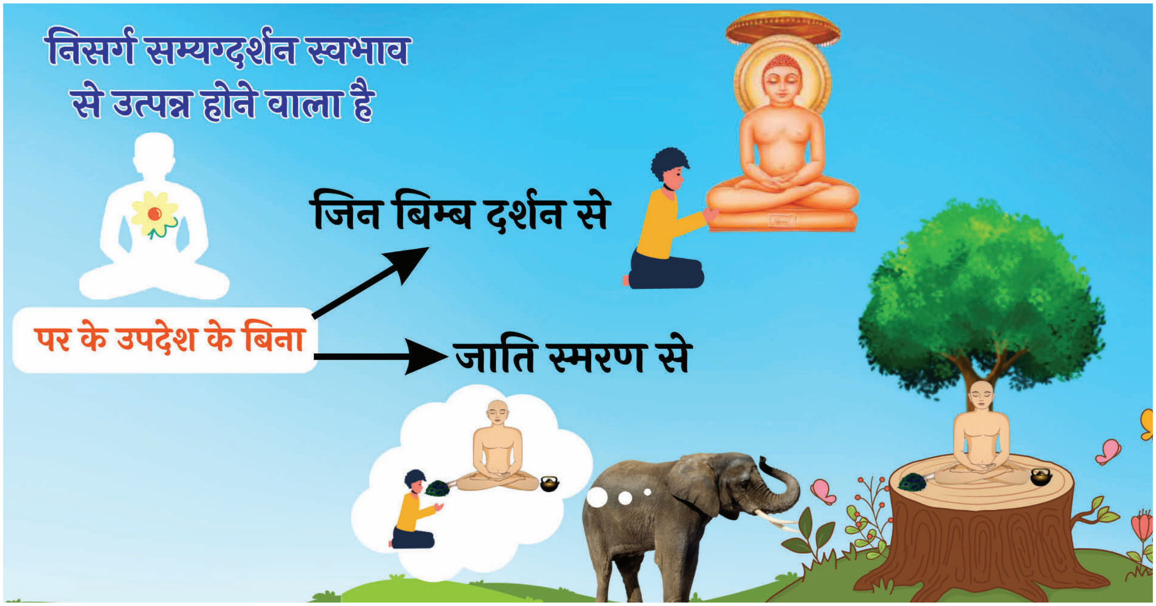


आप कहोगे नहीं! वह भी पहले कभी ज्ञान ले चुका होगा, अधिगम हो चुका होगा। तभी उसको वर्तमान में जिन बिम्ब के दर्शन से सम्यग्दर्शन होगा।वहाँ पर भी फिर वही शर्त लगा दोगे आप। हमें ऐसा लगता है कि इस तरह की शर्त लगा कर के अगर आप हर चीज की व्याख्या करेंगे तो यह कहीं न कहीं हम सूत्रों के साथ अन्याय करेंगे। सूत्र में जो लिखा है, हमें उस पर ध्यान देना है। स्वभाव का मतलब सिर्फ इतना है कि पर के उपदेश के बिना। यानि हमें भगवान जिनेन्द्र देव की प्रतिमा को देखने से भी सम्यग्दर्शन हो सकता है,पर उपदेश के बिना।उसको हम कहेंगे स्वभाव से,निसर्ग से उत्पन्न होने वाला सम्यग्दर्शन। समझ में आ रहा है? अब इसमें आप अगर अपना ज्ञान वाला दिमाग लगाओगे, वही वाला जो कल हमने समझाया था। तत्त्व का श्रद्धान नहीं होगा, तत्त्व का ज्ञान नहीं होगा तो फिर आपको यह भी ध्यान रखना कि कल हमने यह भी समझाया था कि अरिहन्त में सब तत्व गर्भित है।जिसकी यह श्रद्धा हो गई,यही देव,यही अरिहन्त,यही मोक्ष मार्ग को बताने वाले,यही हमारे भगवान है तो उसे सब तत्व का ज्ञान आ गया।जब ऐसा होगा तभी जिनेन्द्र भगवान के उस दर्शन से, उपदेश के बिना भी, निसर्ग से वह सम्यग्दर्शन कहा जाएगा और इसमें कोई आपत्ति की बात नहीं है।

## अनादि मिथ्यादृष्टि जीव किसे कहते है ?

जिसने अनादि काल से कभी भी सम्यग्दर्शन को प्राप्त नहीं किया,एक बार भी जिसने सम्यक्त्व का आभास नही किया,उसे अनादि मिथ्या दृष्टि कहते है। ऐसा अनादि मिथ्यादृष्टि जीव भी जब सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है, तो वह जीव दोनों तरह से प्राप्त कर सकता है- निसर्ग से भी और अधिगम से भी। अगर हम पण्डित जी की बात या चिन्तन में यही मान कर के चलेंगे कि नहीं पहले उसे हो चुका होगा तो फिर हम यह नहीं कह सकेंगे कि अनादि मिथ्यादृष्टि जीव को दो तरह से सम्यग्दर्शन होता है। फिर तो यह कहना पड़ेगा कि अनादि मिथ्यादृष्टि जीव को तो अधिगम से सम्यग्दर्शन होता है और सादि मिथ्यादृष्टि जीव को अधिगम से भी हो सकता है, निसर्ग से भी हो सकता है, ऐसा कहना पड़ेगा। लेकिन ऐसा नहीं है। सूत्र जो कहे जा रहे हैं, सम्यग्दर्शन बताया जा रहा है, सम्यग्दर्शन के भेद बताए जा रहे हैं, वह भेद अनादि मिथ्यादृष्टि जीव के लिए ही बताए जा रहे हैं क्योंकि कोई भी जीव सम्यग्दर्शन की प्राप्ति पहली बार करेगा तो वह इन दोनों हेतुओं में से किसी भी हेतु से कर सकता है। निसर्ग से भी कर सकता है, अधिगम से भी कर सकता है। सम्यग्दर्शन बताया जा रहा है, सम्यग्दर्शन के भेद बताए जा रहे हैं, वह भेद अनादि मिथ्यादृष्टि जीव के लिए ही बताए जा रहे हैं क्योंकि कोई भी जीव सम्यग्दर्शन की प्राप्ति पहली बार करेगा तो वह इन दोनों हेतुओं में से किसी भी हेतु से कर सकता है। निसर्ग से भी कर सकता है, अधिगम से भी कर सकता है।

## लब्धियों से सम्यकदर्शन कैसे होता है?

फिर एक प्रश्न आता है, जब भी सम्यग्दर्शन होता है- पांच लब्धियो के माध्यम से होता है। पाँच लब्धियाँ जानते हैं? एक होती है- क्षयोपशम लब्धि। दूसरी होती है- विशुद्धि लब्धि। तीसरी होती है- देशना लब्धि। चौथी होती है- प्रायोग्य लब्धि और पाँचवीं होती है- करण लब्धि, ये

पाँच लब्धियाँ होती हैं। इन पाँच लब्धियों के होने के बाद ही सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है।अब इसमें एक लब्धि आती है, जिसका नाम है- देशना लब्धि। क्या बोलते हैं ? जब पाँच लब्धियों में देशना लब्धि आई है, तो देखो! महाराज! बिना देशना के तो सम्यग्दर्शन होगा ही नहीं। अब आपकी बात फिर कटी। सुन रहे हो? हम ही तो काट रहे हैं बैठे-बैठे, हम ही बना रहे हैं, हम ही काट रहे हैं। आपको तो कुछ पूछना है ही नहीं है। इसमें यह फिर प्रश्न आता है, जो पढ़े-लिखे लोग हैं, उनकी तरफ से हम खुद प्रश्न कर लेते हैं ताकि आप प्रश्न करने का कष्ट न उठाएँ। देशना लब्धि में भी पहले हमें देशना सुननी पड़ेगी, उपदेश सुनना पड़ेगा तभी तो सम्यग्दर्शन होगा। जब भी सम्यग्दर्शन होगा बिना देशना लब्धि के नहीं होगा। इसलिए जब भी सम्यग्दर्शन होगा तो अधिगम पूर्वक ही होगा, निसर्ग से पहली बार तो नहीं हो सकता। यह प्रश्न सामने आ कर खड़ा होगा। इसका भी समाधान सुनेंगे। हाँ! प्रश्न भी है तो उत्तर भी है। जब आप समझेंगे कि देशना लब्धि किसे कहा गया है ?

## लब्धिसार ग्रन्थ से देशना लब्धि की परिभाषा

SCAN TO WATCH

आप लब्धिसार ग्रन्थ में पाँच लब्धियों का वर्णन पढ़ना और वहाँ से देशना लब्धि की परिभाषा पढ़ना, जो आचार्य महाराज ने वहाँ पर शुरू में ही लिखी हुई है।

**छद्दव्वणवपयत्थोपदेसयरसूरिपहुदिलाहो जो**
**देसिदपदत्थधारणलाहो वा तदियलद्दी दु ॥6॥**

क्या लिखा है? कि जो छह द्रव्य, नौ पदार्थों को प्रकाशित करने वाला जो उपदेश है, उनका उपदेश देने वाले जो आचार्य हैं, उनका सन्निधान, उनकी सन्निधि, उनका सानिध्य। समझ आ रहा है? यह भी देशना लब्धि कहलाती है और उनके द्वारा "देसिदत्थस्स गहण-धारणविचारणसत्तीए समागमो अ देसणलद्धी णाम। अथवा उनके द्वारा जो कहा गया पदार्थ है, उसको धारण करने का लाभ होना भी देशना लब्धि है। यानि देशना लब्धि दो प्रकार की होती है- आचार्य या गुरु आदि जो उपदेश देने वाले हैं, उनका केवल सानिध्य मिलना भी देशना है और जो उपदेश दिया गया है, उसको धारण कर लेना भी देशना है। समझ में आया? अगर हम यह परिभाषा देखे और इस परिभाषा से वह जो पहली वाली line है, उस पर हम ध्यान दे तो हमारी देशना लब्धि की कमी जो आ रही थी वह भी पूरी हो जाएगी। अब यह सब उठा-पटक इसी दिमाग की है और किसी की नहीं यह भी ध्यान रखना। समझ आ रहा है न? इसलिए जो लोग पुराने पण्डितों से पढ़ चुके हैं, वे हम पर गुस्सा नहीं होना, नाराज नहीं होना। जो लोग अपनी धारणा बना चुके हैं, वे लोग भी अपनी धारणा अगर न बदले तो कोई बात नहीं लेकिन समझने की कोशिश जरूर करना। देशना लब्धि के दो रूप दिए गए हैं, वा कर के लिखा हुआ है अथवा आचार्य आदि का सानिध्य मिलना भी देशना लब्धि है और उनके द्वारा कहे हुए पदार्थ का

धारण करना भी देशना लब्धि है। हम तो अभी तक एक ही चीज सुनते आ रहे हैं, देशना अर्थात् देशना सुनना, सुन कर धारण करना, उसका नाम ही देशना है। लेकिन जब हम इस गाथा और इसकी परिभाषा देखते हैं तो केवल सन्निधि को भी देशना कहा गया है। इससे क्या होगा? इससे निसर्ग सम्यग्दर्शन में देशना लब्धि के साथ उसकी सहायता मिल जाएगी। बस! जो छह द्रव्य, नौ पदार्थ का उपदेश देने वाले गुरु हैं, आपको उनका सानिध्य मिल गया।

भले ही वे कुछ न आपको बताएँ, केवल उनके सानिध्य से, उनके दर्शन से भी आपको देशना मिल रही है। आपकी लेने की योग्यता होनी चाहिए और जिसके अन्दर उनके दर्शन से ही इतनी विशुद्धी आ जाए तो उससे कुछ पढ़ने की भी जरूरत नहीं है, कुछ सुनने की भी जरूरत नहीं है। 'निसर्गाद' स्वभाव से उसे सम्यग्दर्शन हो जाएगा। नए पढ़ने वाले बच्चे होंगे, वे कहेंगे महाराज जब सब कुछ स्वभाव से अपने आप हो ही रहा है, निसर्ग से तो हमें जबरदस्ती आप क्यों पढ़ाने बैठा लेते हैं? क्या फिर ज्ञान लेने की जरूरत है? अब वह ज्ञान लेने की जरूरत इसलिए है क्योंकि आप स्वभाव से बैठते ही नहीं हो। अपनी रुचि से बैठते ही नहीं हो। जब भी बैठोगे तो थोड़ा सा ज्ञान तो देना पड़ेगा। अगर ज्ञान न दिया जाए तो उतनी भी सन्निधि नहीं प्राप्त कर पाओगे। बोला न जाए तो चुपचाप उठ कर चले जाओगे। इसलिए जिनको सानिध्य से कुछ प्राप्त नहीं होता है, उन्हें सुनने से प्राप्त होता है, इसलिए सुनना भी जरूरी होता है।

SCAN TO WATCH

जब सम्यग्दर्शन किसी आचार्य आदि उपदेशक के सानिध्य में इस तरह से प्राप्त होगा उसमें देशना लब्धि भी हो जाएगी और वही देशना लब्धि निसर्ग सम्यग्दर्शन के लिए कारण भी बन जाएगी। इस तरह हमने अन्ततः यह सिद्ध कर दिया है कि निसर्ग से भी अनादि मिथ्यादृष्टि जीव को बिना देशना लब्धि से भी सम्यग्दर्शन हो सकता है ।निसर्ग से भी अनादि मिथ्यादृष्टि जीव को बिना देशना लब्धि से भी सम्यग्दर्शन हो सकता है । यदि यह बात कहीं शास्त्र विरुद्ध हो

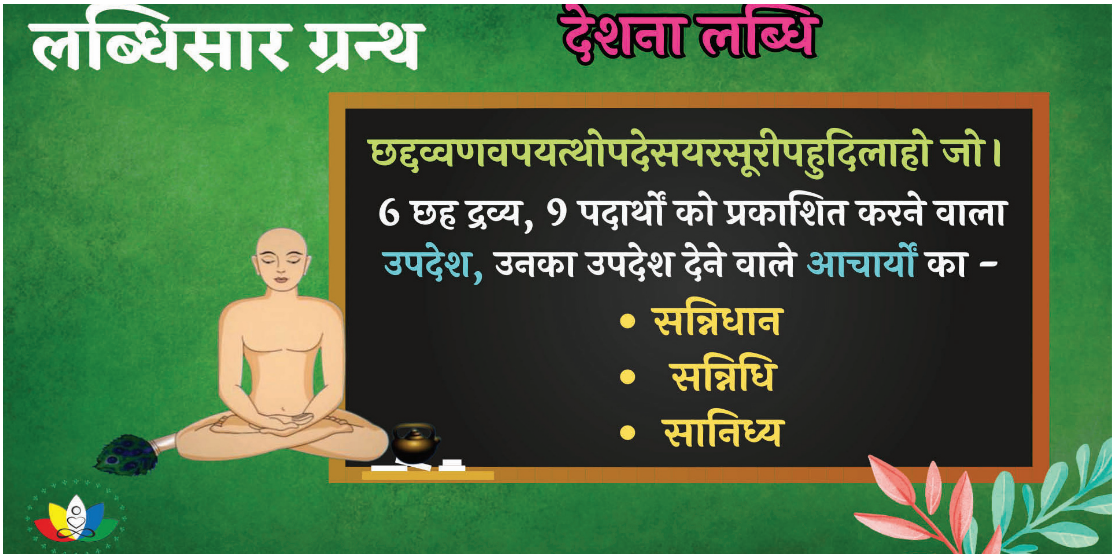


तो मैं जिनवाणी से क्षमा माँगता हूँ। तुमसे क्या माँगूँ? इतना स्पष्ट इसलिए कहना पड़ रहा है कि ऐसा कहीं लिखा नहीं है स्पष्ट इसलिए कहना पड़ रहा है कि ऐसा कहीं लिखा नहीं है। ये कुछ गुरु महाराज का चिन्तन भी हो सकता है और कुछ खोज खबर उसी गुरु महाराज के चिन्तन की पुष्टि के लिए हमारे द्वारा भी प्रस्तुत हो सकती है। क्योंकि गुरु महाराज भी यही कहते थे और उनके लिए जो पुष्टि करने के लिए जो reference ढूँढे गए, वे इस तरीके से ढूँढे गए तब जा कर के यह बात सही बन करके आती है। यह बात भी आज के पढ़े-लिखे लोगों को ध्यान में रखना है।

एकान्त धारणा नहीं बनाना कि जब भी कभी सम्यग्दर्शन होगा तो अधिगम से ही होगा, उपदेश से ही होगा, उपदेश का मतलब भी समझ लो। जो दस प्रकार के सम्यग्दर्शन बताये जाते हैं- आज्ञा, मार्ग इत्यादि उनमें भी इस तरह से बताया गया है। केवल आप किसी के सानिध्य से भी सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकते। मार्ग पर जो चल रहे हैं, मार्गी उनको भी देख कर के उनके भी केवल आचार, व्यवहार को देख कर के आपके अन्दर सम्यग्दर्शन हो सकता है, यह भी कहा गया है। यह भी ध्यान रखें कि बिना कुछ सुनाए हुए भी, अगर हमारे अन्दर, भीतर योग्यता बन जाती है, विशुद्धि बनती है, पुरुषार्थ बनता है, तो हमें बिना कुछ सुने हुए भी सम्यग्दर्शन हो

सकता है। इसको क्या बोलेंगे? निसर्ग से होने वाला सम्यग्दर्शन। ऐसा सम्यग्दर्शन औपशमिक भी होता है, क्षयोपक्षमिक भी होता है और क्षायिक भी होता है। क्षायिक सम्यग्दर्शन उनके लिए होता है, जो नारकी जीवों में दूसरे-तीसरे नरकों में तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध किये हुए जीव होते हैं और उनके लिए क्षयोपशम सम्यग्दर्शन ही होता है। लेकिन तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध होता है, जब वह तीर्थंकर प्रकृति का बंध करके ही फिर से मनुष्य जन्म प्राप्त करते हैं तो उन्हें क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए किसी भी प्रकार के उपदेश की जरूरत नहीं पड़ती है। इसलिए निसर्ग से उनके लिए भी क्षायिक सम्यग्दर्शन हो रहा है, ऐसा कहा जाता है। इतना ध्यान रखना बाकी तो सब कुछ simple है।

## निसर्ग- वह स्वभाव जो हमें देखने में आता है

दो प्रकार के सम्यग्दर्शन जानने के बाद में, एक छोटी सी चीज इसमें और समझ सकते हैं कि निसर्ग का मतलब आचार्यो ने यह भी बताया है कि स्वभाव जो हमें देखने में आता है,जैसे पक्षियो का स्वभाव क्या होता है उड़ना। समझ आ रहा है? कुछ ऐसे भी पशु होते हैं, जो जन्म लेते ही दौड़ने लगते हैं, हिरण वगैरह के। अब उन पक्षियों को उड़ना कोई सिखाता है? शेर है, शेर को खूँखार, मारना कोई सिखाता है? उसको शिकार करना सिखाया जाता है? अपने आप, जन्म से ही, स्वभाव से सीखा हुआ होता है। उस पर्याय में जन्म होगा तो अपने आप वह वैसा ही करेगा, इसका नाम भी स्वभाव होता है। ये उदाहरण दिए गए हैं। आचार्य अकलंक देव ने कहा है कि इसी तरह के स्वभाव से वह सम्यग्दर्शन भी होता है। लेकिन अन्तरंग में दर्शन मोहनीय कर्म का उपशम, क्षय या क्षयोपशम ही कारण होता है और बाहर से हमारे अन्दर

अपने आप इस तरह की योग्यता आ जाती है कि हमें तत्त्व की श्रद्धा की परिणति आ जाती है। स्वभाव का मतलब इस तरह से भी कहा गया है। अब यहाँ पर भी हमें उपदेश के बिना ही हैं।

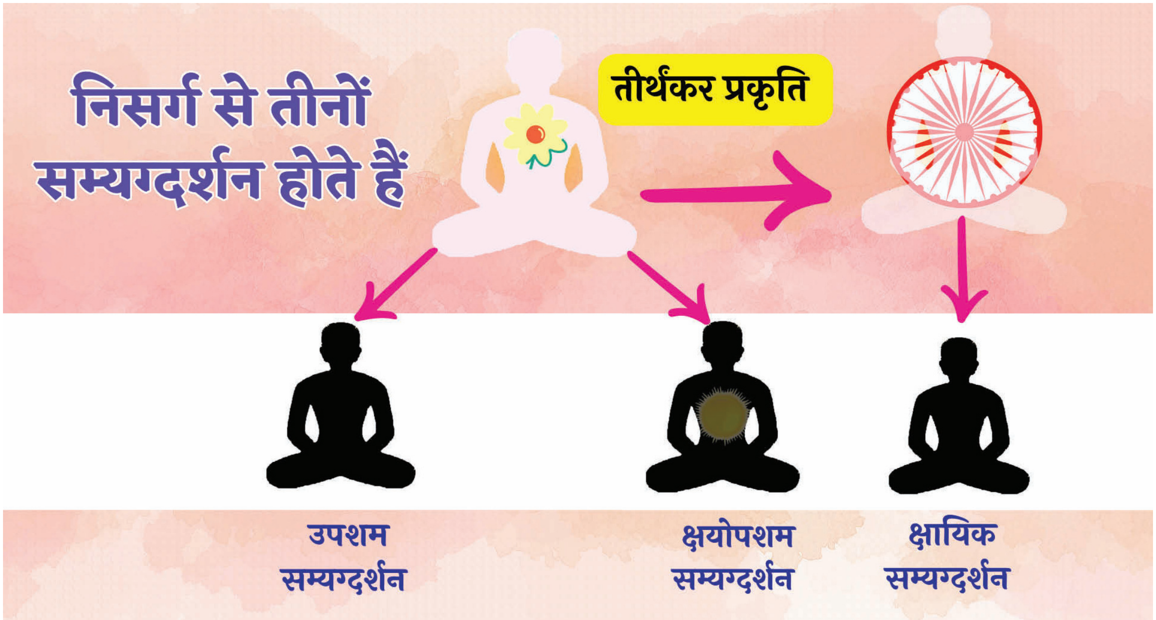


स्वभाव का मतलब यह नहीं है कि अपने आप हो रहा है कि काल लब्धि से हो रहा है? सब योग्यताएँ मिलने के बाद हो रहा है, उसको भी स्वभाव कहा जाता है। पक्षी का जन्म हुआ, उसके अपने तिर्यंच गति नाम कर्म का उदय होगा। उसका जो जन्म होगा,अण्डज जन्म हो, गर्भज जन्म हो, वैसा जन्म होगा, उसके कारण से उसकी उस तरह की योग्यता आ गई और अपने आप वह उड़ना सीख लेता है। कोई उसको सिखाना नहीं पड़ता है कि एक कबूतर दूसरे कबूतर को उड़ना सिखाता हो जैसे आप अपने बच्चों को चलना सिखाते हो। कभी देखा है क्या है? बोलो तो? अपने आप ही उड़ता है न कबूतर, कबूतर का बच्चा भी। बस! इसी का नाम स्वभाव है। अपने आप ही वह सीख जाता है। अपने आप ही करने लग जाता है, इसी का नाम है- स्वभाव। स्वभाव का मतलब यही समझना चाहिए जैसे शेर में शौर्यता होती है,क्रूरता होती है वह उसका स्वभाव है।आज आदमी क्षण भर में अगर शेर की पर्याय में जन्म ले लेता है और जैसे ही उसका जन्म होता है तो अपने आप शेर की तरह दहाड़ना शुरु हो जाता है उसको सिखाना नही पढ़ता कि शेरनी सिखाती हो,देख!ऐसे दहाड़ते है,ऐसे मुँह फाड़ते है।ऐसा कुछ नही होता है। वह अपने आप ही सीख जाता है।अपने-आप ही करने लग जाता है इसी का नाम है स्वभाव। इसलिए भी निसर्ग से जो होने वाला सम्यग्दर्शन है,उसमें सब योग्यताए मिल जाएगी। आपकी कर्मों की स्थितियाँ, दर्शन मोहनीय आदि कर्मों का क्षय-क्षयोपशम उसी तरीके का होना और बाहर केवल जिनबिम्ब या आचार्य आदि गुरुओं का केवल सानिध्य भी मिल जाता है, तो भी बिना उपदेश के उससे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो जाती है बिना उपदेश के

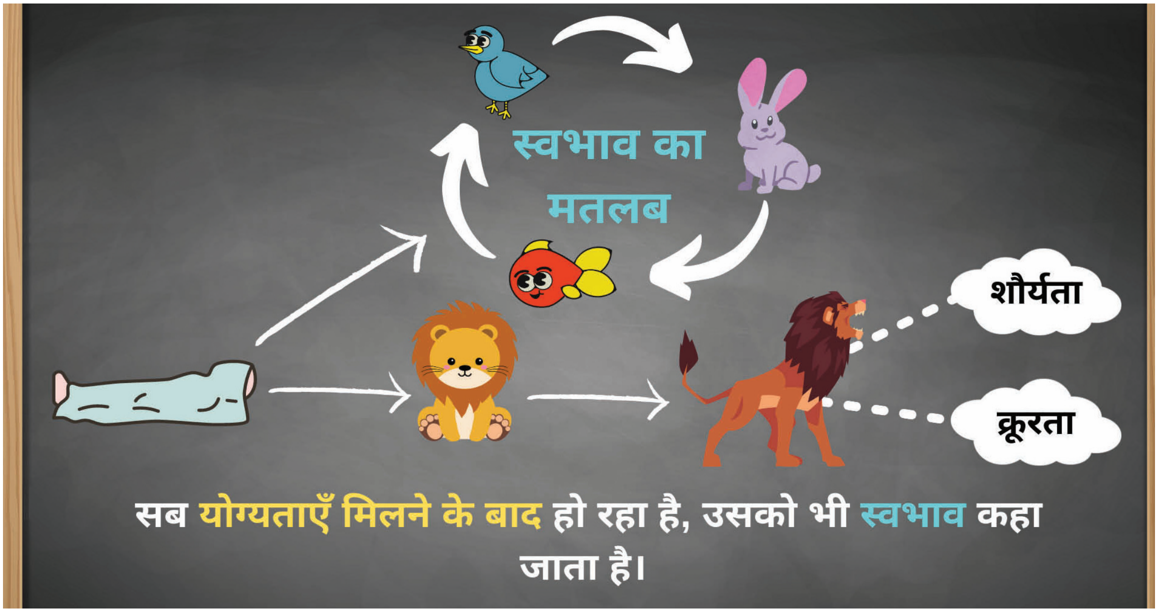


भी।

## जीव के ऊपर किसका उपकार है?

लेकिन जिन्होंने विद्वानों की विद्वता के माध्यम से इतनी ग्रन्थ पढ़ रखे हैं कि तत्त्व निर्णय करो, तत्त्व निर्णय करो। बिना तत्त्व निर्णय की सम्यग्दर्शन नहीं होता, बिना तत्त्वज्ञान के सम्यग्दर्शन नहीं होता। उन्हें ये बातें इसलिए समझ में नहीं आती है क्योंकि उनके दिमाग में घुस चुका है कि तत्त्व निर्णय, सात तत्त्व, सात तत्त्व की श्रद्धा, सात तत्त्व का ज्ञान, तो उन्हें यह लगता है कि जिन किन्हीं को भी सम्यग्दर्शन होगा, उन्हें सात तत्त्वों का ज्ञान हो जाएगा, तभी होगा। सात तत्त्व का ज्ञान तो मैंने आपको कल भी बताया था। केवल आप देव का स्वरूप मान लिए, गुरु का स्वरूप मान लिए, उससे भी सात तत्त्व का ज्ञान हो गया। वही सात तत्त्व यहाँ आगे बताये जा रहे हैं -

**जीवाजीवास्रव बन्धसंवर निर्जरा मोक्षास्तत्त्वम् ॥ 1.4 ॥**

**जीव + अजीव + आस्रव + बन्ध + संवर + निर्जरा + मोक्षः+तत्त्वम्**

**जीवाजीवास्रव तथा, बन्ध तत्त्व बतलाय।**
**संवर निर्जर मुक्ति सह, तत्त्व सप्त कहलाय ॥ 1.4 ॥**

ये तत्त्व हैं। इन्हीं को तत्त्वार्थ भी कहते हैं। पहला क्या है? जीव। क्यों पहला जीव तत्त्व कहा गया? क्योंकि जीव में ही सब कुछ घटित होना है। जीव नहीं है, तो कोई भी तत्त्व नहीं है। जीव के अन्दर ही सब तत्त्व घटित होंगे, इसलिए जीव तत्त्व प्रधान है। इसलिए सबसे पहले उसका नाम लिया। उसके बाद में अजीव तत्त्व। बाद में अजीव क्यों रखा? क्योंकि जीव का सम्बन्ध अजीव से ही है,भीतर भी और बाहर भी। अनादिकाल से आत्मा का सम्बन्ध, आत्मा के साथ चिपके हुए कर्मों से ही है। वे कर्म अजीव हैं इसलिए जीव के साथ में अजीव तो आएगा ही, जब हम संसारी जीव की बात करेंगे। जीव के अत्यन्त निकट अगर कोई है, तो वह अजीव द्रव्य ही है। कर्म द्रव्य, कार्मण शरीर, तेजस शरीर ये सब क्या हैं? अजीव द्रव्य हैं, जो हमेशा जीव के साथ रहते हैं। यह शरीर अपना छूट जाता है, अगले गति में भी जब तक आत्मा दूसरा जन्म लेने के लिए जाती है तब तक भी उस आत्मा के साथ में ये दोनों शरीर रहते हैं और यह 'अनादिसम्बन्धे च।।४१।।' दूसरे अध्याय में पढ़ा है। कब से इनका सम्बन्ध है? अनादिकाल से सम्बन्ध है, इसलिए भी जीव के साथ अजीव रखना है। दूसरी बात आचार्य कहते हैं- यह जीव के ऊपर उपकार करने वाला अजीव होता है, इसलिए भी जीव के साथ अजीव रखा जाता है। आप कहोगे जीव के लिए क्या उपकार कर रहा है? अजीव? जीव के ऊपर उपकार करने वाला अजीव है। संसार दशा में जीव के लिए अजीव ही तो उपकार करता है। आपको शरीर मिला, जीवन मिला, प्राण मिले। यह किसका उपकार है? अजीव का। रो रहे हो, मरने की इच्छा है, शरीर बिलकुल नष्ट हो चुका है, मरोगे, मृत्यु भी होगी तो भी यह किसका उपकार है? अजीव का। अतः जीव के ऊपर अजीव का उपकार होता है, इसलिए भी जीव के पास में अजीव रहता है।

## आस्रव और बन्ध में समय भेद नहीं

फिर अजीव के पास में क्या है? आस्रव। जीव और अजीव दोनों के संयोग से ही आस्रव होता है, आस्रव अकेला नहीं हो सकता। एक कारण से आस्रव नहीं होता है, जीव का भी उसमें भाव है और अजीव का भी भाव है। इसलिए आस्रव दो प्रकार के बताए गए - एक भाव आस्रव और एक द्रव्य आस्रव। जिस जीव के भाव से वह आस्रव हो रहा है, कर्मों का आना हो रहा है, वे भाव आस्रव है और जो कर्म आ गए, वे द्रव्य आस्रव है। है। इसी तरीके से आस्रव के होने पर ही क्या होता है? बन्ध होगा। यद्यपि देखा जाए तो आस्रव और बन्ध में time gap नहीं है। है। जिस समय पर आस्रव होता है, उसी समय पर बन्ध होता है। लेकिन व्याख्यान थोड़ा अलग-अलग इसलिए होता है क्योंकि आस्रव का स्वरुप अलग है और बन्ध का स्वरुप अलग है। आस्रव का स्वरुप, आस्रव के कारणों को

अलग बताया जाता है। जो मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग ये आस्रव के कारण हैं, यह आस्रव कहलाता है।

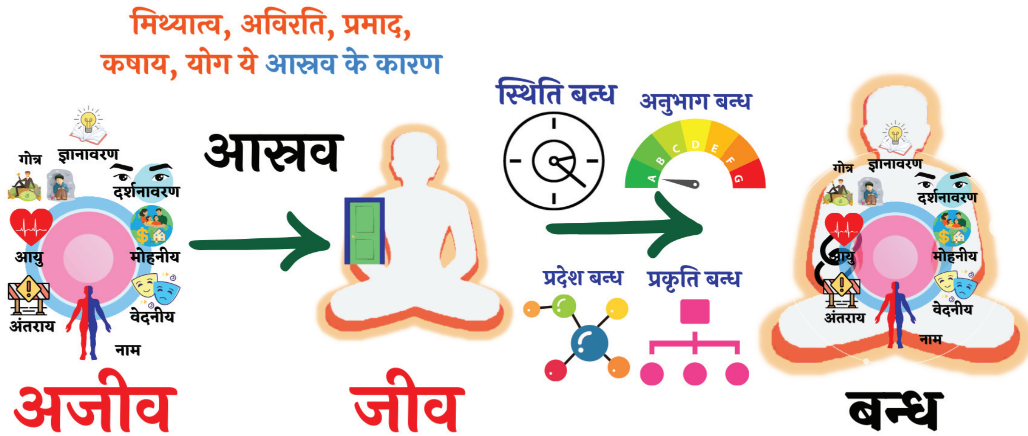


प्रकृति बन्ध, प्रदेश बन्ध, स्थिति बन्ध, अनुभाग बन्ध यह बन्ध कहलाता है। अतः बन्ध का स्वरूप अलग समझाया जाता है। इसलिए आस्रव अलग है, बन्ध अलग है। लेकिन आस्रव और बन्ध का कार्य जो आत्मा में घटित होता है, वह एक ही समय पर होता है। जिस समय आस्रव होता है, उसी समय पर बन्ध होता है। लेकिन आस्रव पूर्वक बन्ध होता है इसलिए यह कहा जाता है क्योंकि आस्रव एक द्वार है। क्या है? द्वार। रास्ता और उसके माध्यम से वह कर्म आता है और फिर कर्म जब बन्ध जाता है, तो उन दोनों को अलग-अलग व्याख्यायित किया जाता है इसलिए कहा जाता आस्रव पूर्वक बन्ध हो रहा है। इसलिए आस्रव भी कहा गया, बन्ध भी कहा गया और आस्रव के पास में बन्ध को रखा गया।

## आस्रव आदि किसको होगा ?

अब बन्ध के पास क्या रखा है? संवर। संवर किसको होगा? जिसको बन्ध रुक जाएगा, उसी का नाम संवर है। सुन रहे हैं? बन्ध का विरोधी कौन है? संवर। यहाँ आस्रव का विरोधी संवर नहीं कहा। किसको? बन्ध का विरोधी संवर है। जिसको संवर हो गया मतलब उसको कर्मों का बन्ध होना रुक गया। इसलिए आस्रव के बाद में बन्ध आ गया, बन्ध के बाद में संवर आ गया। संवर पूर्वक ही निर्जरा होगी। इसलिए संवर के बाद में क्या रखा? निर्जरा रखी। वही निर्जरा काम की है, जो संवर पूर्वक हो। अन्य जो निर्जरा होती है वह काम की नहीं। इसलिए संवर पूर्वक निर्जरा को ही मोक्ष मार्ग में महत्व देने के कारण से संवर के बाद में निर्जरा तत्त्व रखा। निर्जरा होने पर ही मोक्ष होगा, उस कर्म से मुक्ति मिलेगी तो निर्जरा से ही मोक्ष होता है, इसलिए निर्जरा के बाद में मोक्ष रखा। यह सब किसको होगा? जीव को। मोक्ष किसको है? बन्ध किसको है? आस्रव किसको है? संवर और निर्जरा किसकी है? जीव की। जीव करेगा तो

होगा। अब प्रश्न यह उठता है कि जब जीव और अजीव दो ही द्रव्य हैं या दो ही तत्त्व हैं तो इतना आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष सब और पाँच उसमें जोड़ने की क्या जरूरत पड़ गयी? दो ही में कह देते, दो से ही काम हो जाता, हम उतने में ही समझ लेते। तब आचार्य कहते हैं- कभी-कभी विशेष रूप से भी हमें समझाना पड़ता है।

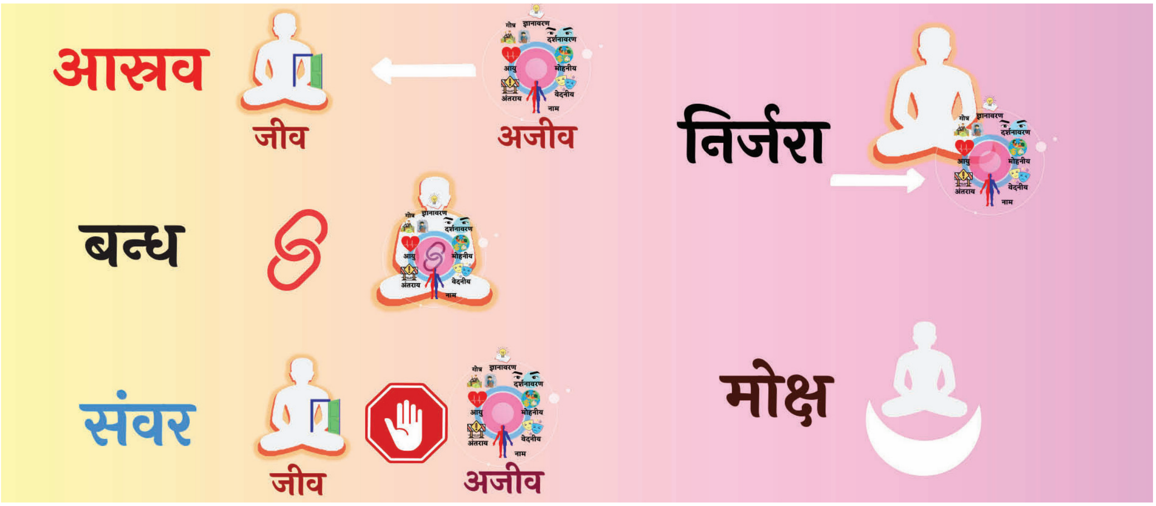


जब हम मोक्ष मार्ग पर आप चलाना चाह रहे हैं, मोक्ष मार्ग की बात बता रहे हैं तो हमें आपको इन विशेष तत्त्वों को ही बताना पड़ेगा। तभी आप मोक्ष को समझ पाएँगे क्योंकि जीव-अजीव कहने से मोक्ष तो नहीं आया सामने, मोक्ष भी एक तत्त्व है। जब मोक्ष तत्त्व है, यह कहा तो फिर मोक्ष का कारण बताना पड़ेगा। मोक्ष किस कारण से हो रहा है? मोक्ष का कारण निर्जरा है, संवर है, यह मोक्ष के कारण है।

संवर और निर्जरा किसके कारण है? मोक्ष के कारण है। अब यह संवर और निर्जरा हुई है, तो किसका संवर? पहले कुछ आस्रव हो रहा होगा तभी तो कुछ संवर होगा। जो संसार का कारण है, वह आस्रव और बन्ध है। उन संसार के कारणों को रोकना, इसी का नाम संवर है और उस संसार के कारणों को जो अपने अन्दर कर्म के रूप में बैठे हैं, उन्हें घटाना-हटाना, इसका नाम निर्जरा है। इस तरह से जब हम पूरा व्याख्यान करते हैं तभी हमें संसार और मोक्ष तक के पूरे तत्त्वों का ज्ञान हो पाता है। इसलिए संसार के भी कारण बताना जरूरी है और मोक्ष का भी कारण बताना जरूरी है। तब जाकर के मोक्ष बताना जरूरी है और वह मोक्ष होगा तो जीव को होगा। अजीव से उसकी मुक्ति मिलेगी तो मोक्ष होगा। इसलिए दो तत्त्व तो सामान्य है और जब हम सात तत्त्व की बात करते हैं तो उसमें सामान्य और विशेष सब कुछ समाहित हो जाता है।

## सामान्य, विशेष और हेय,उपादेय

कभी-कभी  हमें सामान्य में भी विशेष को रखना पड़ता है। कैसे? जैसे- यहाँ पर आप लोग पढ़ने के लिए आए। कौन लोग आ गए? सब जैन साहब बैठे हैं, सब जैन लोग बैठे हैं। अब हमने कहा जैन लोगों में भी, अरे! भाई राजेश तुम भी आये हो? यह क्या कह दिया आपने महाराज! हो? यह क्या कह दिया आपने महाराज! जब सब जैन लोग बैठे ही थे तो फिर एक राजेश का नाम क्यों ले दिया आपने? शायद वह विशेष होगा कुछ। सबकी दृष्टि में क्या आएगा कि इन जैनों में भी, सामान्यों में भी वह कुछ विशेष है। ऐसा कहना पड़ता है कि नहीं कहना पड़ता है? समझाने के लिए व्यवहार में, एक को आगे रखना पड़ता है कि नहीं रखना पड़ता है। इतने सारे लोग बैठे रहते हैं, एक व्यक्ति को आप बुला लेते हो। चित्र अनावरण करो, महाराज का पाद-प्रक्षालन करो। बाकी क्या कर रहे हैं सब? सामान्य में भी विशेष कुछ होता है। इसी तरीके से जीव-अजीव ये तो दो सामान्य हो गए। आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष कहने से कुछ विशेषता समझ में आती है तब हमें सही ढंग से सब कुछ समझ में आने लग जाता है। इसलिए सात तत्त्वों का यह व्याख्यान इसी क्रम से जानना जरूरी है। अब इसमें हेय, उपादेय और ज्ञेय तत्त्वों का भी ज्ञान करना जरूरी है। मोक्ष तत्त्व हमारे लिए उपादेय है, जीव तत्त्व भी हमारे लिए

SCAN TO WATCH

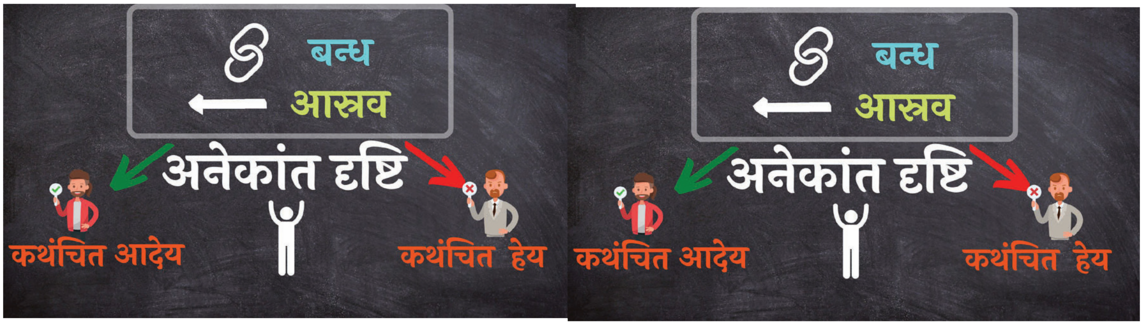


उपादेय है।

संवर और निर्जरा भी तब तक उपादेय हैं जब तक कि हम को मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो जाती है। आस्रव और बन्ध ये हमारे लिए हेय हैं लेकिन हेय कहते हुए भी हम इन्हें कथंचित हेय भी कह सकते हैं और कथंचित आदेय भी कह सकते हैं। कथंचित इसलिए कह सकते हैं क्योंकि जब तक हमें मोक्ष मार्ग पर चलना है तब तक हमें कथंचित इन आस्रव और बन्धों से मुक्ति एकदम नहीं मिल जाती है। हमें पाप के आस्रव से हटकर के पुण्य के आस्रव को भी ग्रहण करना पड़ता है। इसलिए जब तक यह मोक्ष का मार्ग पूरा का पूरा हमारे लिए सामने नहीं आ जाता तब तक पुण्य का आस्रव, पुण्य का बन्ध भी कथंचित हमारे लिए आगे, आगे, आगे, आगे काम में आता रहता है और वे भी हमारे लिए कथंचित उपादेय बना रहता है। यह भी एक नयी व्याख्या है, इसमें भी पण्डित लोगों को current लग सकता है। आस्रव और बन्ध तो हमेशा ही हेय कहे गए हैं, आप उन्हें उपादेय बता रहे हैं? कथंचित इसलिए बोल रहा हूँ। अनेकान्त दृष्टि से देखेंगे तो आपको सब समझ में आएगा।

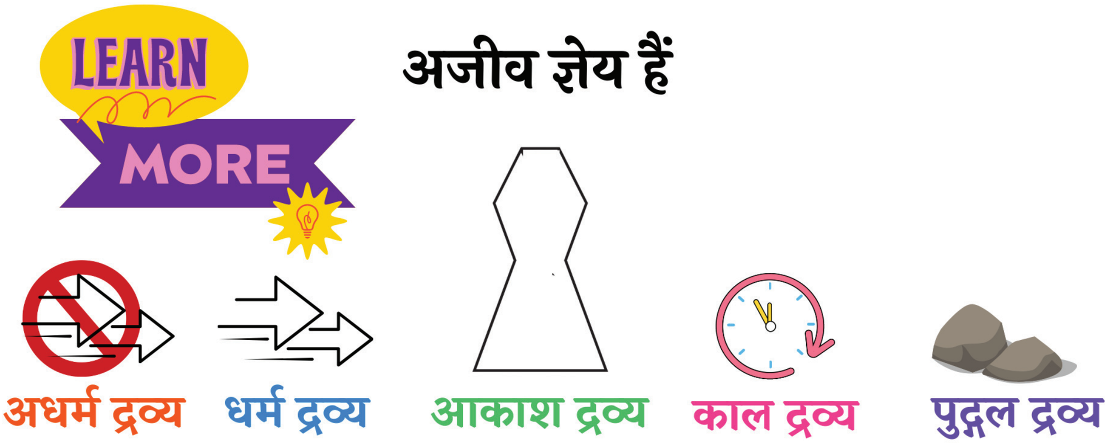


जीव और अजीव जो हैं- यह ज्ञेय हैं। जीव को हम उपादेय भी मान सकते हैं लेकिन अजीव तत्त्व हमारे लिए क्या है? ज्ञेय है। इसको जानने योग्य, इसको हम जाने। पुद्गल कितने होते

हैं? कितने प्रकार की वर्गणाएँ होती हैं? सब ज्ञेय होता है। इस तरह से जीव आदि सात तत्त्व का ज्ञान,उनका श्रद्धान जब बन जाता है,तो वह सम्यग्दर्शन पढ़े लिखे लोगो के लिए हो जाता है।मन वाले लोगो के लिए हो जाता है। जो विशेष रुप से मनुष्य कहे जाते हैं, उनको सम्यग्दर्शन तो ज्यादातर ऐसे ही होता है। किन्हीं को केवल मुनि महाराज को देखने से बिना पढ़े भी हो सकता है। वह या तो किसी गैय्या को होगा या किसी शेर को होगा, तुमको तो नहीं होगा।

## न्यास मतलब निक्षेप

सम्यग्दर्शन होने के बाद में एक सूत्र आगे का और पढ़ते हैं-

**नाम स्थापना द्रव्य भावतस्तन्न्यासः ॥1.5॥**

**नाम + स्थापना + द्रव्य + भाव + तत् + न्यासः**

**चौ निक्षेपो से बने, सही वस्तु व्यवहार ।**
**नामा थापन द्रव्य जुत, भाव दूर व्यभिचार ॥1.5॥**

अब यहाँ कहते हैं- जीव आदि का ज्ञान करने के लिए कुछ उपाय करना है, तो आपको पहले न्यास को जानना है। न्यास का मतलब होता है- निक्षेप। हम किस तरह की जीवादि को जानना चाहते हैं? लोक व्यवहार में चार चीजें प्रचलित होती हैं। नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव। हम जिसको जानना चाहते हैं, उसका हमें ज्ञान भी तो होना चाहिए कि हम किसको indicate करना चाहते हैं? किसकी तरफ हमारा intention है? वह निक्षेप से पता पड़ता है। संसार में चार प्रकार के निक्षेप चलते हैं। सबसे पहला कौन सा? नाम। नाम का मतलब बस! नामकरण। बिना नामकरण के तो कोई काम होता ही नहीं। बच्चा हुआ, पहले क्या करना? नाम रखो , बिना नाम के ही चलता रहे काम, ऐसा नहीं होता है? बिना नाम के तो कोई काम चलता ही नहीं महाराज! कोई भी चीज हो उसका नाम तो रखना ही पड़ेगा। अब यह लकड़ी भी है, तो उसका नाम भी

रखना पड़ेगा, यह pencil है। समझ आ रहा है न? बिना नाम के तो हम क्या करेंगे। ऊँऊँऊँ करेंगे और कुछ नहीं करेंगे। लोक व्यवहार में भी नाम सबसे पहले चाहिए। अब वह नाम हम क्या रखे? महाराज! बेटे का नाम अरिहन्त रख दे? रख दो भैया, मैं क्यों मना करूँ? वह अरिहन्त नाम तो रख दोगे कि वह अरिहन्त तो नहीं हो जाएगा? इसका मतलब यह हो गया कि नाम में किसी भी प्रकार के गुणों की कोई अपेक्षा नहीं की जाती है। अन्यथा तुम ही सब उसके पैर छूने लग जाओगे। भैया! अरिहन्त आ गया! अरिहन्त आ गया! नाम का मतलब हो गया, गुणों की अपेक्षा के बिना, किसी भी वस्तु या व्यक्ति का नामकरण कर देना, यह नाम निक्षेप कहलाता है। यह लोक व्यवहार इसी से शुरू होता है।

इसके बिना तो कोई काम चलता ही नहीं है। ऐसा कोई पदार्थ बताओ जिसका कोई नाम न हो? क्या? बताओ-बताओ? देखो! इस नाम निक्षेप का कितना बड़ा काम है। दुनिया की ऐसी कोई चीज बताओ, ऐसा कोई पदार्थ बताओ जिसका कोई नाम न हो? बोलो! net पर ढूँढो? ऐसी कोई भी वस्तु जिसका कोई तरीके का नाम न हो। ऐसी भी वस्तु मिलेगी। ढूँढ कर बताना, उसका जवाब कल भी दे देंगे। इसलिए कहा गया यह यहाँ पर कि नाम निक्षेप हर चीज का रहता ही है। अब मान लो किसी ने सम्यग्दर्शन अपना नाम ही रख लिया तो हम क्या उसी की पूजा करने लगे? कि हम उसी को पास बुला कर कहने लगे मुझे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो गई। क्यों हो गई? मुझे सम्यग्दर्शन मिल गया। वह आ गया सम्यग्दर्शन, उसका नाम था सम्यग्दर्शन। फिर क्या बला है, यह सम्यग्दर्शन? कहीं किसी का नाम से ही सम्यग्दर्शन होना है कि कुछ और भी है। आचार्य कहते हैं - पहले चार चीजें,दुनिया में चार ही चीजे हैं। इन्हीं में से आपको देखना है किसके बारे में आपको जानना है? एक तो हो गया नाम निक्षेप, दूसरा होता है- स्थापना निक्षेप।

## स्थापना निक्षेप

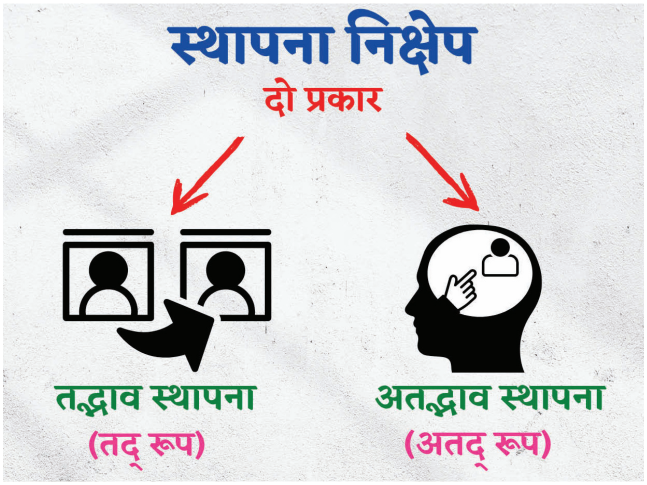


स्थापना दो प्रकार की होती है- एक सद्रूप या तद्भाव स्थापना और एक अतद्भाव स्थापना। तद्भाव स्थापना का मतलब जो चीज जैसी आकृति की होती है, जैसे रूप-रंग की होती हैं, उसको वैसे ही रूप-रंग के साथ में स्वीकार करने का नाम होता है- तद्भाव स्थापना। जैसे भगवान की प्रतिमा है; जैसी भगवान की आकृति होती है वैसी हमने भगवान की प्रतिमा बनाई तो यह क्या कहलाएगी? तद्भाव स्थापना।

स्थापना कर दी pencil में ही। समझ आ रहा है? मैंने डिब्बे को ही भगवान बना दिया, डिब्बा भगवान है, तो मैंने स्थापना इसमें भी कर सकता हूँ। यह कहलाएगी- अतद्भाव स्थापना। भैया! इसको भगवान की तरह मानना, भगवान की तरह पूजना, यह भगवान हैं। जैसे कि आप लोग जब कभी शतरंज, chess वगैरह के खेल खेलते हो न, उसमें घोड़े होते हैं, प्यादे होते हैं, मन्त्री भी होता है, वजीर भी होता है, सब होता है न। न। हाथी भी होते हैं तो वे आप उसमें बना लेते हैं।यह हाथी मतलब हाथी है, यह घोड़ा मतलब घोड़ा ही है। यह तिरछे चलेगा तो यह तिरछी चाल चलेगा, यह सीधा चलेगा तो सीधे ही चलेगा है। यह क्या कहलाती है? यह अतद्भाव स्थापना हो गयी। दुनिया में दोनो तरीके का यह लोक व्यवहार में देखने को मिलता है – तद् रूप और अतद् रूप । और अगर ये दोनों प्रकार की स्थापना जानना लेकिन इसमें जो पूज्यता आती है, वह केवल तद्भाव स्थापना में ही मानी जाती है।

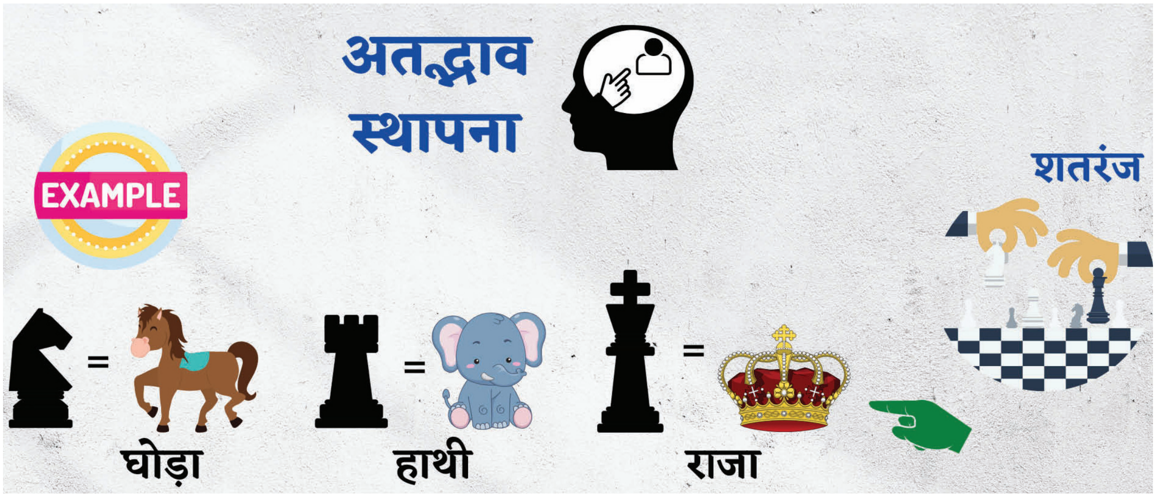


## द्रव्य निक्षेप

अच्छा तीसरा कहलाता है- द्रव्य निक्षेप। क्या बोलते हैं? द्रव्य निक्षेप कैसे होता है? कोई अभी वर्तमान में उस पर्याय से परिणत नहीं है लेकिन होगा आगामी काल में। उसको हम पहले से ही वैसा कहेंगे तो वह कहलाएगा द्रव्य निक्षेप। जैसे बच्चा CA कर रहा है। अभी तो उसने

SCAN TO WATCH

केवल admission लिया है, पहली साल ही है, अभी केवल उसने semester पार किये हैं और अभी से हम उसको कहने लगे CA है, CA है, CA है। अभी कहाँ भाई? CA बन गया क्या? बन जाएगा! बन जाएगा! बन जाएगा! लेकिन हम पहले से उसको क्या बोल रहे हैं? इसलिए तो यह कहलाता है- द्रव्य निक्षेप से CA है। किससे? द्रव्य निक्षेप से। अभी यह कहीं भी लगा सकते हो आप। ऐसा भी लोक व्यवहार होता ही है। कोई चीज होने ही वाली है, हम दिल्ली जा रहे हैं! दिल्ली जा रहे हैं! दिल्ली जा रहे हैं! अभी कहाँ जा रहे हो? अभी तो अभी bathroom में जा रहे हैं। अभी दिल्ली जा रहे थे? bathroom में क्यों जा रहे हो? इधर दिल्ली है क्या bathroom में? नहीं! bathroom जाने के बाद हम दिल्ली जाएँगे इसका मतलब यह है। समझ आ रहा है? ऐसे बोलने में आता है न, इसी तरीके से। कोई अगर पत्थर भी लेकर के आ जाता है, तो वह कहता है यह प्रतिमा है! यह प्रतिमा है! यह प्रतिमा है! क्या प्रतिमा अभी? नहीं! इसी की प्रतिमा बन रही, इसी की प्रतिमा बनेगी तो उस पत्थर को भी पहले से प्रतिमा कहा जाता है। यह किस से? द्रव्य निक्षेप से। लोक व्यवहार में जो चीज मान्य है, वह सब आचार्यों को मान्य होती है।

## भाव निक्षेप

भाव निक्षेप से जिस समय पर जो चीज उसी रूप में बन गई तो भाव निक्षेप से कहलाएगी। अरिहन्त अगर वह बन गया, केवल ज्ञान हो गया तो भाव निक्षेप से अरिहन्त हो गया। शुक्ल

ध्यान कर रहा है, भावी अरिहन्त बनने ही वाला है, बन ही जाएगा। अन्तिम भव में है, चर्म शरीरी है, तो हम उसको पहले से भी कह सकते है। अरिहन्त ही है, सिद्ध ही है- द्रव्य निक्षेप से। क्योंकि यह सिद्ध हो रहा है। किसी का नाम रख दिया सिद्ध या अरिहन्त तो नाम निक्षेप से हो गया। किसी में स्थापना कर दी भैया, यह सिद्ध है! यह अरिहन्त है! तो स्थापना निक्षेप से हो गया। इस तरह से चार प्रकार के निक्षेप यानि कि यहाँ पर आप को वस्तु को जानने के उपाय बताए जा रहे हैं और उन उपायों में सबसे पहला उपाय आता है- निक्षेप को जानना। फिर उन निक्षेपों में से हम एक निक्षेप ग्रहण करेंगे, हमें प्रयोजन किस से है? सम्यग्दर्शन से या जीव से। कौन से जीव से? जिसका नाम जीवराज है, उससे या वास्तव में जो अपना जीव आत्मा है उससे? अब किसी का नाम जीवराज ही रख दिया तो? उससे प्रयोजन नहीं है, अपने जीव राजा से प्रयोजन है। हमारा किस से प्रयोजन है? नाम निक्षेप से प्रयोजन नहीं, स्थापना से प्रयोजन नहीं, द्रव्य से प्रयोजन नहीं, हमें प्रयोजन किससे हुआ? हाँ! जो भाव से वास्तव में जीव है, हमें उसी से प्रयोजन है। इसी तरीके से जब हम सम्यग्दर्शन की चर्चा करेंगे तो जो सम्यग्दर्शन का भाव है, हम उसी का ज्ञान आगे करेंगे। कैसे करेंगे? ज्ञान करने के उपाय और क्या-क्या हैं? यह आपको आगे बताया जाएगा।

## सारांश

1. 'तन्निसर्गादधिगमाद्वा' सम्यग्दर्शन दो कारणों से होता है-
- निसर्ग से अर्थात स्वभाव से, बिना दूसरे के उपदेश से और
- अधिगम से यानी पर उपदेश से होने वाला ज्ञान से

2. सम्यग्दर्शन के तीन प्रकार होते हैं
- उपशम सम्यग्दर्शन
- क्षयोपशम सम्यग्दर्शन
- क्षायिक सम्यग्दर्शन

3. और ये तीनों ही प्रकार के सम्यग्दर्शन निसर्ग और अधिगम दोनों से होते हैं
4. हमने जाना पर उपदेश के बिना भी अन्य कारण है, जिनसे सम्यग्दर्शन होता है जैसे जाति स्मरण, और जिन बिम्ब दर्शन
5. क्योंकि अरिहन्त में सब तत्त्व गर्वित हैं और जिसकी उन पर श्रद्धा हो गयी तो उसे
6. जिनबिम्ब के दर्शन से, पर उपदेश के बिना भी निसर्ग सम्यग्दर्शन हो सकता है
7. एक प्रचलित भ्रान्ति है कि निसर्ग सम्यग्दर्शन भी कभी पूर्व के अधिगम के कारण होता है
8. मुनि श्री ने इस भ्रान्ति का खंडन किया है - सूत्र ऐसा कुछ इंगित नहीं करता
9. सूत्र में वर्तमान या भूत समय की या अनादि मिथ्यादृष्टि की अपेक्षा कुछ भी नहीं कहा गया है अतः कोई भी जीव सम्यग्दर्शन की प्राप्ति पहली बार निसर्ग या अधिगम किसी से भी कर सकता है
10. अनादि मिथ्यादृष्टि जीव ने अनादि काल से कभी भी सम्यग्दर्शन को प्राप्त नहीं किया
11. हमने जाना कि सम्यग्दर्शन के लिए पांचों लब्धियों का होना ज़रूरी है
- क्षयोपशम लब्धि
- विशुद्धि लब्धि
- देशना लब्धि
- प्रायोग्य लब्धि
- करण लब्धि

12. अब सवाल कि निसर्ग सम्यग्दर्शन के लिए देशना लब्धि कैसे मिलेगी?
13. तो मुनि श्री ने बताया कि लब्धिसार ग्रन्थ के अनुसार देशना लब्धि दो प्रकार की है:
- आचार्य आदि का सान्निध्य मिलना और
- उनके द्वारा कहे हुए 6 द्रव्यों और 9 पदार्थों को ग्रहण करना

14. आचार्य आदि उपदेशक के केवल आचार-व्यवहार को देख, उनके सानिध्य में; बिना कुछ सुने हुए, अगर हमारे अन्दर विशुद्धि बनती है, पुरुषार्थ बनता है;
15. जो देशना लब्धि को पूर्ण कर निसर्ग सम्यग्दर्शन के रूप में प्रकट होता है

16. आज हमने जाना कि जीव जिस पर्याय में जन्म लेता है वैसा ही स्वभाव ग्रहण करता है
17. उसी तरह स्वभाव से जब अन्तरंग में दर्शन मोहनीय कर्म का उपशम, क्षय या क्षयोपशम और बाहरी योग्यता से तत्त्व श्रद्धा की परिणति आती है तो बाहर से केवल जिनबिम्ब दर्शन या आचार्यों के सानिध्य से भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो जाती है
18. हमने पुनः सूत्र 4 का अध्ययन किया जिसमें सात तत्त्वों का वर्णन है
19. हमने आज इन तत्त्वों के क्रम के महत्त्व को समझा
20. चूँकि सब कुछ जीव के अंदर घटित होगा अतः जीव सबसे पहले आता है
21. अजीव का अनादि से इस जीव के साथ सम्बन्ध है और संसार दशा में अजीव का जीव पर उपकार है अतः जीव के बाद अजीव आता है
22. कार्मण शरीर, तेजस शरीर आदि अजीव हैं
23. जीव और अजीव के संयोग से आस्त्रव होता है

- जीव के जिस भाव से कर्म आते हैं वे भाव आस्त्रव हैं
- और जो कर्म आते हैं वे द्रव्य आस्त्रव हैं

24. आस्त्रव के होने से बंध होता है
25. ये दोनों आत्मा में एक ही समय पर घटित होता है
26. आस्त्रव मिथ्या, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग के कारण से होता है
27. बंध प्रकृति, प्रदेश, अनुभाग और स्थिति प्रकार का होता है
28. संवर का अर्थ है बंध का रुक जाना
29. यह बंध विरोधी है
30. संवर पूर्वक निर्जरा ही उपयोगी होती है
31. निर्जरा से ही मोक्ष होगा
32. हमने जाना कि जीव अजीव दो ही तत्त्व सामान्य हैं
33. मगर संसार और मोक्ष का ज्ञान सभी सात तत्वों से होता है
34. जैसे मोक्ष का कारण संवर और निर्जरा हैं
35. वहीं संसार का कारण आस्त्रव और बंध हैं
36. मोक्ष, जीव, संवर और निर्जरा हमारे लिए उपादेय हैं
37. वहीं आस्त्रव और बंध कथंचित हेय हैं
38. वस्तु को समझने के उपायों में सबसे पहले निक्षेप आता है
39. न्यास यानि निक्षेप चार प्रकार का होता है नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव
40. नाम निक्षेप में लोक व्यवहार में गुणों की अपेक्षा के बिना किसी वस्तु या व्यक्ति का नामकरण करते हैं
41. स्थापना निक्षेप में किसी और चीज में उसकी स्थापना करते हैं
42. यह अतद्भाव और तद्भाव हो सकती है यानि किसी भी रंग रुप में या उसी रंग रुप में
43. तद्भाव स्थापना ही पूज्य होती है

44. द्रव्य निक्षेप में आगामी काल की अपेक्षा होती है कैसे शुक्ल ध्यानी मुनि को अरिहंत कहना
45. जिस समय पर जो चीज उसी रूप में बन गई वह भाव निक्षेप है

# अभ्यास प्रश्न पत्र

प्रश्न 1 -निसर्ग का क्या अर्थ होता है?
1. स्वभाव
2. पर उपदेश
3. पर दर्शन

प्रश्न 2 -अधिगम का क्या अर्थ होता है?
1. स्व दर्शन
2. पर उपदेश
3. स्वभाव

प्रश्न 3 -जिन बिम्ब का दर्शन भी सम्यग्दर्शन में कारण होता है।
1. गलत
2. सही

प्रश्न 4 -जिसने कभी भी सम्यग्दर्शन को प्राप्त नहीं किया, उसे क्या कहते हैं?
1. सादि मिथ्यादृष्टि
2. सादा मिथ्यादृष्टि
3. अनादि मिथ्यादृष्टि

प्रश्न 5 -सम्यग्दर्शन किसके माध्यम से होता है?
1. लब्धियों के माध्यम से
2. समय के माध्यम से
3. शिक्षा के माध्यम से

प्रश्न 6 -छह द्रव्य, नौ पदार्थों को प्रकाशित करने वाला उपदेश देने वाले आचार्यों की सन्निधि क्या कहलाती है?
1. देशना लब्धि
2. प्रायोग्य लब्धि
3. विशुद्धि लब्धि

प्रश्न 7 -विशुद्धि लब्धि कौनसी लब्धि होती है?
1. दूसरी
2. चौथी
3. छठी

प्रश्न 8 -पाँचवी लब्धि कौनसी होती है?
1. प्रायोग्य लब्धि
2. देशना लब्धि
3. करण लब्धि

प्रश्न 9 -लब्धियाँ कितनी होती हैं?
1. 5
2. 6
3. 9

प्रश्न 10 -'सम्यग्दर्शन निसर्ग से भी होता है, _____ से भी होता है।' रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये।
1. सम्यग्ज्ञान
2. अधिगम
3. तत्त्वदृष्टि

प्रश्न 11 -कौनसा तत्त्व प्रधान है?
1. मोक्ष
2. जीव
3. अजीव

प्रश्न 12 -कर्म द्रव्य, कार्मण शरीर, तेजस शरीर ये सब अजीव द्रव्य हैं।
1. सही
2. गलत

प्रश्न 13 -जो स्वभाव हमें देखने में आता है वह क्या होता है?
1. आस्रव
2. व्यवहार
3. निसर्ग

प्रश्न 14-निम्न में से कौनसा आस्रव का प्रकार नहीं है?
1. द्रव्य आस्रव
2. जाति आस्रव
3. भाव आस्रव

प्रश्न 15 -बंध कितने प्रकार के होते हैं?
1. 5
2. 6
3. 4

प्रश्न 16 -बंध के रुक जाने को क्या कहते हैं?
1. संवर
2. निर्जरा
3. आस्रव

प्रश्न 17-अपने अन्दर कर्मों के रूप में बैठे संसार के कारणों को घटाने-हटाने का नाम क्या है?
1. निर्जरा
2. बंध
3. आस्रव

प्रश्न 18 -'नामस्थापना ____ भावतस्तन्न्यासः'- रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये।
1. जीव
2. भाव
3. द्रव्य

प्रश्न 19-निम्न में से कौनसा स्थापना का प्रकार नहीं है?
1. अतद्भाव स्थापना
2. तद्भाव स्थापना
3. अद्भाव स्थापना

प्रश्न 20 -चौथा निक्षेप कौनसा है?
1. द्रव्य
2. स्थापना
3. भाव

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

# अभ्यास प्रश्न पत्र 'विषयक'

प्रश्न - 1 सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के कितने कारण हैं नाम बताएं और उनकी परिभाषा बताएं।

प्रश्न - 2 सम्यग्दर्शन कितने प्रकार के होते हैं नाम बताएं।

प्रश्न - 3 अनादि मिथ्यादृष्टि जीव किसे कहते है?

प्रश्न - 4 पांच लब्धियो के नाम बताएं।

प्रश्न - 5 Short Note on देशना लब्धि

प्रश्न - 6 आस्रव के भेद बताएँ।

प्रश्न - 7 सात तत्वों में से कौन कौन से तत्व उपादेय हैं और कौन कौन से हेय हैं?

प्रश्न - 8 "जीव आदि का ज्ञान करने के लिए न्यास को जानना जरूरी है" न्यास का अर्थ क्या है और यह कितने प्रकार का है नाम भी बताएँ।

प्रश्न - 9 नाम निक्षेप गुणों की अपेक्षा रहित होता है या सहित होता है। उधारण के साथ बताएँ।

प्रश्न - 10 निसर्ग सम्यग्दर्शन बिना अधिगम के भी होता है। किस प्रकार होता है विस्तार पूर्वक बताएं।

प्रश्न - 11 जीव पर अजीव के क्या उपकार हैं?

प्रश्न - 12 सामान्य और विशेष से तत्वों की व्याख्या करें।

प्रश्न - 13 निक्षेप किसे कहते हैं? निक्षेप कितने प्रकार के हैं उदाहरण सहित लिखें।

प्रश्न - 14 वाक्य लिखे जहाँ आप द्रव्य निक्षेप का use व्यवहार में करते हैं।

# प्रवचन: 4

## प्रमाण और नय के माध्यम से अधिगम:-

निक्षेप के आगे ज्ञान करने का, ज्ञान को और ढंग से किस उपाय के माध्यम से हम जान सकते हैं इसके लिए आचार्य आगे का सूत्र देते हैं-

**प्रमाणनयैरधिगमः ॥1.06॥**

**प्रमाण + नयः + अधिगमः**

**नय प्रमाण के ज्ञान से, होत यथारथ ज्ञान।**
**नैना नय के नैक हैं, द्वय विध हो परिमाण॥**

मतलब प्रमाण और नयों के माध्यम से अधिगम होता है, ज्ञान होता है। एक तरह से जो हमने

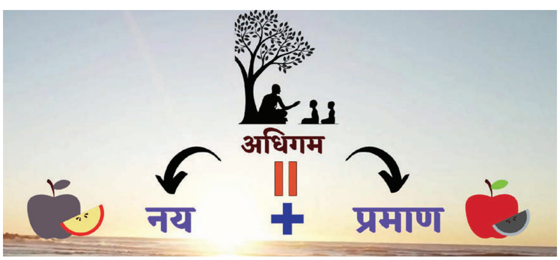


अधिगम शब्द की कल थोड़ी सी व्याख्या सुनी थी, वह अधिगम शब्द यहाँ से भी स्पष्ट होता है। अधिगम का मतलब होता है- प्रमाण और नयों के माध्यम से जानना। दो चीजें होती हैं- एक प्रमाण और एक नय,

1.जो प्रमाण होता है- वह वस्तु को पूर्ण रूप से जानता है। वस्तु में जितने भी धर्म होते हैं, उन धर्मों को सभी को ग्रहण करता है

2.जो नय होता है- वह वस्तु के किसी एक धर्म को ग्रहण करके बताता है। जब भी हमें ज्ञान होगा, वह ज्ञान हमेशा उपदेश पूर्वक ही होगा और उस ज्ञान के माध्यम से हमारे अन्दर समस्त वस्तु का ज्ञान होगा तो प्रमाण के द्वारा होगा और हम वस्तु के किसी एक धर्म पर जब focus करते हैं तो वह नय ज्ञान कहलाता है। प्रमाण वस्तुतः क्या है? यह आगे बताया जाने वाला है कि जो हमारा ज्ञान है, वह ज्ञान ही प्रमाण बन जाता है, यदि वह ज्ञान सम्यक् हो। इसलिए आचार्यों ने सम्यग्ज्ञान को प्रमाण कहा है और सम्यग्ज्ञान में पाँचों ही ज्ञान आ जाते हैं- मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मन: पर्यय ज्ञान और केवलज्ञान। अर्थात् हम अपने मतिज्ञान और श्रुतज्ञान से भी वस्तु को जान रहे हैं। जैसा हमें बताया गया है वैसा हम जान रहे हैं तो हमारा यह मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान भी प्रमाण कहलाता है। प्रमाण का मतलब valid knowledge.हमारी knowledge

SCAN TO WATCH

में एक और title validity का लग जाता है। मतलब आपकी knowledge valid है। क्यों valid है? क्योंकि आपको जैसा श्रुत में बताया गया था, वैसा ही आपने जाना और उसी तरह से आपने उसका व्याख्यान किया। इसलिए श्रुत ज्ञान के कारण से ही प्रमाणता और श्रुत ज्ञान में ही नय ज्ञान, ये दोनों गर्भित होते हैं।

## क्या ज्ञान स्वार्थी भी है ?

अब हम समझने की यह कोशिश करें कि जो जैसे पाँच ज्ञान होते हैं, उनमें मति ज्ञान, अवधि ज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान और केवल ज्ञान, ये सभी ज्ञान स्वार्थ ज्ञान कहलाते हैं। क्या बोलते हैं? स्वार्थ का मतलब स्वार्थी नहीं। स्वार्थ का मतलब केवल स्व-अर्थ को, केवल अपने ही अर्थ को या अपने लिए ही वह प्रयोजनीय है। जो इस ज्ञान को धारण करेगा उसका प्रयोजन केवल अपने लिए है क्योंकि ये सभी ज्ञान स्वार्थ होने के कारण से ज्ञानात्मक ही होते हैं अर्थात् सिर्फ ज्ञान है। वह ज्ञान दूसरों के काम कब आएगा? जब वह वचनात्मक होगा। जब शब्द रूप में ढलेगा तो दूसरों के काम आएगा। श्रुत ज्ञान में ऐसी शक्ति है कि वह स्वार्थ रूप भी होता है और परार्थ रूप भी होता है। बाकी के जो चारों ज्ञान है वे केवल स्वार्थ रूपी होते हैं अर्थात् ज्ञानात्मक होते हैं, वचनात्मक नहीं होते और जो श्रुत ज्ञान है वह ज्ञानात्मक भी है और वचनात्मक भी है, शब्दात्मक भी है। अतः हमारे लिए श्रुत ज्ञान बड़ा उपकारी है।

## श्रुतज्ञान का महत्व और प्रकार

अगर हम देखे केवलज्ञान तो अपने आप में उपकारी है ही लेकिन केवलज्ञान से भी ज्यादा उपकारी यह श्रुतज्ञान है क्योंकि केवलज्ञान भी केवल स्वार्थ रूप है। केवलज्ञान में भी वचनों से कहने की क्षमता नहीं है और जो बोला जाता है वह केवलज्ञान नहीं बोलता है। हम जो बोलेंगे वह श्रुत ज्ञान बोलेगा। श्रुतज्ञान में शब्द बनते हैं, श्रुत ज्ञान से ही हम शब्दों को समझते हैं और श्रुत ज्ञान ही हमारे लिए शब्दों के माध्यम से ज्ञान कराता है। इसलिए श्रुत ज्ञान को दो प्रकार का कहा गया है- अक्षरात्मक और अनक्षरात्मक

अक्षरात्मक ज्ञान- जो अक्षरों को जाने अक्षरों से ज्ञान पैदा करें उसको अक्षरात्मक ज्ञान कहते हैं। अनक्षरात्मक ज्ञान- जहाँ पर अक्षर ग्रहण करने की शक्ति न रहे, जहाँ पर अक्षर का ज्ञान न हो, उसे अनक्षरात्मक ज्ञान कहते हैं। जैसे दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय आदि जीव हैं ये भी कुछ न कुछ ज्ञान तो रखते ही हैं। इनके पास भी मतिज्ञान होता है, श्रुतज्ञान होता है लेकिन इनके पास अगर श्रुतज्ञान होगा तो वह अनक्षरात्मक ही होगा, अक्षरात्मक नहीं होगा। जो शब्द बोल सकते हैं, शब्दों को समझ सकते हैं और उन अक्षरों के माध्यम से उनके अर्थ तक पहुँच सकते हैं उसी ज्ञान को हम अक्षरात्मक श्रुत ज्ञान कहते हैं।इस दृष्टि से हम देखे तो श्रुत ज्ञान का बड़ा महत्व है। श्रुत ज्ञान

ज्ञानात्मक भी है, अपने लिए भी काम कर रहा है। स्वार्थ रूप भी है और दूसरों के लिए हित भी कर रहा है; परार्थ रूप भी है, वचनात्मक भी है। इसलिए श्रुत ज्ञान को बड़ा विशेष महत्व दिया गया है। आप एक बार सुन सकते हैं, समझ सकते हैं कि जिसे हम जिनवाणी बोलते हैं, उस जिनवाणी को भी हम श्रुत ज्ञान कहते हैं। क्या बोलते हैं? उसको मति ज्ञान नहीं कहते हैं, केवलज्ञान नहीं कहते। उसको भी हम श्रुत वाणी कह सकेंगे, श्रुत ज्ञान कह सकेंगे, द्रव्य श्रुत कहा जाता है| लेकिन उसको हम केवलज्ञान नहीं कहते, मतिज्ञान नहीं कहते, अवधिज्ञान भी नहीं कहते क्योंकि उस श्रुत ज्ञान के जो अक्षर

हैं, जो शब्द हैं वे उस जिनवाणी में लिखे हुए हैं और उन अक्षरों के माध्यम से हमारे अन्दर भी श्रुत ज्ञान होता है। एक उपचार के रूप में देखे तो जिनवाणी को भी उपचार से श्रुतज्ञान कहा जाता कहा जाता है क्योंकि श्रुतज्ञान तो वास्तव में हमारी श्रुत ज्ञानावर्ण क्रम के क्षयोपशम से ही होगा। लेकिन जो जिनवाणी के माध्यम से हो रहा है उसको भी श्रुत ज्ञान इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह उसमें कारण है। इसलिए कारण में कार्य का उपचार करने से, कारण को भी कार्य के रूप में मान लेने से जिनवाणी को श्रुतज्ञान की उपमा दी जाती है। श्रुत ज्ञान के रूप में व्याख्यायित किया जाता है।

## प्रमाण और नय श्रुतज्ञान के विषय है

हम यह समझे कि यह श्रुतज्ञान जो जिनवाणी में है, वह भी प्रमाणिक है और उससे हमारे अन्दर वैसा का वैसा ज्ञान आ जाए तो वह भी हमारा ज्ञान प्रामाणिक हो जाए। जरूरत इस चीज की है कि हम अपने ज्ञान को प्रामाणिक बनाएँ। ज्ञान तो सबके पास है- मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान सभी जीवों के पास है। लेकिन वह मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान जब तक प्रामाणिक नहीं होगा तब तक वह मान्य नहीं होगा। बाजार में कौन सी चीज प्रामाणिक मानी जाती है? जो बिल्कुल सही हो, सम्यक् हो। इसलिए जब ज्ञान सम्यक् हो गया तो 'सम्यक् ज्ञानं प्रमाणम्' ऐसे बताया गया अर्थात् सम्यग्ज्ञान ही प्रमाण है। आपका ज्ञान ही सम्यक् हो गया तो ज्ञान सम्यक् कब हुआ? जब सम्यग्दर्शन हो गया अर्थात् आपकी श्रद्धा सही है, आपका विश्वास सही जगह पर है। जैसा बताया गया है, आप वैसा ही तत्त्व को, वस्तु को जान रहे हैं तो वह ज्ञान अपने आप में प्रमाण हो जाएगा। अब प्रमाण के माध्यम से वस्तु में अनेक धर्मों को, अनेक गुणों को जाना जाता है। लेकिन हम परोक्ष रूप से भी उस वस्तु को अगर जान रहे हैं तो वह भी हमारे लिए प्रमाण कहलाएगा।

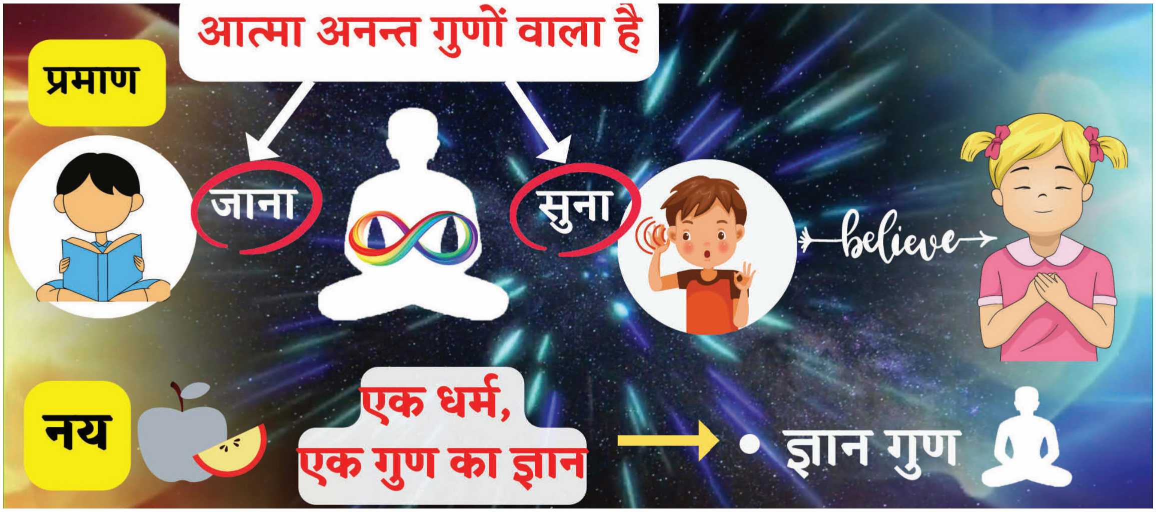

जैसे हमने कहा आत्मा अनन्त गुणों वाला है। अब हमने अनन्त गुण देखे तो नहीं, जाने ही तो हैं, सुने ही तो है। लेकिन अगर हम सुनकर के भी ऐसा ही मान रहे हैं कि आत्मा अनन्त गुण वाला है, तो हम आत्मा को पूरा जान रहे हैं। यह प्रमाण कहलाएगा। फिर हमने कहा कि आत्मा का एक गुण ज्ञान गुण है, दर्शन गुण है। यह उसका विशेष गुण हो गया। सामान्य गुण उसका अस्तित्व है, वस्तुत्व है, यह उसके सामान्य गुण हो गए। फिर हमने किसी एक गुण की व्याख्या की कि आत्मा का अस्तित्व है या आत्मा नित्य है, तो यह उसका नय हो गया। नय ज्ञान के माध्यम से हम किसी एक धर्म को, एक गुण को ले कर हमने उसका ज्ञान कर लिया। वह ज्ञान हमारे लिए श्रुत ज्ञान से आया। वह ज्ञान शब्दात्मक भी होगा और अर्थात्मक भी होगा। स्वार्थ भी होगा, परार्थ भी होगा तो इस तरह से प्रमाण और नयों के माध्यम से कोई भी सही ढंग से वस्तु को जान सकता है। इसलिए कहा गया प्रमाण और नयों के द्वारा अधिगम होता है अर्थात् ज्ञान होता है। यह प्रमाण और नय पाँच ज्ञान में से किस ज्ञान के विषय हो गए? देखा जाए तो प्रमाण और नय श्रुतज्ञान के विषय है। लेकिन सभी ज्ञान प्रमाण है। लेकिन जो प्रमाण या नय निकले हैं वे किस ज्ञान में से निकले हैं? श्रुतज्ञान में से निकले है। श्रुतज्ञान हमें प्रमाण के रूप में पूरी वस्तु का भी ज्ञान कराता है और नय के रूप में वस्तु के एक अंश का, एक धर्म का भी हमें ज्ञान कराता है। इस तरह से जब हम पदार्थों को जानने लगेंगे जीव पदार्थों को, अजीवों को या कोई भी आस्रव बन्ध आदि किसी भी तरह के पदार्थों को या सम्यग्दर्शन आदि को तो वह सारा का सारा ज्ञान हमारा सम्यग्ज्ञान कहलाएगा और उसके माध्यम से जो हमें अपने अन्दर ज्ञानात्मक परिणति आएगी वह हमारी सम्यग्ज्ञान की परिणति कहलाएगी। अतः हमेशा प्रमाण और नयों के माध्यम से ही ज्ञान होता है, इसको ध्यान में रखना है।

## पदार्थों को कैसे जाना जाए ?

आगे यह बताया जा रहा है कि हम अगर पदार्थों को जानते हैं तो पदार्थों को जानने के कई उपाय होते हैं। एक उपाय तो यह है- प्रमाण और नय के माध्यम से पदार्थ को जानना। दूसरा उपाय आगे और बताया जा रहा है-

**निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थिति विधानतः ॥1.07॥**

**निर्देश + स्वामित्व + साधन + अधिकरण + स्थिति + विधानतः**

**स्वामी साधन थिति तथा, अधिकरणा निरदेश।**
**भेद सहित ये भेद छह, देते ज्ञान विशेष॥1.7॥**

क्या लिखा जा रहा है? इसके माध्यम से भी हम पदार्थों को जान सकते हैं। पदार्थों को जानने

के तीन सूत्र आ रहे हैं। पहला सूत्र हो गया- प्रमाण और नय के माध्यम से पदार्थों को जानना। दूसरा सूत्र आ रहा है- निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति और विधान। अगर हमने छह चीजें सही से जान ली तो हम पूरे पदार्थों से ढंग से जान सकते हैं।

निर्देश:
किसी भी वस्तु को जानने के लिए हमें पहले उसका निर्देश चाहिए पड़ता है। निर्देश अर्थात् हम क्या जानना चाह रहे हैं? या वस्तु का नाम भी निर्देश कहलाता है। हम क्या जानना चाह रहे हैं? सात तत्त्वों में से जीव आदि तत्त्व में से कौन से तत्त्व को जानना चाह रहे हैं? मान लो हमने कहा मैं जीव तत्त्व को जानना चाह रहा हूँ तो यह उसका निर्देश हो गया या सम्यग्दर्शन को जानना चाह रहा हूँ तो सम्यग्दर्शन उसका निर्देश हो गया।

स्वामित्व:
फिर उसके बाद में आता है स्वामित्व। स्वामित्व का मतलब होता है कि इसका स्वामी कौन है? मतलब सम्यग्दर्शन किसको होता है? स्वामी इसका कौन बनेगा? कहा गया- अनन्त जीव हैं। अब अनन्त जीवों में सम्यग्दर्शन का स्वामी कौन होगा? जो संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव होगा वह सम्यग्दर्शन का स्वामी हो सकता है। चारों गति में से कौन सी गति का जीव होगा? चारों गति का जीव हो सकता है। नरकों में भी सम्यग्दर्शन होता है क्या? हाँ! होता है। सातों नरकों में होता है क्या? हाँ! सातों नरकों में होता है।

### • सम्यग्दर्शन का स्वामित्व और सम्यग्दर्शन के तीन प्रकार:

यह बात अलग है कि तीन प्रकार के सम्यग्दर्शन हैं। उनसे कुछ विशेषता आ जाएगी। औपशमिक सम्यग्दर्शन, क्षयोपशम सम्यग्दर्शन, क्षायिक सम्यग्दर्शन। अगर हम सम्यग्दृष्टि जीवों को नरकों में देखेंगे तो औपशमिक सम्यग्दर्शन वाले सातों नरकों में मिल जाएँगे, क्षयोपशम सम्यग्दर्शन वाले भी सातों नरकों में मिल जाएँगे लेकिन क्षायिक सम्यग्दर्शन वाले केवल प्रथम नरक में ही मिलेंगे। इस तरह से सम्यग्दर्शन का स्वामित्व जानना। तिर्यंच गति में, मनुष्य गति में, देव गति में भी इसी तरह से जानना। कौन जीव मर कर के, क्या-क्या बन सकता है या कौन से सम्यग्दर्शन के साथ में कहाँ-कहाँ जन्म ले सकता है। जब वह जीव जन्म लेता है, तो जन्म के समय पर उसके लिए एक अन्तर्मुहूर्त तक अपर्याप्त अवस्था होती है। अन्तर्मुहूर्त के बाद में वह पर्याप्त हो जाता है। अपर्याप्त अवस्था में भी सम्यग्दर्शन हो सकता है। कब होगा? जो जीव यहाँ पर उपशम श्रेणी में मरण को प्राप्त होता है, वह देव बनता है, तो यहाँ से भी सम्यग्दर्शन, उपशम सम्यग्दर्शन लेकर अपर्याप्त अवस्था में भी देवों में मिल सकता है। मान लो क्षयोपशम सम्यग्दर्शन के साथ मरण को प्राप्त हुआ तो अपर्याप्त अवस्था में भी क्षयोपशम सम्यग्दर्शन रहेगा और पर्याप्त अवस्था में भी रहेगा।

SCAN TO WATCH

क्षायिक सम्यग्दर्शन के साथ मरण हुआ तो क्षायिक सम्यग्दर्शन भी उसके लिए अपर्याप्त अवस्था में भी रहेगा, पर्याप्त अवस्था में भी रहेगा। इस तरह से सम्यग्दर्शन के स्वामित्व को अनेक तरह से जानना है। विशेष पढ़ना हो तो आप सर्वार्थसिद्धि ग्रन्थ पढ़ना तब समझ में आएगा।

## साधन:

साधन मतलब उसके कारण, हेतु। किन कारणों से सम्यग्दर्शन होता है? तुम्हें कोई भी चीज जाननी है, तो उसके हेतू भी जानने पड़ते हैं। क्या-क्या इसके कारण है? किसी भी पदार्थ को जानने के लिए हमें सब चीज जाननी पड़ेंगी। तब हमें उस पदार्थ की बिलकुल full knowledge हो जाएगी। निर्देश जाना, उसका स्वामी जानो, उसका साधन जानो। साधन में भी दो प्रकार के साधन बताए जाते हैं- एक बाह्य साधन होते हैं और एक अन्तरंग साधन होता है।

## अन्तरंग साधन क्या है?

अन्तरंग में जब हमारे कर्मों का क्षयपोशम होगा, दर्शन मोहनीय कर्म का उपशम होगा, क्षयपोशम होगा, क्षय होगा तो अन्तरंग में क्षयोपशम, उपशम और क्षायिक सम्यग्दर्शन यह परिणाम पैदा होंगे। तो यह अन्तरंग कारणों से हो गया।

1. जाति स्मरण- जो सभी गति में होता है, common है। जाति स्मरण से भी किसी को सम्यग्दर्शन हो सकता है। जाति स्मरण का मतलब पूर्व जन्म का स्मरण होना है। कभी-कभी

कई जीवों में यह प्रवृत्ति देखी भी जाती है उन्हें पूर्व जन्म का याद रहता है कि मैं पहले क्या था? कहाँ से आया हूँ? स्थान पता सब बता देते हैं। वह भी एक सम्यग्दर्शन में निमित्त बन सकता है। वह भी सम्यग्दर्शन के लिए इस बाह्य साधन है।

2. धर्म श्रवण- जो आप सुन रहे हो, इस तरह के सुनने से 'पर' का उपदेश सुनने से, गुरु का उपदेश सुनने से भी हमारे अन्दर श्रद्धा बन जाती है। उस तरह से अगर श्रद्धा बनती है, तो पर-उपदेश निमित्त कहलाएगा। समझ में आया? कितने कारण हो गए जाति स्मरण, धर्म-श्रवण

3. जिन बिम्ब दर्शन- यह मान कर चलो कि वर्तमान काल में भी जो लोग पूछते हैं कि क्या सम्यग्दर्शन हो सकता है? क्यों नहीं हो सकता? जिन बिम्ब दर्शन से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति बताई गई है। यानी हमें सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के लिए आज साक्षात अरिहन्त की जरूरत भी नहीं है। उनकी प्रतिमा भी पर्याप्त है लेकिन हमारा अन्तरंग कारण भी सशक्त होना चाहिए तो बाह्य कारण से हमारे अन्दर सम्यक्त्व की प्राप्ति हो जाएगी।

## • प्रथम सम्यग्दर्शन

जो सम्यक्त्व होगा वह सबसे पहला सम्यग्दर्शन होता है- उपशम सम्यग्दर्शन। औपशमिक सम्यग्दर्शन जिसको बोलते हैं। सम्यग्दर्शन की इसी से शुरुआत होती है। यह औपशमिक सम्यग्दर्शन जिन-बिम्ब दर्शन से भी हो जाता है। बाद में यह क्षयोपशम सम्यग्दर्शन के रूप में भी परिवर्तित होकर के जीवन पर्यन्त तक बना रह सकता है क्योंकि औपशमिक सम्यग्दर्शन केवल अन्तर्मुहूर्त के लिए होता है। अन्तर्मुहूर्त के बाद में अगर सम्यग्दर्शन का भाव बना रहेगा तो अन्तरंग में जो सम्यक्त्व प्रकृति होती है उस सम्यक्त्व कर्म के उदय के कारण से अन्तरंग में यह सम्यग्दर्शन का भाव बना रहता है। इसको बोलते हैं- क्षयोपशमिक सम्यग्दर्शन या क्षयोपशम सम्यग्दर्शन। यह लंबे time तक भी रह सकता है, पूरे जीवन भर रह सकता है। किसी को कोई बाधा नहीं है, कोई भी गृहस्थ को हो सकता है। यहाँ तक कि पशु पक्षियों को भी हो सकता है। इस तरह का सम्यग्दर्शन तो हमें आज जिन-बिम्ब दर्शन से भी उपलब्ध है। हाँ! क्षायिक सम्यग्दर्शन नहीं होगा आज क्योंकि उसके लिए हमें साक्षात अरिहन्तों का, केवली या श्रुतकेवली का पाद मूल चाहिए, उनका चरण सानिध्य चाहिए।

फिर क्या दिक्कत है? शुरुआत हो गई है कभी उसकी पूर्णता भी हो जाएगी। इस तरह से सम्यग्दर्शन का बाह्य साधन मनुष्य गति में जो बताया गया है, उसको यदि हम अपनाते रहेंगे तो हमारे भीतर कभी न कभी अपनी योग्यता बनेगी तो अपनी योग्यता से वह सम्यग्दर्शन की प्राप्ति स्वतः हो जाएगी। बाहर कारणों को अपनाते रहो और भीतर अपने अन्तरंग में भावजन्य जो पुरुषार्थ है उसको करते रहो। यह भावजन्य पुरुषार्थ जिस दिन पूर्ण हो जाएगा आपके

अन्दर सम्यग्दर्शन घटित हो जाएगा। मनुष्य गति में सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के तीन कारण हैं।

## • तिर्यंच गति में भी सम्यग्दर्शन

तिर्यंच गति में भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के ये ही तीन कारण हैं। उनको भी जाति स्मरण होता है, उनको भी धर्म सुनाया जाता है। महावीर भगवान के जीव को जब वह शेर था तो एक मुनि महाराज ने सुनाया। समझ आ रहा है? जब एक हाथी पार्श्वनाथ भगवान का जीव था तब उसको सुनाया। यह सब सम्यग्दर्शन होता है। ऐसे सुनने से भी उनको सम्यग्दर्शन होता है, तो धर्म श्रवण करने से होता है, जाति स्मरण हो जाने से होता और भगवान के जिनबिम्ब का भी उन्हें दर्शन हो जाए तो उससे भी हो जाता है। अतः ये तीन कारण उनके लिए भी है। कर्मों का क्षयोपशम, क्षय, उपशम आदि की जो अवस्थाएँ हैं वे विशुद्धि पर निर्भर करती हैं। बाह्य कारणों के मिलने पर अगर इस तरह की विशुद्धि बढ़ जाती है, तो वह कार्य अन्तरंग में घटित हो जाता है। इस तरह से बाह्य साधन तिर्यंच गति में भी यह तीन हैं।

## • नरक गति में सम्यग्दर्शन

नरक गति में देखे तो नरक गति में जाति स्मरण भी होता है, धर्म श्रवण भी होता है और वहाँ पर एक और तीसरा कारण होता है- वेदना का अनुभव। क्या सुन रहे हो? किससे होता है वहाँ सम्यग्दर्शन? जिनबिम्ब दर्शन नहीं है। वहाँ क्या मिलेगी? वेदना, पीड़ा मतलब कि वह पीड़ा भी उनके लिए सम्यग्दर्शन का कारण बन जाती है क्योंकि उन्हें उस पीड़ा का कारण पता पड़ जाता है कि हम यह पीड़ा क्यों भोग रहे है? यह वेदना हमारे अनुभव में क्यों हो रही हैं?

हमने इतना पाप किया, हमने इतनी हिंसा की, हमने इतना मिथ्यात्व किया, इसके कारण से आज हमें नरक में यह पीड़ा भोगनी पड़ रही है। नारकियों के लिए भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में ये तीनों कारण हैं। उसमें भी अब आप कहोगे धर्म श्रवण कहाँ होगा? जाति स्मरण तो सब जगह हो जाएगा। धर्म श्रवण और वेदना का अनुभव यह तो सब जगह है लेकिन धर्म श्रवण यह जो कारण होगा वह केवल ऊपर के तीन नरकों तक होगा। चतुर्थ आदि नरकों में सम्यग्दर्शन के दो ही कारण रह जाएँगे। केवल जाति स्मरण और वेदना का अनुभव। यह नरकों में सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के बाह्य कारण हो गए।

## • देवों में सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के कारण

अब आप देवों में देखे तो वहाँ पर सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के कारण हैं। जाति स्मरण भी है, धर्म श्रवण भी है वहाँ पर आता है- एक तो जिनमहिमा दर्शन। कौन सा कारण बताया जिनमहिमा!

जिनबिम्ब दर्शन नहीं जिन महिमा दर्शन क्योंकि देव हैं, बड़े लोग हैं।

**जिनमहिमा दर्शन**

गर्भ कल्याणक

जन्म कल्याणक

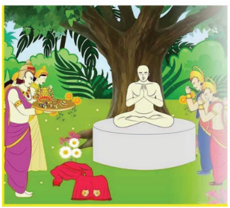

तप कल्याणक

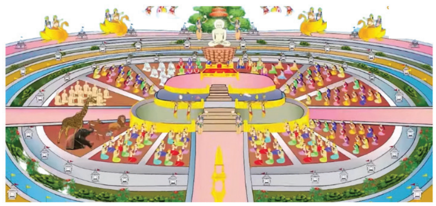

ज्ञान कल्याणक

मोक्ष कल्याणक

उन्हें जिन बिम्बों से सम्यग्दर्शन नहीं होता। उन्हें किससे होगा? जिनेन्द्र भगवान की जब महिमा दिखाई जाएगी। पंच कल्याणक की जो महिमा होती है, जब वह देखते हैं, जन्म कल्याणक की महिमा सुमेरु पर्वत पर, ज्ञान कल्याणक की महिमा समवशरण में तब उन्हें सम्यग्दर्शन हो जाता है। जिनमहिमा दर्शन से होता है। एक होता है- देव ऋद्धि दर्शन।नरकों में जैसे वेदना का अनुभव करने से होता है ऐसे ही ऊपर भी मिथ्या दृष्टि देव होते हैं वे दूसरे देवों की जब बड़ी-बड़ी ऋद्धियाँ, बड़ी-बड़ी शक्तियाँ देखते हैं तो उन्हें लगता है कि हम भी तो देव हैं और ये भी देव हैं लेकिन इनको इतनी शक्ति कहाँ से मिल गई? तब अपने अवधिज्ञान से उन्हें पता पड़ता है कि यह जो इन्होंने पूर्व जन्म में सम्यक्त्व के साथ में तप किया था उसके कारण से उनको इस तरह की शक्ति मिली हैं, ऋद्धियाँ मिली हैं। देव ऋद्धि का दर्शन भी सम्यग्दर्शन में कारण बन जाता है।

SCAN TO WATCH

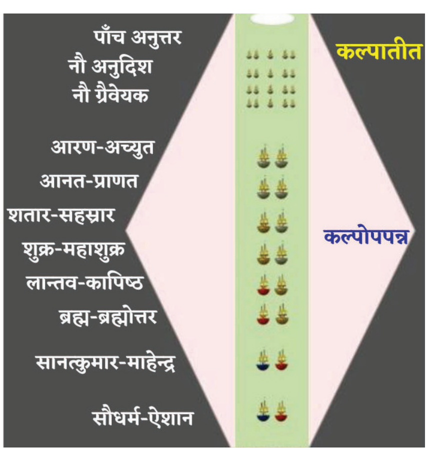


अब अगर हम इसको देव गति में भी अगर हम जैसे स्वर्ग है; सोलह स्वर्ग है - ऊपर ग्रैवेयक है, अनुदिश हैं, अनुत्तर विमान हैं। उनमें भी अगर हम देखे तो अलग-अलग स्वर्गों में अलग-अलग कारण घटित होते हैं। बारह स्वर्ग तक तो देखा जाए तो सभी कारण बन जाते हैं। यानि सहस्रार स्वर्ग तक। आनत, प्राणत, आरण, अच्युत इन स्वर्गों में क्या होगा? देव ऋद्धि दर्शन से इन स्वर्गों में सम्यग्दर्शन यह वाला जो कारण है, वह छूट जाएगा है। क्योंकि इन स्वर्गों में देवों की लेश्या शुद्ध हो जाती हैं, शुक्ल लेश्या हो जाती है। इस कारण से उन्हें

दूसरे की ऋद्धि देखकर फिर कोई भी दुर्भाव पैदा नहीं होता इसलिए वहाँ पर वह सम्यग्दर्शन का कारण नहीं बनता। हम पहुँच गए सोलह स्वर्ग तक। बीच के आनत, प्राणत आरण, अच्युत इन चार स्वर्गों में देव रिद्धि के बिना चार की जगह तीन कारण रहे। फिर उसके ऊपर जब नवग्रैवेयक होते हैं तो वहाँ पर भी मिथ्या दृष्टि देव होते हैं। उनके अन्दर भी जिनमहिमा रूप यह जो कारण है यह वहाँ तक होता है फिर उसके बाद यह छूट जाता है। समझ आया? मतलब कि आनत, प्राणत, आरण, अच्युत स्वर्ग तक कितने कारण बचे? तीन कारण बचे। उन स्वर्गों के देवों तक उनको धर्म श्रवण से भी सम्यग्दर्शन हो सकता है, जाति स्मरण से भी हो सकता है और जिन महिमा दर्शन से होगा। लेकिन जो नौवें ग्रैवेयक में पहुँच गए हैं उनको अब जिन महिमा दर्शन से भी नहीं होगा। उनके लिए दो ही कारण रह जाएँगे। केवल धर्म श्रवण और जाति स्मरण। उसके आगे जो अनुदिश, अनुत्तर विमान में जो जीव होते हैं वे तो नियम से सारे के सारे सम्यग्दृष्टि ही होते हैं। वहाँ पर सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति की तो कोई बात ही नहीं है इसलिए वहाँ पर कोई कारण की बात नहीं। इस तरह से सब साधन बताये जाते हैं- निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण।

**अधिकरण:**

अधिकरण मतलब आधार कहाँ होगा सम्यग्दर्शन? होगा तो आत्मा में ही। अगर अन्तरंग आधार देखेंगे तो आत्मा है और बाह्य आधार देखेंगे तो पूरा लोक है। पूरी लोक नाड़ी है या त्रस् नाड़ी है। उस त्रस नाड़ी में रहने वाले जीवों में सम्यग्दर्शन का कारण पाया जा सकता है। वह उनका आधार हो गया तो अधिकरण में आधार आ गया। फिर उसके बाद में स्थिति।

**स्थिति:**

स्थिति मतलब काल। कितने काल तक कौन सा सम्यग्दर्शन रहता है? औपशमिक सम्यग्दर्शन अन्तर्मुहूर्त तक रहता है। क्षयोपशम सम्यग्दर्शन छियासठ सागर काल तक रहता है और जो क्षायिक सम्यग्दर्शन होता है वह तैंतीस सागर काल सामान्य से होता है और अगर बिलकुल

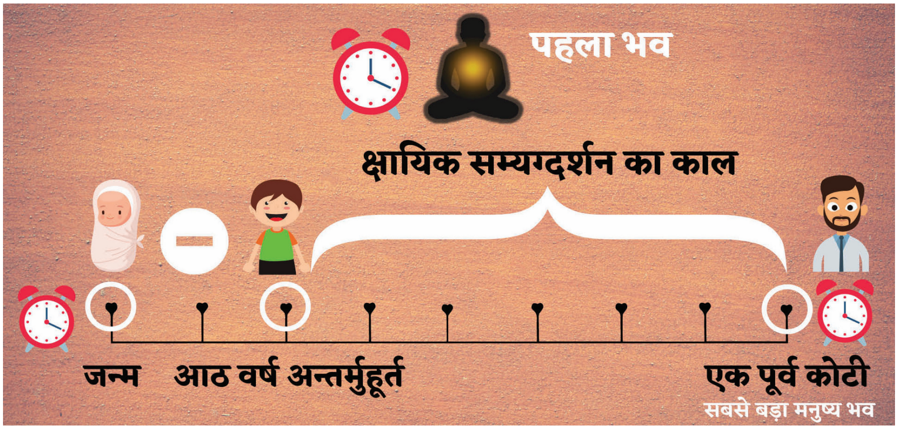

perfect जानना है तो आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम दो पूर्व कोटी से अधिक तैंतीस सागर काल सामान्य से होता है। यह उसकी स्थिति है क्योंकि एक बार जिसे क्षायिक सम्यग्दर्शन प्राप्त हो जाएगा वह इतने साल तक उसको बनाए रख सकता है। दो पूर्व कोटियाँ उसमें अधिक इसलिए जुड़ जाती हैं कि मान लो एक मनुष्य भव जिसे उसे सम्यग्दर्शन प्राप्त हुआ तो एक पूर्व कोटी का मनुष्य भव सबसे बड़ा मनुष्य भव होता है। फिर उसको तैंतीस सागर की आयु मिली। फिर जो वह पूर्व कोटी की आयु वाला फिर मनुष्य बना जैसे विदेह में आयु होती है पूर्व कोटी की तो दो पूर्व कोटियाँ हो गई, तैंतीस सागर हो गए और आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम। यह उसके लिए तैंतीस सागर क्योंकि जिस जन्म में वह क्षायिक सम्यग्दर्शन प्राप्त करेगा तो आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त के बाद करेगा। अतः आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम और दो पूर्व कोटी से अधिक तैंतीस सागर काल क्षायिक सम्यग्दर्शन का काल होता है। यह उसकी स्थिति हो गई। यह उत्कृष्ट स्थितियाँ हैं। जघन्य स्थिति सभी सम्यग्दर्शन की अन्तर्मुहूर्त होती हैं। संसारी जीवों की अपेक्षा से क्षायिक सम्यग्दर्शन भी अन्तर्मुहूर्त बन सकता है क्योंकि कोई भी क्षायिक सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के बाद में अन्तर्मुहूर्त में ही केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष भी जा सकता है। संसारी की अपेक्षा से उसकी स्थिति अन्तर्मुहूर्त भी हो गई। क्षयोपशम की भी अन्तर्मुहूर्त हो जाती है, औपशमिक की भी अन्तर्मुहूर्त हो जाती है। यह स्थिति हो गई।

विधान:

विधान का मतलब होता है- भेद। किस सम्यग्दर्शन के कितने भेद है? ये भेद बताना विधान कहलाता है। जो आपको भेद बताया जा रहा है कि जैसे सम्यग्दर्शन के तीन भेद बता दिए हैं। सम्यग्दर्शन के दो भेद भी होते हैं- एक सराग सम्यग्दर्शन कहलाता है, एक वीतराग सम्यग्दर्शन कहलाता है। इस तरह से भी दो भेद बनते हैं। सराग का मतलब होता है कि जहाँ पर राग भी रहे और सम्यग्दर्शन भी रहे तब उसको बोलेंगे सराग सम्यग्दर्शन और जहाँ पर राग छूट जाए उसके बाद वह सम्यग्दर्शन वीतराग सम्यग्दर्शन कहलाता है। दसवें गुण स्थान तक राग रहता है तब तक वह सम्यग्दर्शन सराग कहलाएगा। जब राग छूट जाएगा तो दसवें गुणस्थान के बाद में वह वीतराग सम्यग्दर्शन कहलाएगा।

SCAN TO WATCH

सराग सम्यग्दर्शन में प्रशम, संवेग अनुकम्पा,आस्तिक्य यह भाव उसके अन्दर अभिव्यक्त होते हैं क्योंकि ये सभी भाव राग की अपेक्षा से जुड़े हुए हैं। प्रशम भाव का मतलब होता है- रागादि का उद्रेक नहीं होना। राग की अधिकता नहीं होना इसको प्रशम बोलते हैं। संवेग का मतलब होता है- संसार से डरना कि संसार में भटकना पड़ेगा,

संसार में अनेक गतियों में जन्म लेना पड़ेगा, ऐसे डरना संसार से। इसका नाम क्या है? संवेग। सराग सम्यग्दर्शन ही सबको होगा पहले वीतराग किसी को नहीं हो रहा तो सराग सम्यग्दृष्टि के ये लक्षण हैं। उसकी अभिव्यक्ति कैसे होगी? उसके अन्दर ये चार गुण आ जाएँगे। बहुत ज्यादा उसके अन्दर राग नहीं होगा, उसे संसार से भीती होगी, भीतर से डर होगा। अनुकम्पा मतलब जीवों के प्रति दया का भाव होगा और आस्तिक्य एक गुण होता है कि उसे तत्त्व का स्वरूप जैसा बताया गया है वैसा ही उसके प्रति अपना श्रद्धा रखता है और हर तत्त्व को वैसा जानता है; इसका नाम आस्तिकय कहलाता है। इस तरह के सराग सम्यग्दर्शन में भाव उत्पन्न हो जाते हैं।

• वीतराग सम्यग्दर्शन में केवल आत्मविशुद्धि ही रह जाती है उसको वीतराग सम्यग्दर्शन कहते हैं। कहीं-कहीं क्षायिक सम्यग्दर्शन को भी वीतराग उपचार से कहा जाता है क्योंकि वह वीतरागता का नियम से कारण ही है। इसलिए भी क्षायिक सम्यग्दर्शन को जिसको सात प्रकृति नष्ट हो गई तो उसके अन्दर जो आत्मा की विशुद्धि आ गई उसको भी वीतराग कहा जाता है। अतः यह वीतराग, सराग, औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक ऐसे ये अलग-अलग तरीके से जो हम भेद कर रहे हैं- ये सब विधान कहलाता है। ये सम्यग्दर्शन के भेद हो गए। इसको हम किसी भी चीज में घटा सकते हैं।

• सूत्र की प्रायोगिकता मतलब इस सूत्र को जीव पर भी घटा सकते हैं, आस्रव पर भी घटा सकते हैं। जैसे हमने सम्यग्दर्शन पर घटित किया वैसे इसको सब तत्त्वों पर घटित कर सकते हैं। फिर वही बात होगी अगर हम समझाने बैठ जाएँगे तो सात तत्त्वों पर घटित करते-करते ही पूरा हो जाएगा। यह आपके लिए homework है। आप करो जीव निर्देश, उसका स्वामित्व, उसका अधिकरण, उसकी स्थिति, उसका विधान। देखो! कितने प्रकार का? जीव के विषय में देखो, अजीव के विषय में देखो, आस्रव के विषय में देखो, बन्ध, संवर, मोक्ष किसी भी विषय में

देखो। कोई भी और भी चीज हैं जिसकी आप knowledge लेना चाहते हैं। मान लो आपको किसी भी बाहरी जगत में भी किसी पदार्थ की knowledge लेना है, तो भी आप कोई सूत्र पूरा apply करोगे तो पूरा का पूरा आपको उसकी knowledge आ जाएगी।

उदाहरण स्वरुप- जैसे मान लो हमें किसी company के बारे में जानना है। हमें पहले उस company का नाम mobile पर लिखना होता है। उस company का मालिक कौन है? स्वामित्व हो गया। वह company कहाँ पर establish है? आधार हो गया। ये निर्देश, स्वामित्व, अधिकरण हो गया।

**स्थिति-** कब से चल रही है? कब start हुई थी? यह उसकी स्थिति हो गई। विधान मतलब उस company की कितनी branches हैं? कितनी progress कर ली उसने? कितनी-कितनी है? ये उसके भेद हो गए। हर चीज की अगर आपको total जानकारी लेना है,पदार्थों का ज्ञान करना तो आप यह सूत्र लगा दो। केवल यह धर्म के लिए ही नहीं है, किसी भी पदार्थ का ज्ञान करो। इस नारियल का भी अगर आपको सही ढंग से ज्ञान करना है। नारियल है, तो पहले नाम लेना पड़ेगा। किसी भी दुकान पर जाओगे। आपको अगर किसी भी चीज की जानकारी लेना है, धोती खरीदना, साड़ी खरीदना, नारियल खरीदना कोई भी चीज लेना है, तो आप छह चीजें दिमाग में रखो। आपको पूरी knowledge मिल जाएगी। ऐसा तो हमने कभी सुना ही नहीं महाराज! इसीलिए तो सुना रहा हूँ। ज्ञान जो दिया गया है उसको भी प्रायोगिक बनाएँ। इतना क्लिष्ट ज्ञान नहीं है कि इसको प्रयोग में न ढाल पाएँ। अगर आपके mobile का कोई भी पहला जो homepage बनता है, अगर आप उसमें यही छह detail डाले, mobile में जो डलता है या कोई भी website का पहला एक page बनता है उसमें हमारे सामने यही चीजें होनी चाहिए। निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति और विधान। उसमें total knowledge आ जाएगी। यह क्यों नहीं किया जा सकता? जैसे आप लोग कोई भी website का page बनाते हैं तो उसमें अलग-अलग लिखते हो। भाई! यह video, यह photograph, यह उसके और text, यह audio. यह सब अलग-अलग चीजें लिखते हो। आपको फिर उसमें नाम भी लिखना पड़ता है। कब से establish हुई वह website, वह भी लिखना पड़ता है। ये सब चीजें आपको इस तरीके से catalogue बनाना चाहिए। यह अगर हम करेंगे तो इससे पता पड़ेगा कि जैन धर्म में पदार्थों को जानने के तरीके बताए गए हैं। एक तो तरीका यह है।

SCAN TO WATCH

## पदार्थों को अगर और विस्तार से जानना है?

इससे भी ज्यादा और विस्तार के साथ जानना हो तो एक आगे वाला सूत्र आ रहा है। तीन तरीके बताए जा रहे है-

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।1.08।।

**सत् + संख्या + क्षेत्र + स्पर्शन + काल + अन्तर + भाव + अल्पबहुत्वैः + च**

**सत् संख्या संस्पर्श से, अल्प बहुत वा काल।**
**क्षेत्र भाव अन्तर कहे, अठ अनुयोग विशाल॥1.8॥**

अब देखो! यह सूत्र और ज्यादा विस्तार के साथ है। मतलब आपको और ज्यादा detail जाननी है, तो इस 3rd सूत्र को apply करो। मतलब यह बताया गया कि संसार में तीन प्रकार के interest वाले लोग होते हैं। एक तो बहुत ही संक्षेप में रुचि वाले शिष्य होते हैं; short में उनके लिए यह कहना, थोड़े से में समझ लेते हैं। जो थोड़े से समझ लेंगे वे तो प्रमाण

और नय से समझ लेंगे। थोड़ा और detail करो महाराज! प्रमाण और नय में तो कुछ समझ नहीं आया। फिर ये निर्देश, स्वामित्व से detail हो गई। और बताओ, और थोड़ा सा और विस्तार जानना चाह रहे हैं तो अब इससे जानो विस्तार। सत्! सत् मतलब किस चीज को आप जानना चाह रहे हैं उसको पहले सामने लाओ। उसका नाम है- सत् मतलब उसका अस्तित्व होना चाहिए। ऐसे ही फाँकना नहीं कुछ भी। जैसे कहने लगा- मुझे आकाश के फूल दिखाओ, गधे के सींग दिखाओ। भैया! कहाँ से दिखाओ? जब होते ही नहीं तो उसके बारे में जानकारी दो। अरे! उसका अस्तित्व तो होना चाहिए। फूल कहो तो फूल का अस्तित्व होता है। फूल सत् कहलाएगा। आकाश कहो तो आकाश का फूल का अस्तित्व नहीं है। आकाश में कहाँ फूल लगेगा भाई? फूल तो वृक्षों पर लगेगा। समझ रहे हो? जिसका अस्तित्व हो उस चीज की

आपके लिए detail की जा सकेगी। सत् का मतलब क्या हो गया? जिसको आप जानना चाह रहे हैं वह चीज सामने लाओ।

संख्या:
संख्या में वही संख्या आ जाएगी जैसे पहले सूत्र में विधान था, यहाँ पर वह संख्या आ गई। पहले सूत्रों के निर्देश था वह यहाँ पर सत् है। संख्या का मतलब उसकी संख्या कितनी है? उसके भेद कितने है? यह सब संख्या में आ जाएगा- सत् संख्या।

क्षेत्र:
क्षेत्र का मतलब होता है वर्तमान में वह चीज कहाँ है? यह उसका क्षेत्र कहलायेगा और इससे पहले भी वह कहाँ थी? वह कहाँ तक belong कर सकती है? वह उसका स्पर्शन कहलाता है। वर्तमान काल सम्बन्धी जो उसका place होता है वह उसका क्षेत्र कहलाता है और जो तीन काल सम्बन्धी मतलब पहले भी, आगे भी इससे ज्यादा जगहों पर वह चीज नहीं हो सकती तो वह उसका स्पर्शन कहलाता है। जैसे मान लो अभी आप यहाँ बैठे हो तो आपके लिए क्षेत्र क्या हो गया? अभी आपके लिए क्षेत्र यह colony हो गई। यह hall हो गया, यह क्षेत्र हो गया। स्पर्शन क्या होगा? आपने अपनी जिन्दगी में कहाँ-कहाँ तक आपने जाना किया है? कहाँ-कहाँ तक आ गए हो? कितने-कितने क्षेत्रों को छुआ है? चीन गए हो कि जापान गए हो, जर्मनी गए हो कि ऑस्ट्रेलिया गए हो। कहाँ-कहाँ तक गए हो? यह सब आपका क्या हो गया? स्पर्शन हो गया। कहाँ तक जा सकते हो future में भी? हर चीज की एक limit है। वह जब तीन काल सम्बन्धी आपका सारा का सारा क्षेत्र गिना जाएगा तो वह कहलाएगा- स्पर्शन। ठीक है! हमने वहाँ तक भी छुआ है मतलब वहाँ तक भी हमने स्पर्श किया है, वहाँ तक भी हम गए हैं। कहाँ तक गए हैं? देश की सीमाओं के पार भी गए हैं। यह आपने अपना इस स्पर्शन बढ़ाया है और वर्तमान में जो है वह आपका क्षेत्र है। ठीक है! इस तरह से क्षेत्र स्पर्शन के बारे में जानकारी होती है।

काल:
काल कोई भी चीज है, तो उसका जो time है, जैसी स्थिति थी पहले सूत्र में वह यहाँ पर काल है। और अन्तर- अब जो चीज है मान लो छूट गयी फिर होगी कितने time के बाद हो सकती है, तो वह उसका एक interval जिसको बोलते हैं- वह उसका अन्तर कहलाएगा। मान लो कि जैसे सम्यग्दर्शन ही है। औपशमिक सम्यग्दर्शन है या क्षयोपशम सम्यग्दर्शन है, हो गया एक बार, छूट गया। छूट गया तो अब दोबारा कब हो सकता है? minimum time interval और maximum time interval तो यह उसका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर कहलाएगा। आज सम्यग्दर्शन हुआ और आज सम्यग्दर्शन होने के बाद में अब दोबारा सम्यग्दर्शन हो गया तो एक अन्तर्मुहूर्त के बाद भी हो सकता है। उसका जघन्य अन्तराल क्या

कहलाया? अन्तर्मूहुर्त और फिर नहीं हो तो एक अर्ध पुद्गल परावर्तन काल के सबसे last में भी हो सकता है। उसका यह अन्तराल बढ़ गया। अर्ध पुद्गल परावर्तन काल। इस तरह से यह अन्तर जाना जाता है।

भाव: अब सम्यग्दर्शन का, कर्म के उदय से ही होना होता है, तो कर्म के उदय से हो रहा है कि क्षय से हो रहा है, कि क्षयोपशम से हो रहा है। जैसे होगा वैसे उसका भाव हो जाएगा। जैसे मान लो औपशमिक सम्यग्दर्शन है, तो उसका उपशम भाव कहलायेगा क्योंकि कर्मों के उपशमन से हो रहा है। क्षयोपशम सम्यग्दर्शन है, तो क्षायोपशमिक भाव कहलाएगा। क्षायिक सम्यग्दर्शन है, तो उसका क्षायिक भाव कहलाएगा क्योंकि वह कर्म के क्षय से हो रहा है। अतः हर चीज का कोई न कोई भाव होता है। आप बैठे हो मनुष्य गति में बैठे हो मनुष्य गति क्या है? कर्म का उदय है, मनुष्य गति नाम कर्म का उदय इसलिए औदयिक भाव कहलाएगा। मनुष्य किस भाव से होता है? औदयिक भाव से होता है, तो यह औदयिक भाव कहलाता हैं। इस तरह से भावों को जानना अथवा अपने तरीके से आपको जानना है, तो जो भाव, मोल भाव करते हो वह भी आपका भाव है। किसी भी चीज का जो भाव है वह उसका भाव है। अब इसे तो आप कहीं भी लगा सकते हो न।

मान लो आप कपड़ा खरीदने जा रहे हो तो सत् भी देखोगे कपड़ा है कि नहीं! कपड़े की दुकान पर पहुँचोगे। संख्या भी देखोगे भाई एक ही तरह का कपड़ा रखे हैं कि तरह-तरह की quality रखे हैं और हमको कितनी संख्या में चाहिए? क्या चाहिए? क्षेत्र मतलब यह कपडा जो हम खरीद रहे हैं, जो दुकान है यह कौन सी जगह पर है? स्पर्शन हम पूछ सकते है कि इस दुकान की और कहाँ-कहाँ पर branch से, कहाँ-कहाँ पर यह कपड़ा मिलेगा? इस brand का कपड़ा दुनिया के किस-किस कोने में कहाँ-कहाँ पर मिलता है? स्पर्शन हो गया। काल! कब बना था भाई? expiry date तो नहीं हो गई कहीं। यह काल हो गया। अन्तर- कोई अन्तर पड़ा क्या? जब से बना है कपड़ा तब से चल ही रहा है कि बीच में कहीं mill flop हो गई थी कि बिलकुल बंद हो गई थी और फिर बीच में दो-चार साल बाद खुली। नहीं भाई जब से mill बनी है तब से चल रहा है। जब से brand निकला है तब से बिलकुल without interval चल रहा है। बस हो गया उसमें कोई अन्तर नहीं है। अन्तर है, तो वह अन्तर जान लो। मतलब आपको बिलकुल सही चीज पकड़ में आ रही है कि नहीं। भाव जानो क्या इसकी quality है? क्या इसका rate है?

SCAN TO WATCH

अल्प बहुत्व:

अल्प बहुत्व का मतलब होता है- इससे अच्छी quality वाला कौन है? इससे low quality वाला कौन सा है? जिससे हम इसको compare कर सके वह अल्प बहुत्व कहलाता है।

कौन किस से छोटा या बड़ा, हल्का या भारी? किसी भी तरीके का जो हम comparison करते हैं अल्पबहुत्व कहलाता है। अतः आपको किसी भी चीज की detail knowledge चाहिए तो आप यह सूत्र लगा दो। ऊपर वाले सूत्र में छह चीजें थी, इस सूत्र में आठ चीजें हैं। सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव, अल्पबहुत्व आठ चीजें हैं, आठवाँ ही सूत्र है। ध्यान रखने के लिए भी अच्छी बात है। अब आपकी रुचि के ऊपर है, interest के ऊपर हैकि आप किस तरह की detailing चाहते हैं। market में सब तरीके की चीजें मिलती हैं। थोक में लेना है थोक में लो, retail में लेना है retail में लो। ठीक है! ऐसे तत्त्वों को जानना, सम्यग्दर्शन आदि को जानना, प्रयोजनीय-भूत जो अपने लिए उनको भी जानो और जो लौकिक है उनको भी जानो, कोई दिक्कत नहीं। यह तो formula है, कहीं भी fit करो। यह तो केवल formula है और कुछ नहीं है यह। जानने के तरीके बताए जा रहे हैं, किसी भी चीज को जानना है, तो आप इतनी चीजें लगा दो उसमें आपको पूरी knowledge निकल कर आ जाएगी। अगला सूत्र:

**मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥1.9॥**

**मति + श्रुत + अवधि + मन:पर्यय + केवलानि ज्ञानम्**

**आतम में गुणगान के, सम्यक पाँच विधान।**
**मति श्रुत अवधि वा मनः, पर्यय केवलज्ञान॥1.9॥**

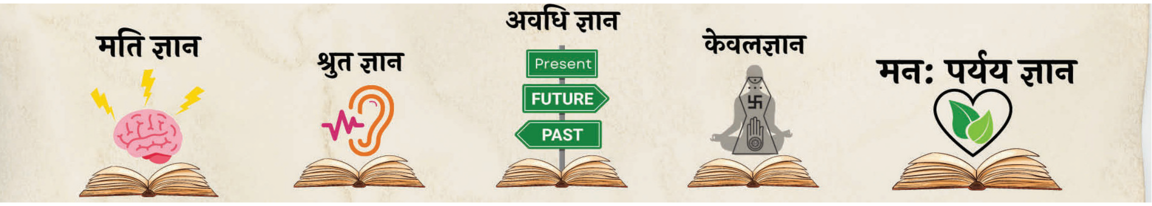


क्या कहा जा रहा है? यह ज्ञान है। ज्ञान कितने होते हैं? पाँच होते हैं। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान और केवलज्ञान।

मतिज्ञान क्या होता है? जो इन्द्रियों से होता है और जिनके पास मन हो तो इन्द्रिय और मन दोनों से हो जाता है। वह मति ज्ञान कहलाता है।

श्रुतज्ञान क्या होता है? जो वस्तुतः इन्द्रियों से नहीं होता केवल मन से ही होता है। इन्द्रियों के बाद जो मन के अन्दर श्रुत ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से, वस्तु से कुछ विशेष वस्तु अन्तर का ज्ञान होता है, उसको श्रुत ज्ञान कहते हैं।

जैसे कि आपसे कहा गया पुस्तक! क्या बोला? book या पुस्तक बोला आपसे तो आपने सुना तो था केवल पुस्तक लेकिन जब हमने आपसे कहा पुस्तक तो आपने अपने मन से क्या समझ लिया? महाराज को पुस्तक चाहिए। कौन सी चाहिए? तत्त्वार्थ सूत्र की चाहिए। यह तो हमने बोला ही नहीं था। यह जो आपने समझ लिया इसको बोलते हैं- श्रुत ज्ञान। अब तत्त्वार्थ

सूत्र की चाहिए तो हमारे सामने जो कई सारी पुस्तकें रखी हैं अब आप ढूँढों कि तत्त्वार्थ सूत्र

किसमें है? इसमें नहीं है, रत्नकरण्ड श्रावकाचार में नहीं है, यह रखा है- ज्ञानार्णव, इसमें नहीं है। पूजन पाठ प्रदीप है- हाँ! इसमें होगा तो इसको ले आओ। हमने तो सिर्फ इतना ही कहा था न पुस्तक और आपने इतनी सारी अपनी knowledge लगा ली। इसको क्या बोलते हैं? श्रुतज्ञान और जो पुस्तक सुना वह भी अपने मन के साथ ही सुना था। न इन्द्रिय से भी सुना और मन में भी काम किया क्योंकि बिना मन के वाले को तो पुस्तक ही समझ में नहीं आएगी। पुस्तक सुनने में तो आएगा लेकिन उसका अर्थ ही समझ नहीं आएगा कि पुस्तक का मतलब क्या?

## श्रुतज्ञान की महत्ता

मतिज्ञान में भी मन काम कर रहा है लेकिन श्रुतज्ञान में मन उससे कहीं ज्यादा काम कर रहा है। वह पुस्तक के अलावा अन्य दूसरी पुस्तकों में भी ज्ञान चला गया। इसको बोलते हैं- पदार्थ से दूसरे पदार्थ में चले जाना। इस ज्ञान को श्रुतज्ञान कहा जाता है और यह सबके पास होता है। यही लोग सबसे ज्यादा चाहते हैं - श्रुतज्ञान। यही सबसे ज्यादा काम का होता है। जितना सुना उतना ही समझ लिया या उतना ही कह लिया ऐसे बच्चों से तो कई बार पर परेशान हो जाते हैं जिनके पास श्रुत ज्ञान की कमी होती है। कहीं ऐसे भी बच्चे होते हैं अगर उनसे कहा बेटा! दुकान पर जा रहा है। लौटते हुए आना थोड़ा सा सब्जी मंडी से होते हुए चले आना तो वह

सब्जी मंडी से होते हुए चला गया। अब भले आदमी को इतना तो मालूम होना चाहिए कि अगर मम्मी कह रही है कि सब्जी मंडी से होते हुए जाना है, तो सब्जी मंडी से होने के लिए का मतलब क्या है? थोड़ी सब्जी खरीद कर ले आना रास्ते से होते हुए। अगर श्रुतज्ञान की कमी होगी तो वह सब्जी मंडी से होकर आ जाएगा। मम्मी बोलेगी क्यों कुछ लेकर नहीं आये? क्या लेकर के आए? आप ने कहाँ कहा था कुछ लेने को? अरे! मैंने कहा तो था सब्जी मंडी से होकर आना। अरे! तो होकर तो आ गया मैं, उस रास्ते से होकर आने को कहा था सो हो गया। लेकिन समझदार बच्चा किसको बोलते हैं हम? उसने इशारा समझ लिया सब्जी मंडी होकर आने का

मतलब यह फलाने चंद की दुकान के पास सामग्री लेकर कर आ जाना तो अपने आप समझ जाएगा कि वहाँ से क्या लाना है? हर बार एक-एक चीज को बताना नहीं पड़ता। इसको बोलते हैं- समझदार मतलब श्रुतज्ञान से ही वह समझदारी आती है। आपको ऐसे बच्चे अच्छे लगते हैं जिनमें थोड़ा इशारा करे और वह काम करते हैं। इसी तरीके के काम में आने वाले लोग सबसे ज्यादा काम के होते हैं, जो इशारे समझते हो। आप कहते हो न यह इशारे में काम कर देता है मतलब उसके पास में श्रुतज्ञान अच्छा है। श्रुतज्ञान को ऐसे समझ लो यह बहुत काम की चीज है। बाकी तो कुछ काम कर ही नहीं क्योंकि अवधिज्ञान अपने को होना नहीं है, मन:पर्यय ज्ञान होना नहीं, केवलज्ञान होता नहीं।

## अवधिज्ञान क्या कहलाता है?

एक तरह से देखा जाए तो यह अवधिज्ञान नीचे-नीचे के पदार्थों को जानने में विशेष रूप से आता है इसलिए इसको अवधि कहते हैं। यह एक सीमा को लिए हुए होता है इसकी detail आगे और आएगी। एक दूसरी बात यह आत्मा से भी होता है इसलिए इसको प्रत्यक्ष भी कहा जाता है।

## मन:पर्यय ज्ञान क्या होता है?

मन: पर्यय ज्ञान होता है कि हम अपने मन के सहारे और दूसरे के मन में कोई चीज कोई पदार्थ है, तो हम उसका ज्ञान कर सकते हैं। मतलब दूसरे के मन में ही जा कर के वह ज्ञान लगेगा और मन में जो चल रहा है उसको जान लेगा। उस ज्ञान का नाम है- मन: पर्यय ज्ञान और यह मन: पर्यय ज्ञान संयमी ऋद्धि धारी विशिष्ट मुनियों को ही होता है, गृहस्थों को नहीं होता। अवधिज्ञान चारों गतियों में हो सकता है लेकिन मन:पर्यय ज्ञान केवल संयमी ऋद्धिधारी मुनि महाराज की ही होता है।

## केवलज्ञान?

केवलज्ञान तो आप जानते ही हैं। जब 13 वें गुणस्थान में अरिहन्त परमेष्ठी बन जाते हैं तो सब प्रत्यक्ष हो जाता है। उसको केवलज्ञान कहते हैं। इस तरह से पाँचों ज्ञान ही प्रमाण माने जाते हैं। प्रमाण को बताने के लिए पाँच ज्ञान की बात बताई। अब इसमें से कौन से प्रत्यक्ष होते हैं? कौन से परोक्ष होते हैं? इसकी detail बाद में की जाएगी।

---------------------------------------------------------------

# सारांश

1. सूत्र 6 प्रमाणनयैरधिगमः के माध्यम से जाना कि अधिगम कैसे होता है?
2. प्रमाण और नयों के माध्यम से अधिगम होता है, ज्ञान होता है।
3. जहाँ प्रमाण में वस्तु को पूर्ण रूप से जानते हैं, उसके सभी धर्मों को ग्रहण करते हैं
4. वहीं नय में वस्तु के किसी एक धर्म को ग्रहण करते हैं
5. सम्यग्ज्ञान ही प्रमाण है यानि valid knowledge है
6. सम्यग्ज्ञान में पाँचों ही ज्ञान हैं - मति, श्रुत, अवधि, मनः पर्यय और केवलज्ञान
7. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान भी प्रमाण कहलाता है
8. क्योंकि जैसा श्रुत में बताया गया वैसा ही हमने जाना।
9. जहाँ मति, अवधि, मन:पर्यय और केवल ज्ञान स्व यानि अपने लिए ही प्रयोजनीय हैं अतः उन्हें स्वार्थ ज्ञान कहते हैं
10. वहीं श्रुत ज्ञान स्वार्थ रूप भी है और परार्थ रूप भी है
11. श्रुत ज्ञान के दो प्रकार हैं -
    - अक्षरात्मक यानि अक्षरों से उत्पन्न ज्ञान
    - और अनक्षरात्मक बिना अक्षरों के उत्पन्न ज्ञान
12. दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय का श्रुतज्ञान अनक्षरात्मक ही होगा
13. श्रुत ज्ञान का विशेष महत्व है क्योंकि
    - यह ज्ञानात्मक है, स्वार्थ रूप है- अपने लिए काम करता है।
    - यह वचनात्मक है - परार्थ रूप भी है, दूसरों के लिए हित भी कर रहा है।
14. जिनवाणी को भी उपचार से श्रुतज्ञान कहा जाता है।
15. वस्तु के स्वरुप को जानने के लिए आज हमने एक और उपाय सूत्र 7 में सीखना शुरू किया - निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति और विधान
16. निर्देश अर्थात् हम क्या जानना चाह रहे हैं?
17. स्वामित्व का मतलब इसका स्वामी कौन है?
18. सम्यग्दर्शन का स्वामी अनंत आत्माएं हैं, संज्ञी पंचेन्द्रिय आत्मायें
19. कल हमने सम्यग्दर्शन के तीन प्रकार और उनके अन्तरंग और बाह्य साधनों को समझा।
20. आज हमने जाना कि हरेक गति में सम्यग्दर्शन के बाहरी कारण क्या होते हैं
    - मनुष्य और त्रियंच गति में जाति स्मरण, धर्म श्रवण और जिन बिम्ब दर्शन होते हैं
    - नरक गति में जाति स्मरण, धर्म श्रवण और वेदना का अनुभव होते है
    - देव गति में जाति स्मरण, धर्म श्रवण, जिन महिमा दर्शन और देव ऋद्धि दर्शन होते हैं
21. जिन महिमा दर्शन का तात्पर्य जिनेन्द्र भगवान की महिमा जैसे जन्म, ज्ञान कल्याणक आदि की महिमा जिसे देखकर देव सम्यग्दृष्टि हो जाते हैं
22. जैसे जैसे देवों में ऊपर जाते हैं और नरकों में नीचे जाते हैं, सम्यग्दर्शन के बाह्य कारण

भी काम हो जाते हैं

23. हमने अधिकरण यानि आधार को समझा
24. सम्यग्दर्शन का अंतरंग आधार आत्मा है जहाँ यह होगा
25. और बाह्य आधार पूरी त्रस् नाड़ी है जहां के जीवों को यह हो सकता है
26. स्थिति का मतलब है काल, वस्तु का समय, कितनी देर रहेगी आदि
27. हमने जाना कि औपशमिक सम्यग्दर्शन अन्तर्मुहूर्त तक, क्षयोपशम सम्यग्दर्शन छियासठ सागर और क्षायिक सम्यग्दर्शन तैंतीस सागर काल सामान्य से तक रहता है
28. यह उनकी उत्कृष्ट स्थितियाँ हैं।
29. जघन्य स्थिति सभी सम्यग्दर्शन की अन्तर्मुहूर्त होती है क्योंकि अन्तर्मुहूर्त में सम्यग्दृष्टि जीव मोक्ष जा सकता है
30. विधान का अर्थ है वस्तु के भेद करके समझना जैसे सम्यग्दर्शन के कितने भेद है?
31. सम्यग्दर्शन के तीन भेद होते हैं जो हमने पहले पढ़े थे
32. पर एक अपेक्षा से दो भेद भी होते हैं-

- सराग सम्यग्दर्शन जहाँ यह राग के साथ रहता है, दसवें गुणस्थान तक
- वीतराग सम्यग्दर्शन जहाँ यह राग बिना रहता है, दसवें गुणस्थान से ऊपर

33. हमने जाना की सराग सम्यग्दर्शन में प्रशम, संवेग अनुकम्पा, आस्तिक्य भाव अभिव्यक्त होते हैं।
34. वीतराग सम्यग्दर्शन में केवल आत्मविशुद्धि ही रह जाती है
35. क्षायिक सम्यग्दर्शन को भी वीतराग उपचार से कहा जाता है
36. पदार्थ को और अधिक विस्तार से जानने के लिए हमने सूत्र 8 में 8 चीजों को जाना -
37. सबसे पहले सत्! यानि अस्तित्व किस चीज को आप जानना चाह रहे हैं
38. उसके पश्चात् संख्या: मतलब उसकी संख्या कितनी है? उसके भेद कितने है?
39. क्षेत्र मतलब वर्तमान में वह चीज कहाँ है?
40. स्पर्शन यानि तीन काल में वस्तु कहाँ तक जा सकती है
41. काल मतलब जो उसका time है, अंतराल है। पिछले सूत्र में जैसे स्थिति थी वह यहाँ पर काल है।
42. भाव: जैसा सम्यग्दर्शन होगा वैसे उसका भाव हो जाएगा।
43. हमने जाना मनुष्य गति भी कर्म के उदय से मिली है इसलिए वह औदयिक भाव है
44. अल्प बहुत्व comparison के काम आता है
45. इससे अच्छी या लो quality वाला कौन है आदि
46. सूत्र 9 में हमने पाँच ज्ञान के बारे में जाना - मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय और केवल ज्ञान।
47. मति ज्ञान जो इन्द्रिय और मन दोनों से होता है।
48. श्रुत ज्ञान केवल मन से ही होता है। इसकी महत्ता तो हमने कल अच्छी तरह से समझी

थी।

49. अवधिज्ञान अवधि ज्ञान चारों गतियों में हो सकता है और प्रत्यक्ष आत्मा से होता है

50. मन: पर्यय मतलब अपने मन के माध्यम से दूसरे के मन में जो पदार्थ है उसको जान लेगा।

51.यह ज्ञान संयमी ऋद्धि धारी विशिष्ट मुनियों को ही होता है

**52. केवलज्ञान**? 13वें गुणस्थान में **अरिहन्त परमेष्ठि** बनने पर होता है।

# अभ्यास प्रश्न पत्र

प्रश्न 1- मन:पर्यय ज्ञान कैसा होता है?
1. वचनात्मक
2. ज्ञानात्मक
3. शब्दात्मक

प्रश्न 2- कौनसा ज्ञान परार्थ रूप भी होता है?
1. मति ज्ञान
2. अवधि ज्ञान
3. श्रुत ज्ञान

प्रश्न 3- अधिगम का मतलब होता है- प्रमाण और नयों के माध्यम से जानना।
1. सही
2. गलत

प्रश्न 4- निम्न में से आत्मा का सामान्य गुण कौनसा है?
1. अस्तित्व
2. ज्ञान गुण
3. दर्शन गुण

प्रश्न 5- सम्यक् दर्शन कितनी गतियों में होता है?
1. 4
2. 3
3. 2

प्रश्न 6- क्षायिक सम्यक् दर्शन वाले जीव कौनसे नरक में मिलते हैं?
1. किसी नरक में नहीं
2. सप्तम नरक में
3. प्रथम नरक में

प्रश्न 7- जाति स्मरण, सम्यक् दर्शन का कौनसा कारण है?

1. बाह्य
2. आंतरिक
3. क्षायिक

प्रश्न 8- पहला सम्यक् दर्शन कौनसा होता है?

1. उपशम सम्यग्दर्शन
2. क्षायिक सम्यग्दर्शन
3. क्षयोपशम सम्यग्दर्शन

प्रश्न 9- क्षयोपशम सम्यग्दर्शन
1. उपशम सम्यग्दर्शन
2. क्षायिक सम्यग्दर्शन

प्रश्न 10- निम्न में से देवों में सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति का कारण कौनसा नहीं होता?

1. धर्म श्रवण
2. वेदना का अनुभव
3. जाति स्मरण

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

प्रश्न 11- किसी का तीन काल संबंधी संपूर्ण क्षेत्र उसका क्या कहलाता है?
1. स्पर्शन
2. अस्तित्व
3. परावर्तन

प्रश्न 12- किसी भी प्रकार की तुलना करना क्या कहलाता है?
1. अल्प बहुत्व
2. क्षेत्र
3. अंतर

प्रश्न 13- क्षायिक सम्यग्दर्शन की स्थिति भी अन्तर्मुहूर्त हो सकती है।
1. गलत
2. सही

प्रश्न 14- मति _____ मन:पर्यय केवलानि ज्ञानम्।। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये।
1. श्रुतावधि
2. अवधिश्रुत
3. श्रुतिविधि

प्रश्न 15- स्थिति का क्या अर्थ होता है?
1. काल
2. स्थान
3. हालत

प्रश्न 16- रागादि की अधिकता ना होने को क्या कहते हैं?
1. प्रशम भाव
2. अनुकंपा भाव
3. संवेग भाव

प्रश्न 17- केवल आत्मविशुद्धि ही कौनसे सम्यग्दर्शन में रह जाती है?
1. सराग सम्यग्दर्शन
2. औपशमिक सम्यग्दर्शन
3. वीतराग सम्यग्दर्शन

प्रश्न 18- विधान का क्या मतलब होता है?
1. कानून
2. भेद
3. तरीका

प्रश्न 19- ज्ञान कितने होते है?
1. 4
2. 5
3. 10

प्रश्न 20- मन: पर्यय ज्ञान किनको होता है?
1. संयमी ऋद्धि धारी विशिष्ट मुनियों को
2. सामान्य गृहस्थों को
3. दोनों सही

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

# अभ्यास प्रश्न पत्र 'विषयक'

प्रश्न - 1 प्रमाण एवं नय में क्या अंतर है?

प्रश्न - 2 निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति, विधान इनको सम्यग्दर्शन में घटित करके समझाइये।

प्रश्न - 3 श्रुत ज्ञान के भेद समझाएं।

प्रश्न - 4 जीणवाणी को उपचार से कौन सा ज्ञान कहा जाता है?

प्रश्न - 5 पदार्थों को जानने के कितने सूत्र हैं? प्रत्येक सूत्र मे क्या बताया है?

प्रश्न - 6 अपर्याप्त अवस्था में सम्यग्दर्शन कब होगा?

प्रश्न - 7 मनुष्य गति में सम्यग्दर्शन के बाहरी कारण कौन कौन से हैं।

प्रश्न - 8 पंचम काल में कौन सा सम्यग्दर्शन हो सकता है?

प्रश्न - 9 देवों में सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के कारण विस्तार से बताएं।

प्रश्न - 10 सराग सम्यग्दर्शन और वीतराग सम्यग्दर्शन में क्या अंतर है?

प्रश्न - 11 कौन सा सम्यग्दर्शन कितने काल तक रहता है?

प्रश्न - 12 श्रुतज्ञान को उपकारी क्यों कहा गया है?

प्रश्न - 13 सम्यग्दर्शन उत्पन्न होने के कारण लिखें —
1. मनुष्य गति में
2. तिर्यंच गति में
3. नरक गति में
4. देव गति में

# प्रवचनः 5

पाँच प्रकार के ज्ञान होते हैं, इस बारे में भी जानकारी दे दी गई थी। आगे का सूत्र है-

तत् प्रमाणे ॥1.10॥

सम्यक तो वि-ज्ञान है, मिथ्याज्ञन कु-ज्ञान।
पंच भेद को ही कहा, सच्चा ज्ञान महान ॥1.10॥

## ज्ञान ही प्रमाण हैं

जो यह पाँच ज्ञान हैं, यही प्रमाण हैं। अपने आप में जैन-सिद्धान्त का प्ररूपण करने वाले यह सूत्र है। सामान्यतः ज्यादातर लोग इन सूत्रों का गहराई से अर्थ इसलिए नहीं जान पाते क्योंकि उन्हें अन्य मत-मतान्तरों का कोई ज्ञान नहीं होता। यह सूत्र जब जैन-सिद्धान्तों की प्ररूपणा करते हैं तो इनकी व्याख्याएँ इतनी विशाल हो जाती हैं कि अन्य मत-मतान्तरों का खण्डन करने के लिए इन सूत्रों को ही उपयोग में लाया जाता है। गृद्ध पिच्छ आचार्य, अनेक जो सूत्रकार हुए हैं, उन सब में यह एक अन्तिम सूत्रकार माने जाते हैं। सूत्रों की रचना करना अपने आप में बहुत ही प्रज्ञावान, विशिष्ट पुरुषों का ही काम होता है क्योंकि सूत्र में थोड़े में सब कुछ लिखा जाता है। अगर आप यह सूत्र समझें , देखें तो आपको तो पढ़ने में सिर्फ इतना ही आएगा- 'तत्प्रमाणे'। अर्थ पढ़ना है, तो अर्थ इतना ही होगा 'ज्ञान ही प्रमाण हैं' |

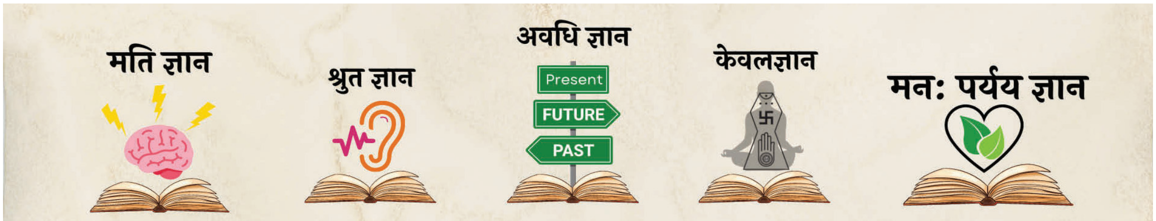


## लेकिन यह सूत्र बहुत कुछ कहता है

प्रमाण, ज्ञान ही होता है और कोई चीज नहीं होती और क्या चीज होती है? जब हम अन्य लोगों को, अन्य दर्शनों में पढ़ते हैं, तब हमें पता पड़ता है कि लोगों ने क्या-क्या प्रमाण मान रखा है? प्रमाण अपने आप में बहुत बड़ी चीज है, प्रमाण से ही सब कुछ प्रमाणित होना है। हमें यह पता होना चाहिए कि क्या प्रमाण है? प्रामाणिक चीज क्या है? यहाँ आचार्य कहते हैं कि

Knowledge ही प्रमाण है। ज्ञान ही हमारे लिए प्रमाणता का काम करता है। इससे बढ़कर के कोई और प्रामाणिक चीज नहीं होती।

## इन्द्रिय-ज्ञान प्रामाणिक नहीं

अन्य अनेक दर्शन हैं - वैशेषिक, मीमांसक आदि ये सब दर्शन अलग-अलग चीजों को प्रमाण मानते हैं। कोई इन्द्रियों को प्रमाण मानता है। अब आप समझे कि यदि इन्द्रिय-ज्ञान प्रमाण होगा तो क्या हम उस प्रमाण से सब कुछ प्रमाणित कर पाएँगे? इन्द्रिय-ज्ञान की अपनी सीमा होती है। इन्द्रिय-ज्ञान केवल उतना ही जानता है जितना उस इन्द्रिय के द्वारा ग्रहण करने में आता है और जो उस इन्द्रिय के ग्रहण से परे है, वह भी तो होता है। लेकिन वह इन्द्रियों से ग्रहण करने में नहीं आता और जब वह सब कुछ ग्रहण करने में नहीं आता तो फिर इन्द्रिय-ज्ञान प्रामाणिक कैसे हो सकता है? बहुत से ऐसे दर्शन हैं जो इन्द्रियों को प्रामाणिक मानते हैं, इन्द्रिय-ज्ञान को ही प्रमाणिकता की कोटि में लाते हैं और उनके लिए इसलिए भी है क्योंकि इन्द्रियों से हटकर के उन्हें और कोई भी ज्ञान कहीं दिखाई भी नहीं देता है।

## केवलज्ञान ही प्रमाणिक है

SCAN TO WATCH

जैन लोगों ने तो आत्मा को सर्वज्ञ माना है और आत्मा के अन्दर सर्वज्ञता की सिद्धि की है और अरिहन्त -भगवान को सर्वज्ञ ज्ञान के रूप में, केवलज्ञान के रूप में स्वीकार किया है। अब यह बात सबके गले नहीं उतरती और अगर नहीं उतरती तो सामने तर्क खड़े हो जाते हैं। जो इन्द्रिय-ज्ञान को धारण करने वाले लोग हैं और इन्द्रिय-ज्ञान से ही हर चीज की प्रमाणिकता मानते हैं तो उनसे

जैन-दर्शन वाले पूछेंगे कि अगर इन्द्रिय-ज्ञान ही प्रामाणिक हैं तो फिर यह बताओ कि जो इन्द्रियों से चीजें नहीं दिखाई दे रही हैं, ऐसी बहुत सारी सूक्ष्म चीजें हैं, उन्हें आप कैसे जानोगे? परमाणु है, कभी इन्द्रियों से जानने में आने वाला नहीं, अनेक परमाणुओं से मिलने वाले जो अनेक स्कन्ध हैं, वे भी कभी इन्द्रियों से ज्ञान में आने वाले नहीं तो इनकी प्रमाणिकता कैसे बनेगी कि यह भी ज्ञेय हैं। ये भी किसी के जानने में आ रहे हैं? ये प्रामाणिक कैसे होंगे? अगर इन्द्रियाँ ही प्रामाणिक हैं तो फिर जो पिछला ज्ञान राम हुए, रावण हुए, तीर्थंकर हुए, इन्द्रियों से तो कुछ नहीं दिख रहा तो इन्द्रियों को प्रामाणिक मान लेने पर ये सब ज्ञान की प्रामाणिकता कैसे आएगी कि पहले तीर्थंकर हुए हैं? ये सबको प्रामाणिक मान लेने पर ये सब ज्ञान की प्रामाणिकता कैसे आएगी कि पहले तीर्थंकर हुए हैं? ये तो सबको को मानना ही पड़ेगा कि किसी न किसी के दर्शन में कोई न कोई उनसे पहले, किसी न किसी के कोई न कोई प्रवर्तक तो होते ही आये हैं। अतः इन्द्रिय-ज्ञान अपने आप में बड़ा सीमित ज्ञान होता है, इसलिए यहाँ पर जैन-दर्शन में इन्द्रिय-ज्ञान को प्रमाणिक नहीं माना। ज्ञान प्रामाणिक है, उस ज्ञान की प्रामाणिकता में एक ज्ञान प्रामाणिक नहीं लिया कि केवल मतिज्ञान प्रमाणित है या श्रुतज्ञान प्रामाणिक है क्योंकि ये तो इन्द्रिय और मन से जुड़ रहे हैं। यह ज्ञान भी प्रामाणिक तब है जब हमारे पास में प्रत्यक्ष-ज्ञान केवलज्ञान है, वह प्रमाणिकता की कोटि में है। उसके द्वारा जो बताया गया है, वह ज्ञान हमें मतिज्ञान, श्रुतज्ञान के रूप में प्रमाणिकता देता है।

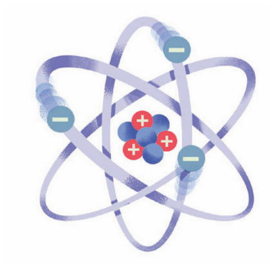

## मतिज्ञान और श्रुतज्ञान की प्रामाणिकता

जब तक कोई बड़ी company का कोई भी brand और उसके द्वारा deliver की हुई किसी भी तरह की branches जब तक हमारे पास में नहीं आएँगी तब तक हम अपना अस्तित्व बहुत देर तक बनाए नहीं रख सकते हैं। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, ये तो छोटे-छोटे ज्ञान है। दुनिया के लोग जो आत्मज्ञान के किसी भी पहलू को नहीं जानते या जो केवलज्ञान को नहीं जानते,

विशेष्य

**मतिश्रुतावधि मनःपर्यय केवलानि ज्ञानम् ||९||**

**तत् प्रमाणे || १०||**

सर्वनाम

उन्होंने तो केवल इन्द्रिय-ज्ञान को ही प्रामाणिक बना रखा है। जितने भी दर्शनकार हैं, सब इन्द्रिय-ज्ञान को प्रामाणिक मानते हैं। कुछ अपने मन को प्रामाणिक मान लेंगे, कुछ योगियों को जो प्रत्यक्ष हो रहा है, उसको प्रामाणिक मान लेंगे। आत्मा में केवलज्ञान जैसी कोई चीज तो किसी के लिए प्रामाणिक है ही नहीं क्योंकि वे जानते नहीं, वह उनकी समझ से परे है।

यहाँ आचार्य कह रहे हैं- 'तत् प्रमाणे' 'तत्' अर्थात् 'वह ज्ञान' कौन-सा ज्ञान? जो ऊपर लिखा है 'ज्ञानम्'। 'तत्' ये सर्वनाम शब्द है, इसका सम्बन्ध जुड़ा हुआ है इस विशेष्य से, जो 'ज्ञानम्' और ज्ञान कौन सा? एक-दो नहीं, पाँचों ही ज्ञान- मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय और केवल ज्ञान। अब आप कहो कि इन्द्रिय-ज्ञान तो आपके यहाँ भी प्रामाणिक माना गया है। देखो! मतिज्ञान, श्रुतज्ञान यह सब इन्द्रिय और मन से होने वाले ज्ञान है, तो आपके यहाँ भी यह ज्ञान प्रामाणिक हैं। हमारे यहाँ यह ज्ञान प्रामाणिक तो हैं लेकिन यह प्रामाणिक तब हैं जब यह केवलज्ञान से जाने हुए पदार्थों के अनुसार जानते हैं। केवल हमारे यहाँ इतना ज्ञान नहीं है कि मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ही प्रमाण है।

## जैन दर्शन में केवलज्ञान सबसे बड़ा प्रमाण है

हमारे पास में केवलज्ञान सबसे बड़ा प्रमाण है। अगर केवलज्ञान प्रमाण है, तो केवलज्ञान में जो कहा गया, जो बताया गया, वैसा हमने जाना तो वह मतिज्ञान और श्रुतज्ञान भी हमारे लिए प्रामाणिकता की कोटि में आ जाता है। इतना भाव 'तत्' शब्द में छिपा हुआ है। अब आपको यह समझना है कि देखो! इस 'तत्' शब्द के द्वारा हम किस-किस चीज को प्रामाणिकता की कोटि में ले रहे हैं? हमारे लिए तो क्या है, बड़ी brand तो केवलज्ञान हैं, हम तो छोटे-मोटे क्या हैं? एक dealer जैसे हो गए या एक agent जैसे हो गए क्योंकि अपने पास तो क्या है ? मतिज्ञान, श्रुतज्ञान। हमें क्या दिख रहा है और क्या जानने में आ रहा है? लेकिन फिर भी हम बिलकुल ऐसे बोल रहे हैं कि जैसे मान लो हमसे बढ़कर कोई नहीं। तो किसके बल पर बोल पा रहे हैं? कोई तो हमारे ऊपर है, जिसके बल पर हमारे अन्दर इतनी power आ रही है। जैसे किसी बड़ी company की कोई भी franchise दी जाती है और उसकी अगर brand है, तो वह अगर कहीं पर छोटी भी है, तो उसकी अपनी value होती है। समझ आ रहा है? ऐसे यह केवलज्ञान की brand है, केवलज्ञान brand है। हमारे पास में इतना बड़ा एक Power है कि हमारे लिए जो हमसे Supreme Power है, वह सब कुछ जानता है। वह सर्वज्ञ है, उन ने जो वहाँ से deliver किया, हमने अपने ज्ञान से जितना जान पाया, हमारे ज्ञान में भी प्रामाणिकता इसलिए आ गई क्योंकि

SCAN TO WATCH

उसने जैसा कहा हमने वैसा मान लिया। इसलिए जो केवलज्ञान को प्रमाण मानेगा उसके लिए तो इन्द्रिय-ज्ञान और मन भी प्रामाणिक ज्ञान में आ जाएँगे। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान उसके प्रमाण माने जाएँगे लेकिन जो केवलज्ञान को नहीं मानता तो उसके लिए केवल इन्द्रिय-ज्ञान से कितना जाना जाएँगा?

जो past की कोई चीजें नहीं जानता, future में क्या होने वाला नहीं जानता, इस दीवार के पीछे क्या है जिसको नहीं दिख रहा, उसकी knowledge कैसे valid हो सकती है? यह बहुत बड़ी चीज है कि जैनाचार्यों ने इसलिए इन्द्रियों को प्रमाण नहीं कहा। इन्द्रिय-ज्ञान प्रमाण नहीं है। इन्द्रिय-ज्ञान में तो कोई चीज मान लो हमें सुनने में आ रहा है, सुनते-सुनते भी किसी के लिए कोई कुछ-कुछ सुनने में आ जाता है, किसी को वही शब्द किसी रूप में सुनने में आ जाता है, किसी को अन्य रूप में सुनने में आ जाता है, तो सुनना प्रामाणिक नहीं है। सुनने के बाद जो आपको पदार्थ का स्वरूप बताया जा रहा है अगर आपने वैसा निर्धारित कर लिया तो आपका वह श्रुतज्ञान प्रामाणिक होगा। इसलिए यहाँ पर कहा जा रहा है- ज्ञान ही प्रमाण है।

## पाँचों ज्ञानों का समूह प्रमाण है

एक ज्ञान प्रमाण नहीं है, यह जो पाँच ज्ञान का समूह है, उसको 'ज्ञानम्' कहा। 'तत् ज्ञानं प्रमाणं' वह ज्ञान प्रमाण है, तो मतलब एक तरह से पाँचों ज्ञानों का समूह प्रमाण है। किसी एक ज्ञान पर force नहीं डाला गया कि एक ही ज्ञान प्रमाण है। केवलज्ञान ही प्रमाण है। अगर ऐसा कह देते तब तो फिर अपने लिए भी दिक्कत हो जाती। अब केवलज्ञानी तो कोई है ही नहीं, मति-श्रुतज्ञानी है। अब इनकी बात कैसे प्रामाणिक मानी जाए? समझ आ रहा है? यह एक बहुत बड़ा न्याय है। आपकी बात में कैसे प्रामाणिकता आ गई? कैसे आपकी बात authentic हो गई? क्यों हो गई? क्योंकि हमसे पहले जो हुए, उनसे पहले जो हुए हमारी link उनसे जुड़ी हुई है। हम वह पढ़ रहे हैं, जो सर्वज्ञ ने पढ़ाया है और हम इस चीज को prove कर सकते हैं क्योंकि जिस तरह से सर्वज्ञ के ज्ञान में कोई भी बाधा नहीं दे सकता वैसे ही इस ज्ञान में कोई भी बाधा नहीं दे सकता, जो हमें पढ़ाया गया और हम जो आपको पढ़ा रहे हैं। इसलिए दुनिया के अनेक दर्शन जब जैन-दर्शन के सामने आते हैं तो उन्हें किसी भी प्रकार के हेतु नहीं मिलते कि वे अपने आपको बचा पाएँ, उन्हें अलग हटना ही पड़ता है।

## मतिज्ञान, श्रुतज्ञान की प्रमाणिकता

'तत्प्रमाणे' मतलब ज्ञान ही प्रमाण है। इस बात में यह बल है कि एक ज्ञान प्रमाण नहीं हैं। आज

हमारे ऊपर भी यह केवलज्ञान का उपकार है, जो हमारा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान भी प्रामाणिकता

की कोटि में आता है। क्योंकि 'सम्यग्ज्ञानम् प्रमाणम्', यह भी सूत्र है,न्याय-सूत्रो में आता है यह। यहाँ पर भी उसी ज्ञान को सम्यग्ज्ञान कहा गया। जो यह मतिज्ञान है, श्रुतज्ञान है, यह सामान्य व्यक्तियों की मतिज्ञान, श्रुतज्ञान नहीं है। यह जो सम्यग्ज्ञान वाले मतिज्ञान हैं, उनको यहाँ पर मतिज्ञान, श्रुतज्ञान जानना।

नहीं तो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान तो एकेन्द्रियों में भी होते हैं, असंज्ञियों में भी होते हैं, दो-तीन-

SCAN TO WATCH

इन्द्रिय, चार-इन्द्रिय, पशु-पक्षी सब में मतिज्ञान, श्रुतज्ञान हैं। यह वह वाला मतिज्ञान, श्रुतज्ञान नहीं है, वह सब तो मिथ्या ज्ञान की श्रेणी में आएँगे। यह सम्यग्दर्शन के साथ होने वाला जो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान है, उस सम्यग्ज्ञान की बात है, वही सम्यग्ज्ञान यहाँ प्रामाणिक है। इसलिए मतिज्ञान, श्रुतज्ञान कहने पर क्या समझना? सम्यक् मतिज्ञान, सम्यक् श्रुतज्ञान। अन्य जो षट्खण्डागम आदि सिद्धान्त शास्त्र हैं, उनमें मतिज्ञान को आभिनिबोधिक ज्ञान के नाम से पुकारा जाता है। वहाँ पर सूत्र में मतिज्ञान कम लिखा जाता है, षट्खण्डागम-सूत्रों में। वहाँ क्या लिखते हैं?

'आभिणिवोहियणाणं सुइणाणं' श्रुतज्ञान को तो श्रुतज्ञान ही लिखेंगे, श्रुतज्ञान, सुइणाणं, लेकिन मतिज्ञान को मति नहीं लिखते है,अभिनिबोधक-ज्ञान की संज्ञा दी जाती है। अभिनिबोधिक, जो आगे के सूत्र में आने वाला है शब्द। ये जो हैं, ये मतिज्ञान के ही पर्याय है, तो समझने की बात यह है कि मतिज्ञान की और श्रुतज्ञान की जो प्रमाणिकता है, वह हमारे लिए केवलज्ञान की प्रामाणिकता से मिलती है। इसलिए ये मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और उसके बीच की जो अवधि, मन:पर्यय ज्ञान सभी प्रामाणिकता की कोटि में आते हैं क्योंकि यह परोक्ष हैं। पदार्थों को सही जानते तो हैं लेकिन प्रत्यक्ष नहीं जानते हैं। सुनकर के भी जितना जानते हैं, उतना सही जानते हैं इसलिए इन ज्ञानों को प्रामाणिकता की कोटि में लिया गया है।

## कर्ता रहित आगम प्रमाण नहीं होता है

SCAN TO WATCH

ज्ञान ही प्रमाण होता है और कोई चीज प्रमाण नहीं होती। न इन्द्रियों का ज्ञान प्रमाण होता, न सन्निकर्ष एक ज्ञान होता है, वह प्रमाण होता है। केवल जो आगम को प्रमाण मानते हैं, वह आगमज्ञान भी प्रमाण तब तक नहीं बनेगा जब तक कि उस आगम को बनाने वाला कोई न कोई कर्ता न मिले। क्योंकि जो मीमांसक होते हैं, जिन्हें हम वेदों को मानने वाले कहते हैं, वह मीमांसक कहलाते हैं। वे लोग केवल वेदों को ही प्रमाण मानते हैं तो उनके लिए जैनाचार्यों का कहना होता है कि यदि वेद प्रमाण हैं तो यह बताओ ये वेदों का लिखने वाला कर्ता कौन है? वे कहते हैं- नहीं! यह अनादि हैं, सनातन हैं, कोई लिखने वाला नहीं है। बिना लिखे वेद किससे लिखे जाएँगे? कोई लिखने वाला नहीं होगा, पुरुष के बिना तो शब्द का व्यापार होता ही नहीं, वाक्य रचना पुरुष के बिना तो होती नहीं। इस आगम की प्रामाणिकता किससे बनेगी? आगम की प्रामाणिकता उस आगम को कहने वाले कर्ता से बनती है और उसका जब तक कोई कर्ता नहीं मिलेगा तब तक आगम की प्रामाणिकता नहीं बनेगी।

## अर्थकर्ता- अरिहन्त भगवान

आपके यहाँ पर कर्ता है! कौन है कर्ता? अरिहन्त भगवान, सर्वज्ञ भगवान, अर्थ कर्ता इसलिए कहे जाते हैं। अर्थकर्ता का मतलब जो हमें पदार्थों का ज्ञान कराने वाले सबसे मूलभूत हैं, वे हैं- अर्थ कर्ता, आगम के कर्ता, भगवान आप्त हैं। इसलिए उनकी सर्वज्ञता से जो उनके द्वारा कहा हुआ है, वे चीज प्रामाणिक बनेगी। अन्य लोगों ने कुछ कहा नहीं और केवल इतना मान लो कि हमारा आगम प्रमाण हैं या हमारे वेद प्रमाण हैं तो ऐसे प्रामाणिकता नहीं बनती है। समझ आ रहा है? आगम प्रमाण नहीं है, इस सूत्र के अनुसार देखो! क्या लिखा है? 'तत् प्रमाणे' प्रामाणिक चीज क्या है? ज्ञान प्रमाण है। पहले तो ज्ञान प्रमाण है अगर वह ज्ञान शास्त्रों में लिखा जाएगा तो वह secondary चीज हो गई। शास्त्रों में जो लिखा गया है, वह शास्त्र

प्रामाणिक तो बाद में हुआ, पहले प्रमाण क्या हुआ? ज्ञान। क्योंकि बिना ज्ञान के कौन शास्त्र लिखेगा? और आप कहो कि नहीं यह तो पहले से लिखे आ रहे हैं, अपने आप लिखे गए हैं तो यह तो कोई समझ में आने वाली बातें है ही नहीं, तर्क से तो ये बातें सिद्ध नहीं होती। पूरा जैन-दर्शन तर्क के अनुसार ही चलता है। हेतु क्या है आपका? आप समझ सकते हैं कि जो लोग अपने वेदों को प्रामाणिक कहते हैं और उस प्रामाणिकता का कोई उनके पास में हेतु नहीं है, कर्ता नहीं बताते कि इसको कैसे हम प्रामाणिक कहें? बस है, क्यों है? क्योंकि अपौरुषेय है, किसी ने बनाया नहीं है। किसी पुरुष के द्वारा बनाया हुआ नहीं हैं इसलिए प्रामाणिक है, तो यह तो कोई प्रामाणिकता का हेतु नहीं हुआ।

## विज्ञान में कितनी प्रामाणिकता होती है ?

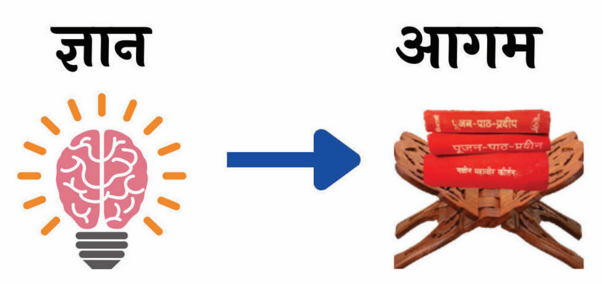


यहाँ पर क्या कहा जा रहा है? ज्ञान प्रमाण है।आगम बाद में प्रमाण है,पहले ज्ञान प्रमाण है। ज्ञान में अगर प्रामाणिकता होगी तो फिर उसके द्वारा जो कहा जाएगा, जो लिखा जाएगा, वह चीज प्रामाणिक कहलाएगी। इस सूत्र से हमारे अन्दर यह धारणा बननी चाहिए कि ज्ञान कितनी बड़ी चीज है। प्रामाणिकता हमारी इन्द्रियों में नहीं आती, प्रामाणिकता जो हम कुछ भी सीख

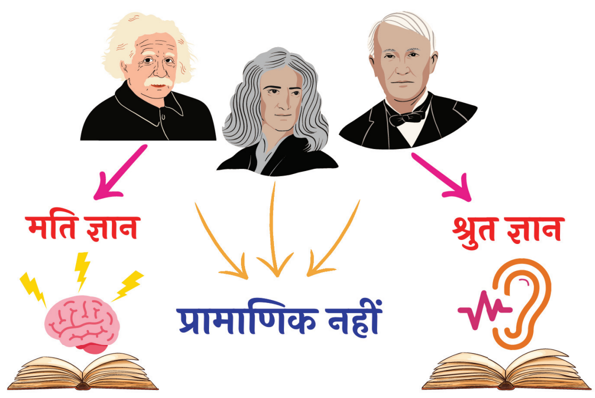


पढ़ लेते हैं, उसमें नहीं आती। प्रामाणिकता किससे आएगी? जो केवलज्ञान के द्वारा कहा गया है, वह सीखोगे, वह जानोगे, वह पढ़ोगे तो आपका ज्ञान प्रामाणिक बनेगा। दुनिया के Einstein, Edison और Newton की बातें पढ़ने से आपको कोई प्रामाणिकता आपके

ज्ञान में नहीं आएगी क्योंकि वह केवलज्ञानी नहीं हैं। सीधी-सी ही बात है, बुरा लगने की कोई बात ही नहीं है। सब मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी हैं तो उनकी बातें प्रामाणिक कोई भी मान ले लेकिन सच्चा जैन जो होगा, वह उनकी बातों को प्रामाणिक नहीं मानेगा। हाँ! अगर कोई आपकी बात से हमारी बिलकुल tuning बैठ रही है और हमारे कोई सिद्धान्त को वह belong कर रहे है, तो हम उसको मान सकते हैं, ये अलग बात है लेकिन हम आपके ज्ञान को प्रामाणिक नहीं मान सकते हैं।

## जैन आचार्यों की मत-मतान्तरों का खण्डन करने की क्षमता

सच्चा जैन केवल ऐसा नहीं है, तत्त्वार्थ-सूत्र केवल पढ़ लेता है और छोड़ देता है। जब वह पढ़ता है, तो गहराई से पढ़ता है, देखता है कि आखिर इसमें है क्या? जो हम इतना नाम लेते हैं, केवल सिर पर रखने के लिए नहीं है ग्रन्थ, थोड़ा सिर में भी पहुँचाने के लिए भी हैं। सिर पर तो रखते ही हैं, यह हमारी विनय है कि हम सिर पर रखते हैं, बहुमान इसलिए देते हैं क्योंकि यह पूज्य हैं लेकिन हमें यह भी तो पता होना चाहिए कि बहुमान क्यों दिया जा रहा है इतना? कुछ है भी इसमें कि नहीं। केवल बस पता पड़े कि भीतर से खोखला है और सिर पर रखे-रखे में जिन्दगी निकल गई। समझ आ रहा है? यह ऐसा नहीं है इसलिए यहाँ बताया जा रहा है कि छोटे-छोटे सूत्रों में बहुत गहरे अर्थ भरे हुए हैं। जब जो तार्किक आचार्य हुए आचार्य पूज्यपाद, आचार्य अकलंक, आचार्य विद्यानन्दी महाराज, ऐसे-ऐसे तार्किक आचार्य हुए हैं कि इन ग्रन्थों पर, जब इन सूत्रों की टीकाएँ लिखते हैं तो इतने मत-मतान्तरों का खण्डन करते हुए लिखते हैं और अपने अकाट्य वाक्यों से इस सूत्र की प्रामाणिकता सिद्ध करते हैं तब समझ में आता है कि इन आचार्यों को कितना सब दर्शनों का ज्ञान था और इन सूत्रों के माध्यम से सब दर्शनों का खण्डन करने की उनके अन्दर क्षमता थी।

## तत्त्वार्थ-सूत्र पढ़कर हम अपने ज्ञान को प्रामाणिक बना सकते है

इसलिए यह सूत्र भी प्रामाणिक हैं। क्यों हैं? क्योंकि ये केवलज्ञान के द्वारा बताए हुए ज्ञान पर ही आधारित हैं। उन्हीं गणधर आचार्यों की परम्परा से अन्तिम यह आचार्य मानना चाहिए,

जिन्होंने सूत्र में कोई ग्रन्थ लिखा और एकमात्र यही ग्रन्थ हमारे लिए उपलब्ध है, जो आज संस्कृत का सूत्र-ग्रन्थ है। बाकी के जो हैं, सब बाद के हैं। एक मात्र कोई व्यापक सूत्र ग्रन्थ संस्कृत का है, तो वह आचार्य गृद्धपिच्छ महाराज का यह तत्त्वार्थ-सूत्र ही है। इन सूत्रों की प्रामाणिकता को ध्यान में रखते हुए हम इन सूत्रों का ज्ञान ले और अपने ज्ञान को प्रामाणिक बनाने की कोशिश करें। तभी हमारा ज्ञान हमें सही बोध देगा और दूसरों को सही बोध देगा। यहाँ पर सबसे बड़ी बात क्या बताई जा रही है? ज्ञान प्रमाण है और ज्ञान में भी, कोई भी ज्ञान, आगम-ज्ञान बाद में आएगा, इन्द्रिय-ज्ञान बाद में आएगा। लेकिन पहले तो हमारे सामने केवलज्ञान होना चाहिए, उसके बिना तो प्रामाणिकता की शुरुआत हो ही नहीं सकती। अपने आप से हम कोई चीजें सिद्ध करेंगे तो प्रामाणिक नहीं बनेगी लेकिन जो सिद्ध हो चुकी हैं, उन्हें बताने के लिए हम अपने आप में कोई तर्क ढूंढेंगे तो वह हमारा ज्ञान प्रामाणिक कहलायेगा। इसलिए यहाँ पर पाँचों ज्ञान प्रमाणिक हैं लेकिन सबके मति, श्रुतज्ञान प्रामाणिक नहीं है। जिनके अन्दर सम्यग्दर्शन है, मिथ्यात्व का अभाव हुआ है, सम्यग्ज्ञान की जिनके अन्दर धारणा हुई है, उन्हीं का सम्यग्ज्ञान प्रामाणिक माना जाता है। इसको बोलते हैं- valid knowledge।

## परोक्ष ज्ञान और प्रत्यक्ष ज्ञान

SCAN TO WATCH

अब यह जो valid knowledge होती है, यह दो प्रकार की होती है। आगे के सूत्र में कहते हैं-

**आद्ये परोक्षं ॥ 1.11 ॥**

**पंच भेद जो हैं कहे, उनमें दोय परोक्ष।**
**मति श्रुत इनके नाम हैं, होता इनसे मोक्ष ॥1.11॥**

एक होता है परोक्ष ज्ञान। परोक्ष ज्ञान का मतलब यहाँ बताया गया 'आद्ये'। 'आद्ये' का मतलब यहाँ पर है, आदि के दो ज्ञान। संस्कृत के अनुसार आद्यं, आद्ये यानी द्विवचन का प्रयोग है, तो द्विवचन का प्रयोग यह बताता है कि यहाँ पर दो ज्ञान है- एक मतिज्ञान और श्रुतज्ञान। वैसे तो आदि का मतलब होता है- पहला। पहला मतलब तो केवल मतिज्ञान परोक्ष हुआ लेकिन 'आद्ये' लिखा हुआ है, तो मतिज्ञान के साथ में श्रुतज्ञान भी परोक्ष होगा। आदि मतलब होता तो

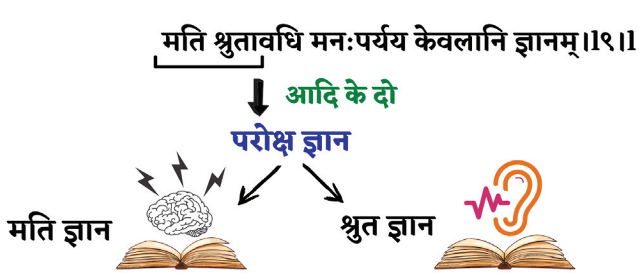

पहला ही है लेकिन यह द्विवचन का प्रयोग है, तो आदि के दो ज्ञान परोक्ष हैं। मतलब मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ये दोनों ज्ञान कैसे हैं? परोक्ष ज्ञान हैं। अब आप देखे कि दुनिया में इन सब ज्ञानों को जो हम इन्द्रियों से जानते हैं, वे सब ज्ञान प्रत्यक्ष माने जाते हैं। इसलिए जैन दर्शन दुनिया में सबसे उल्टा चलता है और उल्टे लोगों को सीधी बात समझ में नहीं आती। उल्टे लोगों को उल्टी बात तो समझ में आ जाएगी लेकिन उल्टे लोगों को सीधी बात कैसे समझ में आएगी? जिनकी बुद्धि उल्टी चल रही है, तो वह उल्टी बात अगर हम कहेंगे तो-तो समझ लेंगे। मान लो हम आपसे कहें- आप प्रत्यक्ष ज्ञान के धारी हो तो आपको बहुत अच्छा लगेगा। क्यों लगेगा? क्योंकि हमको प्रत्यक्ष जो हो रहा है और आप भी वही कह रहे हो कि हमको भी प्रत्यक्ष ज्ञान हो रहा है। आप भी उसी को प्रत्यक्ष बता रहे हो तो आपको बिलकुल सही लगेगा कि हाँ! यह सही बोल रहे हैं। हम कहे कि आपको प्रत्यक्ष तो कुछ होता नहीं, आप परोक्ष ज्ञान के धारी हो, तो कहेगा यह क्या बात हुई भाई? मैं अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देख रहा हूँ, कानों से प्रत्यक्ष सुन रहा हूँ और यह कह रहे हैं परोक्ष ज्ञान हो रहा है। वह वहीं से अलग हट जाएगा, हट जाओ तो हट जाओ। डटे रहोगे तो कुछ सीखने को मिलेगा। हट गए तो मिट गए, पड़े रहो जहाँ पड़े हो, वहीं पड़े रहो। दुनिया के तरीके से हम दुनिया को लुभाने के लिए ज्ञान नहीं दे रहे हैं, हम सत्य बता रहे हैं। आपमें थोड़ी-सी क्षमता है सुनने की तो आप सुनो, तर्क करने की है, तो तर्क करो; डटने की है, तो डटे रहो हमारे सामने तो कुछ पल्ले पड़ेगा। जैसे ही आपने उल्टी बात अपने ज्ञान में जो चल रहा है, आप के लिए वह सीधा है और आपके ज्ञान के अनुसार अगर बात कही जाए तो वह आपके लिए सीधी बात है। जो बात उल्टी कह दी जाए तो आपके लिए उल्टी लगेगी तो आप कहोगे कि यह हमें उल्टी लग रही है, तो आप उल्टे लौट जाओगे।

## जैन दर्शन सत्य अवधारणा पर चलता है

अब दुनिया में किसी से कहो- तुम्हें जो आँखों से दिखाई देता है, यह प्रत्यक्ष नहीं है। यह तुम्हारा जो ज्ञान है वह प्रत्यक्ष नहीं। वह कहेगा क्या है? जैन क्या बोल रहा है? यह तुम्हारा ज्ञान परोक्ष है। अब सामने वाले को तो यह सब दिख रहा है प्रत्यक्ष, मैं देख रहा हूँ सब कुछ और आप

कह रहे हो यह परोक्ष है। अगर उससे यह कहा जाए कि हाँ!, तुम्हारा ज्ञान प्रत्यक्ष है, तो वह आपकी बात बिलकुल मानने को तैयार है क्योंकि वही हमारे अनुभव में आ रहा है, वही आप कह रहे हो। इसका मतलब है- आप हमारी बिरादरी के हो मतलब हम आपको मान रहे हैं तो हम आपका धर्म मानेंगे। इसलिए लोग जैन दर्शन को नहीं समझ पाते क्योंकि जैन दर्शन लोगों की धारणा से नहीं चलता, जैन दर्शन सत्य अवधारणा से चलता है। जो सत्य है, वह सत्य ही रहेगा। चाहे आप उसे माने या न माने। आपको यहाँ उल्टा नहीं करना है। सूत्रों को उल्टा नहीं करना, सूत्र आपके कहे अनुसार उल्टे नहीं हो जाएँगे। आपको अपनी बुद्धि को उल्टा करना है और आप अगर अपनी बुद्धि को सीधा मान कर बैठे हो तो कभी उल्टा करोगे नहीं और पहले यह मान लो हमारी बुद्धि भी उल्टी हो सकती है, तो सीधी करने का प्रयास करोगे।

## सर्वज्ञता की नक़ल

कितनी बड़ी बात हो गई। क्या कहा जा रहा है? मतिज्ञान। मतिज्ञान का मतलब जो इन्द्रियों से, मन से होने वाला ज्ञान, श्रुतज्ञान, जो हमारे लिए मन से हो रहा है वह सब श्रुतज्ञान, सब क्या है? परोक्ष है। अब यह ज्ञान परोक्ष तभी होगा जब कुछ हमारे लिए इन इन्द्रिय और मन से भी कुछ अलग होगा। जिनको इन्द्रिय और मन के अलावा कुछ पता ही नहीं होता, आत्मा को जिन्होंने माना ही नहीं और माना भी है, तो आत्मा में बुद्धि तो मानते ही नहीं, बस चेतना है। जैसे एक दिन हमने बताया था न कि मोक्ष के बारे में लोगों की क्या-क्या धारणा रहती है? चेतना तो मान ली लेकिन चेतना में कोई बुद्धि की विशालता है या बुद्धि है या ज्ञान है या सर्वज्ञता है यह दुनिया के अन्दर कोई नहीं मानता। मतलब सर्वज्ञता को तो दुनिया में कोई मानने वाला है ही नहीं और जितने भी मानने वाले सब नकलची हैं। जितने भी मानने वाले हैं, जब तीर्थंकरों ने अपने अन्दर वह सर्वज्ञता प्राप्त कर ली और गणधर आदि ने उनको सर्वज्ञ कहना शुरू किया और उनका सर्वज्ञ के ज्ञान के रूप में, सर्वज्ञ के रूप में उनकी जब प्रभावना हुई तो कुछ नकलची लोगों ने अपने आप को भी सर्वज्ञ घोषित कर दिया। वह तो हो ही जाता है, तुम हो तो मैं क्या कम हूँ? तुम बन सकते हो सर्वज्ञ तो क्या मै नहीं बन सकता? ऐसे करके तो सर्वज्ञ बहुत बन गए लेकिन जब उन्हें टटोला गया, प्रमाणिकता की कसौटी पर कसा गया तो एक भी खरा नहीं उतरा।

आपको अपनी बुद्धि क्या बनाना है? मुझे कुछ भी प्रत्यक्ष दिखता ही नहीं, मैं कुछ भी प्रत्यक्ष जानता ही नहीं। कभी नहीं कहना है कि मैंने प्रत्यक्ष देखा है या प्रत्यक्ष सुना है। अगर आज आपने तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ लिया तो। क्या बोलोगे? तुम्हारा ज्ञान कैसा है? परोक्ष ज्ञान है। परोक्ष बोलेंगे तभी कुछ वह ज्ञान सिद्ध होगा जो इन्द्रिय और मन से परे है। अन्य लोगों के पास में आत्मा का इन्द्रिय और मन से परे जो ज्ञान है वह इसलिए नहीं आता क्योंकि उनके पास में वह ज्ञान है ही नहीं, उनकी पहुँच वहाँ तक है ही नहीं। इसलिए वे सारे के सारे इन्द्रिय ज्ञान को ही प्रत्यक्ष ज्ञान मानते हैं। यह सब यहाँ पर 'पर' माना जाता है। 'पर' का मतलब जानते हो? जो

अपने से दूसरा हो। 'पर' मतलब अपने से भिन्न हो। इन्द्रियाँ, आत्मा नहीं हैं; मन, आत्मा नहीं है, आत्मा से भिन्न है और इन इन्द्रिय और मन से जो हो रहा है यह भी एक तरह से ये उपात्त इन्द्रियाँ और मन को उपात्त संज्ञा दी जाती है। इनको क्या बोलते हैं? मतलब ज्ञान के ये साधन उपात्त हैं।

## उपात्त साधन और अनुपात्त साधन को समझें

SCAN TO WATCH

एक उपात्त होता है, एक अनुपात्त होता है मतलब एक ज्ञान के साधन जो हमारे शरीर से जुड़े हुए वे तो हो गए उपात्त और एक ज्ञान के साधन जो हमसे दूर हैं, भिन्न हैं जैसे-पुस्तक है। हम पढ़ रहे हैं तो ज्ञान हो रहा है लेकिन यह उपात्त नहीं है। अनुपात्त है। दो तरीके परिग्रह भी आते है-, एक उपात्त परिग्रह और एक अनुपात्त परिग्रह। उपात्त परिग्रह में अपना शरीर परिग्रह कहलाता है, अनुपात्त परिग्रह में जो धन-वैभव आदि परिग्रह कहलाता है।

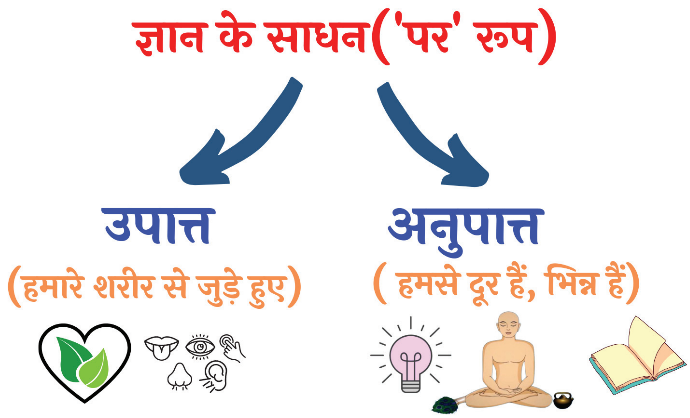


ऐसे ही एक उपात्त ज्ञान के साधन और एक अनुपात्त ज्ञान के साधन। 'पर' दो प्रकार का होता है- एक उपात्त रूप और अनुपात्त रूप। इन्द्रियाँ और मन उपात्त रूप 'पर' हैं और जो पुस्तक है,

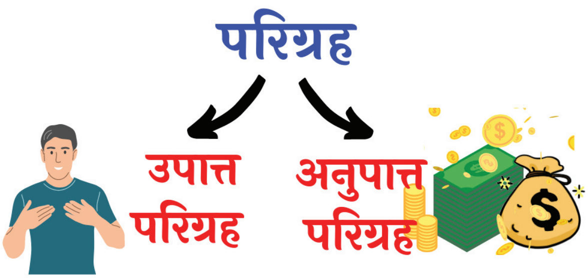


light है, सिखाने वाला कोई दूसरा उपाध्याय है, गुरु है, यह सब क्या हो गया? यह अनुपात्त साधन हो गए। इनसे भी ज्ञान आता है, यह ज्ञान के सब साधन हैं। ज्ञान इनसे नहीं हो रहा है, ये सब क्या हैं? ज्ञान के साधन है। इन्द्रियाँ ज्ञान की साधना में साधन है, ज्ञान के लिए करण है, साधन हैं। इन्द्रियाँ ज्ञान नहीं हैं इसलिए इनको 'पर' कहा गया। इन्द्रिय ज्ञान के माध्यम से जो हमें ज्ञान

होगा वह परोक्ष ज्ञान इसलिए कहा जाएगा क्योंकि वह आत्मा से direct नहीं हो रहा, आत्मा को इन्द्रियों का सहारा लेना पड़ रहा है। मन का सहारा लेना पड़ रहा है। सहारा जानते हो! सहारा भी कब लिया जाता है? जब कुछ अपने पास में शक्ति हो लेकिन वह शक्ति थोड़ी-सी कम पड़ रही हो तो हम किसी दूसरी चीज का सहारा लेकर के अपना काम चला लेते हैं। मान लो घुटने खराब हो गए, उठना-बैठना मुश्किल है, तो हम एक डण्डे का या stool type का सहारा ले लिया। चल तो रहे हैं लेकिन सहारे से चल रहा है। आँखें हैं चश्मा लगाना पड़ता है। देख तो आँखों से ही रहे हैं लेकिन चश्मे के सहारे देख रहे हैं। शक्ति तो है लेकिन वह शक्ति क्या हो रही है? कम हो रही है। जब हम असमर्थ होते हैं अपनी ही शक्ति का प्रयोग करने में तब हम दूसरे का सहारा लेते हैं। इसी तरीके से कर्म के कारण से आत्मा जब असमर्थ होती है तब वह आत्मा सहारा लेती है- इन्द्रियों का, मन का। वैसे तो आत्मा क्या है? ज्ञान स्वरूपी आत्मा, आत्मा तो ज्ञान स्वरूपी है, ज्ञस्य स्वभाव वाली है लेकिन कर्मों के कारण से उसका ज्ञान पूरा प्रकट नहीं। इसलिए उसे इन्द्रिय और मन की सहायता लेनी पड़ती है तब वह आत्मा कुछ जान पाती है। किन साधनो से? इन्द्रिय,मन ये उसके उपात्य साधन है। बाहर कोई उपदेश सुनने को मिल जाए,light हो,गुरु हो,ये सब क्या हो गए? ये अनुपात्य साधन है। इसलिए इस ज्ञान को परोक्ष ज्ञान कहा जाता है।

## एक देश प्रत्यक्ष क्या होता है?

**आगे कहते हैं- प्रत्यक्ष-मन्यत् ॥1.12॥**

**आतम में ही उपजते, ज्ञान अन्त के तीन ।**
**विकल-सकल के भेद को, पाकर हो स्वधीन॥1.12॥**

'अन्य', मतलब अब इसके अलावा जो बचा वह ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान है। सूत्र नम्बर जो 9 है उसको ध्यान में रखो। मति और श्रुतज्ञान, ये क्या हो गए? परोक्ष। उसके अलावा जो बचे- अवधि ज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान, केवलज्ञान। ये सब क्या हो गये? यह प्रत्यक्ष ज्ञान है। क्यों प्रत्यक्ष है? 'अक्षं-अक्षं प्रतिवर्तते इति प्रत्यक्षं' अक्ष मतलब होता है- आत्मा। जो आत्मा से निकलता है, आत्मा में रहता है या आत्मा के प्रति जिसका वर्तन होता है, उसको प्रत्यक्ष कहा जाता है। अन्य लोग अक्ष मतलब इन्द्रियाँ मानते हैं। 'अक्ष' को क्या मानते हैं? इन्द्रियाँ। जब आप कहीं शब्द-साहित्य में इन्द्रियों के पर्यायवाची नाम सुनोगे तो 'अक्ष' मतलब इन्द्रियाँ भी होती है। उन्हें आत्मा मानना ही नहीं है, तो उनकी सारी की सारी जो शक्ति इन्द्रियों तक ही रह जाती है, सब knowledge इन्द्रियों तक ही सिकुड़ कर रह जाती हैं। जबकि यहाँ क्या कहते हैं?

**प्रत्यक्ष ज्ञान**

1) अवधि ज्ञान
2) मन: पर्ययज्ञान
3) केवलज्ञान

'अक्ष' मतलब 'आत्मा'। जो आत्मा के प्रति हो, आत्मा से हो, आत्मा में हो, उसका वह ज्ञान प्रत्यक्ष है।

प्रत्यक्ष ज्ञान अवधिज्ञान भी हो सकता है, मन:पर्यय ज्ञान भी हो सकता है और केवलज्ञान भी होता है। अवधिज्ञान और मन:पर्यय यह ज्ञान एक देश प्रत्यक्ष कहलाते हैं।

## एक देश का मतलब पूर्ण प्रत्यक्ष ज्ञान नही हैं

एक देश का मतलब पूर्ण प्रत्यक्ष नहीं है, ये थोड़े प्रत्यक्ष है क्योंकि यह किसी limit में जान रहे हैं, ये limited वस्तुओं को जानते हैं। लेकिन जिसको जानेंगे उसको पूरा जानते हैं, आत्मा से direct जानेंगे। इन्हें इन्द्रिय और मन की सहायता नहीं लेनी पड़ेगी। आप सोचे! कितना बड़ा ज्ञान होगा कि आत्मा में अवधि ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम हुआ। आँखें बन्द हैं बस हमें सब दिखाई दे रहा है। मन:पर्यय ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम हुआ, आँखें बन्द हैं। बस! यह दिमाग लगाना पड़ेगा कि हमें किसके मन की बात को जानना है? बस! मन को विषय बनाना है। उसका मन उसकी पकड़ में नहीं आएगा, उसका मन मेरी पकड़ में आ जाएगा अगर मुझे मन:पर्यय ज्ञान हो गया तो। वर्तमान में किसी को प्रत्यक्ष ज्ञान होते नहीं है इसलिए डरने की कोई बात नहीं है। कोई किसी के मन की कोई बात नहीं जान सकता इसलिए आप कुछ भी सोचो, free हो आप बिलकुल। इतने बड़े-बड़े ज्ञान हैं जिसके माध्यम से यह भी बताया जा सकता है कि आप पूर्व भव में क्या थे? आपके लिए आगे क्या हानि-लाभ होने वाला है? आपके आगे के जीवन में कब मृत्यु आने वाली है? कब आपको कोई नुकसान होने वाला है? कब आपके लिए कौन-सा वियोग होने वाला है? ये सब कुछ घटित होने वाली घटनाएँ भी आत्मा में प्रत्यक्ष दिखाई देती हैं। इन ज्ञानों के लिए हमें आँख खोलना नहीं पड़ती, आँख उल्टी बन्द करनी पड़ती है।

## प्रत्यक्ष ज्ञान क्या होता है?

**प्रत्यक्ष ज्ञान**

1) अवधि ज्ञान
2) मनः पर्ययज्ञान
3) केवलज्ञान

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान के लिए हमें आँख खोलनी पड़ती है। देखेंगे तो दिखेगा, आँख बन्द कर लेंगे तो कुछ न दिखेगा। सुन रहे हैं? इतनी बड़ी चीजें हैं! हम समझे कि अवधिज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान यह भी जान रहे हैं तो यह भी बहुत कुछ जानते हैं, लेकिन केवलज्ञान की तरह सब कुछ नहीं जानते हैं। केवलज्ञान पूर्ण ज्ञान है। उस ज्ञान से कुछ भी छिपा हुआ नहीं है इसलिए ये तीनों ज्ञान प्रत्यक्षता की श्रेणी में आते हैं। किसी इन्द्रिय का आलम्बन नहीं, कोई मन का आलम्बन नहीं। अब आप कहोगे कि मन:पर्यय ज्ञान में मन का आलम्बन तो लिया जा रहा है, तो मन का आलम्बन ज्ञान के लिए नहीं लिया जा रहा है, मन का आलम्बन इतना ही लिया जा रहा है कि किसके मन को जानना या किसके मन में बैठी हुई वस्तु को जानना है? मतलब कि वह एक ज्ञान को operate करने से पहले

का function है, यह समझ लो। जैसे हमें किसी के मन को जानना है, तो अपना मन पहले हमें उसमें लगाना पड़ेगा। बस! उतना लगा दिया उसके बाद में फिर जो direct relay होगा, वह आत्मा से ही होगा। सिर्फ एक connection बनाना है।आखिर connection तो किसी-किसी चीज का हर किसी के साथ बनाना पड़ता है। जब तक YouTube की link नहीं मिलेगी आपको तब तक आपके लिए कुछ मिलेगा नहीं। अतः connected तो कहीं न कहीं होना ही पड़ता है, चाहे किसी group से connection हो या किसी link से connection हो। बस एक connection कर दिया उसके बाद में सब कुछ direct relay हो रहा है। फिर कोई बीच में किसी भी तरीके का disturbance नहीं और किसी भी तरीके का बीच में कोई भी व्यवधान नहीं कि screen पर light सही नहीं आ रही है कि उसकी voice सही नहीं आ रही है, कि अभी connection सही नहीं बन रहा है कि अभी net सही नहीं चल रहा है। फिर कुछ नहीं। बस! एक बार connected हो गया तो फिर net सब OK है। इसका नाम क्या है? प्रत्यक्ष ज्ञान है। अवधि ज्ञान में तो मन की भी ऐसा लगाने की जरूरत नहीं पड़ती। बस! मन में इतना विचार करना पड़ेगा कि हम किसके बारे में सोचना चाहते हैं? उसके बाद में उसका direct relay होने लग जाएगा। इसने पूछा मेरे भव बताओ महाराज! मैं पहले, पिछले भव में क्या था? आँख बन्द करनी पड़ेगी इसका भव देखने के लिए, बस इतना-सा विचार करना पड़ेगा कि यह क्या था? लेकिन वह ज्ञान मन से नहीं हो रहा है, ज्ञान तो आत्मा से होगा। इस तरह से यह अवधिज्ञान, मनःपर्यय ज्ञान आत्मा से direct होते हैं और केवलज्ञान भी आत्मा से direct ही होता है। उसके लिए तो कोई प्रश्न करने की जरूरत नहीं। जो कुछ है सो सब उसके अन्दर दिखाई देता है। जो कुछ है, वह सब उसमें जानने में आता है। अपने दिमाग में यह विभाजन करके रखें कि ज्ञान कितने होते हैं और कितने ज्ञान परोक्ष होते हैं और कितने ज्ञान प्रत्यक्ष होते हैं ? ठीक है! फिर आगे बढ़ते है।

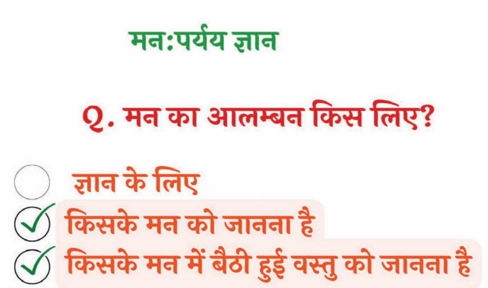


## मति, स्मृति क्या है?

**मतिःस्मृतिःसंज्ञाचिन्ताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ॥1.13॥**

**मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ता + अभिनिबोधः - इति + अनर्थान्तरम्**

**मति स्मृति संज्ञा तथा, चिन्ता अभिनिबोध।**
**अन्य नाम मतिज्ञान के, करो न्याय से शोध ॥1.13॥**

| | |
|---|---|
| मति | 'मननं मति' बुद्धि |
| स्मृति | स्मरण शक्ति |
| संज्ञा | जानने की इच्छा |
| चिन्ता | चिन्तन करना |
| अभिनिबोधक | अभिभिमुख होकर के नियत वस्तु का ज्ञान |

अब यह क्या बता रहे हैं कि जो मतिज्ञान है, उस मतिज्ञान को हम क्या-क्या और कहते हैं? ये मतिज्ञान के सब पर्यायवाची नाम है।

1) मति-

जो हमारे अन्दर बुद्धि है। वस्तुतः वह बुद्धि क्या है? मतिज्ञान है। जिसको हम कहते हैं- जिस बुद्धि से हम कुछ मनन कर सकते हैं। 'मननं मति' मतलब मनन करने का नाम भी बुद्धि है। वह बुद्धि भी क्या होती है? मतिज्ञान है। श्रुतज्ञान नहीं है, जिससे हम मनन करते हैं। ठीक है!

2) स्मृति-

जो हमारे अन्दर स्मरण शक्ति होती है, यह हमारी स्मृति कहलाती है। यह भी मतिज्ञान ही होता है। पहले क्या देखा था? क्या सुना था? वह कितने दिन तक याद रहा? कितनी देर तक याद रहा? यह सब स्मृति कहलाती हैं। यह स्मृति भी अपने आप में मतिज्ञान की बहुत बड़ी देन है। मतलब जिसका कर्म का क्षयोपशम मतिज्ञानावरण कर्म का अधिक होगा वह मनन भी अधिक कर पायेगा, उसकी स्मृति भी अधिक होगी। लम्बे समय की भी होगी और लम्बे समय तक भी रहेगी। कठिन से कठिन विषय भी उसकी स्मृति में रहेगा जिसका मतिज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम अच्छा होगा।

मति ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम

- अधिक मनन
- अधिक स्मृति

यह सब भीतर कर्म के अभाव होने पर, कर्म के क्षयोपशम होने पर ज्ञान उद्भुत होता है। आप क्या समझते हैं? किसी बच्चे में थोड़ा ज्ञान है, किसी में ज्यादा ज्ञान है, किसी की स्मृति कुछ सुनाने पर चार दिन रहती है, किसी की स्मृति चार साल बनी रहती है, किसी

की स्मृति बहुत जल्दी हो जाती है, किसी को बहुत देर से होती है, यह सब किस कारण से होता है? हमारी आत्मा में जो मतिज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम है, वह अलग-अलग तरीके का होता है। सब जीवों का अलग-अलग है, किसी का भी किसी से match नहीं करता और जितने जीव हैं सबका मतिज्ञान अलग-अलग तरीके का, सबके मनन करने की क्षमता अलग, सबके स्मरण करने की क्षमता अलग। इसी क्षमता से उस आदमी को जाना जाता है कि यह कितना प्रतिभाशाली है? कितना मेधावी है? कितना बुद्धिमान है? यह सब मतिज्ञान से ही जानने में आता है। क्षयोपशम अगर अधिक होगा तो ये सब चीजें उसके साथ बनेंगी। मतिज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम होगा तब आप मनन कर पाएँगे किन्हीं चीजों का, मनन करने के बाद में वे आपकी चीजें स्मृति में भी रहेंगी कि हमने क्या मनन किया था। नहीं तो क्या होता है? मनन तो कर लिया, आज बताया था तो आज तो सोच लिया, आज का task आज कर लिया, कल कुछ याद नहीं रहा क्योंकि इसकी स्मृति नहीं थी। यह मतिज्ञानावरण कर्म के अनेक भेद हैं, जो स्मृति के भी रूप में काम कर रहे हैं, मनन के भी रूप में काम कर रहे हैं।

3) जानने की इच्छा को संज्ञा कहा है-

आगे कहते हैं ' चिन्ता मतिः स्मृतिः संज्ञा' 'संज्ञा' का मतलब होता है- एक ज्ञान में बहुत देर तक जानने की इच्छा पड़े रहना। जो हमारे अन्दर जानना होता है वह हमारे अन्दर की संज्ञा है। यह वह संज्ञा नहीं है जो आहार, भय संज्ञा बताई जाती है, वह नहीं है। यह संज्ञा क्या है? यह हमारे अन्दर जानना, जो जानने की एक भीतर इच्छा होती है, वह संज्ञा वह भी मतिज्ञान होता है।

4) चिन्ता मतलब चिन्तन करना-

फिर उसके बाद में चिन्ता मतलब चिन्तन करना। चिन्तन करना भी जो हमने स्मरण किया है, उसी का हम बार-बार चिन्तन करते हैं तो वह स्मरण के बाद में वह चिन्तन होता रहता है। उसी-उसी विषय को लेकर के सोचना, यह भी किसी से सम्भव है? मतिज्ञान का क्षयोपशम अधिक होगा तो चिन्तन भी अच्छा होगा। आप सोच पाएँगे। समझ आ रहा है? ये सब चीजें वही हैं।

**5) अभिनिबोधक ज्ञान का अर्थ**

**अभिनिबोध = अभि + नि + बोध**

**अभिमुख नियत ज्ञान**

'मतिः स्मृतिः संज्ञाचिन्ताऽभिनिबोध', अभिनिबोध का मतलब होता है- 'अभि' मतलब

अभिमुख होकर के जो नियत वस्तु का ज्ञान होता है उसको बोलते हैं- अभिनिबोधक ज्ञान। यह भी मतिज्ञान का ही एक रूप है क्योंकि हमारी पाँचो ही इन्द्रियाँ किसी पदार्थ के प्रति अभिमुख होकर के ही काम करती हैं। जैसे- आप आँखों के अभिमुख होंगे तो तो दिखेंगे, आँखों के side से होंगे कुछ नहीं दिखेगा, पीछे होंगे तो कुछ नहीं दिखेगा, अभिमुख होना चाहिए और उसका विषय बनना चाहिए। अब अभिमुख तो है लेकिन रूप नहीं है, जबकि आँखों का विषय क्या है? रूप होना चाहिए। अब आगे रूप नहीं है, अभिमुख तो है लेकिन हवा है। अब हवा में रूप तो हमें दिख नहीं रहा है। कोई रूपवान वस्तु होगी, व्यक्ति होगा तो वह दिखेगा। रूप से मतलब रूपवान का मतलब सुन्दर से मतलब नहीं है। जिस किसी के पास में जो कुछ भी है वह रूप ही है, आकृति, रंग-रूप जो कुछ भी है। आँख का सम्बन्ध रूप है, तो उसका नियत विषय कहलाया। इसको बोलते हैं- अभिनिबोध। 'अभि' मतलब अभिमुख, 'नि ' मतलब नियत, 'बोध' मतलब ज्ञान। अभिमुख हो, नियत विषय हो और फिर उसका जो ज्ञान होगा तो वह मतिज्ञान कहलाएगा।

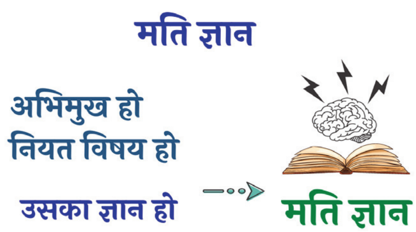


'अभि' मतलब अभिमुख हो और 'नि' मतलब नियत विषय वाला हो। जैसे आँख का विषय नियत क्या है? रूप। कान का विषय नियत क्या है? शब्द। अब कान का विषय 'शब्द' नियत है। वह नियत विषय शब्द, शब्द ही कान में जाएगा। अब हम यहाँ पर रूप और स्पर्श अगर हम कान में डालेंगे तो वह कान का विषय नहीं है।

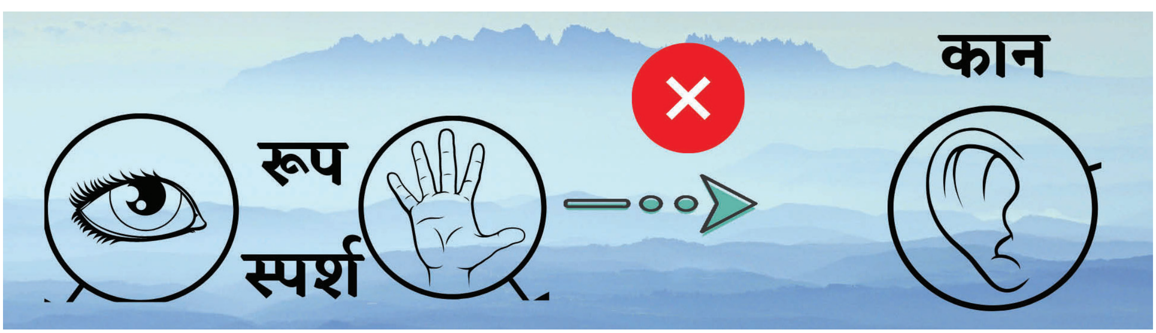


कचौड़ी कान में डालेंगे और हम पूछे बताओ कचौड़ी कैसी है? यह कान का विषय नहीं हैं। शब्द ही काम का विषय है बस तो यह नियत विषय हो गया और अभिमुख होना चाहिए। शब्द मतलब कान में आना चाहिए। अगर कान के इधर-उधर गया तो फिर हमें कान लगाना पड़ता है, भैया! फिर से बोलना। सुनने के लिए कई बार ऐसे कान लगाते हैं न? जब कान से ढंग से सुनाई नहीं पड़ता तब समझ में आता है कि हाँ! अब यह कान को उस शब्द के अभिमुख बना रहे हैं। जैसे सास, बहू की बात सुनने के लिए कान लगाती हैं न! तब समझ में आता है कि यह शब्द कान के अभिमुख नहीं था इसलिए वह उसके अभिमुख करने के लिए कान को

अब उसके पास तक ले जाती है। अभिमुख का मतलब उससे, उसके direct होना चाहिए और नियत का मतलब वही चीज उसके लिए नियत हो। इस तरह का ज्ञान ही सब मतिज्ञान कहलाता है मतलब हमारी पाँचों इन्द्रियाँ नियत विषय का ज्ञान करती हैं और अभिमुख होगा उसी विषय का ज्ञान करती हैं। हवा कहीं भी चले, जब यहाँ चलेगी, यहाँ पर लगेगी तो हमें हवा का ज्ञान होगा, नहीं तो कहीं भी चलती रहे, अभिमुख हो गई। हवा का ज्ञान किससे होगा? स्पर्शन इन्द्रिय से होगा तो उसका नियत विषय हो गया। अब यूँ नहीं कहना कि हवा चलती है, तो कान में भी लगती है, कौन-सी हवा का ज्ञान होता है। कान में भी जो स्पर्शन इन्द्रिय है वह इस स्पर्शन इन्द्रिय में ही कान से हवा का ज्ञान होगा। कान जो जहाँ इन्द्रिय है उससे तो केवल हवा का शब्द सुनाई पड़ेगा। हाँ!, सनसनाहट-सी हवा चल रही है। इस तरह से यह सब मतिज्ञान के ही पर्यायवाची नाम हैं। ध्यान रहेगा? कितने नाम हैं? पर्यायवाची है कौन-कौन से? मतिः, स्मृतिः, संज्ञाः, चिन्ताः और अभिनिबोध।

## आचार्य विद्यानन्दी महाराज ने सारे परोक्ष ज्ञानों को मतिज्ञान की इन पर्यायवाचीयों में गर्भित कर लिया।

अब एक विशिष्ट बात आपको और बता देते हैं जो थोड़ी स्वाध्यायी लोग होते हैं, वे भी सुनते रहते हैं इसलिए आपकी चिन्ता करें तो ज्यादा बताने की जरूरत नहीं है। दुनिया में सब लोग सुन रहे हैं इसलिए बता दे रहा हूँ कि इस सूत्र में जो टीकाकार हुए हैं, व्याख्याकार, उनमें सबसे पहले हुए आचार्य पूज्यपाद महाराज जिन्होंने सर्वार्थसिद्धि ग्रन्थ लिखा। पहले हुए आचार्य पूज्यपाद महाराज जिन्होंने सर्वार्थसिद्धि ग्रन्थ लिखा। उसके बाद हुए आचार्य अकलंक देव जिन्होंने तत्त्वार्थवार्तिक जिसे राजवार्तिक कहते हैं, वह ग्रन्थ लिखा। इन दोनों आचार्यों ने टीका में इस सूत्र का इतना ही अर्थ किया है कि हमें इस सूत्र के इन सभी शब्दों को पर्यायवाची शब्द

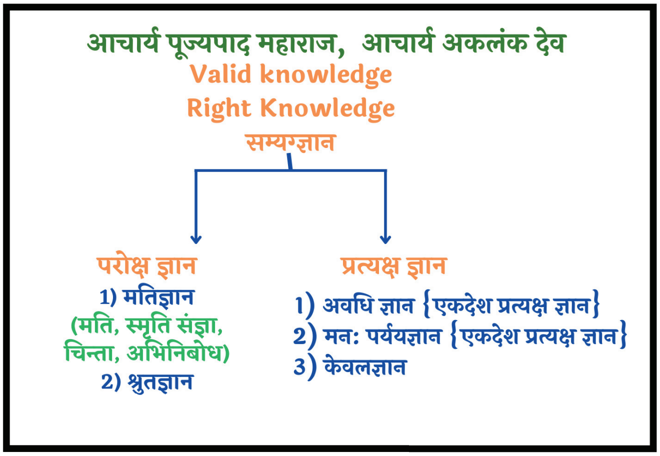

ही मानना है। लेकिन एक बहुत तार्किक आचार्य हुए, 'आचार्य विद्यानन्दी महाराज' आठवीं शताब्दी के, उन्होंने एक बहुत अच्छा उनका चिन्तन भी कह सकते हैं।

उन्होंने इसमें एक अच्छी चीज यह बताई कि यह तो हो गया मतिज्ञान। स्मृति हो गई स्मरण ज्ञान, यह भी ठीक है।आगे जो यह संज्ञा है यह कहलाता है- प्रत्यभिज्ञान। इसको उन्होंने क्या नाम दिया? प्रत्यभिज्ञान क्योंकि परोक्ष ज्ञान के न्याय में भेद बताए जाते हैं। संज्ञा का मतलब क्या हो गया? प्रत्यभिज्ञान। अतः यह सब परोक्ष ज्ञान में माने गए हैं। मतलब चिन्ता, स्मरण, प्रत्यभिज्ञान, तर्क तो यह आगे जो आता -है चिन्तन, चिन्ता इसको उन्होंने तर्क ज्ञान में लिया है। जिसको बोलते हैं- ऊहापोह करना, तर्कज्ञान यह चिन्तन उसका नाम है, चिन्ता, ऐसा उन्होंने माना। फिर यह अभिनिबोधि ज्ञान इसको उन्होंने अनुमान ज्ञान माना क्योंकि सभी परोक्ष ज्ञान में आते हैं तो इस तरह से उन्होंने सारे परोक्ष ज्ञानों को मतिज्ञान की इन पर्यायवाची शब्दों में गर्भित कर लिया। यह आचार्य विद्यानन्दी महाराज का एक बहुत बड़ा चिन्तन है और फिर इस चिन्तन को भी आगे के टीकाकारों ने स्वीकार किया है और यह भी बहुत अच्छा उन्होंने एक व्याख्यान दिया है। इस तरह से हम आचार्यों के अलग-अलग जो अभिप्राय है उनको भी जानते रहें और इस तरह से हम इन सूत्रों का भी अर्थ समझते रहें।

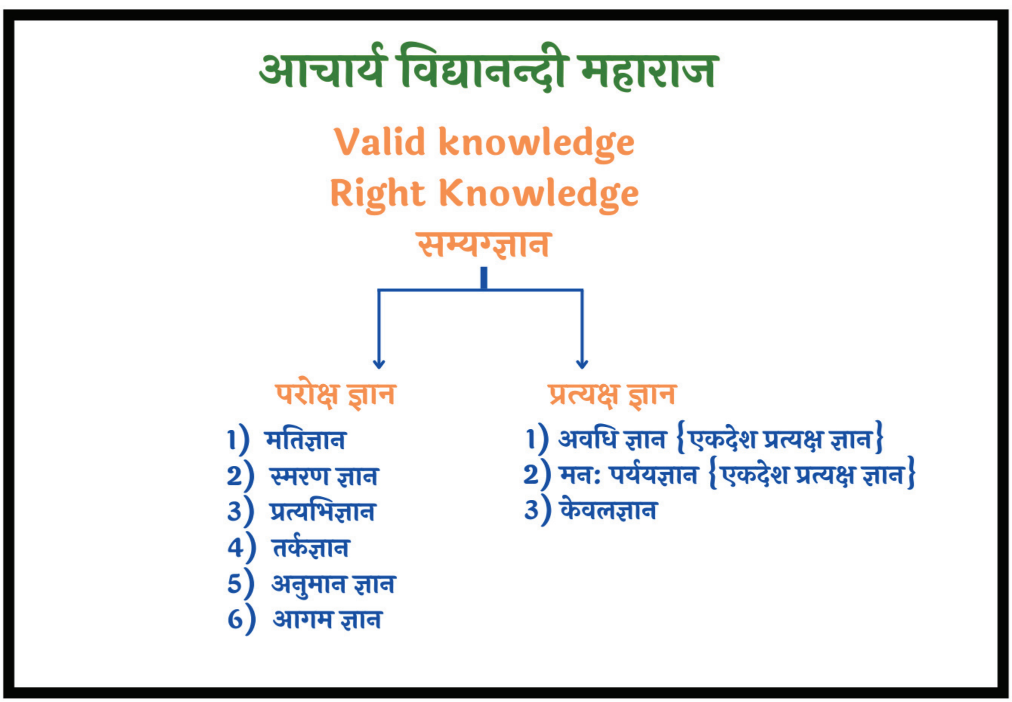

# सारांश

1. हमने मति श्रुतादि पाँच तरह के ज्ञानों के बारे में जाना
2. आज हमने जाना कि valid knowledge यानि प्रमाण क्या हैं?
3. सूत्र 10 "तत्प्रमाणे" के अनुसार - ज्ञान ही प्रमाण है
4. तत् अर्थात् 'वह ज्ञान' यानी मति , श्रुत, अवधि , मनः पर्यय, केवलज्ञान पाँचों ही ज्ञान प्रमाण हैं
5. प्रामाणिक चीज क्या है? knowledge ही प्रमाण है। मतलब ज्ञान ही हमारे लिए प्रमाण का काम करता है।
6. अन्य दर्शन जैसे वैशेषिक, मीमांसक आदि अलग-अलग चीजों को प्रमाण मानते हैं – जैसे इन्द्रियाँ, योगी प्रत्यक्ष आदि
7. चूँकि इन्द्रिय-ज्ञान की अपनी सीमा होती है और जो वस्तुयें इन्द्रिय गम्य नहीं हैं जैसे परमाणु वे भी exist करती हैं इसलिए जैन दर्शन में इन्द्रिय ज्ञान को प्रामाणिक नहीं माना है
8. जैनों ने आत्मा को सर्वज्ञ माना है और आत्मा में सर्वज्ञ की सिद्धि की है।
9. प्रत्यक्ष ज्ञान केवलज्ञान ही प्रामाणिकता की कोटि में आता है, यही सबसे बड़ा प्रमाण है
10. केवलज्ञान से ही हमारे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान में प्रामाणिकता आती है

• कि जो सर्वज्ञ ने केवलज्ञान में जैसा जाना और कहा हमने वैसा अपने ज्ञान में मान लिया

11. केवलज्ञान को प्रमाण मानने से इन्द्रिय ज्ञान और मन भी प्रामाणिक ज्ञान में आ जाते हैं
12. यदि हम केवलज्ञान में जो बताया है उसके विरुद्ध मानेंगे तो हमारा ज्ञान प्रमाण नहीं होगा
13. इसके लिए हमने न्याय का एक सूत्र पढ़ा - सम्यग्ज्ञानम् प्रमाणम् अर्थात जो ज्ञान सम्यक् है वही प्रमाण है
14. इसलिए मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान को आशय यहाँ सम्यक् मतिज्ञान और सम्यक् श्रुतज्ञान समझना चाहिए
15. एकेन्द्रिय, दो-तीन-चार इन्द्रिय, असंज्ञी पशु-पक्षियों का मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान मिथ्या ज्ञान की श्रेणी में आता है ।
16. षटखण्डागम सूत्रों में मतिज्ञान को अभिनिबोधिक ज्ञान की संज्ञा दी है।
17. आगम प्रमाण मानाने वाले मीमांसक केवल वेदों को प्रमाण मानते हैं क्योंकि वेद सनातन हैं
18. लेकिन जैनाचार्य कहते हैं कर्ता रहित आगम प्रमाण नहीं होता।
19. हमने जाना हमारे आगम के कर्ता (अर्थकर्ता) सर्वज्ञ अरिहन्त भगवान हैं
20. अरिहंत हमें पदार्थों का ज्ञान कराने वाले मूलभूत हैं अतः उनकी सर्वज्ञता से कहा हुआ ही प्रामाणिक है
21. श्री तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थ, जिसका हम स्वाध्याय कर रहे हैं, के सूत्र भी प्रमाणिक हैं

22. क्योंकि गणधर आचार्यों की परम्परा में गृद्ध पिच्छ आचार्य अंतिम आचार्य माने जाते हैं
23. इन छोटे-छोटे सूत्र में बहुत गहरे अर्थ भरे हुए हैं
24. आचार्य पूज्यपाद, आचार्य अकलंक, आचार्य विद्यानन्दी महाराज आदि तार्किक आचार्यों ने इन सूत्रों की टीका के माध्यम से अन्य मत-मतान्तरों का खंडन करते हुए इनकी प्रमाणिकता सिद्ध की है
25. हमने जाना कि जिनके अन्दर सम्यग्दर्शन है, मिथ्यात्व का अभाव है और सम्यग्ज्ञान की जिनके अन्दर धारणा है, उन्हीं का ज्ञान प्रामाणिक माना जाता है
26. कक्षा के अंत में हमने सूत्र 11 - "आद्ये परोक्षम्" में परोक्ष ज्ञान के बारे में जाना
- आदि के दो ज्ञान यानि मति और श्रुत परोक्ष ज्ञान हैं
27. हमने सूत्र ११ "आद्ये परोक्ष" के माध्यम जाना कि
28. पाँच में से पहले के दो ज्ञान - मतिज्ञान और श्रुतज्ञान परोक्ष होते हैं
29. दुनिया में इन सब इन्दिय और मन गम्य ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान मानते हैं
30. किन्तु जैन दर्शन सत्य की अवधारणा से चलता है। जो सत्य है, वह सत्य ही रहेगा।
31.अतः हमारा ज्ञान परोक्ष है, प्रत्यक्ष नहीं
32. इन्द्रिय और मन के ज्ञान से अलग और भी ज्ञान होते हैं,
33. ये तो पर रूप है
34. हमने समझा कि जो ज्ञान के साधन हमारे शरीर से जुड़े हुए हैं जैसे इन्द्रियाँ और मन उन्हें कहते हैं उपात्त साधन
35. और जो ज्ञान के साधन हमसे दूर हैं जैसे पुस्तक, light, अध्यापक आदि उन्हें अनुपात्त साधन कहते हैं
36. इसी तरह उपात्त परिग्रह में अपना शरीर आता है और अनुपात्त परिग्रह में धन-वैभव आदि
37. जब कर्मों के कारण से आत्मा असमर्थ होती है तो वह आत्मा इन्द्रियों और मन का सहारा लेती है
38. सूत्र 12 - प्रत्यक्षमन्यत् में हमने जाना कि 'अन्य' ज्ञान अर्थात शेष तीन ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान होते हैं
39. अतः अवधिज्ञान, मनःपर्यय ज्ञान और केवलज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान हैं क्योंकि ये बिना इन्द्रिय, मन के आलम्बन के होते हैं
40. सही ही है - "अक्षं-अक्षं प्रतिवर्तते इति प्रत्यक्षं" अक्ष मतलब आत्मा, जो आत्मा से निकलता है, आत्मा में रहता है या आत्मा के प्रति जिसका वर्तन होता है, उसको प्रत्यक्ष कहते हैं।
41. यहाँ अन्य लोग अक्ष का अर्थ इन्द्रियाँ मानते हैं
42. अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान एक देश प्रत्यक्ष यानि थोड़े प्रत्यक्ष होते हैं - किसी limit में, limited वस्तुओं को जानते हैं

43. ये आत्मा से direct जानेंगे, इन्हें इन्द्रिय और मन की सहायता नहीं लेनी पड़ेगी
44. वर्तमान में किसी को कोई भी प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं होता है
45. केवलज्ञान पूर्ण ज्ञान है, इसमें कुछ भी छिपा नहीं है
46. अगले सूत्र में हमने मति ज्ञान के सब पर्यायवाची नाम जाने
- मतिः, स्मृतिः संज्ञा:, चिन्ता: और अभिनिबोध

47. मति- हमारी बुद्धि है
48. मनन करने का नाम बुद्धि है।
49. स्मृति- हमारे स्मरण शक्ति है
50. जिसका मतिज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम अधिक होगा:
- वह अधिक मनन कर पाएगा
- और उसकी स्मृति भी अधिक होगी

51. संज्ञा – जानने की इच्छा को संज्ञा कहते हैं
52. यह आहार, भयादि संज्ञाओं से भिन्न है
53. चिन्ता– जो हमने स्मरण किया है उसी का बार-बार चिन्तन करना।
54. मतिज्ञान का क्षयोपशम अधिक होगा तो चिन्तन भी अच्छा होगा।
55. अभिनिबोध का अर्थ है
- अभि यानि अभिमुख होना
- नि यानि नियत, नियत विषय
- और बोध यानि ज्ञान
- अर्थात अभिमुख होकर जो नियत वस्तु का ज्ञान होता है, वह अभिनिबोधक ज्ञान है

56. हमारी पाँचों ही इन्द्रियाँ किसी पदार्थ के प्रति अभिमुख होकर ही काम करती है
57. आचार्य पूज्यपाद, आचार्य अकलंक देव ने सूत्र के सभी शब्दों को मतिज्ञान का सिर्फ पर्यायवाची माना है
58. वहीं आचार्य विद्यानंदी महाराज ने अपने चिन्तंत में परोक्ष ज्ञान के सभी भेदों को मतिज्ञान के पर्यायवाची शब्दों में गर्भित किया है
- स्मरणज्ञान स्मृति है
- प्रत्यभिज्ञान संज्ञा है
- तर्कज्ञान या ऊहापोह करना चिन्ता है
- और अनुमानज्ञान अभिनिबोधि है

# अभ्यास प्रश्न पत्र

प्रश्न 1- अन्तिम सूत्रकार कौन माने जाते हैं?
1. गृद्ध पिच्छ आचार्य
2. आचार्य माघनन्दि
3. आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी

प्रश्न 2- '___ ज्ञानों का समूह प्रमाण है।' रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये।
1. दोनों
2. पाँचों
3. तीनों

प्रश्न 3- मतिज्ञान, श्रुतज्ञान असंज्ञियों में भी होते हैं।
1. गलत
2. सही

प्रश्न 4-सबसे ज्यादा प्रामाणिक क्या है?
1. दर्शन
2. इन्द्रिय ज्ञान
3. केवल ज्ञान

प्रश्न 6- षट्खण्डागम-सूत्रों में मतिज्ञान को कौनसी संज्ञा दी गई है?
1. निबोधिक-ज्ञान
2. अभिनिबोधिक-ज्ञान
3. सुइ णाणं

प्रश्न 7- वे कौन हैं जो हमें पदार्थों का ज्ञान कराने वाले सबसे मूलभूत हैं?

1. माता-पिता
2. शिक्षक
3. अर्थकर्ता

प्रश्न 8- वेदों को मानने वाले क्या कहलाते हैं?

1. सन्निकर्ष
2. वेदांश
3. मीमांसक

प्रश्न 9- कौनसा मतिज्ञान प्रामाणिकता की कोटि में आता है ?

1. प्रत्येक होने वाला
2. सामान्य परिस्थिति में होने वाला
3. सम्यग्दर्शन के साथ होने वाला

प्रश्न 10- 'तत् प्रमाणे' इस सूत्र में तत् क्या है?

1. विशेषण
2. विशेष्य
3. सर्वनाम

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

प्रश्न 11- ज्ञान के उपात्त साधन कौनसे होते हैं?
1. जो हमारे शरीर से जुड़े हुए हैं
2. जो हमारे शरीर से दूर हैं
3. जिनके लिए उपाय करना पड़ता है

प्रश्न 12- सिखाने वाला कोई गुरु किस प्रकार का साधन है?
1. अनुपात्त
2. उपात्त
3. प्रत्यक्ष

प्रश्न 13- निम्न में से प्रत्यक्ष ज्ञान पहचानिए-
1. श्रुतज्ञान
2. मतिज्ञान
3. केवल ज्ञान

प्रश्न 14- कान का विषय नियत क्या है?
1. शब्द
2. स्पर्श
3. रूप

प्रश्न 15- तत्त्वार्थवार्तिक ग्रंथ के रचयिता कौन हैं?
1. आचार्य पूज्यपाद महाराज
2. आचार्य अकलंक देव
3. आचार्य विद्यानन्दी महाराज

प्रश्न 16- निम्न में से एकदेश प्रत्यक्ष ज्ञान कौनसा है?
1. मतिज्ञान
2. अवधि ज्ञान
3. केवलज्ञान

प्रश्न 17- वर्तमान में प्रत्यक्ष ज्ञान होते हैं।
1. सही
2. गलत

प्रश्न 18- अवधिज्ञान किससे होता है?
1. आत्मा से
2. मन से
3. इंद्रियों से

प्रश्न 19 - किसकी स्मृति लम्बे समय की, लम्बे समय तक रहेगी, और उसमें कठिन से कठिन विषय भी रहेगा?
1. जिसका अंतराय कर्म का क्षयोपशम अधिक होगा
2. जिसका श्रुतज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम अधिक होगा
3. जिसका मतिज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम अधिक होगा

प्रश्न 20- 'अभिमुख होकर के जो नियत वस्तु का ज्ञान होता है उसको बोलते हैं _______ ज्ञान।' रिक्त स्थान की पूर्ति करिए-
1. अभिनिबोधक
2. मन:पर्यय
3. अवधि

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

# अभ्यास प्रश्न पत्र 'विषयक'

प्रश्न - 1 अर्थ कर्ता का क्या अर्थ है?

प्रश्न - 2 पहले ज्ञान प्रमाण है या पहले आगम प्रमाण है?

प्रश्न - 3 परोक्ष ज्ञान और प्रत्यक्ष ज्ञान में क्या अंतर है?

प्रश्न - 4 उपात्य साधन और अनुपात्य साधन में क्या अंतर है?

प्रश्न - 5 अभिनिबोधक ज्ञान का अर्थ क्या है?

प्रश्न - 6 मतिज्ञान के कितने पर्यायवाची नाम हैं। और कौन कौन से हैं नाम बताएँ।

प्रश्न - 7 मति ज्ञान और श्रुतज्ञान प्रामाणिक क्यों बताये गये हैं ?

प्रश्न - 8 आचार्य विद्यानंदी जी ने-
सारे परोक्ष ज्ञान मतिज्ञान के पर्यायवाची शब्दों में गर्भित किये हैं उनके नाम match करके लिखें

प्रश्न - 9 एक देश प्रत्यक्ष क्या होता है?

प्रश्न - 10 ."तत् प्रमाणे" सूत्र में "तत्" का संबंध किससे जुड़ा है?

# प्रवचन: 06

## मतिज्ञान की प्राप्ति के लिए क्या निमित्त है?

तदिन्द्रियानिन्द्रिय-निमित्तम्।।1.14।।

तत् + इन्द्रिय + अनिन्द्रिय -निमित्तम्

पंचेन्द्रिय मन द्वार छह, के द्वारा जो ज्ञान।
मति ज्ञान होता सभी, विधि-बन्धों के जान॥14॥

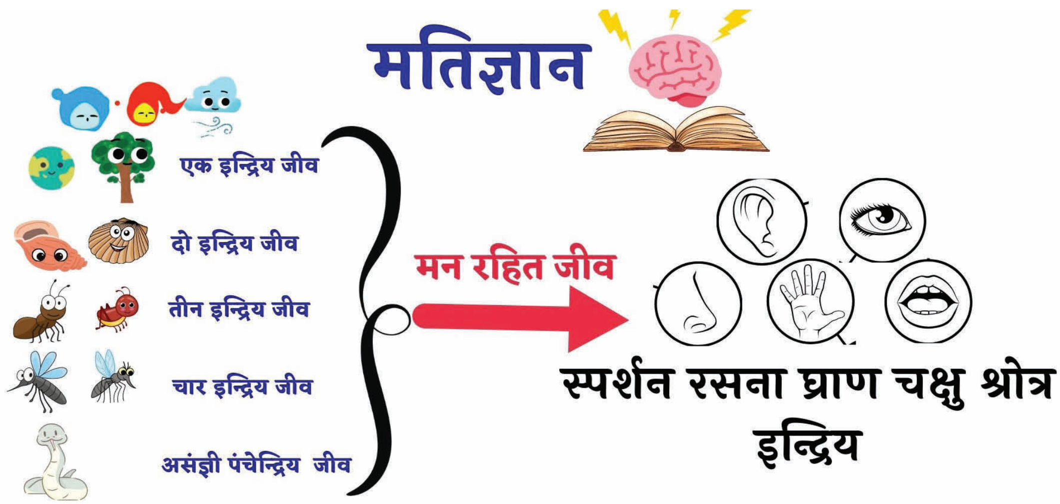

यहाँ बताया जा रहा है कि जिस मतिज्ञान की चर्चा हम करते आ रहे हैं, जिस मतिज्ञान को हमने परोक्ष ज्ञान के रूप में स्वीकार किया है, जो मतिज्ञान मति, स्मृति, संज्ञा आदि पर्यायवाची नामों को धारण करता है, वह मतिज्ञान किससे उत्पन्न होता है? उसके लिए यह सूत्र आचार्य महाराज ने हमें बना कर दिया है। 'तत्' मतलब वह 'मतिज्ञान'; निमित्त उसके लिए क्या बनता है? 'निमित्त' मतलब होता है- हेतु, कारण।उस मतिज्ञान की प्राप्ति के लिए क्या निमित्त है? क्या हेतु हैं? तब आचार्य कहते हैं- 'इन्द्रिय' और 'अनिंद्रिय' इन दोनों के निमित्त से वह 'मतिज्ञान' होता है।इन्द्रियाँ आप जानते ही हैं- पाँच होती हैं और जिस जीव के जो इन्द्रिय होगी वही उस

इन्द्रिय का स्वामी कहलाएगा। इन्द्रिय के निमित्त से भी मतिज्ञान होता है और अनिन्द्रिय

मतलब होता है- मन। उस मन के निमित्त से भी मतिज्ञान होता है। जिन जीवों में मन नहीं होता तो अब आप समझ सकते हैं कि उनमें भी मतिज्ञान होता है और वह मतिज्ञान उनकी उस इन्द्रिय के कारण से ही होता है।

- एक इन्द्रिय जीव है तो उसके केवल स्पर्शन इन्द्रिय सम्बन्धी ही मतिज्ञान होगा।
- दो इन्द्रिय जीव है तो स्पर्शन और रसना इन्द्रिय सम्बन्धी मतिज्ञान होगा।
- तीन इन्द्रिय जीव है तो स्पर्शन, रसना और घ्राण इन्द्रिय सम्बन्धी मतिज्ञान होगा।
- चार इन्द्रिय जीव है तो स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु सम्बन्धी मतिज्ञान होगा।
- असंज्ञी पंचेन्द्रिय है तो स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोतृ इन पाँच इन्द्रिय सम्बन्धी मतिज्ञान हुआ। इस प्रकार उनको इन्द्रियों से मतिज्ञान होगा।
- जो संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव हैं, उन्हें इन्द्रिय और मन दोनों के निमित्त से मतिज्ञान होता है।

## आत्मा के लिए पदार्थ का ज्ञान कराने में इन्द्रियाँ ही निमित्त साधन हैं-

इन्द्रिय' शब्द की उत्पत्ति, व्युत्पत्ति करते हुए टीकाकार आचार्यों ने अच्छी व्याख्याएँ की हैं कि 'इन्द्र' मतलब होता है- आत्मा। 'इन्द्रिय' शब्द कैसे बना? 'इन्द्र' माना गया आत्मा। 'इन्द्र' क्या है? आत्मा। उस आत्मा में ज्ञान है लेकिन वह आत्मा कर्म के कारण से, कर्म के बन्ध के कारण से यूँ कहे कि कर्म में इतना क्षयोपशम नहीं है, उस कारण से, वह आत्मा, ज्ञान का क्षयोपशम तो अपने अन्दर कर्म के क्षयोपशम से ला सकता है लेकिन उसे उस ज्ञान का प्रयोग करने के लिए, ज्ञान से पदार्थों को जानने के लिए कुछ और साधनों की आवश्यकता पड़ती है। समझ में आया? 'इन्द्र' मतलब क्या हो गया? आत्मा। उस आत्मा को कर्म का क्षयोपशम होने पर भी,

ज्ञान का क्षयोपशम होने पर भी कुछ और बाह्य साधनों की आवश्यकता पड़ती है। जिनका आलम्बन लेने पर ही वह आत्मा कोई भी बाहरी पदार्थों को जान पाता है। वह साधन क्या हैं?

इन्द्रियाँ उसके लिए साधन बनती हैं। यानि आत्मा अपने आप में समर्थ होते हुए भी बिना इन्द्रियों के पदार्थों को नहीं जान सकता इसलिए इसे इन्द्रिय कहा जाता है। सुन रहे हैं? आत्मा अपना ज्ञान रखते हुए भी, अपने ज्ञान का क्षयोपशम उसका हो भी गया तो भी जब तक इन्द्रियाँ नहीं होगी तब तक वह पदार्थों को ग्रहण नहीं कर सकेगा। यह आत्मा के अन्दर इन्द्रियाँ साधन बन जाती हैं। आत्मा के लिए पदार्थ का ज्ञान कराने के लिए वह कारण बन जाती हैं। इसलिए आत्मा को जानने के लिए इन्द्रियों को निमित्त कहा गया। आत्मा के जानने की क्रिया में इन्द्रियाँ क्या हो गई? निमित्त हो गई। अथवा दूसरी बात कही गई कि जो बड़ा गूढ़ अर्थ होता है, वह इन्द्रियों के द्वारा ही जानने में आता है। बिना इन्द्रिय की सहायता के आत्मा नहीं जान पाती है। इन्द्रियाँ किसी भी विषय को जो उनका अपना विषय है, उस गूढ़ विषय को भी वह इन्द्रियाँ जान लेती हैं। लेकिन आत्मा जब तक इन्द्रियों की सहायता नहीं लेता तब तक वह आत्मा स्वयं नहीं जान पाता। मतिज्ञान वाले संसारी दशा की आत्मा की बात कर रहे हैं।

## आत्मा के अस्तित्व को जानने में इन्द्रियाँ साधन है

जो इन्द्रियों हैं, वे इन्द्रियाँ अपने आप में साधन हैं। इन्द्रियों के माध्यम से भी आत्मा के अस्तित्व का पता चलता है। आत्मा तो सूक्ष्म है, आत्मा का ज्ञान कैसे होगा? यह आत्मा है, यह जीव है, यह ज्ञान कैसे होगा? अगर इन्द्रियाँ उसके लिए सहयोगी न बने तो उस आत्मा के अस्तित्व

का भी ज्ञान नहीं हो सकता। इन्द्रियाँ ही उस सूक्ष्म आत्मा का ज्ञान कराती हैं। इसलिए ये इन्द्रियाँ बड़ी उपकारी है। आत्मा के लिए इन्द्रियाँ उपकारी हैं क्योंकि इन्द्रियों से ही आत्मा का ज्ञान हो रहा है और इन्द्रियों से ही पदार्थ का ज्ञान हो रहा है। कैसे जानने में आएगा कि यह जीव है?

यह आत्मा है? अगर हम उसकी इस इन्द्रियाँ जानेंगे कि यह चार इन्द्रिय वाला जीव है, तो यह चार इन्द्रिय वाला इसके अन्दर एक आत्मा है जिसके पास केवल चार इन्द्रियाँ हैं तो इन्द्रियों ने बता दिया कि यह जीव है, यह आत्मा है। कोई भी हमने मक्खी देखी, मच्छर देखा तो उसकी इन्द्रियाँ देखकर कि यह तीन इन्द्रिय मक्खी है, चार इन्द्रिय मक्खी है, चार इन्द्रिय मच्छर है। देखते ही हमने उसको बता दिया चार इन्द्रिय तो चार इन्द्रिय कहते हुए भी हमारी दृष्टि कहाँ जा रही है? आत्मा के ऊपर। इन्द्रियाँ बता रही हैं कि चार इन्द्रिय जीव है। अतः आत्मा तो सूक्ष्म है लेकिन इन्द्रियों के माध्यम से वह जीव समझ में आने लग जाता है, तो हम उसकी रक्षा भी कर पाते हैं। यह भी इन्द्रिय संयम कहलाता है, प्राणी संयम कहलाता है। प्राणी संयम का पालन भी इन्द्रियों के ज्ञान से ही सम्भव है। इसलिए आत्मा के लिए इन्द्रियाँ उपकारी है।

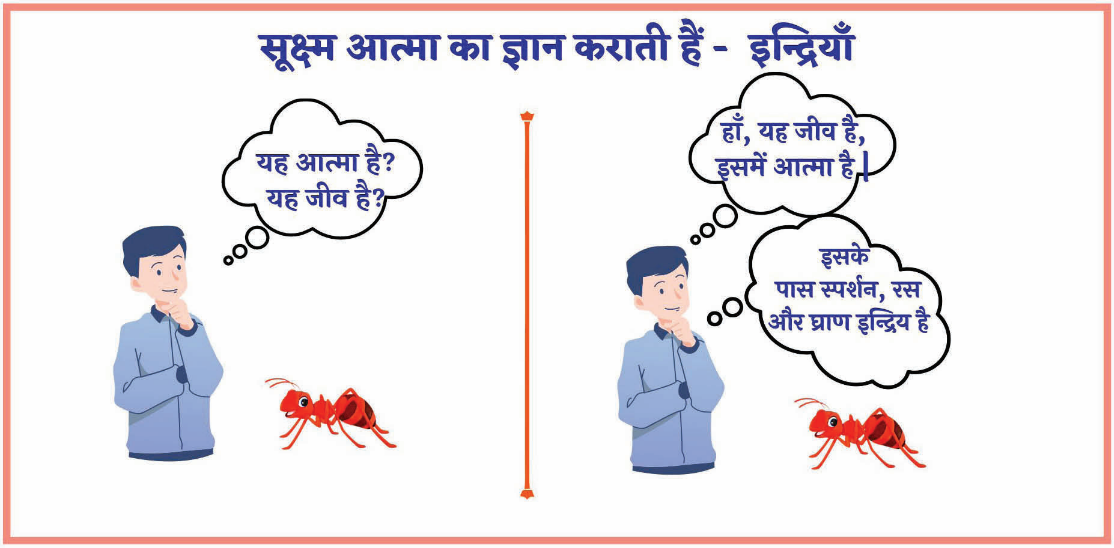


## इन्द्रियाँ, आत्मा के लिए उपकारी हैं

पहले भी आपको बताया था पुद्गल, आत्मा का उपकारी है। अजीव पदार्थ जीव का उपकारी है। इसलिए जीव के पास में अजीव रखा है। संसारी दशा में हमें ऐसा लगता है जब हम जान

जाते हैं, कर्मों ने हमें घेर रखा है। आठ कर्म बड़े दुष्ट हैं। समझ आ रहा है? 'ये मिल सब ओर घनेरे' क्या बोलते हो? 'हाल कियो बेहाल, सुनियो साहेब मेरे' तो ये सब तो तब होता है जब हम कुछ जान जाते हैं कि आठ कर्मों ने आत्मा को घेर रखा है। आठ कर्मों ने आत्मा को, आत्मा की शक्ति को बिल्कुल दबा रखा है। लेकिन देखा जाए तो यह ज्ञान भी आपको कर्म से ही आया, कर्म के क्षयोपशम से ही आया। यह ज्ञान भी आने में शरीर, इन्द्रियां ही उपकारी हैं। अगर आपको पंचेन्द्रिय कर्म का क्षयोपशम नहीं होगा, मन का क्षयोपशम नहीं होगा, मन नहीं होगा तो आपको यह ज्ञान भी नहीं आ पाएगा। कुल मिला करके इन्द्रियों को उपकारी के रूप में भी देखा गया है। लेकिन जब हम इन्द्रियों की प्रवृत्ति विषयों की ओर देखते हैं तो इन्द्रियों को रोकने के लिए संयम की बात की गई। अतः दोनों तरह से हमने जाना है कि आत्मा के लिए इन्द्रियाँ उपकारी भी हैं और आत्मा के लिए अगर असंयम भाव उत्पन्न कराती हैं तो वह भी इन्द्रियाँ कराती हैं, इसलिए अपकारी भी हैं लेकिन आत्मा का ज्ञान कराने में इन्द्रिय और मन की बहुत बड़ी भूमिका है। यह तो हो गई इन्द्रिय की बात।

## इन्द्रिय, अनिन्द्रिय और अतिन्द्रिय में अन्तर है

अब आता है- अनिन्द्रिय। 'अनिन्द्रिय' मतलब जो इन्द्रिय नहीं है, उसको अनिन्द्रिय कहते हैं, ऐसा नहीं समझना। मतलब कि इन्द्रिय होते हुए भी वह 'ईषत्' इन्द्रिय है। मतलब कुछ इन्द्रिय जैसा काम करता इसलिए, उसको अनिन्द्रिय कहा गया है। इन्द्रिय का अभाव नहीं समझना। किन्तु वह 'ईषत्' का मतलब होता है थोड़ा, कुछ उसमें इन्द्रिय जैसा ही भाव है, ज्ञान का वैसा ही उसके अन्दर भाव है। लेकिन वह इन्द्रियों से कुछ अलग है, इन्द्रिय जैसा ही है लेकिन थोड़ा इन्द्रिय जैसा है इसलिए उसको अनिन्द्रिय कहा जाता है। मन को क्या बोलते हैं? अनिन्द्रिय, अतिन्द्रिय नहीं बोलते हैं।

तीन चीजें होती हैं-
1. इन्द्रिय- इन्द्रिय मतलब इन्द्रिय सम्बन्धी हो गया।
2. अनिन्द्रय- अनिन्द्रिय मतलब मन सम्बन्धी हो गया।
3. अतिन्द्रिय- अतिन्द्रिय जो इन्द्रियों से परे हैं,इन्द्रियों के बिल्कुल अतीत है।

उसको क्या बोलेंगे? अतिन्द्रिय। अतिन्द्रिय अलग चीज हो गई और अनिन्द्रिय अलग चीज हो गई। अनिन्द्रिय में तो मन आ गया, अतिन्द्रिय में ऐसी दशा जो इन्द्रियों से परे दशा है। आत्मा की दशा को अतिन्द्रिय दशा में ले जाया जाएगा। अवधिज्ञान वगैरह ये क्या कहलाएँगे? अतिन्द्रिय ज्ञान कहलाएँगे, अनिन्द्रिय ज्ञान नहीं कहलाएँगे। थोड़ा-सा हम शब्दों पर भी ध्यान देकर के सावधानी से बोलना भी सीखें। अनिन्द्रिय की ज्ञान की बात आएगी तो किसका, कौन-सा ज्ञान? मन का ज्ञान। अतिन्द्रिय ज्ञान आ गया तो इन्द्रिय और मन से परे, जो ज्ञान हो गया- प्रत्यक्ष ज्ञान, वह अतिन्द्रिय ज्ञान में चला जाएगा।

## मन और इन्द्रियों में अन्तर

SCAN TO WATCH

अनिन्द्रिय का मतलब हो गया मन, अब मन को अनिन्द्रिय भी कहते हैं और मन को अन्त:करण भी कहते हैं। अन्त:करण मतलब अन्तरंग में ही यह इन्द्रिय रहती है। भीतर रहती है, दिखती नहीं है। जैसे- हमें नाक बाहर दिख जाती है, आँख बाहर दिख जाती है, कान बाहर दिख जाते हैं वैसे मन कभी भी दिखता नहीं है। इसलिए इसका दूसरा नाम क्या है? अन्त:करण। दूसरी बात यह भी है कि इन्द्रियों की तरह मन की कोई एक special रचना भी नहीं है। उसका कोई एक स्थान भी fix नहीं है और न ही उसके लिए यह कहा जा सकेगा कि आगे भी अगले time पर यह इसी जगह रहेगा। देश और काल यह मन के लिए नियत नहीं है, इन्द्रियों के लिए नियत है। जैसे- इन्द्रियाँ नाक यहीं पर है, तो यहीं मिलेगी आपको, आज भी और कल भी। लेकिन मन कहाँ है? आज और कल कहाँ है, इसका कोई भरोसा नहीं है। न तो उसका कोई भी स्थान नियत है और न मन के लिए कोई भी समय नियत है। देश और काल ये मन के साथ नियत नहीं होते इसलिए मन को अनिन्द्रिय कहा जाता है। यह इन्द्रिय और मन के विषय में इतना जानकर के समझना कि ये तो हो गई बाहरी चीजें और भीतर होना चाहिए मति ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम।

## कर्मों का क्षयोपशम क्या है?

कर्मों के क्षयोपशम का मतलब होता है कि कर्मों की ऐसी कुछ स्थितियाँ बने, कर्मों की ऐसी दशा बने, जिसमें कि जो कुछ कर्म तो दब जाए और कुछ कर्म बिना फल दिए क्षय को प्राप्त

होते रहे। उसको बोलते हैं- क्षयोपशम की दशा। उस क्षयोपशम की दशा होने पर ही आत्मा

का ज्ञान प्रकट होता है। मतलब ज्ञान तो आत्मा में है लेकिन कर्मों का जब कुछ ऊपर-नीचे होकर के, कुछ दिखाई देगा तो आत्मा को कुछ जानने में आएगा। कर्म का क्षयोपशम। ऐसे समझो! मान लो आपकी कार है और आप कहीं बहुत दूर से चलाकर के लेकर आए। रास्ते में खूब धूल से उसका आगे का काँच बिल्कुल धूसरित हो गया, उस काँच पर बिल्कुल धूल पड़ गई। अब क्या है? आप अन्दर बैठे हो गाड़ी में, अब आपको उस काँच के होते हुए भी उसमें दिख नहीं रहा। समझ आ रहा है? अब आप क्या करोगे? कोई भी चीज से उसकी धूल को थोड़ा इधर करोगे, थोड़ा उधर करोगे। जब पूरा बिल्कुल clear साफ न भी हो तो भी थोड़ा धूल तो हटानी पड़ेगी। जो हम थोड़ी धूल हटा रहे हैं, फिर भी धूल लगी हुई है उसी को बोलते हैं- क्षयोपशम। थोड़ा तो दिखने लग जाए और हम उसको जितना-जितना साफ करते जाएँगे उतना-उतना और अच्छा ज्ञान में आने लग जाएगा। इसको बोलते

हैं- क्षयोपशम बढ़ता चला जाना। समझने के लिए एक उदाहरण है।

ऐसे ही धूल कभी-कभी आत्मा के ऊपर कर्मों की इतनी ज्यादा जम जाती है कि उसे एक स्पर्शन इन्द्रिय के अलावा और कुछ भी ज्ञान होने में नहीं आता। फिर धूल थोड़ी-सी और हटी कभी तो फिर रसना इन्द्रिय भी आ गई। फिर और धूल हटी तो घ्राण इन्द्रिय आ गई। ऐसे करते-करते जब यह आत्मा पर पड़े हुए ज्ञानावरणीय कर्म की धूल हटती है तब थोड़ा-सा आँखें खुलती हैं। तब कुछ सुनने की इच्छा बनती है और तब जाकर के कुछ दिमाग में कुछ थोड़ा-सा

बैठता है अन्यथा तो तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ा रहे हैं महाराज! तत्त्वार्थ सूत्र! ऐसा लगता है जैसे यहाँ पर current सा लगने वाला हो। यहाँ पर बैठ नहीं जाना, ऐसे बच्चे उठ कर भागते हैं कोई भी, बड़े भी। अरे! प्रवचन होते तो सुन लेते। तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ा रहे हैं मतलब कि हमारे दिमाग में किसी भी चीज को जानने की जिज्ञासा भी तब होगी जब हमारे भीतर कुछ ज्ञानावरणीय कर्म की धूलें शान्त हो जाए। कुछ कर्म का क्षयोपशम अच्छा होगा तभी कुछ इस तरह के ज्ञान में interest आता है। नहीं तो गप्प लगाते रहो, दिन भर बैठे रहोगे।

## नींद भी क्यों आती है?

तत्त्व की बात करोगे या कोई सिद्धान्त की बात करोगे तो नहीं भी नींद आए तो नींद आने लग जाती है। नींद भी क्यों आती है? क्योंकि हमारे ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम अधिक नहीं होने के कारण से कुछ अच्छा जानने की हमारे भीतर जिज्ञासा ही नहीं होती है। यह सब ज्ञानावरणीय कर्म के फल के स्वरूप ही होता है। इसलिए जब ज्ञान काम नहीं करता तो निद्रा भी वहीं पर बैठा है- निद्रा कर्म! वह एकदम से हावी हो जाता है तो वह काम करने लग जाता है। जो लोग ज्ञान में रहेंगे वह निद्रा से बच जाएँगे और जैसे ही आपके अन्दर ज्ञान की जागृति कम हुई, निद्रा आपके ऊपर हावी हो गई। निद्रा कहीं दूर नहीं है। जहाँ आत्मा में ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम है, उन्हीं उसी प्रदेशों पर आत्मा में निद्रा कर्म का उदय चल रहा है। बस! वह दांव लगाए बैठा रहता है। कब तुमने सोचा, हो गया, हो गया। कुछ झपकी ले लेता है, बगल में बैठे-बैठे। ज्ञान ही वह चीज है जो निद्रा को भगाता रहता है, भगाता रहता है।

## श्रुतज्ञान भी हमें मतिज्ञान से ही समझ में आएगा

इसलिए मतिज्ञान से भी हम बहुत कुछ जानकारी हासिल कर सकते हैं। अगर हमें यह 'शब्द' सुनने को मिलते हैं 'मतिज्ञान' तो यह शब्द भी हमें मतिज्ञान से ही समझ आएँगे। श्रुतज्ञान!

यह भी हमें मतिज्ञान से ही समझ में आएगा। सुनना पहले पड़ेगा, समझना तो फिर हमारे क्षयोपशम के ऊपर है। अगर क्षयोपशम हमारा है थोड़ा बहुत और हम उसको बढ़ाएँगे तो वह तभी बढ़ा पाएँगे जब हम इस तरह से पुरुषार्थ करेंगे। अपने आप इन शास्त्रों को जानने का क्षयोपशम अलग से नहीं आता। इसी तरह से जो क्षयोपशम प्राप्त है उसी को बढ़ाया जाता है, उसी को इसमें लगाया जाता है, तो यह हुआ मतिज्ञान कैसे होता है? यह अब आपको ध्यान रहेगा। किन-किन चीजों से होता है? इन्द्रिय और मन से होता है। जिनके पास में मन नहीं होता, उनको किससे होगा? इन्द्रियों से ही, केवल इन्द्रिय से होगा। जितनी इन्द्रियाँ होंगी उतनी इन्द्रियों से उसको मतिज्ञान होगा और जिनके पास में मन होगा तो उसको इन्द्रिय और मन दोनों से मतिज्ञान होगा। इस मतिज्ञान की ओर भी कुछ विशेषताएँ आगे बताई जा रही हैं-

**अवग्रहेहावायधारणाः ॥1.15॥**

**अवग्रह + ईहा + अवाय + धारणाः**

**अवाय ईहा धारणा, और अवग्रह भेद।**
**मतिज्ञान के हैं सभी, कहें विश्व विद्वेद ॥1.15॥**

यहाँ मतिज्ञान के चार भेद बताये जा रहे हैं। अब थोड़ा-सा हमें detail करके बताया जा रहा है। एक होता है- अवग्रह ज्ञान, दूसरा- ईहा ज्ञान, तीसरा होता है- अवाय ज्ञान और चौथा होता है- धारणा ज्ञान। चार चीजें हैं। हम कभी भी किसी भी पदार्थ को देखते, जानते हैं तो ये चारों ज्ञान भीतर काम करते हैं तभी हम कुछ जान पाते हैं। कौन-कौन सा? अवग्रह, ईहा, अवाय,

धारणा। अब इसको समझना कैसे काम करता है?

## अवग्रह ज्ञान किसे कहेंगे-

अवग्रह का मतलब होता है- किसी भी पदार्थ को जैसे ही हमने अपनी इन्द्रिय का विषय बनाया तो सबसे पहले जो ज्ञान होगा उस ज्ञान का नाम ही अवग्रह ज्ञान है। अब मतिज्ञान तो एक तरह से सामान्य हो गया। मतिज्ञान के ये चार भेद समझना। मतिज्ञान को ही और ज्यादा classified करके यहाँ पर समझाया जा रहा है। मतिज्ञान के चार भेद हैं- अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा। अब मतिज्ञान सामान्य हो गया। जैसे आपसे कहा- जैन। जैन कहने से सब आ गए। फिर आपसे कहा- जैन मिलन तो जैन मिलन तो केवल मुजफ्फरनगर में ही है। यह क्या हो गया? यह विशेष हो गया। एक भेद उसका ही हो गया जैन मिलन। किसका? जैनों का ही। फिर दूसरी जगह कहीं और कौन-सा पूरम? आबू पुरम, प्रेमपुरी, मुनीम कॉलोनी तो ये सब जैसे जैनों के ही भेद हैं। उसी तरीके से मतिज्ञान एक है उसके लिये चार भेद हैं। सबसे पहले जो मतिज्ञान होगा, किसी भी वस्तु का ज्ञान करने के लिए, उसका नाम क्या होगा? अवग्रह ज्ञान। अब मतिज्ञान तो पाँचों इन्द्रियों से होना है। कोई भी इन्द्रिय जब भी ज्ञान करेगी तो सबसे पहले उस इन्द्रिय के माध्यम से सबसे पहले जो ज्ञान होगा वह अवग्रह ज्ञान कहलाएगा। जैसे- आपको आँख से कोई वस्तु देखने में आई। आँख से जैसे-ही हमने वस्तु को देखा, किसी भी पदार्थ को देखा तो सबसे पहले जो आपके लिए पदार्थ का ज्ञान होगा उसका नाम क्या है? अवग्रह है। उस अवग्रह में क्या होता है?

उसमें आपको अभी सब कुछ clear नहीं होगा। उसमें आपको पहले उस पदार्थ को सामान्य रूप से देखने में आएगा। पहली दृष्टि में जिसे हम बोलते हैं वह आपको केवल सामान्य पदार्थ ही आपके ज्ञान में आएगा। जैसे कि आप अचानक से मान लो gate से अन्दर आए तो

एकदम से आपको दिखेगा कि यह लोग बैठे हैं। क्या दिखेगा? आप उस ज्ञान को पकड़ नहीं पाओगे। यह अवग्रह ज्ञान सूक्ष्म होता है। इसको आप जब बहुत सावधान होगे तब समझ पाओगे। पहली दृष्टि में आपको क्या लगेगा? ये सब लोग बैठे हैं। इतना तो clear हो गया कि यहाँ पर लोग बैठे हैं। मनुष्य बैठे हैं, पशु नहीं बैठे। एक पहली दृष्टि में तो इतना clear हो गया। अवग्रह ज्ञान में निर्णीत हो गया कि यहाँ पर मनुष्य बैठे हैं।

## ईहा ज्ञान क्या काम करता है?

अब ईहा ज्ञान क्या काम करता है? ईहा मतलब होता है जो हमने जाना, उसी का अब आगे का further step मतलब विशेष जानने की इच्छा; यह उस ज्ञान में काम करेंगे। जैसे ही आप gate से entry लेंगे, लोग तो बैठे हैं, महिलाएँ ज्यादा हैं कि पुरुष ज्यादा हैं? समझ आ रहा है? यह पूजा करने वाले लोग हैं या प्रवचन सुनने वाले लोग हैं। आप एकदम से देख कर समझ लेंगे। एकदम से आपके अन्दर इच्छा पैदा होगी 'विशेष जानने की' जो आकाँक्षा है, उसी का नाम क्या है? ईहा। जो हमने पहले जान लिया था, पहला step क्या था? अवग्रह, लोग हैं। second क्या हुआ? अब ये कौन से लोग हैं? यहीं के हैं या कहीं और बाहर के हैं? सब इसी colony के हैं अथवा कहीं दूसरी colony के हैं? यह जो भी आपके अन्दर इच्छा पैदा हुई जिससे आप एकदम से decide करोगे आगे चलकर कि हाँ! देखने में तो ये सब इसी जैन मिलन के लग रहे हैं। सबकी शक्ल देख ली फिर हमने वह भी कब देखी? ईहा होने के बाद ही।

## अवाय ज्ञान क्या है

ईहा में तो क्या हुआ? एक विशेष इच्छा पैदा हुई कि हम जाने जो हमने सामान्य से देखा। अब हमने देख लिया और सबके चेहरे देख करके जब यह एक नजर में देखा तो लगा हाँ! ये सब

यहीं इसी colony के लोग हैं तो यह निश्चय हो जाना गया। इसका नाम है- अवाय। क्या हो गया है? अवाय! यह तीसरा ज्ञान हो गया। यह सब क्या चल रहा है? मतिज्ञान चल रहा है। आगे-आगे मतिज्ञान ऐसे ही काम करता चला जाता है। फिर क्या होगा?

## धारणा की परिभाषा

धारणा! धारणा का मतलब एक बार आपने देख लिया कि यहाँ पर इतने लोग हैं वे सब जैन मिलन के हैं तो अब आपके दिमाग में यह figure जितने time तक रहेगी, उसका नाम है- धारणा। जितनी देर तक आपको याद रह पाए वह आपका धारणा मतिज्ञान कहलायेगा। हम हर पदार्थ के विषय में इसी तरह से जानते हैं। जब भी कभी हमारे सामने कोई नया ज्ञान होना होता है, हमारे सामने अचानक से यही सब आता है।

## चारों ज्ञान हर इन्द्रिय के साथ घटित होते हैं

अब मान लो आप बैठे हुए हो, एक नया आदमी आया। सुन रहे हो? जैसे ही नया आदमी आया मतलब आप उससे परिचित नहीं हो। एक नये आदमी ने entry की, आपने देखा आदमी है। यह क्या हो गया? अवग्रह। अब आपके दिमाग में आया यह कहाँ से आया? इसी मुजफ्फरनगर का है कि कहीं और दूसरे नगर का है? आप देखोगे कि किसके पास बैठा है? यह तो हो गई

इच्छा- ईहा या फिर यह U.P. का है कि M.P. का है? जो कुछ भी आपके अन्दर जानने की इच्छा हुई, क्या हो गई ईहा? ईहा के बाद में अब आपने अपना ज्ञान लगाया फिर आपने पुरुषार्थ किया। अच्छा! यह इनके पास बैठा है तो यह इनका रिश्तेदार होगा। इनकी रिश्तेदारी वहाँ भी है, यहाँ भी है। अच्छा! तो इनके यहाँ आया हुआ, इनका दामाद होगा। यह अब समझ

में आ गया; किसी ने बताया नहीं आपको, अपने आप ही आपने अंदाजा लगा लिया। इस तरह का जो ज्ञान आपने निर्णीत कर लिया, निश्चित कर लिया, यह क्या हो गया? अवाय। अब वह जितने दिन तक आपको याद रहेगा, वह आदमी जो हमने पहली बार देखा था जो इनके पास बैठा था, इनका रिश्तेदार है। अब जब भी आप उस आदमी को कभी भी चार साल बाद देखोगे, आपके अन्दर अगर धारणा ज्ञान चार साल वाला होगा तो चार साल तक वह memory काम करेगी, इस धारणा ज्ञान को memory बोलते है। आपके लिए अगर वह memory कम है, धारणा ज्ञान कम है तो आप दो दिन में भी भूल सकते हो। एक दिन में भी भूल सकते हो। हर वस्तु को जानने के लिए इसी तरह के ये चारों ज्ञान काम करते हैं।

अब यह तो हमने आपको केवल चक्षु इन्द्रिय का उदाहरण दिया। अब आप घर पर बैठकर लगाना, हम आपको homework दे रहे है। श्रुत इन्द्रिय से जानना अवग्रह कैसे होता है? फिर ईहा कैसे होती है? फिर अवाय कैसे होता है? और फिर धारणा कैसे होते है? यह हर इन्द्रिय के साथ घटित होगा। स्पर्शन इन्द्रिय के साथ भी होगा, रसना इन्द्रिय के साथ भी होगा। हाँ! पाँच इन्द्रिय के साथ होगा। अतः हर इन्द्रिय के साथ आपको लगाना है। घ्राण इन्द्रिय के साथ भी लगाना।पाँचों इन्द्रिय के साथ भी लगाना और उसके साथ-साथ इसी तरीके से मन से भी होता है। मन में भी पहले ऐसा ही होता है- अवग्रह, ईहा, फिर अवाय और धारणा। मतलब कि पाँचों इन्द्रिय और मन ये छह चीजें, चार प्रकार के इस तरह के मतिज्ञान के माध्यम से ही पदार्थ को जानते हैं। यह इसके चौबीस भेद हो गए, मोटा-मोटी। मोटा-मोटी मतलब एक सामान्य से, स्थूल रुप से। यह मतिज्ञान जब इस तरह से काम करता है तब आगे आचार्य कहते हैं कि यह कितने तरह के पदार्थों को जानने के लिए अपनी शक्ति रखता है? या कितने तरह के पदार्थों

को जान सकता है? वह यहाँ आगे के सूत्र में बताया जाना है।

**5 इन्द्रिय + मन = 6 x 4 (अवग्रह, ईहा, फिर अवाय और धारणा) = 24**

**मतिज्ञान के स्थुल भेद = 24**

HOMEWORK

**मतिज्ञान के चौबीस भेद**

| अवग्रह ज्ञान | ईहा ज्ञान | अवाय ज्ञान | धारणा ज्ञान | |
|---|---|---|---|---|
| | | | | स्पर्शन |
| | | | | रसना |
| | | | | घ्राण |
| | | | | चक्षु |
| | | | | श्रोत्र |
| | | | | मन |

## मतिज्ञान कितने तरह के पदार्थों को जान सकता है-

**बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ।।1.16।।**

**बहु + बहुविध + क्षिप्रा + अनि:सृत + अनुक्त + ध्रुवाणाम् सेतराणाम्**

**बहु बहुविध क्षिप्रज तथा, ध्रुव, उभरा, बिन उक्त।**
**उलट भेद मिल कर बने,बारह विध संयुक्त ।।1.16।।**

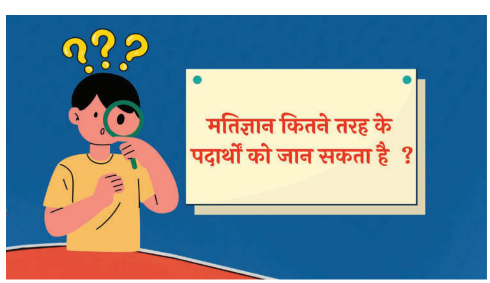

SCAN TO WATCH

देखो! क्या कहा जा रहा है यहाँ पर? 'बहु' मतलब होता है- बहुत सा। 'बहु' मतलब घर की बहू नहीं, बहुत। 'बहुविध' मतलब बहुत प्रकार का, so many kind. फिर होता है- 'क्षिप्र', 'क्षिप्र' मतलब होता है- बहुत जल्दी होने वाला। 'क्षिप्र' मतलब क्या होता है? जल्दी होने वाला, time नहीं लगने वाला जो ज्ञान होता है उसको बोलते हैं- 'क्षिप्र'। एक होता है- 'अनिःसृत'!

'अनिःसृत' आधा कोई पदार्थ दिख रहा हो, आधा नहीं दिख रहा हो तो भी उसको जान लेना। इसको बोलते हैं- 'अनिःसृत'। फिर होता है- 'अनुक्त' बिना कहे हुए, बिना कुछ शब्द सुने हुए भी अभिप्राय जानकर के ज्ञान हो जाने का नाम 'अनुक्त' कहलाता है और 'ध्रुव'! 'ध्रुव' का मतलब जो ज्ञान हमें हुआ वह उस तरह का बहुत time तक वैसा का वैसा ही हमारे ज्ञान में बना रहे। उसको बोलते हैं- ध्रुव पदार्थ का ज्ञान। कितने भेद हो गये यह? छह भेद हुए- बहु, बहुविध, क्षिप्र, अनिःसृत् ,अनुक्त और ध्रुव, ये छह भेद हुए। इसके ही अब आपको ठीक विपरीत करना है। इन छहों का एक-एक करके उल्टा करना है, तो 'बहु' का उल्टा क्या हो जाएगा? बहुत नहीं है जो- 'एक', एक का ज्ञान। 'बहुविध' का उल्टा क्या होगा? 'एकविध' समझना, बहुत प्रकार का नहीं, एक प्रकार का। फिर 'क्षिप्र' का उल्टा 'अक्षिप्र' मतलब जो तेजी से होने वाला ज्ञान न हो करके धीमे-धीमे होने वाला। 'अनिःसृत' का उल्टा 'निःसृत', जो सब कुछ प्रकट है उसको जानने वाला। फिर 'अनुक्त' का उल्टा 'उक्त' मतलब जो कह करके हमें ज्ञान होगा वह कहलाएगा- 'उक्त' हो गया और 'ध्रुव' का उल्टा 'अध्रुव' जो ज्ञान होने के बाद में बहुत जल्दी हमारे से इधर-उधर हो जाये और वह एक जैसा हमें विशुद्धि के साथ में वैसा ज्ञान बहुत देर तक न रह पाए तो उसको बोलते हैं- 'अध्रुव'। छह तो ये हो गए और छह उल्टे

हो गए। कितने हो गए? बारह हो गए।ये बारह ही जो हैं, ये क्या हैं? आगे का सूत्र पढ़े क्या लिखा है?

**अर्थस्य ॥1.17॥**

**बहु बहुविध आदिक रहे, अथ विशेषण जान।**
**निराकरण मत अन्य के, कारण किया मिलान ॥1.17॥**

'अर्थ' मतलब 'पदार्थ' अर्थात् यह सभी बारह प्रकार के पदार्थ होते हैं। हमें मतिज्ञान जब भी कभी होगा इन्हीं बारह प्रकार के भेदों में से किसी न किसी भेद का हो रहा होगा।

### बहु मतिज्ञान का क्षयोपशम-

'बहु' का मतलब तो समझ गए न? बहुत-सी चीजें, बहुत संख्या भी हो सकती हैं और बहुत कोई चीज भी हो सकती है। जैसे ये इतने लोग बैठे हैं, यह क्या हो गया? 'बहु' और इतने सारे नारियल रखे हैं, यह भी हो गया -'बहु'। मान लो किसी कटोरी में एक साथ चावल रखे हुए हैं तो यह क्या हो गया? वह भी 'बहु' हो गया।

हमें अगर एक साथ इतने चावलों का देखकर के कुछ ज्ञान हो रहा है कि बहुत सारे चावल रखे हैं तो यह हमारा 'बहुरूप मतिज्ञान' है तो यह 'बहु रूप मतिज्ञान' कहलाता। बहुत से लोगों को देखकर हमने जान लिया कि यहाँ बहुत लोग बैठे हैं। यह हमारा कौन-सा मतिज्ञान है? बहु मतिज्ञान। अब हम कभी इस

**'बहु मतिज्ञान'-**
**"बहुत से लोगों को देखकर जानना यहाँ बहुत लोग बैठे हैं"**

**क्षयोपशम = बहु मतिज्ञान**
**निमित्त = बाहरी पदार्थ**
**जान लिया = बहुत है**
**(बहुरूप)**

तरह की कोई भी science पढ़ते हैं, जिसमें हमें पदार्थों का ज्ञान होने की कोई process बताई जाती हो? कोई ज्ञान नहीं है हमारे पास। जबकि यह ज्ञान हुए बिना, आपको ज्ञान नहीं हो रहा है। जैसा पदार्थ है, उस पदार्थ का ज्ञान यदि आपको हो रहा है तो आपके पास में उसका क्षयोपशम होगा, तभी होगा। 'बहुरूप मतिज्ञान' का अगर आपके पास क्षयोपशम होगा तभी आप यह बहुत-सी चीजें देखेंगे।

ऑख तो मच्छर के पास भी होती है। वह नहीं देखेगा कि यहाँ पर बहुत से लोग बैठे हैं। वह केवल आप ही देखेंगे। यह मतिज्ञान आपके अन्दर आपके ज्ञान के क्षयोपशम से था। बाहरी पदार्थ को जानने का निमित्त बना और उससे आपने जान लिया यह 'बहुरूप मतिज्ञान' होता है।

## बहुविध मतिज्ञान का क्षयोपशम

अब 'बहु' के बाद में 'बहुविध' ज्ञान का मतलब बहुत प्रकार के लोग, कुछ बच्चे हैं, बूढ़े हैं, आदमी हैं, औरत है, उसमें भी कुछ पूजा के कपड़ों में बैठे हैं, कुछ रंग-बिरंगे कपड़ों में बैठे हैं। सब जो बहुत प्रकार का हम यह ज्ञान कर पा रहे हैं यह भी हमारे अन्दर ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम है तब जान पा रहे हैं। अन्दर ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम है तब जान पा रहे हैं। नहीं समझ आ रहा है? कब समझ आएगा यह? जब यह क्षयोपशम चला जाएगा न तब समझ आएगा। आप कहोगे कि महाराज ऐसा क्यों कह रहे हैं? ऐसा नहीं होता है कभी क्षयोपशम जाता नहीं है। जब कोई व्यक्ति आप सोचो कोमा तो ठीक है! ऐसी भी स्थिति में पड़ा रह जाता है कि उसका दिमाग बहुत कम-सा काम कर रहा है। चेतना तो है लेकिन उसके अन्दर किसी भी चीज को देखने की, जानने की क्षमता नहीं रही। ऑख भी खुल रही है। ऐसे patient मिलेंगे आपको। ऑख

SCAN TO WATCH

खुल रही है, हाथ हिल रहा है लेकिन वह आँख खोल कर भी किसी को पहचान नहीं पा रहा है, कुछ नहीं दिखाई दे रहा है कि यह 'बहुविध' है कि 'बहु' है? इसलिए मैं आपसे यह कह रहा था। समझ तब पड़ेगी जब इस क्षयोपशम में कमी आ जाएगी। अभी तो ऑंखे खुली है। अभी तो हम देख ही रहे हैं, जान नहीं रहे हैं। हमें समझ नहीं आता कि यह कितनी भीतर हमारे अन्दर machinery हमारी काम कर रही है। यह कहलाता है- 'बहुविध ज्ञान' का क्षयोपशम। अगर 'बहुविध' ज्ञान का क्षयोपशम न हो तो बहुत प्रकार की चीजों को आप पहचान न पाएँ, देख न पाएँ, जान न पाएँ, सुन न पाएँ, हर इन्द्रिय के साथ घटित करना। हर इन्द्रिय के साथ घटित करना है।

मान लो music होता है। music में ढोल भी बज रहा है, हारमोनियम भी बज रहा है, तबला भी बज रहा है, बाँसुरी भी बज रही है, पियानो भी बज रहा है और भी सब घण्टा आदि सब instruments उसमें बज रहे हैं। यह सब क्या हो गया? 'बहुविध' हो गया। आपके अन्दर अगर इस श्रोतृ इन्द्रिय सम्बन्धी ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम होगा, तो आप समझ पाएँगे कि इसमें बहुत वाद्यों की आवाज आ रही है। नहीं तो आपको कुछ समझ नहीं आएगा। हाँ! कुछ बज रहा था, इसके आगे कुछ नहीं होगा। हर चीज के लिए ये ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम काम करते हैं।

## एकविध में और बहुविध में क्या अन्तर?

अगर हम देखें, अगर आपके अन्दर केवल एक चीज को जानने का क्षयोपशम होगा तो वह एक सम्बन्धी मतिज्ञान होगा। बहुत का ज्ञान नहीं हो सकेगा। 'एकविध' का ज्ञान होगा तो एक प्रकार की चीजें आपको जानने में आएँगी। जैसे यह नारियल रखे हैं; ये सब एक प्रकार के कहलाएँगे? 'एकविध' कहलाएँगे, 'बहुविध' नहीं है। 'एकविध' में और 'बहुविध' में क्या अन्तर

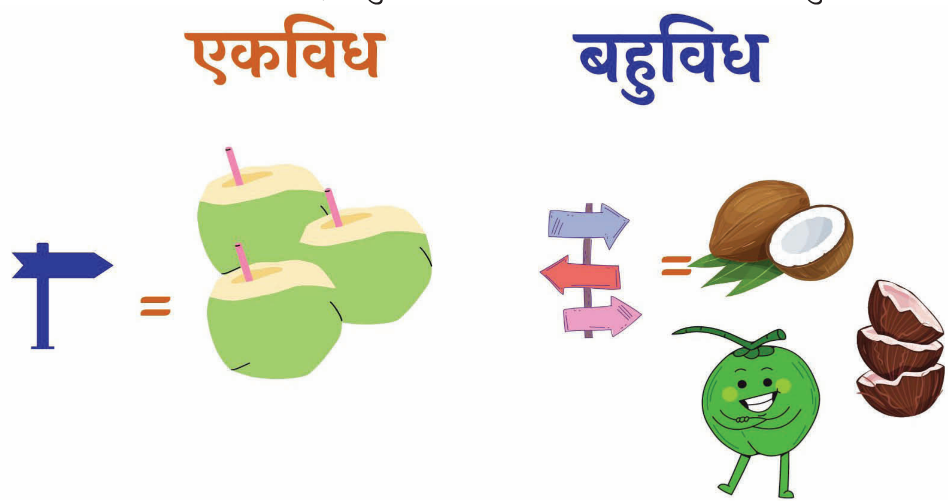

हो गया? ये सब एक जैसे, एक प्रकार के नारियल 'एकविध' हैं। ये 'बहुविध' कब कहलाएँगे? जब इनमें से किसी को आप काला कर दो, किसी को लाल कर दो, किसी को आधा कर दो, किसी को छील लो, किसी को किसी के ऊपर कुछ दूसरी पन्नी चढ़ा दो, कुछ कर दो यह सब क्या हो गया? 'बहुविध' हो गया। 'एकविध' में और 'बहुविध' में यह अन्तर हो गया। इस तरह के सारे के सारे पदार्थों के ज्ञान हमारे अन्दर ज्ञानवरण कर्म के क्षयोपशम से, इन्द्रियों के माध्यम से होते हैं।

यह तभी सम्भव है जब इन्द्रियाँ भी और ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम भी सही काम करे। नहीं तो अगर एक सौ तीन और एक सौ चार बुखार भी आ जाए तो दिन में भी रात और रात में भी दिन जैसा दिखाई देने लग जाता है और कभी-कभी तो दिन और रात का भेद भी पता नहीं पड़ता है कि दिन के तीन बजे कि रात के तीन बजे। पता है कि नहीं? हमें पता है, इसलिए बता रहा हूँ। एक बार ऐसे बुखार आया था। कोतमा में चातुर्मास चल रहा था।

इतना तेज बुखार आया था कि दिन के तीन बजे मुझे पूछना पड़ा! कितने बजे? मैंने पूछा तो लोगों ने कह दिया दिन के तीन बजे। हमें इतना मतलब इतनी बुखार का, इतना दिमाग के ऊपर effect पड़ रहा था कि यह समझ नहीं पड़ रहा था कि यह दिन के तीन है या रात के तीन। तब समझ में आया कि देखो! एक कितनी बड़ी चीज है। दिमाग के ऊपर बुखार का भी कितना असर पड़ता है। इतना तीव्र बुखार आ जाता है मतलब कि जब तक स्वस्थता है तब तक सब कुछ सही-सही दिखता है और रोग होने के बाद में कुछ का कुछ दिखता है, कुछ का कुछ जानने में आता है। इसलिए पूछता रहता हूँ बीच-बीच में, सुन रहे हो मतलब अभी स्वस्थ हो तो अभी सही सुनाई पड़ रहा है, तुमको जानने में आ रहा है। इसलिए तो ऐसे बहु-बहुविध, एक-एकविध।

## संक्लेश से ज्ञान कम होता है व विशुद्धि से बढ़ता है

क्षिप्र! 'क्षिप्र' का मतलब होता है? जैसे कोई चीज का हमें बहुत जल्दी ज्ञान हो जाना। कोई चीज सामने से निकल गई और हमने एक दम से उसको पकड़ लिया कि हाँ! यह हुआ था। यह जो है, हमारे अन्दर हर इन्द्रिय सम्बन्धी ज्ञान देखने सम्बन्धी, सुनने सम्बन्धी भी होता है। एक व्यक्ति एक बार में कुछ भी थोड़ा-सा बोला गया और सिर्फ पकड़ लिया, सुन लिया कि नहीं आपने, ऐसा बोला था। एक ने बहुत धीमे-धीमे सुना, धीमे-धीमे देखा, धीमे-धीमे जाना, वह कहलाता है-'अक्षिप्र'। अतः ये जो पहले के ज्ञान हैं, ये सब विशुद्धि के साथ होते हैं। जब आपके अन्दर आत्मा में विशुद्धि होगी तो ज्ञान भी अधिक होता है। एक बात बहुत अच्छी है, यह ध्यान रखने योग्य है कि संक्लेश से ज्ञान कम होता है। कई लोग पूछते हैं कि ये हमारा ज्ञान कम क्यों हो रहा है? जो ज्ञान पहले हमें होता था, अब हमें क्यों नहीं होता? क्यों हमारी

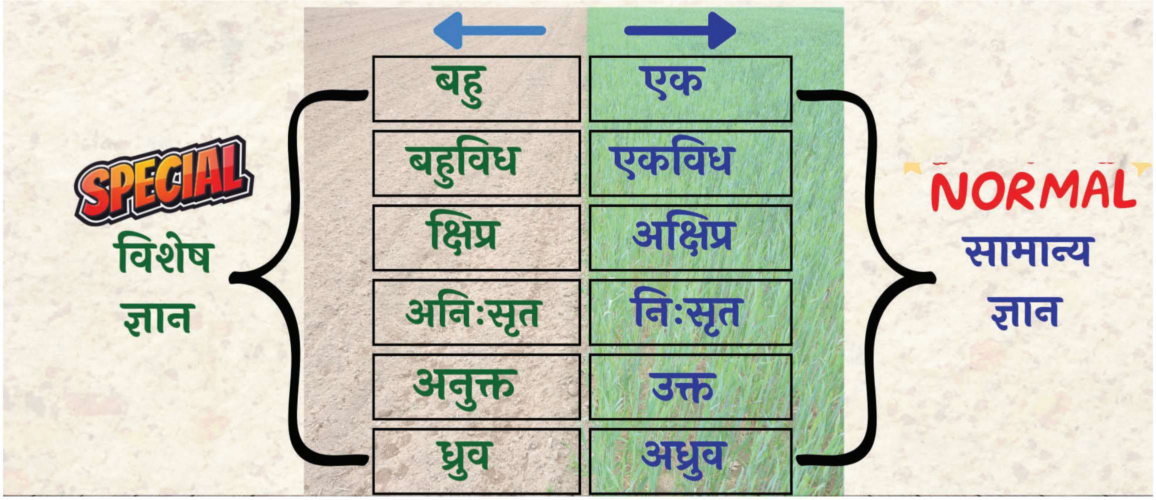


memory जाने लगी? अब हमारे अन्दर ज्ञान कम क्यों होने लगा? एक बहुत बड़ा कारण आचार्यों ने इसका बताया है कि ज्ञान विशुद्धि के साथ में तो बढ़ता रहता है। विशुद्धि बढ़ेगी तो ज्ञान बढ़ेगा। विशुद्धि अगर स्थिर भी रहेगी तो ज्ञान भी स्थिर रहेगा। लेकिन अगर संक्लेश होगा तो ज्ञान में कमी आ जाएगी। संक्लेश मतलब भीतर से हमेशा क्लेश के परिणाम रहना, कषायों के परिणाम रहना तो उससे ज्ञान अपने आप कम होता जाएगा।

आप देख लो जिनको क्रोध ही हमेशा आता रहता है या जो किसी तरह के लालच में पड़े हुए रहते हैं, उन्हें जो पिछली चीजें याद भी होती हैं कुछ भी उनके दिमाग में नहीं रह सकती हैं। क्लेश के कारण से धीरे-धीरे स्मृति भ्रष्ट होती चली जाती है। जितना क्लेश करेंगे, जितना भीतर से अपने आपको दुःखी महसूस करेंगे, उतना ही आपका ज्ञान भी कम होता चला जाएगा। शुरु में आपके ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम अच्छा था। आपने संक्लेश कर-करके ज्ञान को बिल्कुल नष्ट कर लिया। इसमें किसी की कोई कमी नहीं है। आपकी खुद की अपनी कमी है यह ध्यान रखना।

## बहु, बहुविध, क्षिप्र ये ज्ञान विशुद्धि से होते हैं

ये जो पहले की छह चीजें हैं- बहु, बहुविध, क्षिप्र ये अच्छे वाले ज्ञान है। यह विशुद्धि से होते हैं और जो इनका उल्टा करके हम आपको बता रहे हैं वे संक्लेश से होकर के इतने से रह जाते हैं। मतलब 'क्षिप्रज्ञान' होना अच्छा माना जाता है। जल्दी से कुछ चीज दिख जाना, समझ में आ जाना, सुनने में आ जाना, पकड़ में आ जाना, ये सब क्या होता है? यह ज्ञान की speciality मानी जाती है और 'अक्षिप्र' मतलब धीरे-धीरे, बार-बार दिखा रहे हैं, बार-बार बोल रहे हैं, बार-बार सुँघा रहे हैं। तब वह कह रहा है- हाँ! अब कुछ लग तो रहा है कि scent है। अब तुझे कोरोना हो गया तो कैसे scent समझ में आयेगी? यह कहलाता है- अक्षिप्र ज्ञान। ज्ञान भी अगर, कोरोना हो गया तो क्यों नहीं हमें ज्ञान सुँघने में आ रहा? क्षमता कहाँ चली गई? उस ज्वर के कारण से या उस रोग के कारण से उस क्षमता में कमी आ जाती है। ज्ञान में संक्लेश के कारण से कमी आ जाती है। इस तरह से ज्ञान में कमी भी होती है और वृद्धि भी होती है तो 'क्षिप्र' का उल्टा हो गया 'अक्षिप्र'। 'अनिःसृत' का उल्टा होता है 'निःसृत'। 'अनिःसृत' मतलब जैसे मान लो एक तालाब है।

तालाब में एक हाथी डूबा हुआ है या भैंस डूबी हुई है। थोड़ी-सी उसके ऊपर का सिर दिख रहा है। देखते ही इसे आपने बता दिया यह हाथी है, यह भैंस है। पूरी तो नहीं दिख रही थी। थोड़ा-सा उसके ऊपर का बस मस्तक दिख रहा था, सींग दिख रहे थे, उसको देखकर यह जान लिया। यह कहलाया अनिःसृत ज्ञान। अब जिसको यह ज्ञान नहीं होगा, वह कहेगा तूने कैसे पता कर लिया कि अनिःसृत है, तो उसे पूरी भैंस निकाल कर दिखानी पड़ेगी। तब वह कहेगा हाँ! यह भैंस है। यह क्या कहलाया? यह कहलाया- निःसृत ज्ञान। यह ज्ञान पिछले वाले अनिःसृत ज्ञान से हल्की quality का है, यह संक्लेश से होने वाला ज्ञान है। जिसे बहुत बार हर चीज बिल्कुल सामने रखी दिखाई जाए तभी उसको समझ में आये। इस तरह के ये ज्ञानों के भेद होते हैं।

SCAN TO WATCH

## अनुक्त अच्छा है, उक्त अच्छा नहीं है

क्षिप्र, अनिःसृत, अनुक्त। 'अनुक्त' का मतलब होता है हमने कुछ नहीं कहा। जैसे हमने ऐसे expression किया और आपने समझ लिया महाराज क्या बोलने वाले हैं? यह कहलाता है- 'अनुक्त ज्ञान' कभी-कभी बिना उच्चारण किए हुए भी आपको एकदम समझ में आ जायेगा कि हम क्या कहने वाले हैं? हमारी बात भले ही समझ में न आये क्योंकि मैं तो सिद्धान्त बोल रहा हूँ। कुछ का कुछ भी कहीं से कहीं तक कुछ भी बोल सकता हूँ लेकिन आप यह बात अपने घर के लोगों के साथ देख सकते हो। मुझे पता है कि तू क्या बोलने वाला है? बस! बोलते ही उसको चुप कर दिया जाता है। बोला नहीं पर मुझे पता तो है, तू क्या बोलने वाला है? यह कब सम्भव है? जब 'अनुक्त' नाम का मति ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम आपके अन्दर हो। बिना बोले भी ज्ञान होता है। यह अच्छा माना जाता है- बिना बोले, अभिप्राय के अनुसार ही जान लेना। जैसे आप रोजाना घर में वही काम करते हैं। रोजाना घर में जाते हैं एकदम से बैठ जाते हैं। उसी समय पर आपके घर में कोई लोग हैं और आप जाकर के थककर घर में बैठ गए। आपकी चाय पीने की या दूध पीने की या पानी पीने की इच्छा है। आपने कहा नहीं लेकिन सामने आपके घर में जो आपकी माँ है, पिता है, बहन है किसी ने देख करके आपका चेहरा समझ लिया कि थका हुआ आ रहा है, इसे एक गिलास पानी पिला ही दो। यह कब सम्भव है? 'अनुक्त ज्ञान' से। अब वे बोले- बहुत दूर से चल कर आ रहा हूँ, गर्मी हो चुकी है, बहुत देर से प्यासा हूँ एक गिलास पानी लाओ। अब यह क्या हो गया? इतना सारा बोलने में उसको कितनी ताकत लगानी पड़ी तब जाकर के सामने वाले को समझ में आये और तब वह जाकर के एक गिलास पानी लेकर आये।

तब भी वह एक ही गिलास लेकर के आए। तुमने कहा था न एक गिलास पानी, आपकी आज्ञाकारिणी पत्नी हूँ मैं। आपने एक गिलास बोला तो एक ही गिलास ले गयी। उसे तो बहुत प्यास लगी थी। एक गिलास तो झट से पी लिया। अब वह फिर खड़ा है, अब वह फिर गिलास लिए खड़ा है। अगर वह गिलास लिए खड़ा है और इतना उस पत्नी में ज्ञान होगा, 'अनुक्त' ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम होगा तो वह समझेगी कि यह गिलास लिए खड़ा है, तो इसमें पानी और लेकर के डालना है और इसको पानी पिलाना है। नहीं होगा तो वैसे ही खड़ी रहेगी। उसकी शक्ल देखेगा। यार! यह कैसी है? देखने में तो अच्छी लगती थी। जब शादी हो गयी अब जब तक कुछ समझ में नहीं आता। कैसे? जितना कहो उतना ही करती है, बिना कहे तो कुछ करती नहीं। क्यों नहीं करती तो धीरे-धीरे उसको पता पड़ेगा उसके ज्ञान इतना ही है, उसके ज्ञान का क्षयोपशम इतना ही है। यह क्षयोपशम अच्छा नहीं माना जाता। इसलिए इसको बाद में बताया गया। 'अनुक्त' अच्छा है, 'उक्त' अच्छा नहीं है। details तो अब आप कितनी भी कर सकते हो।

## 'ध्रुव' और 'अध्रुव' में अन्तर

'ध्रुव'! ध्रुव का मतलब है कि जैसे हमने किसी भी चीज को एक बार जाना तो जिस विशुद्धि के साथ जाना और जिस तरह से जाना वह चीज में उसी तरह की बार-बार जानने में आती रहे। यह बहुत बड़ा ज्ञान है और यह बहुत कम होता है। जैसे- मान लो आपने कोई चित्र देखा और उस चित्र में आपने जिस समय देखा उस समय तो वह आपको बहुत ज्यादा contrast के साथ मे, colourful वह सब कुछ आपके लिए दिखाई दिया और जब वह चित्र सामने से हट गया, अब आपकी स्मृति में उस तरह की चीजें नहीं है। अब आपकी स्मृति उस तरह का न कोई colour आ रहा है, न कोई उस तरह की light आ रही, न उस तरह का कुछ भी contrast आ रहा है, कुछ नहीं आ रहा। यह किसके कारण से? यह अध्रुव के कारण से और ध्रुव के कारण? जैसा आपने एक बार पकड़ लिया, जान लिया, वैसा आपको कुछ लंबे समय तक भी बना रहे, वह कहलाता है- 'ध्रुव'। वह तभी सम्भव है जब आपकी वैसी विशुद्धि बनी रहे और उस विशुद्धि का मतलब है कि आपको उस चीज का बिल्कुल ज्ञान कुछ समय तक वैसे ही रूप में चलता रहे, आपके सामने दूसरी चीज न आए। तभी तक है वह और जैसे ही आप दूसरे काम में लग गए,

SCAN TO WATCH

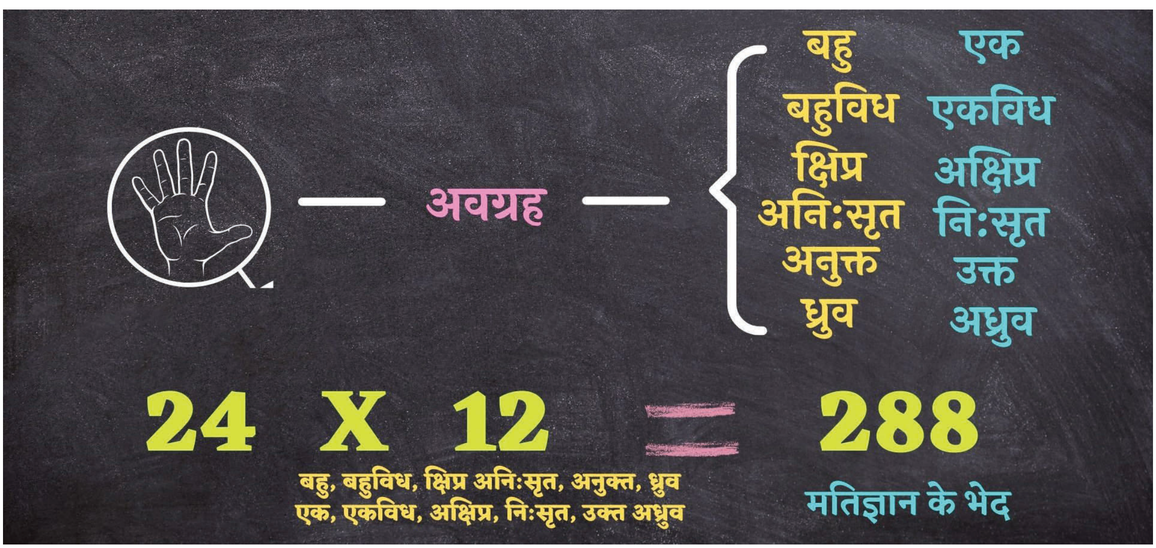


उसमें आपको क्लेश हुआ तो आप पिछली वाली चीज के उस ज्ञान को भूल जाओगे। फिल्में देखने जाते हो न! जब फिल्म देखकर आते हो तो फिल्म देखने के बाद में कितने घण्टे तक आपके दिमाग में वही-वही बिल्कुल वैसा का वैसा ही घूमता रहता है? अगर ढाई घण्टे, तीन घण्टे की फिल्म देखी है, कम से कम जब तक आप कोई दूसरे काम में नहीं लगोगे तब तक आपके लिए वही सब फिल्म के action सब कुछ आपके दिमाग में घूमते रहेंगे। एक घण्टे तक तो minimum घूमती रहेगी।

जब आप दूसरे काम में लग जाओगे, उसमें जब आपको कुछ विकल्प संकल्प होंगे, संक्लेश होगा तो फिर वह पिछली वाली चीज धीरे-धीरे धूमिल होगी। इसको क्या हो गया? यह 'अध्रुव' हो गया। इसे आप किसी भी चीज में घटित कर सकते हो। 'ध्रुव' जो होता है वह अच्छा माना जाता है 'अध्रुव' जो ज्ञान है वह अच्छा नहीं माना जाता। इस तरह के ये कितने भेद हो गए? बारह। अब आप यह समझे कि पाँच इन्द्रियाँ, एक मन, पाँच और एक छह और इन छह के अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा और सबके बारह-बारह प्रकार। मतलब छह को चार से गुणा

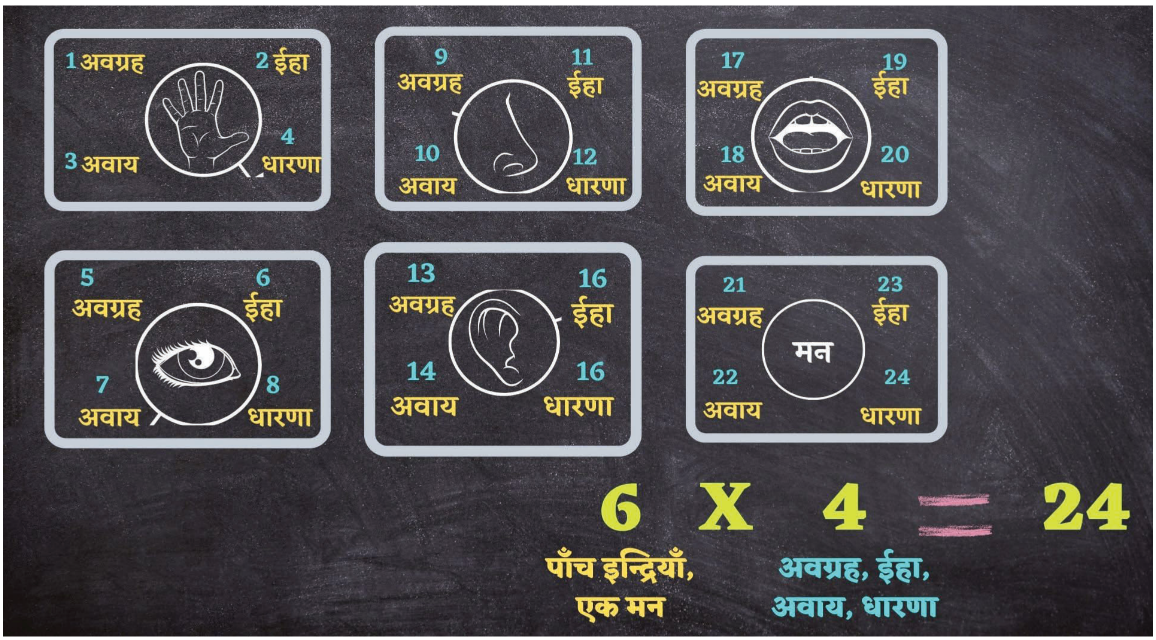


करो, कितना हो गया? चौबीस और चौबीस को बारह से गुणा करो, कितना हो गया? 288, इतने type का यह मतिज्ञान हुआ है लेकिन अभी भी यहाँ विषय complete नहीं हुआ है। थोड़ा-सा और समझेंगे। दो सूत्र और पढ़ लेते हैं।

### 'व्यंजन' का 'अवग्रह ज्ञान' ही होता है -

**व्यञ्जनस्यावग्रहः॥1.18॥**

**व्यञ्जनस्य + अवग्रह :**

**अर्थ अवग्रह के बनें, चार भेद मतिज्ञान।**
**व्यंजन वस्तु का बने, एक अवग्रह ज्ञान॥1.18॥**

'व्यंजन' पदार्थों का 'अवग्रह ज्ञान' होता है। अब यहाँ पर ही बताया जा रहा है, कुछ अस्पष्ट पदार्थ होते हैं, प्रकट होते हैं। उनका हमें केवल क्या होगा? 'अवग्रह' ही होगा। 'व्यंजन' मतलब अप्रकट, 'व्यंजन' मतलब क्या होता है? 'अप्रकट' जो अस्पष्ट पदार्थ होंगे उनका हमें केवल 'अवग्रह' ही होगा। मतलब कि जब पदार्थ स्पष्ट हो जाएगा तभी उसमें 'ईहा' आदि ज्ञान सम्भव है। मतलब विशेष जानने की आकाँक्षा किसमें होगी? जब कुछ स्पष्ट हो रहा हो और जब स्पष्ट नहीं हो रहा है, तो वह केवल हमारे लिए क्या रह जाएगा? व्यंजन अवग्रह का ही काम करेगा। अतः पहले पदार्थ कई बार अस्पष्ट होता है। पहले कैसा होता है? अस्पष्ट होता है, अस्पष्ट होते-होते स्पष्ट हो जाता है। जो स्पष्ट हो गया वह तो 'अर्थस्य' इसमें चला गया। 'अर्थ' का 'अवग्रह', 'अर्थ' में 'अवग्रह' होगा तो उसमें 'ईहा' आदि सब सम्भव है लेकिन जो केवल अस्पष्ट है उसमें केवल 'व्यंजन' होगा। 'व्यंजन' का 'अवग्रह'। यह जो व्यंजन का अवग्रह होता है, आचार्य आगे कहते हैं-

SCAN TO WATCH

| 5 इन्द्रिय+मन | व्यंजनावग्रह |
|---|---|
| चक्षु | ✗ |
| मन | ✗ |
| स्पर्शन | ✓ |
| रसना | ✓ |
| घ्राण | ✓ |
| श्रोत्र | ✓ |

## 'व्यंजन अवग्रह' चक्षु और मन के द्वारा नहीं होता है

**न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥1.19॥**

**न चक्षुः + अनिन्द्रिय + आभ्याम्**

**आँख तथा मन के बिना, चौ इन्द्रिय से होय।**
**व्यंजन सारी वस्तु का, भान जरा सा होय॥1.19॥**

यह जो 'व्यंजन अवग्रह' होता है, यह चक्षु और मन के द्वारा नहीं होता है। मतलब चक्षु इन्द्रिय को छोड़ दो और मन को छोड़ दो। इसके अलावा स्पर्शन इन्द्रिय, रसना इन्द्रिय, घ्राण इन्द्रिय और श्रोतृ इन्द्रिय इन चार इन्द्रियों से अस्पष्ट पदार्थ का भी ज्ञान होता है। लेकिन वह 'अवग्रह' तक का ही होगा, 'ईहा' आदि नहीं होंगे। इसलिए तो दो प्रकार के अवग्रह हो गए। एक तो 'व्यंजनावग्रह' और एक 'अर्थावग्रह'।

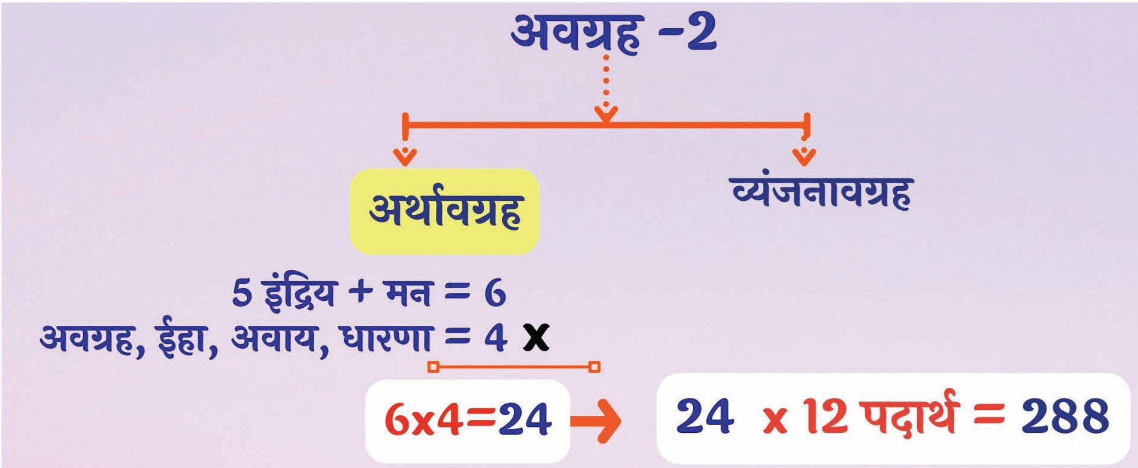


'अर्थावग्रह' के तो वे ऊपर के सब भेद बन गए। 288 भेद बन गए। वे सब किसके बन गए? 'अर्थावग्रह' के बाद में होने वाले 'ईहा' आदि के बन गए। लेकिन 'व्यंजनावग्रह' के कितने भेद बनेंगे? चार इन्द्रियों से व्यंजनवग्रह होगा, केवल चार चीजों से। चार इन्द्रियाँ मतलब स्पर्शन, रसना, घ्राण और श्रोतृ तो चार इन्द्रियों से यह 'अवग्रह' हुआ। केवल 'अवग्रह' हुआ 'ईहा' आदि नहीं होंगे। लेकिन ये बारह प्रकार के पदार्थों का होगा तो कितना हो गया? 12×4=48 समझ आ रहा है? 288 प्रकार का तो 'अर्थावग्रह' से सहित 'ईहा' आदि सबका ज्ञान हो गया और केवल अड़तालीस

SCAN TO WATCH

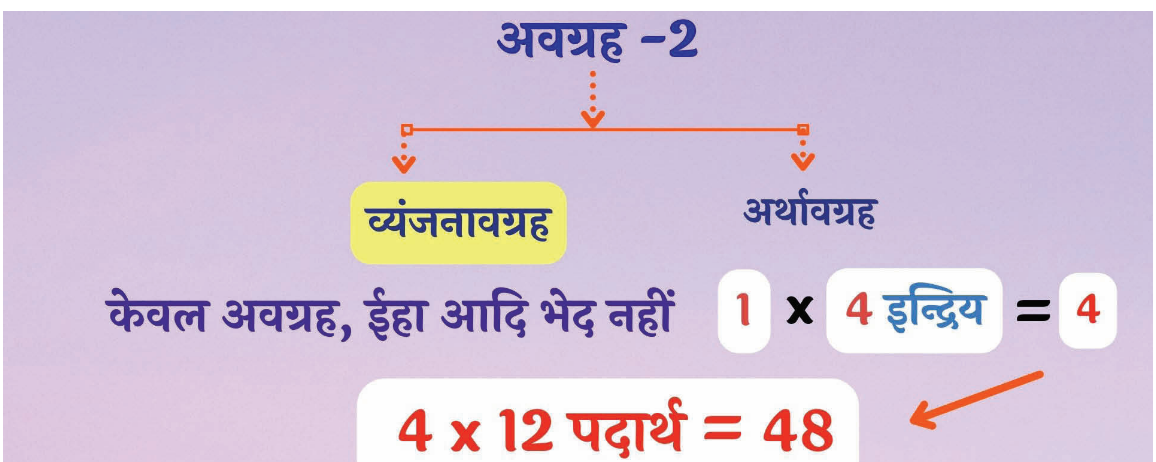


प्रकार का 'व्यंजनावग्रह' हो गया।

इन दोनों को मिला दो तो कितना हो गया? 336। ये मतिज्ञान के total भेद होते हैं। यह मतिज्ञान का प्रकरण पूर्ण होता है। अब इस 'व्यंजनावग्रह' को समझने के लिए इसे अस्पष्ट पदार्थ का 'अवग्रह' है।

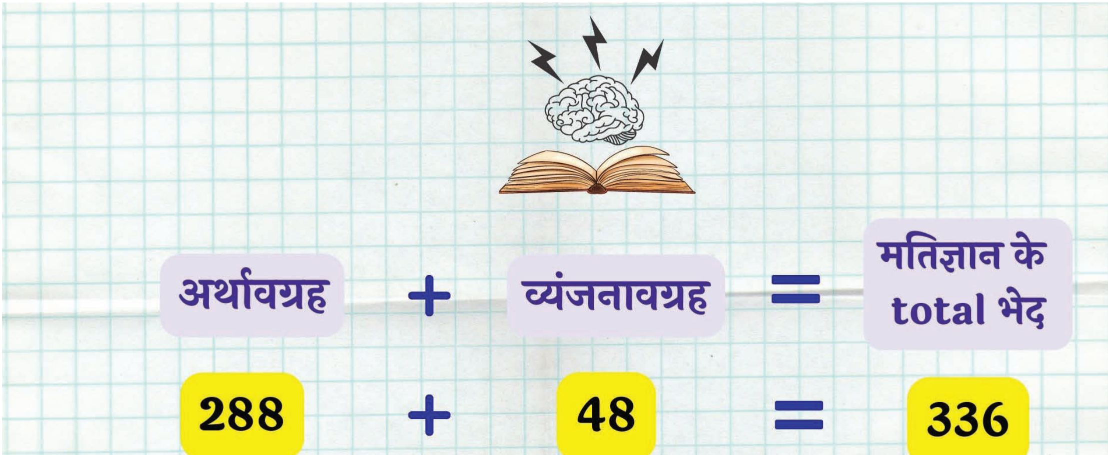


SCAN TO WATCH

आचार्यों ने एक उदाहरण दिया है- जैसे मान लो मिट्टी का एक सकोरा होता है। जिसे कुल्हड़ वगैरह बोलते हैं। प्याली है, जो नयी-नयी अभी एकदम से भट्टी से निकल कर आई, बनी है। उसमें आप एक बूँद डालो सकोरे में तो क्या होगा? एक दम से वह सूख जाएगी। एक दम से वह सूख जाएगी। कुछ भी जो है आपके लिए उस समय उस बूँद का कुछ भी स्पर्शन या उसको मान लो हमने डाल भी दी, उसको हम चखने की कोशिश करे, कुछ नहीं होगा उसमें। एक बूँद तो उसी में गई, दो बूँद, चार बूँद डाली, दस बूँद daily डालते रहे।

एक स्थिति के बाद में उसमें वह बूँद ठहरने लग जाएगी। तब वह कहलाएगा 'अर्थावग्रह', फिर उसमें आपको ईहा आदि सब सम्भव है। 'व्यंजनावग्रह' जब तक होगा तब तक आपको लगेगा बस! बूँद आ रही है और एकदम से समाप्त हो रही है। बस! 'अवग्रह' हो रहा है। बस बूँद है। इसके अलावा कुछ भी फिर बाद में पता नहीं पड़ता। इसको क्या बोलेंगे? 'व्यंजनावग्रह'। अस्पष्ट पदार्थ है और जब स्पष्ट हो गया तो उसका अवग्रह कहलाया, 'अर्थावग्रह'। उसमें हमारे अन्दर ईहा, अवाय, धारणा आदि सब होते रहेंगे। इस तरह से यह मतिज्ञान के तीन सौ छत्तीस भेदों का यह जो विज्ञान है, यह आप इन सूत्रों के माध्यम से जान सकते हैं और यह मतिज्ञान का इतना प्रकरण होने के बाद में फिर श्रुत ज्ञान का प्रकरण शुरु होगा। इतना ही पर्याप्त है।

## सारांश

1. आज हमने जाना की मतिज्ञान किस कारण से होता है?
2. सूत्र 14 - तदिन्द्रियानिन्द्रिय-निमित्तम् के अनुसार मतिज्ञान इन्द्रिय और अनिन्द्रिय के निमित्त से होता है
3. मन रहित जीवों में यह जितनी इन्द्रिय जीव के पास हैं उन से होता है
4. मन सहित जीवों में यह पाँचों इन्द्रिय और मन के निमित्त से होता है
5. इन्द्रिय शब्द - इंद्र शब्द अर्थात आत्मा से बना है
6. हमने इन्द्रिय के आत्मा पर उपकारों को भी समझा
7. आत्मा को ज्ञान का क्षयोपशम होने पर भी; पदार्थ का ज्ञान कराने में इन्द्रियाँ ही साधन हैं
8. इन्द्रिय अपने गूढ़ विषय को जानती हैं
9. और संसारी दशा में आत्मा को विषय की गूढता जानने के लिए इन्द्रियों का आलम्बन लेना पड़ता है
10. इंद्रियों के माध्यम से आत्मा के अस्तित्व का पता चलता है जैसे ये कितने इन्द्रिय जीव है
11. प्राणी संयम का पालन भी इन्द्रियों के ज्ञान से ही सम्भव है
12. हमने देखा कि इन्द्रिय अगर आत्मा के लिए असंयम भाव उत्पन्न कराती हैं तो वे अपकारी भी हैं
13. कर्मों ने आत्मा को घेर रखा है, इसकी शक्ति को दबा रखा है - यह ज्ञान कर्म के क्षयोपशम से आया
14. यह ज्ञान आने में भी शरीर, इन्द्रियाँ ही उपकारी हैं।
15. मन को अनिंद्रिय भी कहते हैं
16. अनिंद्रिय अर्थात ईषत इन्द्रिय मतलब कुछ इन्द्रिय जैसा भाव, इन्द्रिय का अभाव नहीं
17. इन्द्रिय के अभाव को अतीन्द्रिय कहते हैं
18. मन को अंतःकरण भी कहते हैं मतलब अन्तरंग में ही यह इन्द्रिय रहती है बाहर नहीं दिखती
19. देश और काल मन के लिए नियत नहीं है, इंद्रियों के लिए नियत हैं
20. हमने जाना कि कर्मों के क्षयोपशम में कुछ कर्म दब जाते हैं और कुछ बिना फल दिए क्षय हो जाते हैं
21. इस दशा में आत्मा का ज्ञान प्रकट होता है
22. हमने समझा कि तत्त्व की बात करने में नींद क्यों आती है?
23. ज्ञान ही है जो निद्रा को भगाता है, जैसे ही अन्दर ज्ञान की जागृति कम हुई, निद्रा हावी हो जाती है।
24. हमने मति ज्ञान के चार भेद भी जाने
25. अवग्रह- किसी पदार्थ का इन्द्रिय का विषय बनने पर सबसे पहले होने वाला ज्ञान
26. इहा- विशेष जानने की इच्छा

27. अवाय- निश्चय हो जाना
28. धारणा- जितनी देर तक याद रहे पाए यह धारणा मतिज्ञान है
29. ये चारों ही ज्ञान हर इन्द्रिय और मन के साथ घटित होते हैं
30. हमने जाना कि सामान्य से मतिज्ञान के 24 भेद होते हैं
31. क्योंकि मन और पाँच इन्द्रिय प्रत्येक, अवग्रहादि चार प्रकार से पदार्थ को जानते हैं
32. सूत्र 16 में हमने जाना कि विशेष से; हर तरह का मतिज्ञान बारह तरह के पदार्थों को जान सकता है
33. बहु यानि बहुत सा और इसका उल्टा एक
34. बहुविध यानि बहुत प्रकार का और इसका उल्टा एक प्रकार का
35. क्षिप्र यानि बहुत जल्दी होने वाला और उसका उल्टा धीमे-धीमे होने वाला
36. अनिःसृत यानि ऐसे पदार्थ को जानना जो आधा दिख रहा हो और आधा नहीं दिख रहा हो
37. और इसका उल्टा, सब कुछ प्रकट है उसको जानने वाला
38. अनुक्त यानि बिना कुछ शब्द सुने हुए भी अभिप्राय जानने वाला और इसका उल्टा उक्त यानि जो कहने से हमें ज्ञान होगा
39. ध्रुव यानि बहुत समय तक ज्ञान वैसे का वैसा ही बना रहे और इसका उल्टा अध्रुव यानि ज्ञान बहुत जल्दी इधर उधर हो जाये
40. इस प्रकार अर्थ यानि पदार्थ को जानने के लिए मतिज्ञान के 6 X 4 X 12 = 288 भेद हो जाते हैं
41. हमने देखा कि आत्मा में विशुद्धी अधिक होगी तो ज्ञान भी अधिक होगा
42. और संक्लेश यानि कलेश के परिणाम होने से ज्ञान कम होगा
43. जहाँ पहले के 6 ज्ञान बहु, बहुविध, क्षिप्र, अनिःसृत, अनुक्त और ध्रुव अच्छी विशुद्धि वाले होते हैं
44. वहीं एक, एकविध, अक्षिप्र, निःसृत, उक्त और अध्रुव इन सभी ज्ञानों में संक्लेश के कारण से कमी आ जाती है
45. सूत्र 18, 19 में हमें जाना कि व्यंजन यानि अप्रकट, अस्पष्ट पदार्थों का अवग्रह ज्ञान ही होता है
46. ईहा आदि नहीं होते
47. व्यंजन अवग्रह मन और चक्षु के द्वारा भी नहीं होता है
48. सिर्फ स्पर्शन, रसना, घ्राण, श्रोतृ इन 4 इन्द्रिय से ही इनका अवग्रह ज्ञान होता है
49. अतः अवग्रह; व्यंजनावग्रह और अर्थावग्रह के भेद से दो प्रकार का हो गया
50. अर्थावग्रह के तो 288 भेद बन गए
51. व्यंजनावग्रह के 48 भेद होते हैं
52. 4 इन्द्रियों से 12 प्रकार के पदार्थों का व्यंजनावग्रह होगा
53. इस तरह मतिज्ञान के कुल भेद 288 + 48 = 336 भेद होते हैं

# अभ्यास प्रश्न पत्र

प्रश्न 1 - दो इन्द्रिय जीव के कौन कौन सी इंद्रिय सम्बन्धी मतिज्ञान होगा?
कर्ण इन्द्रिय
रसना इन्द्रिय
घ्राण इन्द्रिय

प्रश्न 2 - मतिज्ञान की प्राप्ति के लिए क्या निमित्त है?
इन्द्रिय
निंद्रा
अतींद्रिय

प्रश्न 3 - 'तदिन्द्रियानिन्द्रिय-निमित्तम्' - यह कौनसा सूत्र है?
चौदहवाँ
पन्द्रहवाँ
तेरहवाँ

प्रश्न 4 - 'ईषत्' का मतलब क्या होता है?
इष्ट
थोड़ा
इस प्रकार

प्रश्न 5 - मतिज्ञान के कितने भेद हैं?
छः
चार
दो

प्रश्न 6 - जो इन्द्रियों से परे हैं = ________
अनिंद्रिय
परेन्द्रिय
अतींद्रिय

प्रश्न 7 - आत्मा के लिए पदार्थ का ज्ञान कराने में ________ ही निमित्त साधन हैं।
इन्द्रियाँ
मन
अनिंद्रिय

प्रश्न 8 - इन्द्रियाँ आत्मा के लिए उपकारी हैं।
सही
ग़लत

प्रश्न 9 - इन्द्रिय के माध्यम से सबसे पहले जो ज्ञान होगा वह ज्ञान क्या कहलाएगा?
अवग्रह
धारणा
इहा

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

प्रश्न 10- बहु ____ क्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥रिक्त स्थान भरो ।
एक
बहुविध
वचन

प्रश्न 11- मतिज्ञान के कुल भेद कितने है?
288
336
148

प्रश्न 12- मतिज्ञान कितने तरह के पदार्थों को जान सकता है?
36
12
18

प्रश्न 13- जल्दी होने वाला, time नहीं लगने वाला जो ज्ञान होता है उसको क्या कहते हैं?
क्षिप्र
उक्त
ध्रुव

प्रश्न 14- बहुत बार कोई चीज बिल्कुल सामने रखी, दिखाई जाए तभी समझ में आये; इस ज्ञान को क्या कहते है?
क्षिप्र
ध्रुव
निःसृत

प्रश्न 15- संक्लेश से ज्ञान कम होता है व विशुद्धि से बढ़ता है।
गलत
सही

प्रश्न 16- 'अप्रकट, अस्पष्ट पदार्थ' को क्या कहते है?
स्वर
व्यंजन
अर्थ

प्रश्न 17- व्यंजन का ज्ञान किस से नहीं होता है?
स्पर्श
श्रोतृ
चक्षु

प्रश्न 18-अस्पष्ट पदार्थ का कौन सा ज्ञान होता है ?
अवग्रह
धारणा
इहा

प्रश्न 19-मिट्टी की प्याली में बूँद का आना और एकदम से समाप्त होना - यह किसका उदाहरण है?
आवाय
अर्थावग्रह
व्यंजनावग्रह

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

# अभ्यास प्रश्न पत्र 'विषयक'

प्रश्न - 1 "आत्मा के लिए इन्द्रियाँ उपकारी भी हैं और अपकारी भी हैं" क्या यह कथन उचित है? इस कथन पर टिप्पणी करें।

प्रश्न - 2 इन्द्रिय, अनिन्द्रिय और अतिन्द्रिय में क्या अन्तर है?

प्रश्न - 3 मतिज्ञान के कितने और कौन कौन से भेद हैं। उदाहरण के साथ बताएं

प्रश्न - 4 मतिज्ञान की प्राप्ति किससे होती है?

प्रश्न - 5 कर्मों का क्षयोपशम क्या है?

प्रश्न - 6 व्यंजनावग्रह और अर्थावग्रह के अन्तर को स्पष्ट करें।

प्रश्न - 7 अर्थावग्रह और व्यंजनावग्रह के मिलाकर मतिज्ञान के कुल कितने भेद हैं?

प्रश्न - 8 मतिज्ञान के चारों भेद प्रत्येक इन्द्रिय में कैसे घटित होते हैं उदाहरण सहित समझाएं।

प्रश्न - 9 मतिज्ञान कितने प्रकार के पदार्थों को जान सकता है?

प्रश्न - 10 व्यंजन अवग्रह किस इंद्रियों के द्वारा होता है?

# प्रवचन: 07

## श्रुतज्ञान क्या होता है?

मतिज्ञान के बाद जो दूसरा ज्ञान आता है, उसे हम श्रुतज्ञान कहते हैं। वह श्रुतज्ञान कैसे उत्पन्न होता है? क्या उसके भेद-प्रभेद होते हैं? यह इस अगले सूत्र से बताया जा रहा है।

**श्रुतं मतिपूर्वं द्वयनेकद्वादशभेदम् ॥ 1.20 ॥**

**श्रुतं - मति - पूर्वं - द्वि + अनेक + द्वादश + भेदम्**

**दो अनेक बारह तथा, भेद प्रभेद बतात।**
**मतिज्ञान पश्चात हो, श्रुत ज्ञान कहलात॥1.20॥**

'श्रुतं' मतलब श्रुतज्ञान, 'मतिपूर्वं' मतलब मतिज्ञान पूर्वक होता है। पूर्वक का मतलब होता है- पहले होना, कारण के रूप में होना या निमित्त के रूप में होना। मतलब श्रुत ज्ञान जब भी होगा उसके पूर्व में मतिज्ञान अवश्य होना ही चाहिए, यह शर्त हो जाती है। मतिज्ञान पूर्वक ही श्रुतज्ञान होगा। पहले मतिज्ञान होगा तब उसके बाद श्रुतज्ञान की प्रवृत्ति होगी। वह श्रुतज्ञान यद्यपि अपने ही श्रुत ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से और वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न होता है फिर भी उसे मतिज्ञान का निमित्त लेना ही पड़ता है। कोई भी ज्ञान हो, आप यह ध्यान में रखे कि ज्ञान के साथ में वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम आवश्यक होता है।

## ज्ञान के साथ में वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम क्यों आवश्यक होता है?

क्यों आवश्यक होता है? जो हम जान रहे हैं, वह तो श्रुत ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से जानेंगे लेकिन जानने की शक्ति जो होती है वह वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से आती है। जानने में उत्साह, जानने में शक्ति जो लगती है, वह शक्ति का काम यह हमारा कर्म का क्षयोपशम करता है। आप देखें! ज्ञान तभी काम करता है जब उसके पास में जानने की शक्ति भी हो, उसके साथ-साथ वीर्यन्तराय कर्म के क्षयोपशम से उसमें अन्दर जानने का उत्साह भी हो तभी वह काम करता है। किसी भी पदार्थ को हम जान रहे हैं, मान लो ऑंख खोल कर के बैठे हैं, देख रहे हैं- यहाँ इतने सारे पदार्थ हैं। आप सामान्यतः यह समझेंगे कि हमारी तो आँखें खुली हैं इसलिए हमें देखने

SCAN TO WATCH

में आ रहा है। लेकिन यह देखने में भी आपकी शक्ति लग रही है, ज्ञान भी काम कर रहा है और ज्ञान के साथ में शक्ति भी काम कर रही है तभी आप पदार्थों को देख पा रहे हैं। यह तब समझ में आता है जब हम कभी बुखार में होते हैं, आँखें खुल नहीं रही होती हैं और कोई हमसे कहता है- बेटा! आँखें खोलो, देखो! तब समझ में आता है कि आँखें खोल कर देखना भी कितना कठिन होता है। तीन दिन से बुखार आ रहा हो, कमजोरी हो और उस समय पर जब कोई आँखें खोलने को कहता है, तो कितना कष्ट होता है। किसी को देखने में भी कष्ट होता है। बहुत देर तक आँखें खोलकर के किसी के सामने बैठना भी कष्टकारी होता है। आँखें बन्द करनी पड़ती हैं मतलब देखने में भी शक्ति लगती है, सुनने में भी शक्ति लगती है। आप सुन रहे हैं तो आप अपने अन्दर ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के साथ-साथ जो वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम है, उसका उपयोग कर रहे हैं। उसी के कारण से आपको सुनने में आएगा, सुनने में शक्ति लगेगी, उत्साह आएगा। जब हम शक्ति का प्रयोग करते हैं तब ही वह चीज हमारे अन्दर आती है और अगर हम शक्ति का प्रयोग लगातार बहुत देर तक भी करते जाते हैं तो फिर हमें थकान भी आती है। ज्यादा बोलने के बाद भी थकान आती है, ज्यादा सुनने के बाद भी थकान आती है, ज्यादा देखने के बाद भी थकान आती है। फिर मन करता है, आँखें भी बन्द कर लो, कान भी बन्द कर लो। हमें किसी को नहीं सुनना, किसी को नहीं देखना। क्यों हो गया? क्योंकि शक्ति बहुत लग गई।

## वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम भी आवश्यक है

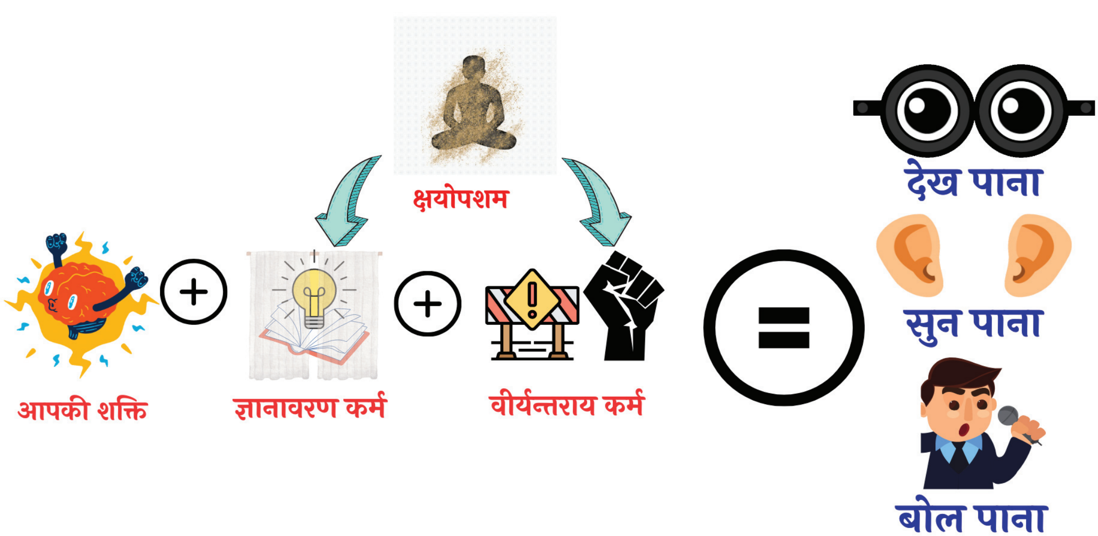


देखने में, जानने में, सुनने में शक्ति लगती है। इसलिए प्रत्येक ज्ञान के साथ में वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम जोड़ा गया है और उसके बिना काम होता नहीं है। हम केवल इतना न

समझे कि ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से ही ज्ञान हो जाता है। यह भी जाने कि उसके साथ में वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम भी हर जगह आवश्यक है। मतिज्ञान के साथ भी, श्रुतज्ञान के साथ भी और आगे भी आने वाले अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान के साथ भी, इसी तरह के वीर्यन्तराय कर्म के क्षयोपशम आवश्यक होते हैं तब हम उस जानने की क्षमता अपने अन्दर प्राप्त कर पाते हैं। अन्तर समझ में आ रहा है न? एक जानना और एक जानने की क्षमता होना। क्षमता जो चीज है, शक्ति जो चीज है वह हमें इस कर्म के क्षयोपशम से प्राप्त होती है। अनेक कर्मों के हमको क्षयोपशम मिले हैं जिसके माध्यम से हमें यह सब कुछ कर पा रहे हैं। भीतर बहुत कुछ पुण्य के, बहुत कुछ ज्ञानावरणादि कर्मों के हमें लाभ हो गए हैं तब हम ये सब चीजें सुन पा रहे हैं। सब कुछ अपने आप नहीं हो रहा। ये सब आपकी आत्मा की उपलब्धियाँ हैं जो आपने प्राप्त की हैं। उसमें भी सबका अपना-अपना ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम है। सबके अपने-अपने ये वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम हैं। जिनके होंगे उनके लिए काम का है, जिनके नहीं हैं, उनके लिए कोई काम का नहीं है। श्रुत ज्ञान भी उत्पन्न होता तो अपने ही ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से ही है लेकिन जब भी उत्पन्न होता है, तो उससे पहले मति ज्ञान होना आवश्यक है। इसलिए मतिपूर्वं श्रुतम् कहा गया है। फिर आचार्य कहते हैं- इसके भेद जानो।

## अङ्ग के भेद कितने होते हैं?

SCAN TO WATCH

**'द्वयनेक द्वादश भेदं'**

सबसे पहले इसके दो भेद बनते हैं और दो भेद जो होते हैं वह -
1. अङ्ग बाह्य और        2. अङ्ग प्रविष्ट - द्वादशाङ्ग - बारह भेद

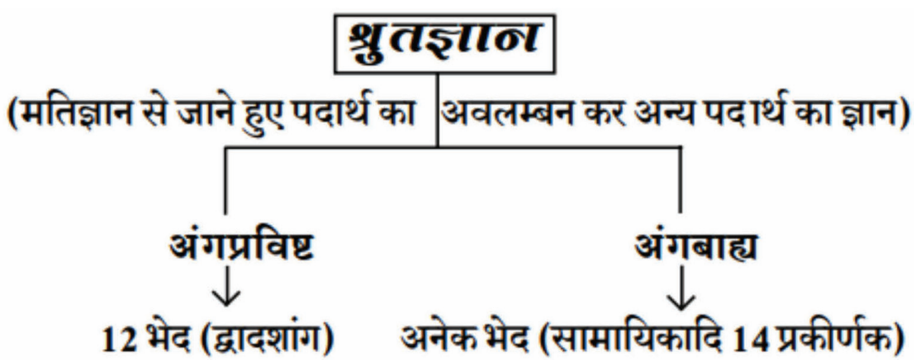


इस रूप में श्रुत ज्ञान के दो भेद होते हैं- अङ्ग बाह्य और अङ्ग प्रविष्ट। अङ्ग बाह्य क्या होता है? यह तो अनेक प्रकार का बताया गया 'द्वयनेकद्वादशभेदम्'। पहले दो भेद हो गए। फिर उसमें जो अङ्ग बाह्य है, उसके अनेक भेद हो गए और जो अङ्ग प्रविष्ट है उसके बारह भेद हो जाते हैं।

बारह भेद कौन से? जिसे आप द्वादशाङ्ग कहते हैं, वह बारह भेद अङ्ग प्रविष्टि के होते हैं। द्वादश अङ्ग जिसमें हैं उसको द्वादशाङ्ग कहा जाता है। आप जिनवाणी का एक नाम द्वादशाङ्ग भी सुनते हैं और एक नाम श्रुतज्ञान भी सुनते हैं। श्रुत ज्ञान भी इस ज्ञान को इसलिए कहा जाता है कि इसके माध्यम से जो हमें पदार्थों का ज्ञान होता है, उस पदार्थ के ज्ञान में ये शब्द हमारे लिए कारण बनते हैं।

द्रव्य श्रुत और भाव श्रुत क्या होता है?

श्रुत का मतलब होता है- श्रूयते इतिश्रुतं जिससे सुना जाए, उसको भी श्रुत कहा जाता है और जो सुना जाए उसको भी श्रुत कहा जाता है। सुन क्या रहे हैं हम?

हम शब्द सुन रहे हैं और

शब्द से जो हमको अर्थ पदार्थ ज्ञान हो रहा है, वह ज्ञान हमारे लिए श्रुत ज्ञान कहलाता है।

जो शब्द यहाँ लिखे हुए हैं, इन शब्दों को भी हम पढ़कर के सुन रहे हैं और सुनकर के ही हमें

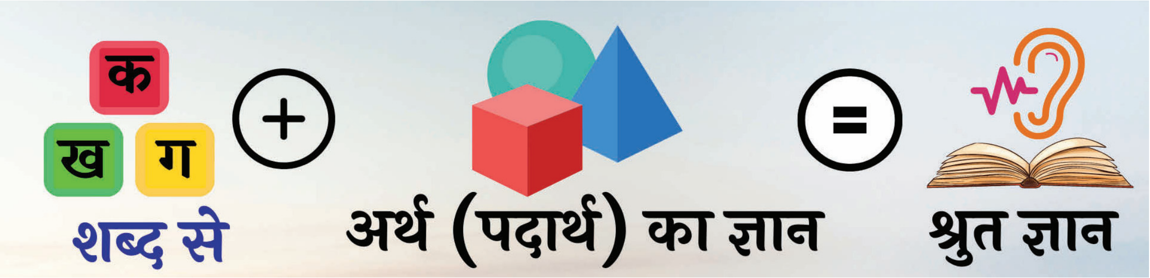


इन शब्दों का ज्ञान हो जाता है और इस शब्द से जो अर्थ बताया जाने वाला है, उस अर्थ का भी हमें ज्ञान हो जाता है इसलिए भी इस ज्ञान को श्रुत ज्ञान कहा जाता है। जो हम सुन रहे हैं, वह भी श्रुत ज्ञान है और जिसके माध्यम से हम सुन रहे हैं, वह भी श्रुत ज्ञान यानी वह ग्रन्थ यह भी अपने आप में क्या है?

श्रुत ज्ञान के लिए सहायक सामग्री है। यह कहलाता है- द्रव्य श्रुत। इसको क्या बोलते हैं? द्रव्य श्रुत। जो जिनवाणी हैं कागज पर लिखे हुए अक्षर हैं, शब्द हैं इसको हम क्या बोलेंगे?

द्रव्य श्रुत।

जो हमारे अन्दर इस द्रव्य श्रुत को समझने की क्षमता है उसे कहेंगे हम भाव श्रुत। क्या बोलते हैं? भाव श्रुत। भाव श्रुत में क्या होता है? जो हमारे अन्दर श्रुति ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम है, जिसके माध्यम से हम अक्षरों को समझ पा रहे हैं वह हमारा भाव श्रुत है और जितना हमारे पास भाव श्रुत होगा उसी के अनुसार हम द्रव्य श्रुत को समझ पाएँगे।

अब यह द्रव्य श्रुत एक तरह से बारह प्रकार का बताया गया जिसमें कि आप अङ्गों के ज्ञान रखते हैं। बारह अङ्ग होते हैं। जो आचाराङ्ग, सूत्रकृताङ्ग, समवायाङ्ग, स्थानाङ्ग,व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग, ज्ञातृधर्मकथांग, उपासकाध्ययनांग, अंतकृद्दशांग, अनुत्तरोपपादिकदशांग, प्रश्नव्याकरणांग, विपाकसूत्रांग और दृष्टिप्रवादांग ये बारह अङ्ग जो आप कभी जिनवाणी की पूजा करते हैं, उससे समझ लेना। ये बारह अङ्ग हैं और उसमें जो बारहवाँ अङ्ग है वह दृष्टिवाद अङ्ग है ।

## दृष्टिवाद अङ्ग

उस दृष्टिवाद अङ्ग में पॉच भेद हैं- पूर्व,प्रथमानुयोग, परिक्रम, सूत्र और चूलिका। ये उसके भेद बन जाते हैं और उन भेदों में भी जो पूर्वगत नाम का भेद है उसके चौदह भेद होते हैं तब हम उसे चौदह पूर्व कहते हैं। किसके भेद हैं चौदह? पूर्व के चौदह भेद हैं। अतः यह जो बारहवाँ अङ्ग है, बारहवें अङ्ग में पाँच चीजें हैं, कौन-कौन सी पाँच चीजें हैं? पूर्व, प्रथमानुयोग, परिक्रम, सूत्र और चूलिका। ये पाँच चीजें हैं। इन पाँच में से जो पूर्व के चौदह भेद होते हैं, उनको मिलाया जाता है। उत्पाद पूर्व, अग्रायणि पूर्व आदि ये पूर्व के 14 भेद होते हैं तब यह पूरा कहलाता है- बारह अङ्ग चौदह पूर्व। जब इस तरह का जो यह श्रुतज्ञान है, यह सारा का सारा अङ्ग प्रविष्ट नाम का श्रुतज्ञान कहलाता है। क्या कहा जाता है इसको?अङ्ग प्रविष्ट और जो अङ्ग बाह्य होता है, वह अलग होता है। वह दस वैकालिक आदि जो ग्रन्थ हैं, उनको अङ्ग बाह्य के रूप में स्वीकार किया गया है।

## ग्रन्थों को प्रमाणित कैसे माने?

अब इसको इस तरह से समझ सकते हो कि जैसे इन सूत्रों का ज्ञान कराने वाले या इन सूत्रों की रचना करने वाले जो आचार्य हैं, उनकी प्रमाणिकता तब बनती है जब उनसे पहले के आचार्यों से ये linked रहे हो। मतलब उनसे बिल्कुल जुड़े रहे हो और जो उससे भी पहले के आचार्य हैं वह भी गणधर आदि परमेष्ठी से जुड़े रहे हो और गणधर परमेष्ठी का तो साक्षात सम्बन्ध अरिहन्त परमेष्ठी से होता ही है। इसलिए तीर्थंकर की प्रामाणिकता से ही इन ग्रन्थों की प्रमाणिकता बनती चली जाती है। कई बच्चे पूछते हैं- हम इन ग्रन्थों को प्रमाणिक कैसे माने? और यह कैसे माने कि तीर्थंकरों की वाणी है या तीर्थंकरों ने कहा या तीर्थंकरों ने लिखा है? उन बच्चों को समझाना- तीर्थंकर कभी लिखते नहीं, तीर्थंकर सिर्फ बोलते हैं। उनके बोलने के बाद

में जो गणधर होते हैं-, वे सात प्रकार की ऋद्धियों से युक्त होते हैं और उनके पास में इतनी क्षमता होती है कि जो तीर्थंकरों ने कहा है, उसे वे समझ सकते हैं। इसलिए उनकी वाणी पहले आ जाती है, अन्य की वाणी आने से पहले, किसकी? किसी तीर्थंकरों के बाद में गणधरों की क्योंकि अन्य लोग भी सुन रहे हैं। लेकिन सबकी बात प्रामाणिक नहीं मानी जाएगी।

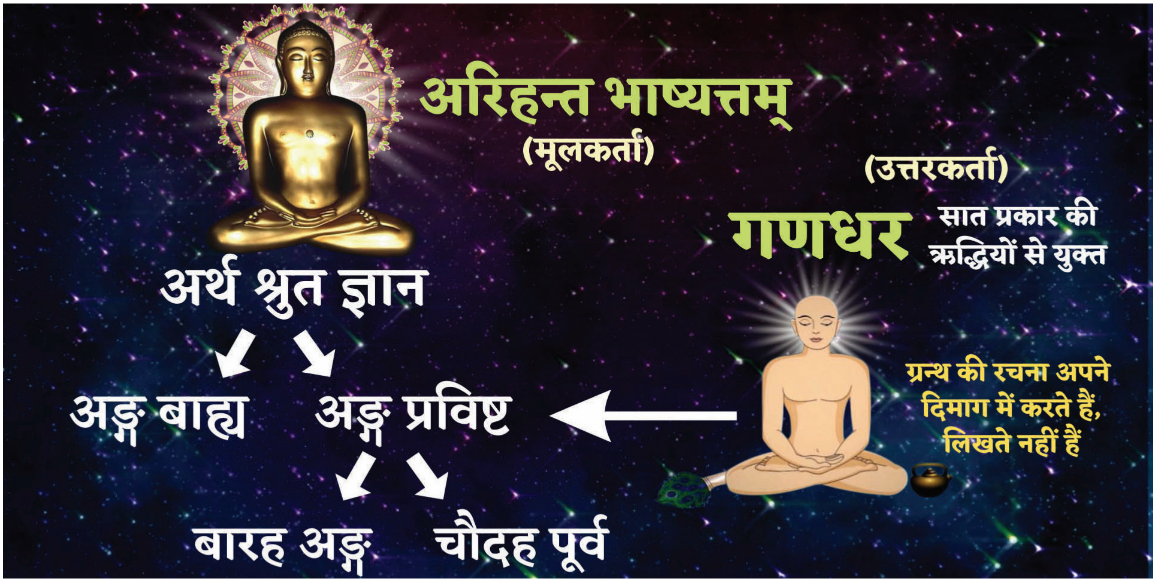


## बात किसकी मानी जाएगी?

गणधरों की। क्यों? क्योंकि उनके पास में सात प्रकार की ऋद्धियाँ हैं। ज्ञान की भी सभी ऋद्धियाँ हैं और उन ऋद्धियों में इतनी क्षमता होती है, जिसके माध्यम से वह दिव्य ध्वनि को समझ पाते हैं। सबसे पहले इन ग्रन्थों के जो मूल कर्ता होते हैं, वह तीर्थंकर कहे जाते हैं। उसके बाद में जो ग्रन्थ कर्ता होते हैं वह गणधर परमेष्ठी कहे जाते हैं। उन तीर्थंकरों को अर्थ का कर्ता कहा जाता है। वह केवल अर्थश्रुत अरहन्त भासियत्थं, अरिहन्त भगवान ने भाषित मतलब कहा

है- अर्थ, अर्थश्रुत। उसके अर्थ श्रुत को सुनने के बाद में उसे अवधारित करके, उसे बारह अङ्ग, चौदह पूर्व, अङ्ग बाह्य, अङ्ग प्रविष्ट आदि के भेदों में अलग-अलग करने का काम यह गणधर परमेष्ठी का है। ग्रन्थ की भी वह रचना अपने पहले दिमाग में करते हैं, लिखकर के नहीं करते हैं। लिखने का काम तो बहुत बाद का है। उनके द्वारा भी कुछ लिखा नहीं गया।

## श्रुतकेवली कौन होते हैं?

गणधर परमेष्ठी ने भी कुछ नहीं लिखा, तीर्थंकरों ने भी कुछ नहीं लिखा और जो गणधर थे, मूल ग्रन्थ रचना करने वाले, द्वादशाङ्ग की रचना करने वाले, उन्होंने भी कहीं एक अक्षर नहीं लिखा। लिखने का तो कोई काम ही नहीं क्योंकि श्रुतज्ञान का काम क्या है? सुनो और जानो। कान हैं, मन है, तो हमारे पास बैठो, नहीं तो जाओ। श्रुतज्ञान का मतलब क्या होता है? श्रुतज्ञान की परम्परा, श्रुतज्ञान का प्रवाह, तीर्थंकरों से चला, गणधर परमेष्ठी उसके मूलकर्ता नहीं, उत्तरकर्ता कहलाए। एक मूल कृति फिर एक उत्तर कर्ता। फिर उसके बाद में भी उन गणधरों में भी गणधर होते गए, गणधर होते गए, श्रुतकेवली होते गए, श्रुत केवलियों ने भी कुछ नहीं लिखा। श्रुतकेवली होने के बाद में जब तक यह श्रुतकेवली रहेंगे तब तक भी द्वादशाङ्ग का ज्ञान पूर्ण रहेगा। पूरा उनको भगवान की वाणी का पूरा ज्ञान होगा इसलिए उनको श्रुतकेवली कहा जाता है, तो वह भी उसके उत्तर कर्ता में आ गए।

## ग्रन्थों को लिपिबद्ध कब किया गया?

SCAN TO WATCH

उसके बाद में जब यह श्रुतज्ञान विस्मृत होने लगेगा, जब अङ्ग-पूर्वों का ज्ञान भूलने लगे, बुद्धि में क्षयोपशम कम होने लगा, धीरे-धीरे वह क्षयोपशम कम होते-होते इतना कम हो गया कि बस! थोड़ा-थोड़ा सबका ज्ञान रह गया तब लिखना शुरु हुआ। वह जो लिखा गया, वह उसी में से लिखा गया जो भगवान तीर्थंकरों के मुख से निसृत हुआ था। कहीं अलग से नहीं लिखा गया और उन्हीं प्रमाणित आचार्यों ने लिखा जो उनके उस ज्ञान की धारा में आ रहे थे और उन्होंने जो भी अपने पूर्व आचार्यों से सुना, उसको फिर उन्होंने लिपिबद्ध किया और यह लिपिबद्ध होने का कार्य बहुत देर में हुआ। अब इसकी प्रामाणिकता ऐसी ही समझना कि जैसे कहीं कोई गंगा का पवित्र जल है। गंगा तो बहुत बड़ी है। अब वह गंगा सबसे पहले गौतम गणधर के मुख में गिरी तो वह गंगा जो बहुत बड़ी थी, वह पहले गौतम गणधर के कुण्ड में गिरी और फिर उस कुण्ड में से भी वही गंगा निकलेगी जो गंगा तीर्थंकरों के मुख से निकली। आप बोलते हो न कभी-कभी

**वीर-हिमाचल से निकली, गुरु-गौतम के मुख-कुण्ड ढरी है।**
**मोह-महाचल भेद चली, जग की जड़ता-तप दूर करी है॥**

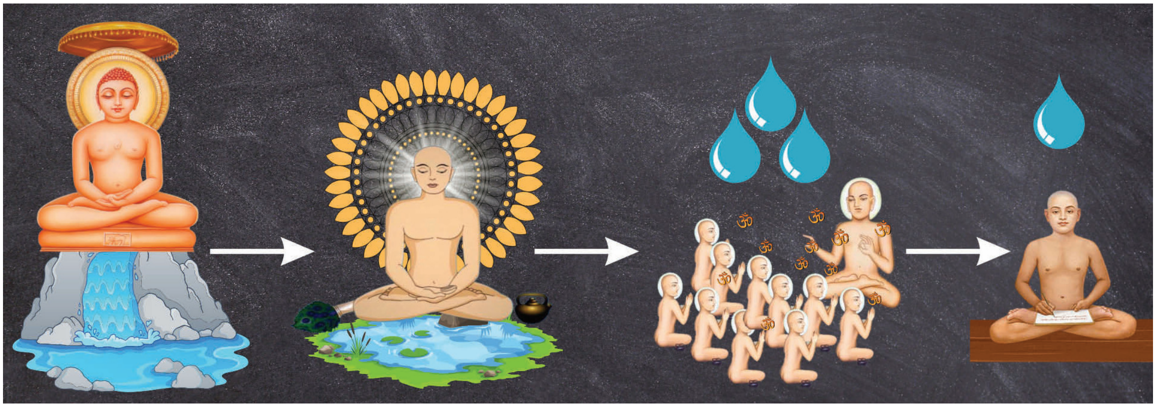

बोलते हो न? पूरी पढ़ने की जरूरत तो नहीं? वीर हिमाचल के मुख से निकली गुरु गौतम के मुख कुण्ड ढरी। वह हिमाचल से निकली, गुरु गौतम के मुख कुण्ड पर आई और फिर उनके भी मुख कुण्ड से निकली तो वह आचार्यों के द्वारा हम तक आई। आचार्य कहते हैं- यह वह वीर हिमाचल मतलब जो पर्वत है, उस पर्वत के ऊपर जो बड़ा-बड़ा ह्रद है, तालाब है वह उसी का जल हमारे पास आते, आते, आते, आते यह बूँद रूप में रह गया इसलिए इस बूँद की पवित्रता उतनी है, जितनी उस पर्वत के ऊपर जो कुण्ड बना है, उसकी पवित्रता है। इस बूँद की भी प्रमाणिकता उतनी है, जितनी प्रमाणिकता उस बड़े अगर हम घड़े में भी जल रखेंगे तो उसका जितना हमारे लिए स्वाद आएगा, अब छोटा-सा भी अगर हमारे पास में आज बूँद रूप ज्ञान है, तो हमें आज उसमें भी उतना ही स्वाद आएगा क्योंकि जल तो वही है न! इस तरह से यह जैन श्रुत की प्रमाणिकता को बच्चों को सिखाना चाहिए। जल वही है, जो तीर्थंकर के मुख से निकला। लेखन बाद में होता है। यह श्रुत ज्ञान है, कई वर्षों तक जो पहले सुनते-सुनते चलता रहा।

## वाणी की प्रमाणिकता

उसके बाद में जब ज्ञान का क्षयोपशम कम होने लगा तब आचार्यों ने लिखना शुरु किया और जिन्होंने अल्पबुद्धि वाले लोगों के लिए अल्प शक्ति वाले लोगों के लिए थोड़े क्षयोपशम वाले लोगों के लिए लिखा, उनका भी क्षयोपशम एक तरह से पूर्व आचार्यों की अपेक्षा से तो कम हो ही गया था लेकिन हम लोगों की अपेक्षा से तो बहुत था तब उन्होंने इतना लिखा। उन्होंने भी जो लिखा वे आचार्य भी इसलिए प्रमाणिक क्योंकि वह वही लिख रहे हैं जो आचार्यों के मुख से उन्होंने अपने से पहले सुन रखा है। इस तरह से तीर्थंकरों का ही यह ज्ञान है,यह प्रमाणिक किया जाता है और जब इस तरह की प्रमाणिकता आ जाती है तब आपके अन्दर फिर यह तर्क आना ही नहीं चाहिए कि हम तो वही ग्रन्थ पढ़ेंगे जो तीर्थंकरों ने लिखे हो। तुम कभी नहीं पढ़ना, तुम हो महा बहानेबाज! तुम्हें पढ़ना नहीं इसलिए इस तरह के कुतर्क कर रहे हो!
जिन्हें पढ़ना है, वह पढ़ेंगे-सीखेंगे आखिर हमें यह देखना पड़ेगा, तीर्थंकर जैसे महापुरुष कभी

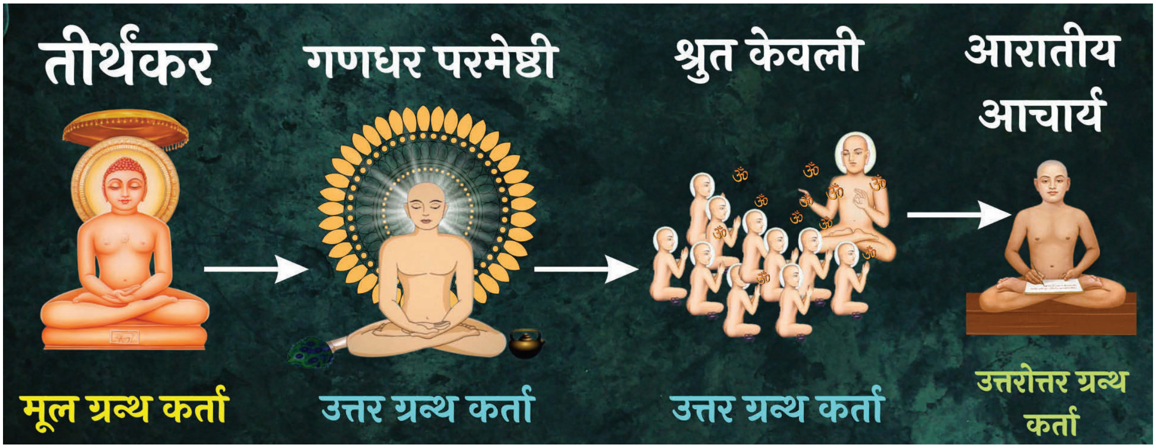


भी कुछ नहीं लिखते। जब गणधर परमेष्ठी नहीं लिखते, श्रुत केवली नहीं लिखते तो बाद में इन आचार्यों को आरातीय आचार्य कहा जाता है। क्या बोलते हैं इनको? आरातीय आचार्य मतलब ये तीन ग्रन्थ कर्ताओं में तीन प्रकार के लोग हो गए। एक तो तीर्थंकर मूल ग्रन्थ कर्ता, गणधर परमेष्ठी और श्रुत केवली ये सब उत्तर ग्रन्थ कर्ता और फिर उसके बाद में जो आरातीय आचार्य हुए उत्तरोत्तर ग्रन्थ कर्ता के रूप में कहे जाते हैं। इसलिए यह वाणी प्रामाणिक मानी जाती है और यह श्रुत का प्रवाह भी प्रमाणिक कहा जाता है।

## श्रुतज्ञान अनादि अनन्त है, ग्रन्थ अनादि अनन्त नहीं है

**प्रवाह की अपेक्षा अनादि अनंत है**

SCAN TO WATCH

यह ध्यान रखना कि श्रुत एक व्यक्ति की अपेक्षा से देखा जाए तब तो वह सादि शान्त है। एक तीर्थंकर की अपेक्षा से देखा जाए, तीर्थंकर के तीर्थ की अपेक्षा से देखा जाए तो श्रुत सादि शान्त है। सादि शान्त का मतलब? सा मतलब

सहित आदि मतलब प्रारम्भ। जो आदि मतलब प्रारम्भ से सहित हो और अन्त से सहित हो, उसको बोलते हैं-,सादि शान्त। सुन रहे है? लेकिन प्रवाह की अपेक्षा से देखा जाए तो अनादि अनन्त है। ग्रन्थ की रचना की अपेक्षा से देखा जाएगा तो ग्रन्थ की रचना अनादि की नहीं है। ग्रन्थ की रचना तो सादि है, उसका प्रारम्भ हुआ है, अनादि से लिखा हुआ नहीं है। लेकिन ज्ञान के प्रवाह की अपेक्षा से देखेंगे ज्ञान! तो ज्ञान अनादि से है। जो ज्ञान है हमें तीर्थंकर वर्धमान भगवान से मिला, वही ज्ञान उससे पहले तीर्थंकर पारसनाथ से मिल रहा था, वही ज्ञान उससे पहले तीर्थंकर नेमिनाथ ने दिया, उससे पहले तीर्थंकर नमिनाथ ने दिया, इस तरह से यह अनादि परम्परा ऋषभदेव से शुरु तो हुई लेकिन ऋषभदेव से भी पहले यहाँ पर तीर्थंकर नहीं थे तो कोई बात नहीं। विदेह क्षेत्र आदि में तीर्थंकर तो हमेशा चलते हैं, रहते हैं और इस तरह की परम्परा का, तीर्थंकरों की परम्परा का कोई भी आदि नहीं है, प्रारम्भ नहीं है। इसलिए यह ज्ञान श्रुतज्ञान अनादि अनन्त है। श्रुतज्ञान तो अनादि अनन्त है, ग्रन्थ अनादि अनन्त नहीं है। शब्द जो लिखे गए हैं, यह रचना अनादि अनन्त नहीं है। लेकिन जो इसमें ज्ञान दिया गया है, वह अनादि अनन्त है। इस तरह से समझते हुए हमें जानना कि यह जो ज्ञान की परम्परा अनादि अनन्त है, तो क्यों है? अगर तीर्थंकरों का प्रभाव है, तो तीर्थंकरों के माध्यम से यही ज्ञान निकलेगा जो ज्ञान आपको दिया जा रहा है। साक्षात् तीर्थंकर के समक्ष भी आप इसी तरह के मतिज्ञान, श्रुतज्ञान के बारे में जान पाएँगे। कहना चाहिए बूँद तो है लेकिन वह बून्द-बून्द ज्ञान भी इतना सारभूत है कि हमें लगता नहीं कि यह सारभूत ज्ञान से बढ़कर के भी और कोई ज्ञान होता होगा, कुछ छूटा हुआ है, ऐसा लगता नहीं।

## ज्ञान पिपासा शान्त करने के लिए पर्याप्त शास्त्र उपलब्ध हैं

जो मुख्य प्रयोजनीय है, सारभूत ज्ञान है वह सब हमारे लिए आज भी उपलब्ध है और बहुत विस्तार है, तो उस विस्तार में से कुछ विस्तार नहीं है, तो कोई बात नहीं लेकिन मूल चीज तो है। गंगा का जल कैसा है? क्षीर सागर का जल कैसा है? वह तो आपको एक चुल्लू भी मिल जाएगा तो उतना ही पीने से taste आ जाएगा और जो एक चुल्लू पानी का taste होगा, वही पूरे समुद्र का होगा, वही पूरी नदी का होगा। फिर बहुत पीने की इच्छा क्या करते हो? जितना मिल रहा है, पहले उतना पीने की शक्ति तो ले आओ। इच्छा करने से तो क्या होगा? अगर नदी भी तुम्हारे सामने से बह रही है और तुम्हारे अन्दर पीने की इच्छा ही नहीं है, तो नदी भी क्या करेगी? जितनी प्यास है वह प्यास तुम्हारी आज भी बुझ सकती है। अगर इतने बड़े-बड़े ग्रन्थ हैं, जिन्हें हमने आज तक, आधी जिन्दगी गुजर गई पढ़ा नहीं तो अब कब पढ़ोगे। प्यास बुझाने के लिए तो हमारे पास आज भी सब कुछ पर्याप्त साधन हैं। हम बस अपने अन्दर जिज्ञासा बनाए रखे। अपनी ज्ञान पिपासा को बनाए रखे और उसके अनुसार इन शास्त्रों का अध्ययन करने में अपना चिन्तन-मनन करने की शक्ति लगाएँ। श्रुत का प्रवाह कैसा है? प्रवाह की अपेक्षा से अनादि अनन्त है लेकिन किसी शास्त्र विशेष की अपेक्षा से हम उसे सादि शान्त

भी कह सकेंगे और यह भी शास्त्र कब तक रहेगा? जब तक पञ्चम काल रहेगा। उसके बाद तो यह सब भी समाप्त ही होना है। लेकिन यहाँ पर वह सब कुछ समाप्त होगा इस क्षेत्र में, अन्य क्षेत्रों में तो वह श्रुत का प्रभाव फिर चलता रहेगा और इस क्षेत्र में फिर से जब यह धर्म का प्रभाव शुरू होगा तो फिर यही ज्ञान फिर शुरू हो जाएगा। इस तरह से यह अनादि-अनन्त प्रवाह श्रुत ज्ञान का निरन्तर चला करता है।

## श्रुत ज्ञान ही सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान है

श्रुत ज्ञान ही सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान है इसलिए ज्यादा बता रहा हूँ, ज्यादा समय ले रहा हूँ, जिस पर हमें focus करना है, उस पर हमें समय लगाना ही होता है। मतिज्ञान इतना महत्वपूर्ण नहीं, अवधिज्ञान-मन:पर्यय ज्ञान भी महत्वपूर्ण नहीं, केवलज्ञान भी महत्वपूर्ण नहीं, आपके लिए सिर्फ श्रुत ज्ञान महत्वपूर्ण है। क्या करोगे आप? केवल ज्ञान को जानने से क्या होगा? उल्टा आपकी बुद्धि खराब और होगी और केवल ज्ञान में अपनी बुद्धि डालोगे तो फिर बस वही होगा; सब निश्चित है, सब निश्चित है, सब भविष्य की पर्याय दिख रही हैं, अब हम क्या करें? फिर वह क्रमबद्ध पर्याय और यह पर्याय, वह पर्याय ये सब उल्टे ज्ञान फिर शुरू हो जाएँगे इसलिए केवल ज्ञान भी महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण क्या है? श्रुतज्ञान। जो लिखा गया है, वह श्रुतज्ञान हमारे लिए महत्वपूर्ण है, इसको समझो। यह श्रुतज्ञान जैसे दो प्रकार का आपको बताया तो ये दो प्रकार कई तरीके से बनते हैं- एक अंग बाह्य अंग प्रविष्ट रूप में भी हो गया, द्रव्य श्रुतज्ञान भाव-श्रुतज्ञान के रूप में भी हो गया और एक यह श्रुतज्ञान इस तरह से भी समझा सकता है- अक्षरात्मक और अनक्षरात्मक श्रुतज्ञान।

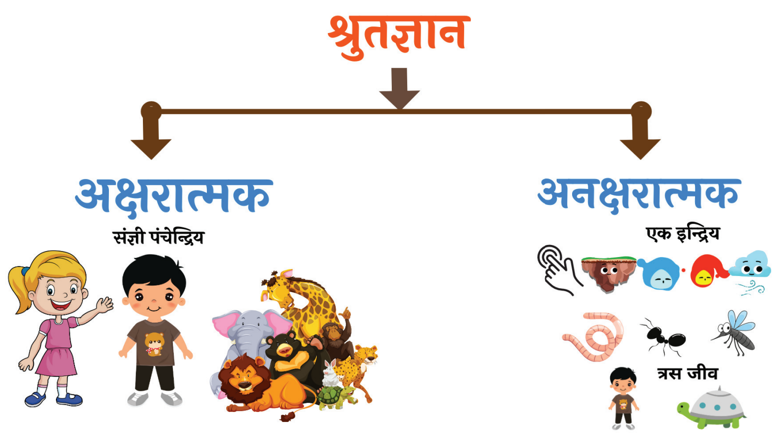

## अक्षरात्मक और अनक्षरात्मक श्रुत ज्ञान में अन्तर

1. अक्षरात्मक- जो हम सुन रहे हैं वह तो सब अक्षरात्मक हो गया। अतः सुन कर के जो हमको श्रुतज्ञान हो रहा है, वह तो सब अक्षरात्मक बन गया।
2. अनक्षरात्मक - अनक्षरात्मक भी बहुत-सा होता है, जो बिना सुने भी हो रहा है हमको। क्या हो रहा है, बिना सुने बताओ? आपकी पीठ पर, आपके पैर पर, जहाँ आप बैठे हो, अगर एक चींटी चढ़ जाती है, तो आप बैठे-बैठे भी समझ लेते हो क्या हो रहा है? क्यों इधर-उधर हो रहे हो? क्यों बार-बार इधर-उधर हाथ लगा रहे हो? क्या हो रहा है? देख लिया था क्या आपने चींटी चढ़ी? देखी तो नहीं फिर कैसे पता पड़ गया? उस चींटी का जो स्पर्श हुआ, यह तो हो गया- 'स्पर्शन जन्य मतिज्ञान' और उस मतिज्ञान होने के बाद में आपको लगा कि यह चींटी अगर चढ़ गई है, तो काट भी लेगी और यह लग रहा है, लाल वाली है, चिपक गई तो निकलेगी नहीं, हटेगी नहीं। यह क्या हो गया आपका? यह श्रुतज्ञान हो गया। यह श्रुतज्ञान वहाँ कैसे लग गया? यह अनक्षरात्मक श्रुतज्ञान है। इसको क्या बोलेंगे? अनक्षरात्मक।

हमारा हित अगर होता है, हमारे काम में कोई ज्ञान आता है, तो वह अक्षरात्मक श्रुतज्ञान। जो हम आपको समझा रहे हैं, आप समझ रहे हैं, हमें भी जिन्होंने समझाया यह सब श्रुतज्ञान की जो परम्परा है, वह है- अक्षरात्मक श्रुतज्ञान की परम्परा। अनक्षरात्मक तो अपने आप भी होता है और अनक्षरात्मक श्रुतज्ञान एक इन्द्रिय से लेकर के संज्ञी पंचेन्द्रिय तक सभी को होता है। लेकिन अक्षरात्मक श्रुत ज्ञान जो होगा वह संज्ञी पंचेन्द्रिय को ही होगा। इसलिए यह महत्वपूर्ण ज्ञान है।

### भाव श्रुत ज्ञान के भेद

**बीस प्रकार का भाव श्रुत ज्ञान**

इन अक्षरों के इस श्रुतज्ञान को हम जान करके कि यह भी हमारे लिए एक द्रव्य श्रुत है और यह भी हमारे अन्दर जो भाव श्रुतज्ञान का एक क्षयोपशम है, उसके अनुसार ही यह द्रव्य श्रुत हमको समझ में आएगा। बीस प्रकार का भाव श्रुत ज्ञान बताया गया है- पर्याय, पर्याय समास, इसके आगे प्राभृत, अक्षर, अक्षर समास, प्राभृत-प्राभृत, प्राभृत इस तरह से समास करते-करते इनके बीस भेद हो जाते हैं।

**"पर्याय-अक्षर-पद-संघात-प्रतिपत्तिका-अनुयोगविधीन्**
**प्राभृतक -प्राभृतकं प्राभृतकं वस्तु-पूर्वम् च।"**

इन सबमें समास, समास और जोड़ते चले जाओ, बीस भेद हो जाएँगे। ये हैं- हमारे ज्ञान के क्षयोपशम के नाम। Simple सा इतना समझने का है कि एक ज्ञान जैसे पर्याय अक्षर है तो पर्याय, पर्याय समास, अक्षर, अक्षर समास फिर उसके बाद आएगा पद, पद समास, संघात, संघात समास मतलब जैसे-जैसे ये हमारे ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के नाम हैं। अगर यह ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम हमारे अन्दर होगा तभी हमें वह ज्ञान जो बाहर है, वह समझ में आएगा। मतलब पर्याय श्रुतज्ञान से शुरू होकर के अक्षर श्रुतज्ञान से आगे बढ़ता हुआ मतलब अक्षर श्रुतज्ञान हो गया- पर्याय, अक्षर, पद फिर हमें पदों का ज्ञान हो गया। अब पदों में जितना पद द्वादशांग बताया गया, उसके ज्ञान होने का नाम पदनाम का श्रुतज्ञान है। वह हमारे अन्दर क्षयोपशम होगा तभी हमें सब द्वादशांग के पद समझ में आएँगे और यह last तक जाता 'वस्तु-पूर्वम् च' मतलब पूर्व तक यह जाता है- पूर्व, पूर्व समास तक।

## हममें ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम नहीं है

SCAN TO WATCH

मतलब हमें पूर्वों का ज्ञान इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि हमारे पास में पूर्व को जानने वाले ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम नहीं है, इसलिए नहीं हो सकता। आप कहो हमें आज पूर्व क्यों नहीं उपलब्ध हुए? इतना विशाल जो ज्ञान का साम्राज्य है, उसको जानने की आप में क्षमता ही नहीं है, ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम ही नहीं है। अतः हमारे अन्दर जितना क्षयोपशम है, उसके अनुसार हमारे पास में चीजें हैं। वस्तुएँ ज्यादा हो, पानी बहुत बह रहा हो और प्यास बिल्कुल न हो तो पानी का भी क्या प्रयोजन है? अविनय ही करोगे। इतने से तो ज्ञान की हम विनय नहीं कर पा रहे हैं। वस्तु और पूर्व का ज्ञान होगा तो क्या करोगे? अविनय ही करोगे। इतना बहुमान भी तब आता है जब ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम भी बढ़ा हुआ हो। इसलिए जो हमारे पास है, वह कम नहीं है और श्रुतज्ञान ही हमारा आत्महित करने वाला है। यही श्रुतज्ञान है जिसके चिन्तन से धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान होते हैं, इसलिए उस श्रुतज्ञान को अच्छे ढंग से जानो। 'श्रुतं मतिपूर्वं' मतिज्ञान पूर्वक होगा और यह सब आपको पहले बताया जा चुका है कैसे होगा

मतिज्ञान पूर्वक? उदाहरण देकर के समझाया जा चुका है। 'द्वयने द्वादश भेदम्' दो भेद वाला है। फिर दो के भी अनेक और बारह भेद करके इस तरह से सकल द्रव्य श्रुत ज्ञान और सकल भाव श्रुत ज्ञान। इसके बारे में आप अगर और ज्यादा details से जानना चाहे तो आप बड़े-बड़े जो जीवकाण्ड ग्रन्थ हैं, सर्वार्थ सिद्धि आदि ग्रन्थ हैं, उनका आप विशेष अध्ययन करें, इससे अगर आपको जिज्ञासा पैदा हो गयी हो तो। ठीक है! अब हम थोड़ा-सा आगे बढ़ते हैं।

## देव और नारकी में अवधिज्ञान

**भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनाकाराणाम् ॥1.21॥**

**भव प्रत्ययः + अवधिः + देव + नारकाणाम्**

**द्रव्य आदि सीमा सहित, रूप पदारथ ज्ञान।**
**भव प्रत्यय से ही मिले, सुर नारक को ज्ञान॥1.21॥**

अब यहाँ पर अवधिज्ञान का प्रकरण प्रारम्भ होता है। श्रुतज्ञान सिर्फ एक सूत्र में लिखा गया। अवधिज्ञान इस अवधिज्ञान के दो भेद हैं-

- एक अवधिज्ञान होता है- भव प्रत्यय और
- एक अवधिज्ञान होता है- गुण प्रत्यय

प्रत्यय मतलब होता है- कारण, निमित्त, हेतु, the cause जिसको बोलते हैं। भव ही जिसमें कारण है। भव मतलब? जो संसार आयु कर्म के उदय से हमको मिलता है, उसको भव कहते हैं। 'देवनारकाणाम्' यहाँ पर देव और नारकी दो भवों को लगाना क्योंकि दो के लिए कहा जा रहा है। यानी जो भी देव पर्याय में जन्म लेंगे, जो भी नरक पर्याय के साथ जन्म लेंगे, उन जीव आत्माओं को जो भी अवधिज्ञान मिलेगा, उसका नाम कहलाएगा- "भव प्रत्यय अवधिज्ञान" क्यों कहलायेगा? क्योंकि भव ही उनके लिए कारण हो गया है। देव आयु जिसको मिलेगी, नरक आयु जिसको मिलेगी उसको नियम से अवधिज्ञान मिलेगा ही। आ गई बात समझ में? अब जैसे ही देव आयु का उदय हुआ उसके लिए यह अवधिज्ञान भी मिलेगा ही।

## मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मिथ्या और सम्यक् दोनों होते हैं

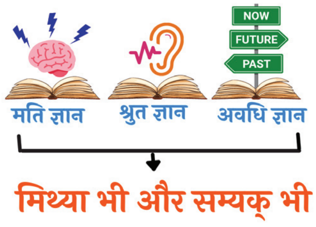

यह भी जानना कि यहाँ जो अवधि शब्द लिखा है, यह सम्यग्ज्ञान के लिए है, मिथ्या ज्ञान के लिए नहीं है। ऊपर भी जो श्रुत शब्द आया वह सम्यग्ज्ञान के लिए था, मिथ्याज्ञान के लिए नहीं था क्योंकि यहाँ सम्यग्ज्ञान का प्रकरण चल रहा है। यह भी ध्यान में रखना कि मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान यह तीनों ज्ञान मिथ्या भी होते हैं और सम्यक् भी होते हैं। सम्यक् होंगे तो सम्यग्दर्शन के साथ होंगे। मिथ्या होंगे तो सम्यग्दर्शन के बिना होंगे, मिथ्यात्व के साथ होंगे, मिथ्यादर्शन के साथ होंगे। उनको क्या बोलेंगे? मिथ्या ज्ञान! जब यह ज्ञान अवधिज्ञान मिथ्या होता है, तो इसका दूसरा नाम शास्त्रों में कहा जाता- विभंग ज्ञान। क्या बोलते हैं? विभंग ज्ञान। अवधिज्ञान अगर सम्यक् है, सम्यग्दर्शन के साथ है तब तो वह जीव के लिए जैसे ही आयु कर्म का उदय आया, सम्यग्दर्शन के साथ होगा तो अपर्याप्त अवस्था में भी उसको अवधिज्ञान मिल जाएगा। क्योंकि कभी भी जीव का जन्म होता है, तो पहले एक अन्तर्मुहूर्त अपर्याप्त अवस्था रहती है। चाहे वह देवों में जाए, चाहे नारकियों में, चाहे मनुष्यों में उसके बाद में वह पर्याप्त होगा। अतः जो सम्यग्दृष्टि का अवधिज्ञान होगा, वह तो अपर्याप्त अवस्था में भी रहेगा। लेकिन अगर विभंग ज्ञान उसको उत्पन्न होगा तो एक अन्तर्मुहूर्त के बाद पर्याप्त होने पर ही होगा।

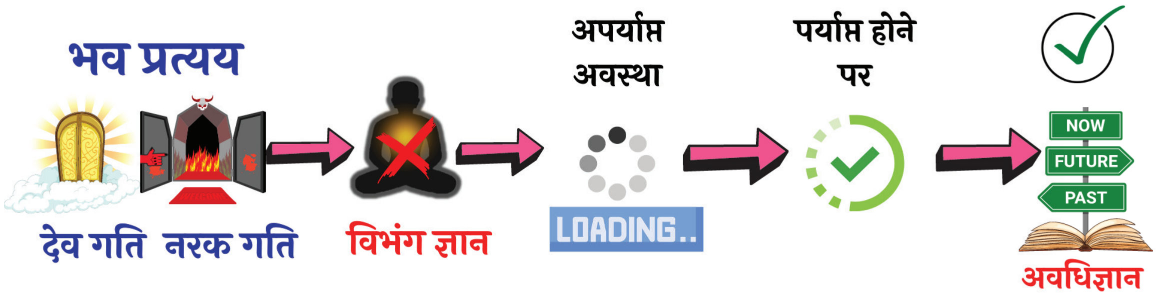


चाहे वह देव हो, चाहे वह नारकी हो। मतलब देवों में भी और नारकियों में भी मिथ्या दृष्टियों को भी ज्ञान अवधिज्ञान के रूप में उत्पन्न अवश्य होगा क्योंकि भव प्रत्यय उनको भी होता है लेकिन वह अन्तर्मुहूर्त के बाद होगा। अब यह नियामक हो गया। क्या नियामक होगा? यह अवधिज्ञान देवों में और नारकियों में नियम से होता है। किसके कारण से हो जाता है? उनका वह भव ही उसमें मुख्य कारण बताया गया। क्या उनको अवधि ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम नहीं होता? होता तो है। बिना अवधि ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के कोई भी अवधिज्ञान नहीं होगा। लेकिन उस अवधि ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम में भी कारण उनका भव है। वह आयु का उदय है- देव आयु, नरक आयु। जैसे कि हम देखते हैं कि पक्षियों को सिखाना नहीं पड़ता, वह अपने आप उड़ने लग जाते हैं, बिना शिक्षा के, बिना प्रयासों के उसी तरह से बिना किसी भी प्रकार के और कारण के देवों को, नारकियों को अवधिज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। इसलिए इन दोनों गतियों में भव को ही मुख्य कारण बताया गया है।

**भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनाकाराणाम् ॥1.21॥**

गुण प्रत्यय किसे कहते हैं?

आगे कहते हैं-

**क्षयोपशमनिमित्तः षड् विकल्पः शेषाणाम्।।1.22।।**

**क्षयोपशम + निमित्तः - षड् + विकल्पः - शेषाणाम्**

**क्षयोपशम के हेतु से, नर पशु गति में ज्ञान।**
**छह प्रकार का होत है, अवधि ज्ञान महान॥1.22॥**

SCAN TO WATCH

'शेषाणाम् ' का मतलब होता है- अब जो शेष बचे। कौन बचे? देव-नारकी का तो वर्णन हो गया। अब कौन बचा है? मनुष्य और तिर्यंच। इन मनुष्य और तिर्यंचों में भी अवधिज्ञान होते हैं। किस कारण से होंगे? 'क्षयोपशमनिमित्तः' यहाँ पर क्या निमित्त बनाया? क्षयोपशम को निमित्त बनाया। इसी को बोलते हैं- गुण प्रत्यय। गुण का मतलब होता है- सम्यग्दर्शन, सम्यग्चारित्र आदि, ये जो गुण कहलाते हैं, इनके निमित्त से जो ज्ञान होगा वह ज्ञान गुण प्रत्यय कहलाएगा। ऐसा यह गुण प्रत्यय वाला ज्ञान, क्षयोपशम तो एक सामान्य निमित्त हो गया क्योंकि बिना क्षयोपशम के कभी ज्ञान होता नहीं तो क्षयोपशम भी कारण है। लेकिन इसके साथ-साथ सम्यग्दर्शन आदि गुणों का होना भी जरूरी है। सम्यग्दर्शन आदि के होने पर ही यह अवधिज्ञान मनुष्य और तिर्यंचों में उत्पन्न होगा। मिथ्यादृष्टियों को भी होता है, उसकी यहाँ चर्चा नहीं लेकिन अगर होगा तो वह विभंग ज्ञान कहलाएगा। सम्यग्दर्शन के साथ में जो होगा वह सम्यग्ज्ञान कहलायेगा और ये जो ज्ञान की उत्पत्ति होती है वह भी सम्यग्दर्शन आदि के होने पर ही होती है- अवधिज्ञान की उत्पत्ति। जब सम्यग्दृष्टि जीव की दर्शन विशुद्धि आदि इतनी बढ़ जाती है कि वह अवधिज्ञान के क्षयोपशम को भी प्राप्त कर पाए तो उसे अवधिज्ञान की प्राप्ति होती है।

## अवधिज्ञान के छह प्रकार

यह 'क्षयोपशमनिमित्तः षड् विकल्पः' छह भेद वाला है। इसके कितने भेद होते हैं? 6 भेद होते हैं। 6 भेद कौन-कौन से हैं? एक कहलाता है- अनुगामी, दूसरा कहलाता है- अननुगामी, तीसरा कहलाता है- वर्धमान, चौथा- हीयमान, पाँचवाँ अवस्थित और छठवाँ अनवस्थित। ऐसे छह प्रकार का यह अवधिज्ञान होता है।

- अनुगामी का मतलब होता है- जो अवधिज्ञान हमारे साथ अन्य क्षेत्र में भी चला जाए, अन्य भव में भी चला जाए, उसे कहेंगे अनुगामी। हमारे साथ देव में भी चला जाए, देव

का यहाँ पर भी आ जाए, ऐसा भी अवधिज्ञान है न! जैसे कि सूर्य के साथ में उसका जो प्रकाश रहता है, वह जहाँ-जहाँ सूर्य होगा, वहाँ-वहाँ उसका प्रकाश होगा। वैसे ही आत्मा के अन्दर जहाँ अवधिज्ञान इस quality का होगा तो वह कहलाएगा- अनुगामी अवधिज्ञान और

- जो अवधिज्ञान इस क्षेत्र में तो है मतलब भरत क्षेत्र है, ऐरावत क्षेत्र में जाओ तो काम नहीं करे, विदेह क्षेत्र में जाओ तो नहीं काम करे या दूसरे भव में चले जाओ और नहीं काम करे। छूट गया तो वह क्या कहलाएगा? अननुगामी अवधिज्ञान कहलाएगा।

## अवधिज्ञान के छह प्रकार

| | |
|---|---|
| 1. अनुगामी | जो अवधिज्ञान हमारे साथ अन्य क्षेत्र में भी चला जाए |
| 2. अननुगामी | जो अवधिज्ञान हमारे साथ अन्य क्षेत्र में नहीं जाए |
| 3. वर्धमान | बढ़ता हुआ |
| 4. हीयमान | घटता हुआ |
| 5. अवस्थित | जैसा प्राप्त हुआ है, वैसा ही बना रहना |
| 6.अनवस्थित | कभी घट गया, कभी बढ़ गया |

- तीसरा वर्धमान रूप अवधिज्ञान होता है। वर्धमान मतलब होता है- बढ़ता हुआ। ऐसा भी अवधिज्ञान होता है कि जो सम्यग्दर्शन की वृद्धि, सम्यग्चारित्र की वृद्धि से बढ़ता चला जाता है, बढ़ता हुआ। जैसे कहीं आपने देखा हो कि जंगल हो और जंगल में कहीं आग लग जाए तो वह आग छोटे रूप में लगती है और बढ़ती चली जाती है, बढ़ती चली जाती है, बढ़ती चली जाती है। उसको बोलते हैं- दावानल। क्या बोलते हैं? जंगल की आग। कई बार सुनने में आता है न! फ्राँस के जंगलों में आग लग गई है। लम्बे समय तक लगी रहती है, वह महीनों तक भी चलती है, बढ़ती चली जाती, सारा का सारा जंगल सफाया कर देती। उसको बुझाना बड़ा मुश्किल हो जाता है क्योंकि जंगल में पत्तियाँ, लकड़ियाँ सब जगह है और आग उसी से बढ़ती चली जाती है तो इसी तरीके से अवधिज्ञान बढ़ता हुआ हो तो उसको क्या बोलेंगे? वर्धमान और
- हीयमान मतलब घटता हुआ भी अवधिज्ञान होता है। जो हमें प्राप्त हुआ है, उसकी जो शक्ति है, उसकी जो क्षेत्र काल की मर्यादाएँ हैं, संक्लेश परिणामों के कारण से वह घटती हुई भी

जा सकती है। पहले भी बताया था न आपको? ज्ञान विशुद्धि से बढ़ता है और संक्लेश से घटता है। अवधिज्ञान भी विशुद्धि से बढ़ता है और संक्लेश से घटता चला जाता है। यह ऐसा भी अवधिज्ञान होता है। अब जैसे मान लो वह जंगल की अग्नि आग तो लगी एक बड़े रूप में लेकिन बढ़ने के लिए उसे कोई दूसरा चारा नहीं मिला। चारा जान गये? हाँ! सामग्री नहीं मिली तो वह वहीं के वहीं बुझकर के धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगी। उसी तरीके से हीयमान नाम का भी अवधिज्ञान होता है। अवधिज्ञान होकर के खत्म भी सकता हैं। क्या बड़ी बात है? क्षयोपशम है। बिल्कुल ही छूट जाए, यह भी हो सकता है। जब उत्पन्न हुई है कोई चीज तो नष्ट होने में कोई बाधा ही नहीं है। बिलकुल ही बुझ जाए, यह भी सम्भावना है, तो हीयमान हो गया बहुत कम हो गया, बिलकुल भी न रहे यह भी सम्भव है।

- अवस्थित होता है- जैसा प्राप्त हुआ है, वैसा ही बना रहना। जैसे किसी के शरीर पर तिल-मस्से वगैरह होते हैं, उसके शरीर के साथ अब पूरी उम्र भर वह बने रहेंगे तो यह क्या? इसी तरीके से जैसा अवधिज्ञान मिला वैसा ही बना रहना, उसको बोलेंगे- अवस्थित।
- अनवस्थित कभी घट गया, कभी बढ़ गया। विशुद्धि हो गई तो बढ़ गया, संक्लेश हो गया तो घट गया। यह सब क्या हो गया? अनवस्थित। जैसे कि समुद्र में, नदियों में तरंगे उत्पन्न होती हैं, हवा चल गई तो तरंगे आएँगी। हवा नहीं चली तो तरंगे नहीं दिखाई देंगी। इसी तरीके से कभी है, कभी नहीं है, ऐसा यह अनवस्थित रूप में भी अवधिज्ञान होता है। यह 6 भेद वाला अवधिज्ञान जानना। यह किसको होगा? मनुष्य और तिर्यंचों के होगा।

## अवधिज्ञान के तीन भेद

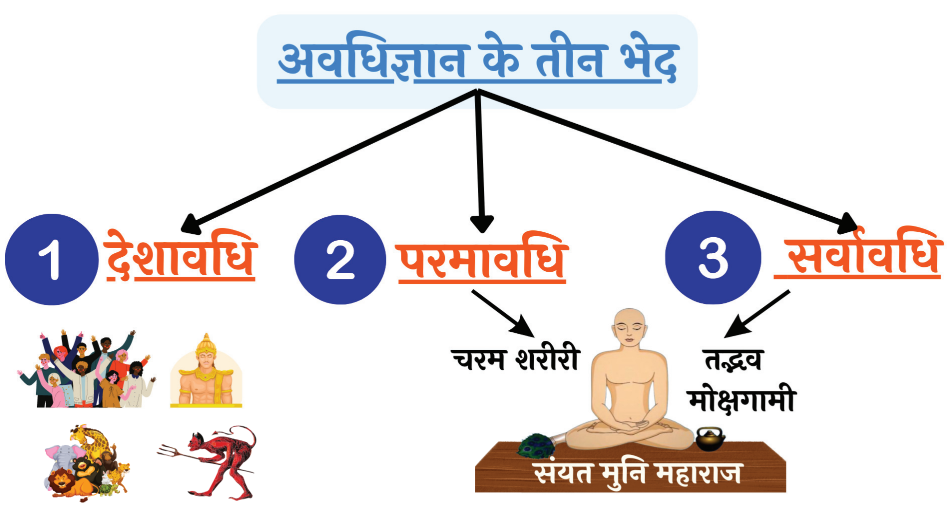


इस अवधिज्ञान के तीन भेद और बताये जाते हैं- देशावधि, परमावधि और सर्वावधि। जो हमने भव प्रत्यय अवधिज्ञान पढ़ा है, वह देशावधि अवधिज्ञान ही होता है, जो देव-नारकियों

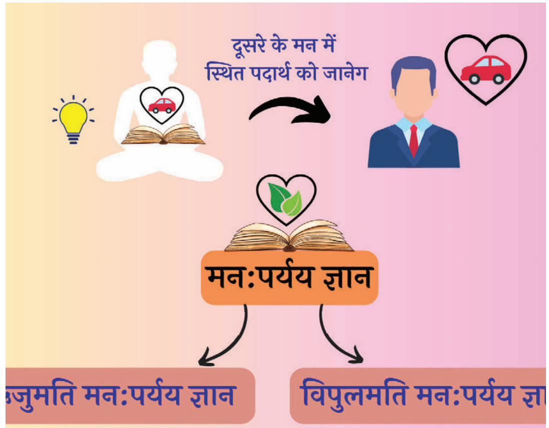


को होगा। यह देशावधि अवधिज्ञान चारों गतियों में हो सकता है; मनुष्य, तिर्यंचों को भी होता है। लेकिन जो परमावधि और सर्वावधि नाम का अवधिज्ञान होगा, यह केवल संयतों को मतलब छठवें-सातवें गुणस्थान वाले मुनि महाराजों को ही होगा और उनको होगा जो चरम शरीरी होंगे, उसी भव से मोक्ष जाने वाले होंगे, उनको ही यह परमावधि और सर्वावधि नाम का अवधिज्ञान होता है। यह अवधिज्ञान इतना विशिष्ट होता है कि इसकी प्राप्ति होने पर उस जीव को नियम से मोक्ष होता ही है और जो ज्ञान है, अन्य गतियों में होने वाले या सामान्य से मनुष्य तिर्यंचों को होने वाले वह सब देशावधि के रूप में जाने जाते हैं।

## अवधिज्ञान की विशेषताएँ

SCAN TO WATCH

इस तरह से यह अवधिज्ञान की जो विशेषताएँ हैं, वह आपको आगे और भी बताई जा सकती हैं कि यह अवधिज्ञान जो उत्पन्न होता है, यह सर्वांग से भी उत्पन्न होता है और यह किसी स्थान विशेष सी भी उत्पन्न होता है। जो देव हैं, नारकी हैं और तीर्थंकर हैं उनके लिए तो यह अवधिज्ञान सर्वांग से होता है। किन्तु जिन महापुरुषों को यह अवधिज्ञान उत्पन्न होगा, जिन संयतों को और दूसरा अवधिज्ञान उत्पन्न होगा, तीर्थंकरों के अलावा उनको किसी एक चिन्ह विशेष के साथ उत्पन्न होगा।

- मतलब सम्यक् जो अवधिज्ञान है, वह शरीर के ऊपर की ओर मतलब नाभि से ऊपर उनके लिए कोई शुभ चिन्ह होगा शङ्ख का, वज्र का, पद्म का, स्वस्तिक का उस आकृति पर ही उन्हें अवधिज्ञान लगाना पड़ेगा। वहीं से वह अवधिज्ञान उनके लिए काम करेगा। ऐसा बताया गया है।
- जो मिथ्यादृष्टि होते हैं उनके अवधिज्ञान के चिह्न उनकी नाभि के नीचे के स्थानों पर होते हैं। इस तरह से यह अवधिज्ञान की उत्पत्तियों के स्थान भी बताए गए और इनके स्वामी भी बताए गए। इतना आप अवधिज्ञान के विषय में जानना, आगे का सूत्र है।

## मन:पर्यय ज्ञान के भेद

**ऋजुविपुलमती मन: पर्यय: ।।1.23।।**

**ऋजु - विपुलमतीः - मन: पर्यय:**

**दूजे के मन तिष्ठते, कुटिल सरल जो भाव।**
**विपुल ऋजुमति ज्ञान के, मुनिवर देत बताय॥1.23॥**

यह मन:पर्यय ज्ञान है जो दो प्रकार का होता है-

1.एक ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान
2.एक विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान।

मन:पर्यय ज्ञान का मतलब होता है कि दूसरे के मन में स्थित जो पदार्थ है, उस पदार्थ को जानने की जो परिणति है या पर्याय है, उसका ज्ञान जिसको होगा, उसका नाम है- मन:पर्यय ज्ञान। यह मन:पर्यय ज्ञान हमेशा दूसरे के मन में स्थित पदार्थ को जानेगा। मन का तो केवल आलम्बन लेना पड़ता है।जैसे कि हम कहे चन्द्रमा देखो तो कहाँ देखोगे? जमीन पर? कहाँ देखोगे? आकाश में। आकाश में क्यों देखने लग गए हैं? चन्द्रमा आकाश में ही मिलेगा। आकाश को हमें नहीं जानना है। जानना किसको है? चन्द्रमा को है। इसी तरह से जब हम कहेंगे मन:पर्यय ज्ञान से बताओ तो मन:पर्यय ज्ञानी जीव अपना ज्ञान कहाँ लगाएगा? जो पूछने वाला उसके मन में लगाएगा, वह कहेगा मेरे मन में क्यों देख रहे हो? मन नहीं देख रहा है, तुम्हारे मन में जो चल रहा है न चिन्तन! उसको पकड़ रहे हैं।

## ऋजु और विपुल मति मन:पर्यय ज्ञान की विशेषताएँ

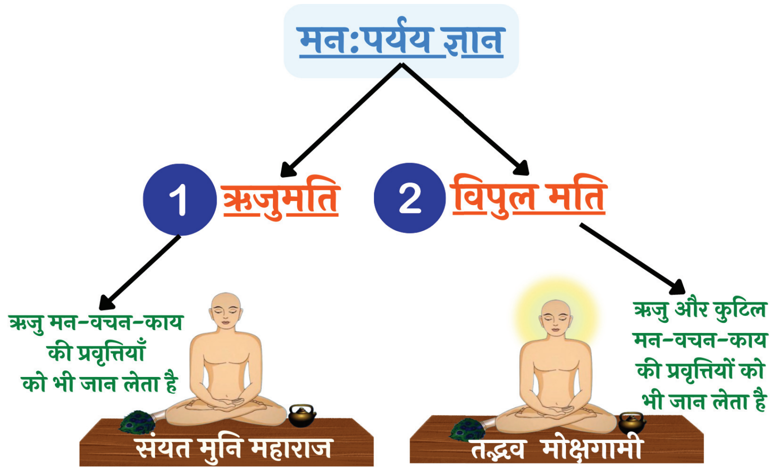


वह चिन्तन दो प्रकार का हो सकता है- एक ऋजु और एक विपुल मतलब कुटिल। अगर कोई व्यक्ति सीधा-सादा चिन्तन कर रहा है, तो उसको जानने की जब क्षमता आ गई तो उसका नाम है- ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान। ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान वाला आत्मा, जो कुटिल चिन्तन कर रहा है, भूत का, भविष्य का वह ऋजुमति वाला नहीं पकड़ पाएगा। उसके लिए विपुल मति मन:पर्यय ज्ञान उसको जानेगा और विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान वाला कुटिल को भी जानेगा और ऋजु को भी जानेगा।

ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान तो तीन प्रकार का हुआ कि जो
1. ऋजु मन है,
2. ऋजु वचन है,
3. ऋजु काय है

मतलब मन, वचन, काय की जो सरल प्रवृत्तियाँ इन तीन प्रकार की प्रवृत्तियों को जानने वाला ज्ञान होगा वह होगा ऋजुमति और विपुलमति छह प्रकार को जान लेगा। ऋजु मन-वचन-काय की प्रवृत्तियाँ और कुटिल मन-वचन-काय की प्रवृत्तियों को भी जान लेता है। अब आप समझें इस विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान में भी इतनी क्षमता होती है कि यह भी आपके अन्दर जो आपने सोचा नहीं है, वह भी पकड़ लेगा। क्या कहा? जो अपने चिन्तन किया नहीं, आगे करोगे वह भी पकड़ लेगा। चिन्तन करके आधा छोड़ दिया, अर्ध चिन्तित पदार्थ होगा, उसको भी पकड़ लेगा। अब! आप सोचो फिर तो क्या मैं वही सोचूँगा कि जो वह सोचेंगे? हाँ! तुम वही सोचोगे। यह जानो, यह ज्ञान की क्षमताएँ हैं, विशिष्ट क्षमताएँ हैं। यह विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान भी जैसे परमावधि और सर्वावधि ज्ञान वाले चरम शरीरियों को होता है, यह भी उन्हीं को होता है और

नियम से मोक्ष के लिए कारण बनता है। इस तरह के ये मन:पर्यय ज्ञान की जो विशेषताएँ हैं वह आपको आगे भी बताई जानी है। अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान में कुछ तुलनात्मक अध्ययन भी आगे के सूत्र में दिया गया है, वह आपको आगे बताया जाएगा। आज के लिए इतना ही पर्याप्त है।

--------------------------------------------------------------------------------

## सारांश

सम्यग्ज्ञान के प्रकरण में मतिज्ञान के पश्चात् हमने श्रुतज्ञान को समझा

4. सूत्र 20 के अनुसार 'श्रुतं मतिपूर्वं' श्रुतज्ञान, मतिज्ञान पूर्वक ही होगा
5. श्रुतज्ञान श्रुत ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से होता है
6. परन्तु फिर भी निमित्त रूप इससे पहले मतिज्ञान होता है
7. हर ज्ञान के लिए ज्ञानावरण कर्म के साथ साथ वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम भी आवश्यक है

इससे जानने की क्षमता आती है

8. श्रुत ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से "जानना" और वीर्यान्तराय के क्षयोपशम से जानने की "क्षमता" आती है
9. श्रुत ज्ञान के दो भेद होते हैं

- पहला अङ्ग बाह्य जो अनेक प्रकार का होता है; इसमें दस वैकालिक आदि ग्रन्थ को स्वीकारते हैं
- और दूसरा अङ्ग प्रविष्ट या द्वादशाङ्ग जो बारह प्रकार का होता है

10. जिनवाणी को श्रुतज्ञान भी कहते हैं क्योंकि इससे हमें पदार्थों का ज्ञान होता है
11. श्रूयते इतिश्रुतं अर्थात

- जिससे सुना जाये, वह भी श्रुत
- जो सुना जाये, वह भी श्रुत

12. अतः श्रुत ज्ञान में जो सुन रहे हैं और जिसके माध्यम से सुन रहे हैं दोनों आते हैं
13. हमें शब्द से पदार्थ का ज्ञान होता है
14. श्रुत के दो भेद भी होते हैं

- द्रव्यश्रुत - जो श्रुतज्ञान में सहायक सामग्री है जैसे printed जिनवाणी
- और भावश्रुत - जो हमारे अन्दर इस द्रव्य श्रुत को समझने की क्षमता है

15. हम भाव श्रुत के अनुसार ही द्रव्य श्रुत को समझ पाएँगे
16. द्रव्यश्रुत का अर्थ द्वादशाङ्ग भी होता है
17. बारहवें अङ्ग दृष्टिप्रवाद अंगः के 5 भेद होते हैं - पूर्व, प्रथमानुयोग, परिक्रम, सूत्र, चूलिका
18. इसमें पूर्व के चौदह भेद होते हैं
19. इन भेदों और 12 अंगों को मिलाकर बारह अङ्ग चौदह पूर्व या अङ्ग प्रविष्ट श्रुतज्ञान कहते है
20. हमने समझा कि तीर्थंकरों से यह ज्ञान सात रिद्धि धारी गणधर परमेष्ठी तक आता है
21. वहाँ से श्रुतकेवली तक और प्रमाणिक आचार्यों की परम्परा तक आता है
22. इसी परंपरा में आरातीय आचार्यों ने इसे लिपिबद्ध किया है
23. अतः यह प्रामाणिक है
24. हमें जो ज्ञान मिला हुआ है वह बूँद तो है लेकिन उस बूँद-बूँद में पूर्ण मूल है, यह सारभूत

है

25. तीर्थंकर भगवान को ग्रन्थों के मूल कर्ता, गणधर और श्रुताकेवली को उत्तर कर्ता और आरातीय आचार्यों को उत्तरोत्तर ग्रन्थ कर्ता कहा जाता है
26. हमने जाना कि श्रुत ज्ञान के प्रवाह की अपेक्षा से तो अनादि और anant है
27. लेकिन ग्रन्थ की रचना की अपेक्षा सादि सांत है
28. हमने जाना की सभी ज्ञानों में हमारे लिए श्रुतज्ञान के बारे में जानना महत्वपूर्ण है
29. श्रुतज्ञान दो प्रकार का होता है
    a. पहला अक्षरात्मक अर्थात जो ज्ञान सुनकर होता है
    b. वह सिर्फ पंचेन्द्रिय संज्ञी में ही होता है
    c. वह हमारे लिए हितकारी है
    d. और दूसरा अनक्षरात्मक अर्थात जो ज्ञान बिना सुने अपने आप होता है
    e. यह एक इंद्री से संघी पंचेन्द्रिय तक सभी में होता है
30. हमने जाना भाव श्रुतज्ञान के क्षयोपशम से ही हम द्रव्य श्रुत को समझ सकते हैं
31. भाव श्रुतज्ञान 20 प्रकार के हैं
32. श्रुतज्ञान के चिन्तन से धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान होते हैं
33. सूत्र 21 से हमने अवधिज्ञान के प्रकरण को समझा
34. अवधिज्ञान के दो भेद हैं
    a. पहला भव प्रत्यय अर्थात जिसमे भव या आयु कर्म का उदय ही कारण है
    b. यह देव और नारकी के नियामक होता है
    c. और दूसरा गुण प्रत्यय अर्थात जिसमें क्षयोपशम और सम्यग्दर्शन, सम्यग्चारित्र आदि गुण निमित्त होते हैं
    d. यह मनुष्य और त्रियंच के होता है
    e. इनमे क्षयोपशम तो सामान्य निमित्त है; सम्यग्दर्शन आदि गुण भी जरूरी हैं
35. यहाँ अवधिज्ञान का आशय सम्यग्ज्ञान से है मिथ्या ज्ञान से नहीं
36. मिथ्या अवधिज्ञान को विभंग ज्ञान कहते हैं
37. अवधिज्ञान के 6 भेद होते हैं
    a. अनुगामी - जो हमारे साथ अन्य क्षेत्र, भव में भी चला जाए
    b. अननुगामी- जो इस क्षेत्र में तो है मगर दूसरे क्षेत्रों, भवों में साथ न जाये; छूट जाये
    c. वर्धमान अर्थात बढता हुआ जो गुणों की वृद्धि से बढ़ता चला जाता है
    d. हीयमान अर्थात घटता हुआ जो संकलेश परिणामों के कारण से घटता जाये
    e. अवस्थित- जैसा प्राप्त हुआ है, वैसा ही बना रहना
    f. अनअवस्थित- जो विशुद्धि और संक्लेश के साथ बढ़-घट जाए
38. अवधिज्ञान देशावधि, परमावधि और सर्वावधि तीन प्रकार का होता है
    a. देशावधि = चारों गतियों में हो सकता है

b.परमावधि और सर्वावधि केवल चरम शरीरी, उसी भव में मोक्ष जाने वाले मुनि महाराज को ही होगा

39. देव, नारकी, तीर्थंकर को अवधि ज्ञान सर्वाङ्ग से होता है
40. अन्य महापुरुषों को नाभि से ऊपर शुभ चिन्ह शंखादि पर अवधिज्ञान लगाना पड़ेगा
41. मिथ्या दृष्टि के चिन्ह नाभि से नीचे होते हैं
42. मन:पर्यय ज्ञान, दूसरे के मन में स्थित पदार्थ को, चिंतन को जानेगा
43. यह दो प्रकार का होता है:

a.ऋजुमति ज्ञान - दूसरे के मन में चल रहे सरल चिन्तन को जानेगा

b.वाहन विपुलमति ज्ञान कुटिल और सरल दोनों चिन्तन को जानेगा

44. ऋजुमति ज्ञान ऋजु मन, ऋजु वचन, ऋजु काय तीन प्रकार का होता है
45. विपुलमति ज्ञान ऋजु मन-वचन-काय की प्रवृत्ति, कुटिल मन-वचन-काय की प्रवृत्ति से छः प्रकार का होता है

# अभ्यास प्रश्न पत्र

प्रश्न 1 -श्रुत ज्ञानावरण कर्म के साथ में __________ कर्म के क्षयोपशम से श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है।

1. दानान्तराय
2. वीर्यान्तराय
3. लाभान्तराय

प्रश्न 2 -द्वादशांग किसे कहते है?

1. अङ्ग प्रविष्ट
2. वैकालिक
3. अङ्ग बाह्य

प्रश्न 3 -जो हमारे अन्दर श्रुत ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम है, उसे क्या कहते है?

1. द्रव्य श्रुत
2. मति ज्ञान
3. भाव श्रुत

प्रश्न 4 -पूर्व किसका भेद है ?

1. दृष्टिवाद अंग
2. सूत्रकृतांग
3. चूलिका

प्रश्न 5 -पूर्व कितने है?

1. बारह
2. चौदह
3. ग्यारह

प्रश्न 6 -उत्तरोत्तर ग्रंथ कर्ता कौन है?

1. तीर्थंकर
2. आरातीय (आचार्य)
3. गणधर

प्रश्न 7 -अर्थ के कर्ता कौन है?

1. तीर्थंकर
2. गणधर
3. आरातीय (आचार्य)

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

प्रश्न 9 -हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान कौन सा है?
1. अवधि ज्ञान
2. केवल ज्ञान
3. श्रुत ज्ञान

प्रश्न 10 -कौन सा श्रुत ज्ञान का भेद नहीं है ?
1. अंग प्रविष्ट-अंग बाह्य
2. अक्षरात्मक-अनक्षरात्मक
3. अर्थावग्रह-व्यंजनावग्रह

प्रश्न 11 -अक्षरात्मक श्रुत ज्ञान किसको होगा ?
1. असंज्ञी पंचेन्द्रिय
2. विकलेन्द्रिय
3. संज्ञी पंचेन्द्रिय

प्रश्न 12 -भाव श्रुत ज्ञान कितने प्रकार का बताया गया है?
1. तीस
2. बीस
3. दस

प्रश्न 13 -भव प्रत्यय अवधिज्ञान किसको होता है?
1. मनुष्य
2. तिर्यंच
3. देव नारकी

प्रश्न 14 -जो अवधिज्ञान हमारे साथ अन्य क्षेत्र में भी चला जाए, अन्य भव में भी चला जाए;
1. अनुगामी
2. अवस्थित
3. अननुगामी

प्रश्न 15 -परमावधि नाम का अवधिज्ञान किसको नहीं हो सकता?
1. छठवें-सातवें गुणस्थान वाले मुनि महाराजों को
2. चौथे गुणस्थान वाले सम्यग्दृष्टि जीव को
3. उसी भव से मोक्ष जाने वाले चरम शरीरी को

प्रश्न 16 -किनको अवधिज्ञान सर्वाङ्ग से नहीं होता है?
1. संयत मुनिराज
2. देव नारकी
3. तीर्थंकर

प्रश्न 17 -मन, वचन, काय की कुटिल प्रवृत्तियों को जानने वाला ज्ञान कौन सा है?
1. ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान
2. सर्वावधि ज्ञान
3. विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

# अभ्यास प्रश्न पत्र 'विषयक'

प्रश्न - 1 द्रव्य श्रुत और भाव श्रुत में क्या अन्तर है?

प्रश्न - 2 अक्षरात्मक और अनक्षरात्मक श्रुत ज्ञान में क्या अन्तर?

प्रश्न - 3 अवधिज्ञान कितने प्रकार का है? कौन से ज्ञान सम्यक् और मिथ्या दोनों होते हैं?

प्रश्न - 4 विभंग ज्ञान क्या होता है?

प्रश्न - 5 परमावधि और सर्वावधि अवधिज्ञान किसको होता है?

प्रश्न - 6 मन:पर्यय ज्ञान क्या होता है?

प्रश्न - 7 मन:पर्यय के 2 भेद कौन-कौन से हैं?

प्रश्न - 8 श्रुतज्ञान के लिए कौन से कर्म का क्षयोपशम आवश्यक है?

प्रश्न - 9 श्रुतज्ञान किसके क्षयोपशम से होता है?

प्रश्न - 10 श्रुतज्ञान के कितने भेद होते हैं?

प्रश्न - 11 भव प्रत्यय अवधिज्ञान किनके होता है?

प्रश्न - 12 कौन से ज्ञान मिश्या एवं सम्यक् दोनों होते हैं?

प्रश्न - 13.क्षयोपशम के निमित्त से अवधिज्ञान कितने प्रकार का होता है?

प्रश्न - 14 गुण प्रत्यय किसे कहते हैं?

प्रश्न - 15 द्रव्य श्रुत में गर्भित अंग प्रविष्ट के कितने भेद हैं? नाम लिखें।

# प्रवचन: 08

आचार्य गृद्धपिच्छ महाराज द्वारा विरचित यह तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थ का प्रथम अध्याय है। जिसमें सम्यग्दर्शन के बारे में बताने के बाद सम्यग्ज्ञान की चर्चा की जा रही है। पाँच प्रकार के सम्यग्ज्ञान हैं- मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान और केवलज्ञान। अवधिज्ञान का वर्णन भी लगभग आपको सुनने को मिल चुका है, मन:पर्यय ज्ञान के विषय में भी यह सूत्र जो था "ऋजु-विपुलमती मन:पर्यय:"।।23।। इसके माध्यम से मन:पर्यय ज्ञान के बारे में जो थोड़ा-सा बताया गया वह दो भेदों के रूप में बताया गया है। दो प्रकार का मन:पर्यय ज्ञान है-

1. ऋजुमति
2. विपुलमति।

अब आगे यह जो मन:पर्यय ज्ञान और अवधिज्ञान में कुछ विशेषताएँ हैं उन विशेषताओं को जानने के लिए यह आगे का सूत्र आ रहा है, पहला यह सूत्र जो आगे आ रहा है-

## ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान और विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान में अन्तर का आधार

**विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेष: ॥1.24॥**

**विशुद्धि + अप्रतिपाता + आभ्याम् + तद्विशेष:**

**अप्रतिपाती वा विशुद्ध, कारण बने विशेष।**
**मन: पर्यय के भेद ये, जानें रुपी भेष॥1.24॥**

**"विशुद्धि का मतलब वह आत्मा की प्रसन्नता जो उसके अन्दर कर्मों के क्षयोपशम से, क्षय से, उपशमन आदि से उत्पन्न होती है"**

यह दो प्रकार के जो मन:पर्यय ज्ञान बताए गए हैं, उनमें क्या अन्तर है? उसको बताने के लिए ही यह सूत्र है। यह जो ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान है और विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान है, इन दोनों में अन्तर दो चीजों से पड़ता है। एक तो विशुद्धि से और एक अप्रतिपाती दशा से यानि ऋजुमति ज्ञान से विपुलमती ज्ञान अधिक विशुद्धि वाला होता है और ऋजुमति ज्ञान अप्रतिपाती नहीं होता किन्तु विपुलमती ज्ञान अप्रतिपाती होता है। ये दो विशेषताएँ हमें मन:पर्यय ज्ञान के जो दो भेद हैं उनमें लगानी चाहिए। विशुद्धि का मतलब होता है आत्मा का कर्मों के क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाला एक प्रसाद। क्या कहा गया? कर्मों के क्षयोपशम से जो आत्मा में एक प्रसन्नता उत्पन्न होती है उसका नाम है- विशुद्धि।

कई लोग पूछते हैं- यह विशुद्धि क्या बला है? विशुद्धि का वर्णन बहुत शास्त्रों में जगह-जगह पर आता है और जैन दर्शन में तो विशेष रूप से विशुद्धि और संक्लेश इनकी बहुत चर्चा भी होती है जब हम भावों की चर्चा करते हैं। अतः विशुद्धि का मतलब वह आत्मा की प्रसन्नता है जो उसके अन्दर कर्मों के क्षयोपशम से, क्षय से, उपशमन आदि से उत्पन्न होती है। अब आप समझें कि जैसे किसी भी वस्त्र के ऊपर भी बहुत सारा रंग लगा हुआ हो, तरह-तरह के colour उस वस्त्र पर लग गए हो तो जैसे-जैसे हम उस वस्त्र को धोते जाते हैं, उसके colour ऊपर-ऊपर से हटते जाते हैं वैसे-वैसे जो उस वस्त्र की originality आती चली जाती है, वही उसकी purity कहलाती है, वही उसकी विशुद्धि कहलाती है। इसी तरह से, आत्मा में ये तरह-तरह के ज्ञानावरणी कर्म हैं, जो उस ज्ञान को रोके हुए हैं। मतिज्ञान को रोकने वाले भी कर्म हैं, श्रुतज्ञान को भी रोकने वाले कर्म हैं, अवधिज्ञान, मनःपर्यय ज्ञान, केवलज्ञान सभी को रोकने वाले अपने-अपने अलग-अलग कर्म हैं। अब जैसे-जैसे आत्मा में एक कर्म का क्षयोपशम होगा वैसे-वैसे आत्मा की शुद्धता बढ़ेगी, प्रसन्नता बढ़ेगी। जैसे वस्त्र का जो original colour है वह धीरे-धीरे जैसे ही आने लग जाता है, तो हम कहने लग जाते हैं- वस्त्र खिलने लगा, lighted हो गया, अपनी original form में आ गया। इसी का नाम विशुद्धि है।

SCAN TO WATCH

## अन्दर जो ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम बढ़ रहा है यही आपकी विशुद्धि है

ऐसी यह विशुद्धी कर्म के क्षयोपशम से ही प्राप्त होती है। अब ज्ञानावरण कर्मों के ये बन्ध हैं और इन बन्धों का जैसे-जैसे अभाव होगा वैसे-वैसे आत्मा में विशुद्धि बढ़ेगी। आप कोई चीजें पहले नहीं जानते थे, अब जानने लग गए। आपको पता नहीं कि अब जो आप जानने लग गए, यह आपके अन्दर ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम बढ़ गया। इससे आपकी आत्मा में एक प्रसन्नता उत्पन्न होगी, यह विशुद्धि कहलाएगी। आप सोचे कि जब हमको कुछ भी अवधिज्ञान के माध्यम से जानने में नहीं आ रहा क्योंकि हमारे पास अवधिज्ञान है ही नहीं, मन:पर्यय ज्ञान है ही नहीं, ये ऐसे आवरणी कर्म हैं जो हम सभी की आत्माओं पर लगे हैं।अब जिनके अन्दर

यह अवधि ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम हो जाएगा तो उनके अन्दर जो आत्मा और उजली हो जाएगी, आत्मा का ज्ञान गुण और प्रकट हो जाएगा, उसकी जो शक्तियाँ हैं वे और प्रकट हो जाएँगी। उससे जो आत्मा के अन्दर एक प्रसन्नता आती है उसका नाम है- विशुद्धि। विशुद्धि से हम अपने अन्दर एक बहुत ही आत्मीयता का भाव या आत्मा के अन्दर ही आत्मीयता का जो भाव है, वह हम विशुद्धि के माध्यम से महसूस कर पाते हैं। मैं आत्मा हूँ! ऐसा कहने में भी आनन्द उसी को आएगा जिसके अन्दर थोड़ा-सा यह ज्ञानावरण आदि का क्षयोपशम हुआ होगा। आत्मा का यह जो ज्ञान गुण है, यह सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि इसी के माध्यम से सब कुछ संवेदन होता है, इसी से सब कुछ जानना होता है। जब इस आत्मा के ज्ञान

गुण में इस तरह की जो शक्तियाँ हमारे पुद्गल कर्मों के द्वारा आवृत हैं, वे जब प्रकट होने लग जाती हैं तो वही वस्तुतः विशुद्धि कहलाती है। ऐसी विशुद्धि को बढ़ाना। आप अभी तक मान लो तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़ तो रहे थे लेकिन उसका अर्थ नहीं जान रहे थे, अब आप अर्थ जानने लगे। यह आपके अन्दर जो ज्ञान आया, यह ज्ञान आपने बढ़ा लिया। अपने ज्ञानावरण, श्रुत ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम को आपने क्या किया? बढ़ा लिया, अभ्यास से बढ़ा लिया, निरन्तर सुन-सुनकर बढ़ा लिया। आप जो यह practice कर रहे हैं इससे आपके अन्दर जो ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम बढ़ रहा है यही आपकी विशुद्धि है।

## विशुद्धि और संक्लेश का अन्तर होता है

इस विशुद्धि से ही हम अपने ज्ञानावरण आदि जो घातिया कर्म हैं, इनका विनाश कर पाते हैं। यह विशुद्धि जैसे-जैसे बढ़ेगी, ज्ञान बढ़ेगा, ज्ञान बढ़ेगा, मोह कम होगा, मोह का अभाव होगा, ज्ञान बढ़ेगा तो विशुद्धि अपने आप बढ़ेगी। संक्लेश अपने आप भीतर ही भीतर से मरता चला जाएगा। कौन मरता चला जाएगा? संक्लेश भीतर ही भीतर नष्ट होता चला जाएगा क्योंकि ज्ञान हमारा जीवन है यह हम इससे जी रहे हैं। जब हम अपना जीवन बढ़ाएँगे तो जीवन को बाधित करने वाले जो तत्त्व हैं वह अपने आप मरेंगे, नष्ट होंगे। ज्ञान की वृद्धि से इस तरह से जब हम आगे बढ़ते हैं तो आत्मा की विशुद्धि होगी, मोह का अभाव होगा तो अपने आप आपके परिणाम में हमेशा प्रसन्नता बनी रहेगी। महाराज! हम लोग हमेशा प्रसन्न क्यों नहीं रहते? अपने अन्दर ऐसा ज्ञान का चिन्तन हमेशा बनाकर रखो, आपके अन्दर प्रसन्नता बनी रहेगी। अब आप थोड़ी देर बहुत सुन लेते हो फिर बाद में अपनी रोटी-पानी में लग जाते हो। फिर ज्यादातर time वह एक तरह का सब संक्लेश जैसा ही हो जाता है। अब आप अगर कभी अनुभव करो तो देखोगे कि जब हम तत्त्वज्ञान की भावना में होते हैं, सुनने की भावना में हो, समझने की भावना में हो, उस समय जो हमारे अन्दर एक विशुद्धि होती है, निराकुलता होती है, वह फिर बाद में भोजन बनाते समय, घर के काम करते समय सब एक क्लेश में बदल जाते है। यही विशुद्धि और संक्लेश का अन्तर होता है। जब मन:पर्यय ज्ञान होगा तो यह मन:पर्यय ज्ञान भी एक प्रकार का नहीं है। कोई भी ज्ञान है वह समझ लो कि हर ज्ञान असंख्यात प्रकार का है और यह मन:पर्यय ज्ञान में दो भेद एक मोटे-मोटे किए गए हैं- एक ऋजुमति और एक विपुलमति।

SCAN TO WATCH

## मन:पर्यय ज्ञान होने की शर्तें

आचार्य कहते हैं- इस ऋजुमति ज्ञान से भी ज्यादा विशुद्धि, विपुलमति ज्ञान वाले जीव के होती है। अब आप यह देखो कि जो यह मन:पर्यय ज्ञान हो रहा है, अपने आप में विशिष्ट व्यक्तियों को हो रहा है, सामान्य व्यक्तियों को नहीं हो रहा। चार गतियों में अगर आप शुरू करे तो देवगति में नहीं होगा, तिर्यन्च गति में नहीं होगा, नरक गति में नहीं होगा। कहाँ होगा? केवल मनुष्य गति में होगा। मनुष्य गति में भी देखें आप तो मनुष्य में दो प्रकार के मनुष्य हैं- एक कर्मभूमि के, एक भोगभूमि के। कहाँ होगा? कर्मभूमि में। कर्मभूमि में भी देखें आप, सम्मूर्छन मनुष्य भी हो सकते हैं, गर्भज मनुष्य भी होते हैं। जो सम्मूर्छन मनुष्य होते हैं वे तो लब्धि अपर्याप्तक होते हैं तो उनमें भी नहीं होगा। किसमें होगा? गर्भज मनुष्यों में। गर्भजों में भी जब अपर्याप्त होते हैं तब नहीं होगा, जब पर्याप्त होंगे तभी होगा। उन गर्भज, संज्ञी पंचेन्द्रिय, पर्याप्तक उन मनुष्यों में भी, पहले गुणस्थान वालों को नहीं होगा, दूसरे गुणस्थान वालों को नहीं होगा, तीसरे गुणस्थान वालों को नहीं होगा, चौथे वालों को नहीं होगा, पाँचवें वालों को नहीं होगा, छटवें वालों को भी होगा, छठवें, सातवें गुणस्थान वालों को तो होगा। जितने भी असंयम और संयमासंयम तक के भाव हैं उनको भी नहीं होगा। अब यह कहाँ से शुरू होना होगा मन:पर्यय ज्ञान? संयम से शुरु होता है, संयमी मुनियों को ही होगा। अब संयमी मुनियों में भी जिनका चारित्र, जिनका संयम विशुद्धि के माध्यम से निरन्तर वर्धमान हैं, उन्हीं को होगा। कभी संक्लेश से हीयमान हो जाता है तो उनको नहीं होगा। इसकी शर्तें तो देखो, कितना बड़ा ज्ञान है यह? तब प्रकट होता है।

### ऋद्धि के साथ ही संयत मनुष्य के लिए मन:पर्यय ज्ञान होगा-

जिनकी विशुद्धि बढ़ रही है, वर्धमान चारित्र वाले हैं उनमें भी सबको नहीं होगा। अगर उनमें से भी जिनको कोई न कोई ऋद्धि प्रगट हो गई होगी, कोई न कोई सात प्रकार की ऋद्धियों में से तो किसी एक ऋद्धि के साथ वह मनुष्य होगा तभी वह संयत मनुष्य के लिए वह मन:पर्यय ज्ञान

होगा। ऋद्धिधारी में भी सबको हो जाए वह भी जरूरी नहीं है, उसमें भी किसी-किसी को होगा क्योंकि यह अपने आप में खुद एक अलग ऋद्धि है। 'नमो उजमदीणं, नमो विउलमदीणं' यह जो अड़तालीस ऋद्धियाँ पढ़ी जाती हैं उनमें ये दो ऋद्धियाँ मानी गई हैं-

SCAN TO WATCH

1. ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञान और
2. विपुलमति मनःपर्यय ज्ञान

यह दोनों ही ऋद्धियाँ हैं। केवल आप अगर इस सूत्र को पढ़ोगे तो आपको लगेगा अरे! ऋजुमति ज्ञान वाले की विशुद्धि से तो विपुलमति ज्ञान वाले की विशुद्धि बहुत अधिक होती है। लेकिन जब यह सब जो हम background इसका बता रहे हैं यह सब देखोगे तब समझ में आएगा कि जो ऋजुमति वाले मुनि महाराज हैं, यह भी ऋद्धिधारी हैं इनको भी अगर ऋद्धि हुई है ऋजुमति नाम की तो यह भी अपने आप में बहुत विशिष्ट विशुद्धि के माध्यम से हुई है। तभी इनका अड़तालिस ऋद्धियों में नाम लिया गया। 'णमो उजमदीणं' अलग लिया और 'णमो विउलमदीणं' यह अलग कहा। यह कितनी विशिष्ट है, वह आप समझ सकते हो। हमें जो उपलब्ध न हो, इस पंचम काल में जो हो ही नहीं और जो मनुष्यों में भी, संयतों में भी विशिष्ट वर्धमान चारित्र वाले ऋद्धि धारियों में भी किसी-किसी के हो और उनको भी हुआ तो ऋजुमति नाम का मनःपर्यय ज्ञान ही हो पाया। आप समझे कि यह तो अपने आप में इन सब ज्ञानियों से विशेषताओं को बहुत लिए हुए हैं। कौन-सा? ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञान। समझ में रहा है? कई बार जब हम सीधे-सीधे दो के बीच में तुलना करने बैठ जाते हैं तो जो उत्कृष्ट होता है वह तो हमें अच्छा लगता है और जो दूसरा होता है वह हम समझते हैं कि इसमें कुछ है ही नहीं लेकिन यह देखो कि वह भी जो मन:पर्यय ज्ञान है, वह कितना विशिष्ट है कि वह इन सब विशेषताओं को पार करके ऊपर तक गया तब उसको विशेषता मिली है। अवधिज्ञान से भी यह विशिष्ट है।

## मन:पर्यय ज्ञान, अवधिज्ञान से भी विशिष्ट क्यों हैं?

क्यों विशिष्ट है? क्योंकि अवधिज्ञानी जितना जानते हैं उससे भी सूक्ष्मता से ये जानने की क्षमता रखता है इसलिए अवधिज्ञानी कितने ही बड़े हो लेकिन उनसे भी अधिक विशुद्धि वाले मन:पर्यय ज्ञानी कहलाएँगे चाहे वे ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान वाले ही संयमी मुनि क्यों न हो। अब यहाँ तुलना किसमें की जा रही है? एक तो ऋजुमति और एक विपुलमति। ऋजुमति की विशुद्धि से विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान वाले जो संयत मुनि हैं उनकी विशुद्धि अधिक है। क्यों अधिक है? क्योंकि उनके पास में उस ज्ञान की और भी शक्तियाँ प्रगट हो गई। एक तो ज्ञान की शक्ति सामान्य और एक विशेष। जब विशेष हो गई तो उसके माध्यम से वह किसी के मन में परिवर्तित होते हुए कुटिल मन, वचन, काय की भी प्रवृत्तियों को, उनके चिन्तन को पकड़ सकते हैं यह विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान का कार्य है और जो कुटिल को पकड़ सकता है, वह सरल को तो पकड़ ही सकता है। लेकिन ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान वाले मुनि महाराज के लिए

जो सीधा-सीधा मन-वचन-काय की प्रवृत्तियाँ होंगी, जो सीधा-सीधा मन का चिन्तन होगा, वह पकड़ने में आएगा, कुटिल वाला पकड़ने में नहीं आएगा। अतः मन के अन्दर चल रहे सूक्ष्म विचारों की परिणति को पकड़ना यह इस मन:पर्यय ज्ञान का विशिष्ट कार्य होता है।

## जैन सिद्धान्तों के शब्दों का english translation शास्त्रों के साथ अन्याय

**अवधिज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान जैन दर्शन की संपदा है इनका English translation संभव नहीं।**

आप इस ज्ञान के बारे में जैन दर्शन के अलावा और कहीं उल्लेख किसी भी प्रकार से ढूँढ नहीं पाएँगे और जैन दर्शन के अलावा इस तरह के ज्ञानों की समीक्षा कहीं मिलेगी भी नहीं। अन्यत्र जब लोग english translation करने बैठते हैं तो अवधिज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान इन ज्ञानों के लिए english की dictionary में शब्द नहीं मिलते। कहाँ से मिल जाएँगे? यह तो अपनी अलग ही सम्पदा है, अपनी अलग ही चीज और इस तरह की knowledge किसी को जब है ही नहीं तो उसके शब्द कहाँ से बन जायेंगे। अवधिज्ञान के लिए एक clairvoyance ऐसा शब्द निकालते हैं, जिसका english dictionary में अर्थ होता है कोई ऐसा अतीन्द्रिय ज्ञान, दिव्य ज्ञान, इस तरह के ज्ञान को अवधिज्ञान में fit करना पड़ता है- clairvoyance. समझ आ रहा है? यह एक शब्द निकालते हैं। मन:पर्यय ज्ञान के लिए कुछ नहीं मिलता, दूसरे के मन की बात को पकड़ लेना तो उसको telepathy नाम दे देते हैं। जबकि यह कोई अगर देखें जैन सिद्धान्तों के अनुसार और जो dictionary में इनका अर्थ दिया है उसके

SCAN TO WATCH

अनुसार तो यह अर्थ कहीं से कहीं तक लगता ही नहीं। कोई इनका translation होने के लिए शब्द ही नहीं है। अब telepathy क्या है? communication of thought. इसमें क्या telepathy हो गई? telepathy एक सामान्य व्यक्ति भी कर सकता है, सामान्य व्यक्तियों के साथ भी हो जाता है। भाई! हिचकी लगी, हाँ! किसी ने याद किया था। खुजली मची तलवे में, हाँ! क्यों तुम याद कर रहे थे क्या? यह क्या हो गया? यह तो सामान्य से किसी को भी हो रहा है। यही तो बस कहा जाता है telepathy और क्या होता है। हमने आपके लिए यहाँ से कोई healing कर दी, raiki कर दी, आपकी energy को हमने देख लिया कि आपके कौन-कौन से चक्र पर कौन-कौन-सी energy है? कहाँ पर जो है energy negative है, कहाँ पर positive है।

यह सब हम यहाँ बैठे-बैठे जो कुछ भी जान सकते हैं, ये कोई मनःपर्यय ज्ञान तो नहीं है न लेकिन हमने english के translation करते हुए उसके लिए यह telepathy शब्द fit कर दिया। आप समझें कि यह कितना हल्का शब्द है और यह मनःपर्यय ज्ञान कितनी विशिष्ट चीज है, हमें english करने की इतनी जिद क्यों रहती है? जो translator english कर रहे हैं, बहुत सारे हुए हैं, उन्हें यही लिखना चाहिए जो लिखा हुआ है- मनःपर्यय! उसको roman language में वैसे ही पढ़ो मनःपर्यय! तभी आदमी को समझेगा कि what is मनःपर्यय? यह समझ आ रहा है? तब उसकी वह definition पढ़ेगा तो उसको समझ में आएगा कि दूसरे के मन के कुटिल शरीर और जो सरल विचार हैं, उनको पकड़ने की क्षमता किसमें होती हैं? telepathy में होती है? कितना हल्का शब्द telepathy! कहाँ यह संयतों को होने वाला ज्ञान, ऋद्धिधारियों को होने वाला ज्ञान, उसमें भी किसी-किसी को होने वाला ज्ञान और कहाँ सामान्य व्यक्तियों में चलने वाली telepathy? कई बार इस तरह के जब translation मिलते हैं तो ऐसा लगता है कि शायद शास्त्रों के साथ अन्याय-सा किया जा रहा है। हाँ! न अवधिज्ञान के लिए कोई शब्द fit बैठता है, न मनःपर्यय ज्ञान के लिए कुछ शब्द fit बैठता है।

## ऋजुमति से विपुलमति की विशुद्धि अधिक होती है

इस तरह का जो मन:पर्यय ज्ञान है अपने आप में बड़ा विशिष्ट है। आप देखें! ऋजुमति कोई छोटी चीज नहीं है लेकिन जब हम विपुलमति से तुलना कर रहे हैं तो हमें छोटा-सा लगने लग जाता है लेकिन अपने दिमाग को छोटा मत रखना इसलिए इतना सारा तुम्हें समझाना पड़ रहा है। नहीं तो अभी तक हम आगे बढ़ चुके होते किन्तु ऋजुमति और विपुलमती में इतनी विशेषता है कि ऋजुमति से विपुलमति की विशुद्धि अधिक होती है। आप समझो तो उनको, क्या संक्लेश होता है? संक्लेश की तुलना नहीं है, यहाँ विशुद्धि की ही तुलना है। ज्ञान का क्षयोपशम जैसे-जैसे बढ़ रहा है इसका मतलब है- विशुद्धि भी बढ़ रही है। इससे आप यह भी आराम से समझ सकते हो कि जिसमें ज्ञान का क्षयोपशम अधिक होता है, उसमें उसकी विशुद्धि भी अधिक होती है। क्योंकि ज्ञान हमारी आत्मा का, अपना एक स्वाभाविक गुण है और उसमें अगर purity आ रही है तो it means आत्मा में ही purity आ रही है। आत्मा और ज्ञान दोनों अलग-अलग चीज नहीं है। ज्ञान के क्षयोपशम की वृद्धि होना मतलब आत्मा की अपनी जो state है उस का level बढ़ना है। यह ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान के साथ में इस तरह से जब हम विशेषता को जानेंगे तब हम विपुलमति को उससे भी ज्यादा विशुद्धि वाला समझ पाएँगे। अतः उनकी विशुद्धि क्या है? कि वो और ज्यादा, अब आप समझो कि आपने जो चीज अभी सोची ही नहीं, विचारी नहीं, विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान वाला आत्मा बता देगा आपको कि आप आगे दस साल बाद क्या आप सोचोगे? वह आपको बता देगा। इतने परिणाम पकड़ने में आते हैं कि आप अगले भव में क्या सोचोगे वह भी बता देगा। आप अपने भाव नहीं पकड़ पाते और एक आत्मा दूसरे के भाव को पकड़ ले। 'भाव तो कितनी अमूर्त जैसी चीज हो गई, उस भाव को पकड़ने वाला जो ज्ञान है, विचार को पकड़ने वाला जो ज्ञान है, उसका नाम है- मन:पर्यय।'

## मन:पर्यय ज्ञान और telepathy में अन्तर

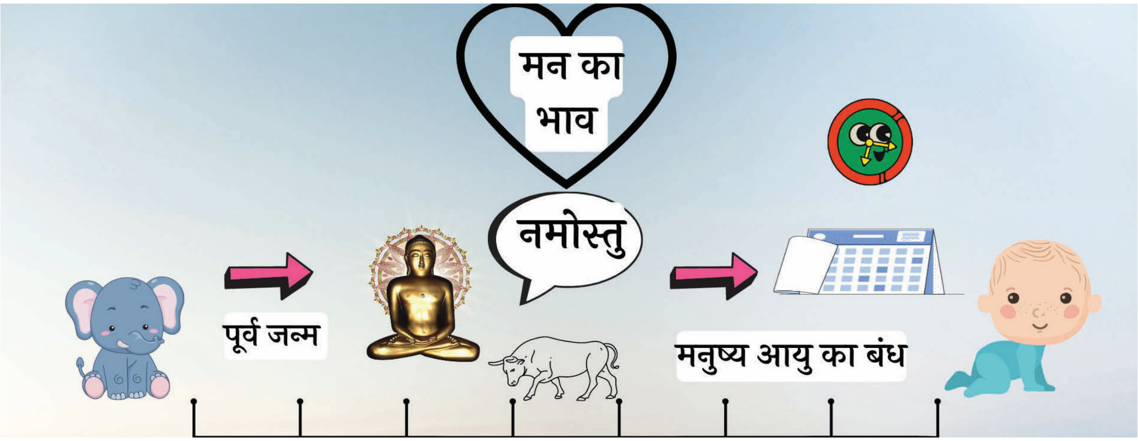

विचारों का कोई आदान-प्रदान नहीं हो रहा है। telepathy में तो communication हो गया। communication मतलब दोनों तरफ से होता है। वह तो दूरसंचार हो गया। हमने कहीं अपने विचार आपके पास दूर तक पहुँचा दिये और आपने अपने विचार हम तक पहुँचा दिये तो यह तो कोई बात नहीं हुई। यह तो फोन से भी हो जाता है। हमारा विचार है, तुम्हारा विचार यह है, हो गया बात। तो telepathy जैसे शब्द इस मनःपर्यय ज्ञान की गरिमा के अनुसार कहीं से कहीं तक fit नहीं बैठते। आप इस ज्ञान को इसी रूप में देखें। मनःपर्यय ज्ञान को लोग बड़ा common सा मान लेते हैं जब इस तरीके का translation पढ़ते हैं तो। एक दूसरे के मन के विचारों के साथ जो सम्बन्ध हो जाता है, उसका नाम मनःपर्यय ज्ञान है। ऐसा नहीं है! मनःपर्यय ज्ञानी जीव भी आपके लाभ को, अलाभ को, क्या आपको हानियाँ होने वाली हैं? क्या आपके भव पहले हुए हैं और आगे होंगे? अनेक-अनेक भवों की जानकारी भी आपने केवल मन के माध्यम से पकड़ कर बता देगा। केवल आपके मन के माध्यम से पकड़ कर बता देगा कि आपके कौन-से विचार के कारण से आपको यह मनुष्य आयु का बन्ध हुआ। जो आज आप मनुष्य बने बैठे हो। आपने पूर्व जन्म में कौन-सा विचार किया था जिससे आपके लिए यह मनुष्य आयु का बन्ध हुआ और किस समय पर हुआ? सब बता देगा। आप समझे कि कितने बड़े-बड़े ज्ञान हैं और इन सब ज्ञानों के आवरण हमारे ऊपर पड़े हुए हैं। हमारे अन्दर भी इन ज्ञानों को प्रकट करने की शक्तियाँ हैं इसलिए सम्यग्ज्ञान के माध्यम से अपने अन्दर छिपी हुई शक्तियों को जाना जाता है।

## ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानी प्रतिपाती विशेषण बनता है

SCAN TO WATCH

एक तो हुई विशुद्धि और दूसरा क्या है? 'अप्रतिपाती', प्रतिपाती का मतलब होता है गिरना और 'अप्रतिपाती ' का मतलब नहीं गिरना। मतलब यह हुआ कि ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञान वाला कोई भी संयत आत्मा गिर सकता है। कहाँ से गिरेगा? किससे गिरेगा? गिरना चारित्र से ही गिरना, गिरना कहलाता है। यह ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानी जीव का चारित्र से गिरना होगा। अब आप सोचेंगे कौन-सा चारित्र? वह चारित्र नहीं जो छठवें, सातवें गुणस्थान में है। यह ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानी जब उपशम श्रेणी चढ़ते हैं तो एक ग्यारहवें गुणस्थान तक पहुँच जाते हैं। ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानी अगर उपशम श्रेणी चढ़े तो ग्यारहवें गुणस्थान में पहुँचने के बाद में वहाँ पर आगे जाने के लिए कोई भी प्रक्रिया होती नहीं। वहाँ तो जो जीव पहुँचेगा उसे वापिस आना पड़ेगा। वापिस आने का नाम ही गिरना कहलाता है। जैसे आप किसी track पर चले गए और जाने के बाद में आपको पता पड़ा कि यह तो आगे road block है, वापिस लौटो। road तो दिख रही थी लेकिन आप चले गए, फिर वापिस लौटो तो वापिस लौटना यह अपने आप में एक तरह से क्या feel करना है? हाँ! थोड़ा-सा हमने जहाँ से वापस लौटना पड़ रहा है मतलब हमने गलत रास्ता choose कर लिया, time waste हो रहा है। आये क्यों थे इस

रास्ते पर? जिस रास्ते से वापस लौटना पड़े। कहीं न कहीं हमनें गलती कर दी। बस! इसलिए यह लौटना भी अपने आप में एक क्या कहलाता है? अब इसको प्रतिपातीपना बोलते है, गिरना मतलब ग्यारहवें गुणस्थान में अगर पहुँचे हैं ऐसे मुनि महाराज तो उन्हें नियम से नीचे आना ही होगा, छठवें, सातवें में पुनः आना होगा। ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञान वाले जीवों में यह संभावना है कि वह उपशम श्रेणी पर जा सकते हैं, चढ़ सकते हैं क्योंकि उनके लिए प्रतिपाती विशेषण बनता है।

## विपुल मति मनःपर्यय ज्ञान वाले क्षपक श्रेणी पर ही आरोहण करेंगे

इसका मतलब यह नहीं है कि वह हमेशा उपशम श्रेणी पर ही चढ़ेंगे। वह क्षपक श्रेणी पर भी चढ़ सकते हैं और क्षपक श्रेणी पर अगर गए तब तो उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त कर ही लिया। अगर नहीं गए तो उपशम श्रेणी पर भी जा सकते हैं, इनका गिरना सम्भव है। इसलिए चारित्र से इनका प्रतिपात कहलाता है। इसलिए इनके साथ में यह प्रतिपाती विशेषण जुड़ जाता है किन्तु जो विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी होंगे वे ऐसी उपशम श्रेणी पर आरोहण नहीं करेंगे। वे क्षपक श्रेणी पर ही चढ़ेंगे। उनके लिए चरित्र को जो प्राप्त किया है उससे गिरना नहीं होगा, बढ़ना ही होगा। जो विपुलमति मनःपर्यय ज्ञान वाले जीव होंगे वे तो क्षपक श्रेणी पर ही आरोहण करेंगे लेकिन ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञान वाले उपशम श्रेणी पर भी चढ़ सकते और क्षपक श्रेणी पर भी चढ़ सकते हैं। अगर उपशम श्रेणी से चढ़ेंगे तो नियम से वह प्रतिपात को प्राप्त होंगे। इसलिए उनके लिए तो प्रतिपाती विशेषण बन जाता है किन्तु विपुलमति मनःपर्यय ज्ञान वाले नियम से

क्षपक श्रेणी पर ही चढ़ते हैं, इसलिए उनके लिए यह प्रतिपाती विशेषण नहीं बनता क्योंकि क्षपक श्रेणी पर कभी भी गिरना नहीं होता।

## अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन

**विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥1.24॥**

'तद्' अर्थात् उन मन:पर्यय ज्ञान में यह विशेषता है। अब ये तो दो विशेषताओं को जोड़ा गया दो प्रकार के मन:पर्यय ज्ञानियों से। आगे के सूत्र में अब अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान के विषय में विशेषता बताई जा रही है। अब तुलना थोड़ी-सी किसके साथ करेंगे? अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान के साथ।

**विशुद्धि क्षेत्र स्वामि विषयेभ्योऽवधिमन:पर्यययोः ।।1.25।।**

**विशुद्धि + क्षेत्र + स्वामि + विषय + इभ्यो + अवधि + मन:पर्यययोः**

SCAN TO WATCH

**खेत, विशुद्धि, विषय वा, नाथ अपेक्षा भेद।**
**मनपर्यय से अवधि में, है विशेष से भेद॥25॥**

हाँ! कितनी चीजें दी हैं? लिखा है न! 'अवधि मन:पर्यययोः' और 'तद्विशेषः' है यह उसके साथ जोड़ लेना। मतलब अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञानों में आपस में बड़ी विशेषताएँ हैं, इन दोनों का यहाँ पर इस सूत्र के माध्यम से एक comparative study की

## COMPARATIVE STUDY

| विशेषता | अवधिज्ञान | मन:पर्यय ज्ञान |
|---|---|---|
| विशुद्धि | कम | अधिक (कर्म का क्षयोपशम होना बहुत दुर्लभ होता है) |
| क्षेत्र | पूरा लोक (स्थुलता से जानेगें) | पैंतालीस लाख योजन का मनुष्य क्षेत्र (सूक्ष्मता से जानेगें) |
| स्वामि | चारों गतियों के जीवों को हो सकता | केवल संयत मुनिराज |

जा रही है। कैसे? पहले विशुद्धि मतलब यह है कि अवधिज्ञानी जीवों की विशुद्धि से, मन:पर्यय ज्ञानी जीव की विशुद्धि अधिक होती है। इसी विशुद्धि के कारण से यह मन:पर्यय ज्ञानी जीव अवधिज्ञानियों से विशिष्ट कहलाते हैं क्योंकि यह कर्म का क्षयोपशम होना बहुत दुर्लभ होता है, अवधिज्ञान से भी ज्यादा दुर्लभ होता है। क्षेत्र की अपेक्षा से देखें तो अवधिज्ञान के क्षेत्र से भी ज्यादा मन:पर्यय ज्ञान का क्षेत्र सूक्ष्मता के साथ में आ जाता है। क्या कहा? अवधिज्ञानी जिस क्षेत्र को जानेंगे, जितने स्थान को जानेंगे, उसकी अपेक्षा से मन:पर्यय ज्ञानी जो क्षेत्र को जानेंगे उसे और बारीकी से जानेंगे, उसे और सूक्ष्मता से जानेंगे।

इसको ऐसे समझ सकते हैं आप जैसे- एक ज्ञान वह है जो अनेक तरह के subjects

को जान रहा है और अनेक तरह की किताबों को भी पढ़ रहा है। समझ में आ रहा है? और एक वह विद्वान है जो केवल एक किताब को पढ़ रहा है और ऐसे पढ़ रहा है कि उसकी एक-एक चीज, बारीक से बारीक, उसकी अर्थ की जो प्रकटता है, वह उसने अपने अन्दर कर ली है। बताओ अच्छा कौन-सा माना जाएगा? एक ने दस शास्त्र पढ़ लिया और सब की उसको ऊपर-ऊपर की knowledge है और एक ने केवल एक पढ़ा और ऐसा

पढ़ा कि उसमें आप आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, कहीं से बीच में से, कुछ भी, किसी भी तरह का कुछ भी पूछ लो बिल्कुल वह उसमें कुशल है। कौन अच्छा लगेगा आपको? कौन बुद्धिमान कहलाएगा? दस शास्त्र वाला कि एक शास्त्र वाला? एक शास्त्र वाला! तब तो फिर आप हमारी जैसी बातें कर रहे हो। यही हम कहना चाह रहे हैं।
अवधिज्ञानी जीव भी इसी तरह से बहुत क्षेत्र को जानता है, स्थूल रूप से जानता है लेकिन सूक्ष्मता के साथ में उसी क्षेत्र का भी और सूक्ष्म पर्यायों के साथ जानने का जो ज्ञान होता है उसका नाम है- मनःपर्यय ज्ञान। अवधिज्ञान में सर्वोत्कृष्ट ज्ञान होता है- सर्वावधि ज्ञान और वह सर्वावधि ज्ञान जितने उस द्रव्य को पकड़ता है, उस द्रव्य का भी यह अनन्तवाँ भाग यह मनःपर्यय ज्ञान पकड़ लेता है, उसकी पर्यायों को पकड़ लेता है। इसलिए यह सूक्ष्मता का ज्ञान करने के कारण से यह अधिक विशुद्ध कहलाता है और इसका क्षेत्र जो होता है, क्षेत्र इसका वर्तमान की अपेक्षा से तो सीमित होता है लेकिन जानने की अपेक्षा से बहुत असीम भी होता है। अगर हम देखें तो अवधिज्ञान का क्षेत्र पूरा लोक है, अवधिज्ञान पूरे लोक को जान सकता है क्योंकि आप जानते हो जब देवों का अवधिज्ञान बताया जाता है तो ऊपर सर्वार्थसिद्धि वगैरह के जो देव होते है पूरी लोकनाड़ी का ज्ञान रखते हैं, पूरी लोकनाड़ी।

लेकिन जो मनःपर्यय ज्ञान वाला जीव है वह जब भी जानेंगे तो उनका क्षेत्र पैंतालीस लाख योजन का मनुष्य क्षेत्र ही आएगा। उसमें बैठे हुए जीव के बारे में ही जान पाएँगे। वह व्यक्ति जिसके मन में हमें अपना मनःपर्यय ज्ञान लगाना है वह इस सीमा के अन्दर होना चाहिए। यह

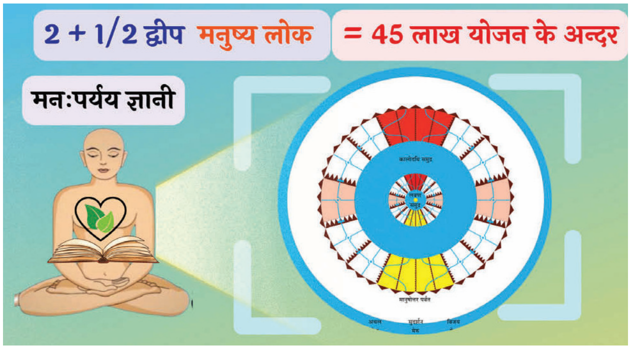


इनके क्षेत्र की विशेषता है। मनःपर्यय ज्ञान का क्षेत्र, उस मनःपर्यय ज्ञान को प्रयुक्त करने की अपेक्षा से, जोड़ने की अपेक्षा से, उस व्यक्ति के मन में लगाने की अपेक्षा से वह व्यक्ति कहाँ होना चाहिए? ढाई द्वीप इसके अन्दर, मनुष्य लोक के अन्दर होना चाहिए। उसको जानने के बाद में वह उसके कई भवों को जान सकेंगे, वह अलग बात है। आगे के, पीछे के लेकिन वह व्यक्ति जिसकी हमें मन में अपना ज्ञान जोड़ना है वह व्यक्ति ढाईद्वीप के अन्दर, मनुष्य लोक, पैंतालीस लाख योजन के अन्दर होना चहिते। इनका क्षेत्र इसलिए इतना बनता है। और अवधिज्ञानी का क्षेत्र! पूरा लोक बन जाता है। वह अवधिज्ञानी वहीं से बैठे-बैठे पूरे लोकों को जान सकता है। इस तरह के ये विशुद्धि के अन्तर पड़ जाते हैं, क्षेत्र के अन्तर पड़ जाते हैं, स्वामी में अन्तर पड़ जाता है क्योंकि यह तो आपको बताया जा चुका है कि अवधिज्ञान के स्वामी तो नारकी भी हो सकते हैं, देव भी हो सकते हैं, मनुष्य भी होते हैं, तिर्यन्च भी होते हैं। लेकिन मनःपर्यय ज्ञान का स्वामी तो केवल मनुष्य ही होगा। और किस मन विशेषता वाला

होगा यह आपको बताया जा चुका है। इसलिए अवधि ज्ञान और मनःपर्यय ज्ञान के स्वामी में अन्तर हो गया। फिर कहते हैं 'विषयेभ्यो' मतलब अवधिज्ञान का जो विषय है वह और मनःपर्यय ज्ञान का जो विषय है वह उसमें बड़ा अन्तर आ जाता है। विषय का मतलब यह हो गया कि मनःपर्यय ज्ञान किसको पकड़ रहा है? जो द्रव्य के बारे में हम बता रहे थे उस द्रव्य के अनन्तवें भाग को भी पकड़ना, उसकी और सूक्ष्म पर्याय को पकड़ना, यह इस मनःपर्यय ज्ञान की विशेषता हो जाती है। इसी कारण से इस अवधिज्ञान और मनःपर्यय ज्ञान में भारी अन्तर आ जाता है।

अतः अवधिज्ञान और मनःपर्यय ज्ञान का यह अन्तर इस सूत्र से बताया गया। और दो प्रकार के जो मनःपर्यय ज्ञान है उनका अन्तर जो है वह ऊपर के सूत्र से बताया गया। सामान्य रूप से, ऊपर वाले जो सूत्र में जो मनःपर्यय ज्ञान दो प्रकार के थे उनमें भी एक अन्तर, देश और काल की अपेक्षा से बन जाता है, जिसे हम क्षेत्र और काल की अपेक्षा से कह सकते हैं। हम कह सकते हैं कि मनःपर्यय ज्ञानी जो जीव होते हैं उनमें जो ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानी है उनके लिए अगर किसी के भवों को जानना होगा तो वे कम से कम किसी के दो, तीन भवों को जान सकते हैं, अधिक से अधिक सात, आठ भवों को भी जान सकते हैं। कौन? ऋजुमति वाले और विपुलमति वाले जो

SCAN TO WATCH

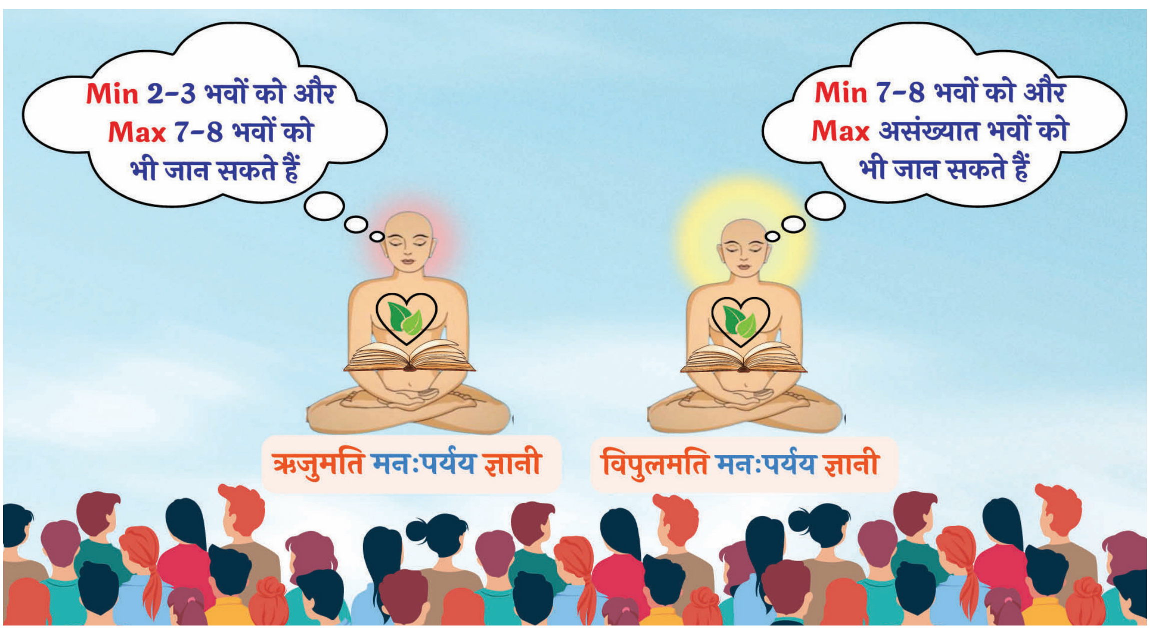


होंगे वे कम से कम भी किसी के सात, आठ भवों को जानेंगे और अधिक से अधिक असंख्यात भवों को भी जान सकते हैं। कितने? असंख्यात। इतना अन्तर आ जाता है। यह अन्तर हमें बताता है कि किस तरह से इन दोनों ज्ञानियों में अपने आप में बड़ी-बड़ी विशेषताएँ हैं और इस

तरह के अन्तर के साथ ही यह आप जब इन दोनों ज्ञानियों के विषय में बार-बार चिन्तन करेंगे तो आपको इन ज्ञानियों के अन्तर विशुद्धि के माध्यम से ज्ञान में आएँगे। यह अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान के विषय में जो सूत्र में जानकारी थी, वह इतनी आपको हो चुकी है। आगे कहते हैं-

## मतिज्ञान और श्रुतज्ञान किस प्रकार के ज्ञेयों को जानते हैं?

**मति-श्रुतयो-र्निबन्धो द्रव्येष्वसर्व-पर्यायेषु ||1.26||**

**मतियो + श्रुतयो: - निबन्ध: + द्रव्येषु + असर्वपर्याय़ेषु**

**सब द्रव्यों को जानता, लेकिन कुछ पर्याय।**
**मति श्रुत ज्ञान बना रहा, विषय बहुत सकुचाय॥26॥**

अब यहाँ पर विषय क्या आता है? मतिज्ञान और श्रुतज्ञान का विषय क्या है? विषय का मतलब ये किस प्रकार के ज्ञेयों को जानते हैं। ज्ञेय मतलब पदार्थ। किस-किस तरह की इनकी पकड़ है? अब हर एक ज्ञान के विषय बताए जाएँगे। मतिज्ञान और श्रुतज्ञान दोनों एक साथ काम

करते हैं इन दोनों ज्ञानों का विषय आचार्य कहते हैं- 'द्रव्येषु' अर्थात् द्रव्यों में, सभी द्रव्यों में तो होता है लेकिन 'असर्व पर्याययेषु' सभी पर्यायों में नहीं होता। असर्व मतलब कुछ पर्यायों में होता है। क्या मतलब हुआ? मतिज्ञान से आप छह द्रव्यों को सुन सकते हैं, जान सकते हैं, स्मरण में रख सकते हैं। छः द्रव्य होते हैं। उनके कुछ-कुछ गुणों और कुछ-कुछ पर्यायों की भी

आपको जानकारी हो सकती है लेकिन सभी पर्यायों की जानकारी तो आपको मतिज्ञान, श्रुतज्ञान से नहीं हो सकती।

मतिज्ञान से सभी पर्याय आपको न तो सुनने में आ सकती हैं और न ही वह मतिज्ञान से आपके लिए कभी भी वह सब पर्याय और इन्द्रिय के माध्यम से पकड़ में आ सकती है। न आप उनको देख सकोगे, न कभी छू सकोगे, न कभी सुन सकोगे। सभी पर्याय मतिज्ञान से नहीं पकड़ी जा सकती लेकिन द्रव्यों को मतिज्ञान से पकड़ा जा सकता है। जैसे- हमसे कहा गया: अनन्त जीव होते हैं। क्या कहा? जीव कितने होते हैं? अनन्त होते हैं तो हमारे दिमाग में अब बन गया कि जीव कितने होते हैं, संख्यात नहीं होते, असंख्यात नहीं होते, जीव कितने होते हैं? अनन्त होते हैं। तो एक तरह से हमने जान लिया जीवद्रव्य कितने हैं? अनन्त हैं। जान लिया मतिज्ञान से सुन लिया, श्रुतज्ञान से जान लिया। यह हमारा मतिज्ञान से जानना हो गया। श्रुतज्ञान से हम उन जीवों की विशेष परिणतियों के बारे में जान सकते हैं। हाँ! अनन्त तो होते हैं लेकिन देवगति में अनन्त नहीं होते, मनुष्यगति में नहीं होते, नरकगति में अनन्त नहीं होते, तिर्यन्चगति में ही केवल अनन्त होते हैं। यह किससे जान लिया? यह हमें जो सिखाया गया श्रुतज्ञान, मतिज्ञान उससे हमें यह जानने में आ रहा है। मतलब हम द्रव्यों के बारे में तो जानने में आ रहा हैं लेकिन उन सभी द्रव्यों की सब पर्याय नहीं पकड़ पा रहे हैं। कौन द्रव्य कब, क्या था? अब क्या है? आगे क्या होगा? ऐसा कुछ नहीं पकड़ पाए। इसलिए कहा गया है कि मतिज्ञान और श्रुतज्ञान यह सब द्रव्यों की जानकारी तो देते हैं लेकिन सभी पर्यायों की जानकारी नहीं दे सकते। यहाँ तक कि श्रुतज्ञान भी नहीं दे सकता।

## मतिज्ञान और श्रुतज्ञान का विषय सभी द्रव्यों की कुछ पर्यायों में ही होता है

अब आप देखें कि आपके पास में जो श्रुतज्ञान है जिसे हम कल चर्चा में ला रहे थे। एक द्रव्यश्रुत है, एक भावश्रुत, एक अक्षरात्मक श्रुत है एक अनक्षरात्मक श्रुत है। जो श्रुत हमें शब्द के माध्यम से बताया जा रहा है वह सब अक्षरात्मक श्रुत है। इस अक्षरात्मक श्रुत के माध्यम से भी हम जो जान रहे हैं, वह द्रव्य को तो जान लेंगे लेकिन उनकी सब पर्यायों की विशेषताओं को नहीं जान पाएँगे। क्यों नहीं जान पाएँगे? यह इसका स्वभाव है। तीर्थंकर भी होते हैं, वे भी जब अपनी दिव्य ध्वनि से कुछ बोलते हैं, तत्त्व का प्ररूपण करते हैं तो भी ऐसा कहा गया है। जितना उन्होंने बोला है उसका भी बहुत सारा भाग ऐसा था जो उनके ज्ञान में तो आ रहा था लेकिन बोलने में नहीं आया। मतलब जितना वे जान रहे हैं अनन्त पर्यायों के बारे में, वह उनके जानने में तो आ रहा है लेकिन वे बोल नही सकते। जो उन्होंने दिव्य ध्वनि से बोला है, उसका अनन्तवाँ भाग गणधर परमेष्ठी की समझ में नहीं आ सकता, वह उनसे भी छूट जाएगा। वे हर चीज को श्रुत में निबद्ध नहीं कर पाएँगे। क्या समझ आया? इतना छूट गया। क्यों छूट गया? क्योंकि श्रुतज्ञान से इतना ही सम्भव है। लेकिन इतना जरूर है कि जो छूटा है वह द्रव्य नहीं है, वह क्या है? पर्याय है और

SCAN TO WATCH

सूक्ष्मता का ज्ञान है लेकिन द्रव्य का ज्ञान तो हमको बराबर है। अतः द्रव्य छः ही होते है। ऐसा मत समझना कि तीर्थंकरों की वाणी में जानने में तो बहुत से द्रव्य आये थे लेकिन कहने में तो छह ही आये या गणधरों के द्वारा कहने में छह ही आये, सुनने में बहुत से आये। नहीं ऐसा नहीं!

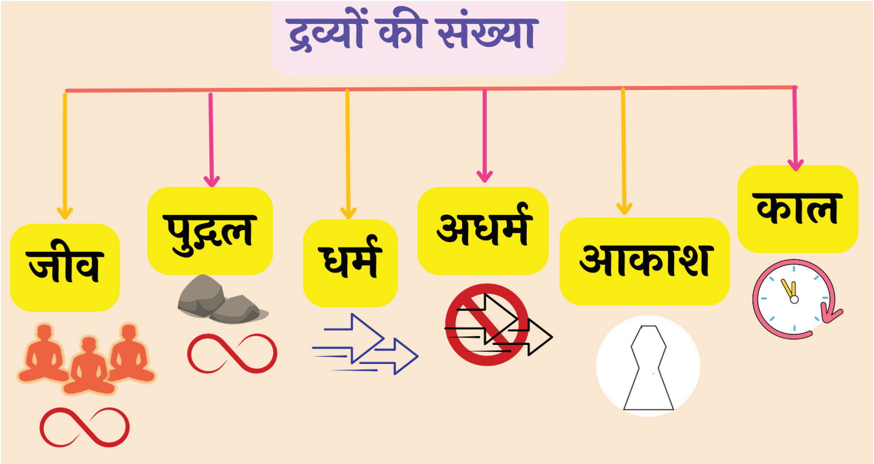


द्रव्य तो छह ही थे। उन सब द्रव्यों की संख्या है। जीव द्रव्य भी अनन्त है, पुद्गल द्रव्य भी अनन्त है, आकाश द्रव्य भी अनन्त है। यह उसके प्रदेशों की अपेक्षा से अनन्त है और इस तरह से उस हर एक द्रव्य की जो विशेषताएँ बताई गई हैं वह सब हमको पता है। लेकिन हर द्रव्य की पर्याय के बारे में हमें ज्ञान, मतिज्ञान और श्रुतज्ञान से नहीं हो सकता। इसलिए यहाँ क्या कहा है? मतिज्ञान और श्रुतज्ञान का विषय सभी द्रव्यों में तो होता है लेकिन उसकी कुछ पर्यायों में ही होता है। जिनको श्रुतज्ञान पूरा का पूरा भी है, मान लो श्रुतकेवली हैं, द्वादशांग का भी जिनको पूरा ज्ञान है, वे सब द्रव्यों को तो जानेंगे लेकिन उनकी सभी पर्यायों को नहीं जान पाएँगे, कुछ पर्यायों को जानेंगे। कितने गुण हैं? उन गुणों का कितना हम वर्णन कर सकते हैं? उन गुणों की कितनी पर्याय हम समझा सकते हैं? यह सब एक limit तक ही सम्भव है। उनकी अनन्त पर्यायों को न कहा जा सकता है, न कोई लिख सकता है, न कोई समझा सकता है।

## केवलज्ञान में और श्रुतज्ञान में पर्याय की अपेक्षा से ही विशेषता है

इसलिए यह सूत्र हमें बताता है कि आप द्रव्य की अपेक्षा से देखो तो सब जानते हो। जितना केवलज्ञानी जानते हैं उतना ही आप भी जानते हो। किस अपेक्षा से? द्रव्य की अपेक्षा से, पर्याय की अपेक्षा से नहीं। केवलज्ञान में और श्रुतज्ञान में पर्याय की अपेक्षा से ही विशेषता है अन्यथा श्रुतज्ञान और केवलज्ञान में कोई विशेषता नहीं रह जाती अगर केवल द्रव्य की अपेक्षा से जानना होता। हम भी द्रव्य की अपेक्षा से जितना जान रहे हैं केवलज्ञान भी उतना ही जान रहे हैं। हाँ! इतना जरूर है कि वह प्रत्यक्ष जानते हैं, हम परोक्ष से जानते हैं। बस! इतना ही अन्तर

है लेकिन उनके जानने में और हमारे जानने में, जो प्रत्यक्ष और परोक्ष का अन्तर है, यह कहने में तो एक line में आ गया लेकिन यह बहुत बड़ा अन्तर है। छोटा-मोटा अन्तर नहीं है यह। यह आपको पहले उदाहरण देकर के समझाया जा चुका है प्रत्यक्ष और परोक्ष में क्या भेद होता है? इस तरह से यह मतिज्ञान, श्रुतज्ञान का विषय बताने के बाद आचार्य कहते हैं-

## अवधिज्ञान का क्या विषय है?

**रूपिष्ववधे ॥1.27॥**
**रूपिषु + अवधे :**

**रूपी वस्तु जानता, सीमा के अनुकूल ।**
**अवधि ज्ञान का विषय भी, बता सके भवकूल॥27॥**

इस सूत्र को ऐसे नहीं पढ़ा करो 'रूपिष्व वधे' ऐसे नहीं पढ़ते हैं 'रूपिष् ववधे' ऐसे पढ़ते हैं। हाँ! 'रूपिष् ववधे' है। हाँ! अपने आप अगर आप इस सूत्र को पढ़ोगे तो 'रूपिष्ववधे' तो अपने आप 'अवधे' ऐसी आवाज निकलेगी। और 'व' अगर आपने पूरा पहले ले लिया तो फिर 'वधे' की आवाज निकलेगी 'अवधे' की आवाज नहीं निकलेगी। सुन रहे है न? ये बारीकियाँ भी पढ़ने वाले ध्यान में रख सकते हैं। क्या कहा जा रहा है? अवधिज्ञान का विषय क्षेत्र रूपी पदार्थों में ही है।

## अवधिज्ञान केवल रूपी पदार्थों को जानेगा

अब देखो! अ वधिज्ञान किस को जानेगा? केवल रूपी पदार्थों को .रूपी मतलब? जो पौद्गलिक पदार्थ हैं, स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण से सम्बन्ध रखते हैं केवल उनको जानेगा। अगर विषय की दृष्टि से देखें तो हमारा मतिज्ञान-श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान से ज्यादा द्रव्य को ग्रहण कर रहा है। क्या सुन रहे हो? आपको थोड़ा अच्छा feeling लाने के लिए बता रहा हूँ। ध्यान में रखना! अवधिज्ञान तो केवल रूपी पदार्थों को जानेगा और मतिज्ञान, श्रुतज्ञान रूपी को भी जानता है और अरूपी को भी जानता है। संसारी आत्मा को भी जान रहा है और शुद्ध आत्मा को भी जानता है। कौन? अपना श्रुतज्ञान। अवधिज्ञान शुद्धात्मा को नहीं जान पाएगा क्योंकि शुद्ध आत्माएँ अरूपी होती हैं, शुद्ध द्रव्यों को वह नहीं पकड़ पाएगा को वह नहीं पकड़ पाएगा लेकिन हमारा श्रुतज्ञान शुद्ध द्रव्य को जानेगा। कितनी आत्माएँ शुद्ध हैं? उस अनन्त में भी कितनी आत्माओं की संख्या का विभाजन संसारी जीवों के माध्यम से किया जा सकता है? वह शुद्ध आत्माओं की परिणतियाँ किन-किन गुणों की हो रही हैं? किस रूप में वह शुद्ध आत्माएँ किस अवगाहना के साथ में कहाँ पर विद्यमान है? यह सब आपके श्रुतज्ञान में आ रहा है लेकिन अवधिज्ञान में सब नहीं आएगा।

SCAN TO WATCH

मतलब अवधिज्ञान हमेशा रूपी पदार्थों को ही पकड़ेगा, शुद्ध आत्माओं के बारे में उसकी कोई गति नहीं होती लेकिन संसारी जीवों की संसारी आत्माओं के बारे में वह पूर्ण जान सकता है। वह भी कैसे जानेगा? कर्म के माध्यम से जानेगा क्योंकि उसकी पकड़ आत्मा पर नहीं बनेगी। उसकी पकड़ कहाँ बनेगी? कर्म पर। वह आत्मा को नहीं पकड़ेगा, कर्म को पकड़ेगा और कर्म को पकड़ करके समझ लेगा। हाँ! आपके कर्म का कौन-सा उदय चल रहा है? आपने पिछला कौन-सा कर्म किया था? आपके लिए कौन-सी आयु का बन्ध हुआ था? आगे कौन-सी आयु का बन्ध होगा? कई भवों की भी वह बता देगा। किसके माध्यम से? रूपी द्रव्य को जानने के माध्यम से। अवधिज्ञान का जो सर्वोत्कृष्ट भेद था-

- देशावधि
- परमावधि और अन्त में
- सर्वावधि।

## सर्वावधिज्ञान के माध्यम से ही परमाणु को जाना जाता है

जो सर्वावधि अवधिज्ञान है ये तो अन्त के परमाणु तक को भी ग्रहण कर लेता है। कहीं-कहीं शास्त्रों में कार्मण द्रव्य इसका अन्तिम विषय बताया है और यह परमाणु को भी ग्रहण कर लेता है मतलब सर्वावधि ज्ञान के माध्यम से ही परमाणु जाना जाता है और आप कोई ज्ञान से परमाणु नहीं जान सकते हो। इसकी रूपी में सूक्ष्मता के साथ पकड़ तो हो गई लेकिन यह रूपी द्रव्य को ही जान पाएगा, कार्मण द्रव्य को जान पाएगा, कभी भी यह आत्मा के अरूपी स्वभाव को नहीं जान पाएगा। अब आप यह पूछ सकते हो, क्या अवधिज्ञानी जीव किसी भी जीव के बारे में बता सकते हैं कि यह भव्य है कि अभव्य है? आत्मा की शक्ति या योग्यता को देख करके नहीं बता पाएँगे कि यह भव्य है कि अभव्य है।

## भव्यत्व अभव्यत्व के गुण को केवलज्ञानी ही बता सकते हैं

हाँ! इतना जरूर है कि कर्मों के क्षयोपशम, कर्मों की स्थिति, अनुभाग को देख कर ये बता

सकते हैं कि यह भव्य है या अभव्य है। लेकिन यह भव्य, अभव्य होना एक तरह से देखा जाए तो इसको वास्तव में जानने का विषय अवधिज्ञान का भी नहीं, मनःपर्यय ज्ञान का भी नहीं। यह विषय केवल केवलज्ञान का ही होता है। फिर भी इस अपेक्षा से कि अगर मान लो हमें किसी भी जीव के दस भव, बीस भव देखने में आ रहे हैं। उसके कर्मों के क्षयोपशम अगर कभी मान लो मिथ्यात्व का उपशमन हुआ है, कभी सम्यग्दर्शन प्राप्त किया है तो हम कह सकेंगे कि एक बार भी इसको सम्यग्दर्शन हो गया मतलब

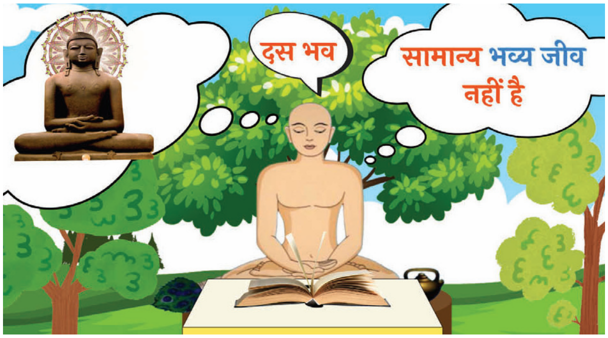

यह भव्य है। आदिनाथ भगवान के जीव के बारे में भी एक मुनि महाराज से पूछा गया था दस भव पहले, उनके मन्त्री महोदय ने पूछा था, यही पूछा था। भगवन् बताओ! मेरे राजा भव्य हैं कि अभव्य हैं? उन्होंने दस भव आगे का देख लिया और उन्हें दिख रहा है- अरे! यह तो भव्य नहीं है, आगे तीर्थंकर बनने वाला जीव है, सामान्य भव्य जीव नहीं है। अवधिज्ञान से इस तरह से तो जाना जा सकता है लेकिन वास्तव में जो भव्यत्व शक्ति है, भव्यत्व जो गुण है, वह नहीं पहचाना जा सकता क्योंकि वह गुण तो अरूपी हो गया।

वह ज्ञान केवल जो है केवलज्ञानी को ही होगा। इस तरह से यह अवधिज्ञान की एक सीमा बन जाती है केवल रूपी पदार्थों तक। मतलब अवधिज्ञान आत्मा को नहीं जानता लेकिन आत्मा में जो कर्म जुड़े हैं उसके माध्यम से आपकी गति-अगति, पिछले भव, आगे के भव बता सकता है लेकिन यह मत सोचना कि हमारी आत्मा की परिणति देख कर बता रहा है। कर्म की परिणति देख कह बता रहा है, यह जानना। इस तरह से यह रूपी ही अवधिज्ञान का विषय होता है, यह बताया गया। आगे मनःपर्यय ज्ञान का विषय क्या होता है? वह आपको बाद में बताया जाएगा। आज के लिए इतना ही पर्याप्त।

## सारांश

1. हमने सम्यक्ज्ञान के प्रकरण में मन:पर्यय ज्ञान की विशेषताओं को जाना
2. ये दो प्रकार का होता है - ऋजुमति और विपुलमति
3. ऋजुमति ज्ञान से विपुलमति ज्ञान ज्यादा विशुद्धि वाला होता है
4. यह प्रतिपाती अर्थात इसमें संयत मुनि महाराज उपशम श्रेणी से गिर सकते हैं
5. विपुलमति ज्ञान अप्रीतिपाती होता है
6. हमने जाना कि विशुद्धि कर्मों के क्षयोपशम से, क्षय से, उपशम आदि से आत्मा में उत्पन्न होने वाली प्रसन्नता है
7. इस विशुद्धि से हम ज्ञानावरण आदि घातिया कर्मों का विनाश कर सकते हैं
8. जैसे जैसे विशुद्धि बढ़ेगी, ज्ञान भी बढ़ेगा और उससे मोह कम होगा
9. मोह कम होने से ज्ञान बढ़ेगा और उससे विशुद्धि अपने आप बढ़ेगी
10. विशुद्धि बढ़ने से संक्लेश भीतर ही भीतर नष्ट होता जाएगा
11. और परिणामों में हमेशा प्रसन्नता बनी रहेगी
12. मनः पर्यय ज्ञान सिर्फ विशिष्ट व्यक्तियों को होता है

- यह-वर्धमान चारित्र वाले,
- छठवें-सातवें गुणस्थान वाले
- ऋद्धिधारी संयमी मुनियों को ही होगा

13. ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान, विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान दोनों ऋद्धियाँ हैं

- ये ४८ ऋद्धियाँ में णमो उजमदीणं और णमों विउलमदीणं नाम से आती हैं

14. मन:पर्यय ज्ञानी बड़े से बड़े अवधिज्ञानी से भी सूक्ष्मता से जानता है
15. मन:पर्यय ज्ञानी की विशुद्धि अवधिज्ञानी से हमेशा ज्यादा होगी
16. विपुलमति ज्ञान वाले संयत मुनि की विशुद्धि ऋजुमति ज्ञान वाले मुनि से अधिक होती है
17. क्योंकि उनके पास उस ज्ञान की और भी शक्तियाँ प्रगट हो गई है
18. मन में चल रहे सूक्ष्म विचारों की परिणति को पकड़ना मन:पर्यय ज्ञान का विशिष्ट कार्य है
19. हम भाव अमूर्त चीज है
20. हम उसको नहीं पकड़ पाते मगर मन:पर्ययी मुनि महाराज उस भाव को, future में आने वाले भाव को भी पकड़ लेते हैं
21. जैन दर्शन के अलावा इस तरह के ज्ञानों की समीक्षा कहीं नहीं मिलेगी
22. english translation में शास्त्रों के साथ अन्याय-सा किया जा रहा है
23. अवधिज्ञान, मन:पर्यय के लिए कोई शब्द fit नहीं बैठता है
24. मन:पर्यय ज्ञान को telepathy और अवधिज्ञान को clairvoyance शब्द में fit

करने की कोशिश की है
25. मगर ये नाम देकर इन ज्ञानों को बहुत हल्का बना दिया है, इसकी गरिमा को खत्म कर दिया है
26. ये नाम हमेशा roman english में ही लिखने चाहिए
27. हमने जानाकि ज्ञान और आत्मा अलग-अलग नहीं है
28. ज्ञान में purity मतलब आत्मा में purity आना
29. ज्ञान के क्षयोपशम की वृद्धि मतलब आत्मा का level बढ़ना
30. सम्यग्ज्ञान के प्रकरण में हम मनःपर्यय ज्ञान के भेदों की विशेषताएँ समझ रहे थे
31.कल हमने जाना कि विपुलमति ज्ञान की विशुद्धि ऋजुमति ज्ञान से अधिक होती है
32. आज हमने जाना कि ऋजुमति ज्ञान प्रतिपाती होता है अर्थात इससे संयत आत्मा गिर सकता है
33. जबकि विपुलमति अप्रतिपाती होता है
34. प्रतिपाती अर्थात यदि वह आत्मा उपशम श्रेणी चढ़ता हैं तो ग्यारहवें गुणस्थान तक पहुँचने के बाद उसे नियम से छटवें, सातवें गुणस्थान में वापस आना होता है
35. विपुलमति ज्ञानी नियम से क्षपक श्रेणी पर ही चढ़ता है
36. सूत्र 25 - विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयोऽवधिमनः पर्यययोः में हमने जाना कि मनःपर्यय ज्ञान अवधिज्ञान से अधिक विशुद्धि वाला होता है
37. अवधिज्ञानी जिस क्षेत्र, स्थान को स्थूल रूप से जानेंगे और मनःपर्यय ज्ञानी उस क्षेत्र को बारीकी, सूक्ष्मता से जानेंगे
38. सर्वावधि अवधिज्ञान अन्त के परमाणु तक को भी ग्रहण कर लेता है, मनःपर्यय ज्ञान उसके अनन्तवें भाग को भी ग्रहण कर लेता है
39. इसी सूक्ष्मता के ज्ञान के कारण यह अधिक विशुद्ध कहलाता है
40. इसका क्षेत्र वर्तमान की अपेक्षा से तो सीमित होता है, जानने की अपेक्षा से बहुत असीम होता है
41. क्षेत्र की अपेक्षा अवधिज्ञान पूरे लोक को जान सकता है
42. वहीं मनःपर्यय ज्ञान के लिए जिसके मन में स्थित पथार्थ जान रहे है वह पैंतालीस लाख योजन के मनुष्य क्षेत्र में ही होना चाहिए
43. अवधिज्ञान के स्वामी नारकी, देव, मनुष्य, तिर्यंच भी होते हैं वहीं मनःपर्यय ज्ञान के स्वामी केवल संयत मनुष्य ही होते हैं
44. सूत्र 26 मति श्रुतयोर्निबंधों द्रव्येष्व सर्व पर्यायेषु में हमने जान कि मतिज्ञान और श्रुतज्ञान सभी द्रव्यों को को जानते हैं
45. परन्तु उनकी सभी पर्यायों को नहीं जानते
46. जैसे श्रुतकेवली को द्वादशांग का पुर्ण ज्ञान होगा और वे सब द्रव्यों को तो जानेंगे लेकिन
- उनकी सभी पर्यायों को नहीं जान पाएँगे

47. केवलज्ञान, श्रुतज्ञान में पर्याय की अपेक्षा से ही विशषेता है
48. द्रव्य की अपेक्षा दोनों एक समान ही जानते हैं
49. केवलज्ञान प्रत्यक्ष है परन्तु श्रुतज्ञान परोक्ष है
50. सूत्र 27 - रूपिष्ववधे में हमने जाना कि अवधिज्ञान का विषय रूपी अर्थात पौद्गलिक पदार्थों ही हैं
51. वह शुद्ध आत्माएँ को, शुद्ध द्रव्यों को नहीं पकड़ पाएगा
52. विषय की दृष्टि से मतिज्ञान, श्रुतज्ञान रूपी और अरूपी दोनों पदार्थों को जानता है
53. अवधिज्ञानी संसारी जीवों की आत्माएँ को कर्म के माध्यम से जानेगा
54. भव्यत्व, अभव्यत्व गुण सिर्फ केवलज्ञान का ही विषय है

# अभ्यास प्रश्न पत्र

प्रश्न 1- दो प्रकार के मन:पर्यय ज्ञान में अन्तर बताने के लिए कौन सा सूत्र है?
1. चौबीस
2. इक्कीस
3. बाइस

प्रश्न 2- ऋजुमति ज्ञान __________ नहीं होता।
1. विशुद्ध
2. प्रतिपाती
3. अप्रतिपाती

प्रश्न 3- कर्मों के क्षयोपशम से जो आत्मा में एक प्रसन्नता उत्पन्न होती है उसका नाम क्या है?
1. विशुद्धि
2. संक्लेश
3. प्रतिपाती

प्रश्न 4- मन:पर्यय ज्ञान किस गति के जीव को होता है ?
1. मनुष्य गति
2. देव गति
3. तिर्यंच गति

प्रश्न 5- मन:पर्यय ज्ञान किस गुणस्थान वाले जीव को होता है ?
1. चौथे
2. पाँचवे
3. छठे- सातवें

प्रश्न 6- ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान और विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान यह दोनों ही ऋद्धियाँ हैं।
1. सही
2. ग़लत

प्रश्न 7- निम्न में से ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान और विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान दोनों में अन्तर के आधार क्या है ?
1. स्वामी
2. क्षेत्र
3. विशुद्धि

प्रश्न 8- ऋजुमती ज्ञान से विपुलमती ज्ञान ______ विशुद्धि वाला होता है और ऋजुमति ज्ञान _______ नहीं होता।
1. कम, अप्रतिपाती
2. अधिक, प्रतिपाती
3. अधिक,

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

प्रश्न 9- प्रतिपाती विशेषण किसके लिए बनता है-

1. सभी मनःपर्यय ज्ञानी
2. ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानी
3. विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी

प्रश्न 10- किस गुणस्थान से जीव के प्रतिपातीपना निश्चित है?

1. बारहवें
2. ग्यारहवें
3. तेरहवें

प्रश्न 11- कौनसी श्रेणी चढ़ने वाले जीव के प्रतिपातीपना निश्चित है?

1. क्षपक
2. उपशम
3. दोनो

प्रश्न 12- ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानी जीव कौनसी श्रेणी चढ़ने वाले होते है?

1. उपशम
2. क्षपक
3. दोनो

प्रश्न 13- विशुद्धि क्षेत्र ______ विषयेभ्योवधी
मनःपर्यययोः - रिक्त स्थान भरो।

1. स्वामी
2. भाव
3. द्रव्य

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें
प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

# अभ्यास प्रश्न पत्र 'विषयक'

प्रश्न - 1 ऋजुमति मन:पर्ययज्ञान एवं विपुलमति मन:पर्ययज्ञान में अंतर बताइये।

प्रश्न - 2 प्रतिपाती का क्या अर्थ है ?

प्रश्न - 3 कौन सा मन:पर्ययज्ञान अप्रतिपाती होता है?

प्रश्न - 4 मतिज्ञान एवं श्रुतज्ञान का विषय क्या है?

प्रश्न - 5 अवधिज्ञान का क्या विषय है?

प्रश्न - 6 मनःपर्यय ज्ञान किसको होगा?

प्रश्न - 7 मन:पर्यय ज्ञान अवधिज्ञान से विशिष्ट क्यों है?

प्रश्न - 8 ऋजुमति और विपुलमति ज्ञान में क्या अन्तर है?

प्रश्न - 9 अवधिज्ञान और मनःपर्यय ज्ञान में विशुद्धि, क्षेत्र, स्वामी, विषय की अपेक्षा अन्तर स्पष्ट करें।

# प्रवचन: 09

## अवधिज्ञान का विषय

तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थराज में सम्यग्ज्ञान का जो वर्णन चल रहा है, उसमें मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान का वर्णन करने के बाद इनके जो विषय हैं, इन ज्ञानों के द्वारा जो चीजें जानी जाती हैं उनका वर्णन प्रारम्भ हो चुका था। कल आपको यह भी बताया गया था कि अवधिज्ञान का विषय रूपी पदार्थ होते हैं यह सूत्र कल हो चुका था-

**रूपिष्ववधे।।1.27।।**

**रूपिषु + अवधे :**

**रूपी वस्तु जानता, सीमा के अनुकूल ।**
**अवधि ज्ञान का विषय भी, बता सके भवकूल॥२७॥**

अवधिज्ञान का विषय, रूपी पदार्थ होते हैं। इसके साथ-साथ एक चीज और जानने योग्य थी कि सूत्रों में पूर्व सूत्रों का भी कुछ अनुसरण चला करता है। पूर्व सूत्र में यदि कुछ कहा गया है तो उसका सम्बन्ध अगले वाले सूत्र से भी हो सकता है इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए जो मति, श्रुतज्ञान के विषय में कहा था कि-

## अवधिज्ञान से कौन-कौन से भाव जानने में आएँगे?

मति-श्रुतयो-र्निबन्धो द्रव्येष्वसर्व-पर्यायेषु ||1.26||

यानि 'द्रव्यों की असर्वपर्यायों में मति और श्रुतज्ञान का विषय होता है।' द्रव्यों को तो सभी को जानते हुए भी असर्वपर्यायों को मति और श्रुतज्ञान जानते हैं। असर्वपर्याय का मतलब क्या समझा? सभी पर्यायों को नहीं, कुछ पर्यायों को। असर्व माने सर्व का अभाव। जो सभी पर्यायों को नहीं जानता, कुछ पर्यायों को जानता है। इसी 'असर्व पर्यायेषु' इस शब्द की, इस पद की अनुवृत्ति इस सूत्र के साथ भी की जाती है। ऐसा भी आचार्यों ने कहा है। यानि रूपी पदार्थों को जानता है यह इस सूत्र से ज्ञात हुआ और ऊपर वाले सूत्र से असर्व पर्यायों को जानता है यह भी इसके साथ जोड़ना क्योंकि इस सूत्र में तो केवल द्रव्य का कथन किया गया। रूपी द्रव्य को जानता है, तो यह भी प्रश्न उठेगा कि अगर रूपी द्रव्य को जानता है, तो क्या रूपी द्रव्य की सभी पर्यायों को जानता है या कुछ पर्यायों को जानता है? आचार्य यहाँ उत्तर देंगे कि रूपी द्रव्य की भी कुछ पर्यायों को ही जानेगा, सभी पर्यायों को नहीं जानेगा। क्योंकि अवधिज्ञान की अपनी जो सीमाएँ हैं, वे सीमाएँ रूपी द्रव्य के साथ-साथ सभी प्रकार के भावों को ग्रहण करने में नहीं आते हैं। जैसे मान लो कर्म द्रव्य भी है, तो कर्म द्रव्य के कारण से आत्मा में अनेक तरह के भाव उत्पन्न होते हैं तो उस आत्मा के भावों को भी सभी प्रकार के भावों को अवधिज्ञान नहीं जान पाएगा। मुख्य रूप से पाँच प्रकार के भाव होते हैं- औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक, औदयिक और पारिणामिक। वैसे इसका वर्णन दूसरे अध्याय से प्रारम्भ होता है फिर भी आप सभी लोग जानकार हैं, पढ़े-लिखे हैं, आगे-पीछे का भी ज्ञान रखते ही हैं। ये पाँच भाव जो बताये गए हैं इन पाँच भावों को भी अवधिज्ञान पूरा का पूरा नहीं जान सकता।

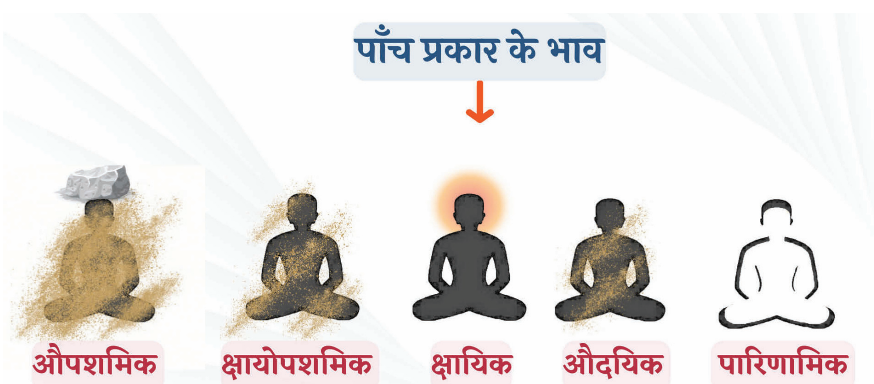


अब यह सोच सकते हैं कि अवधिज्ञान से कौन-कौन से भाव जानने में आएँगे? कर्म के उदय से होने वाले औदयिक भाव हैं, यह अवधिज्ञान से जानने में आ जायेंगे, कर्म के उपशम से होने

वाले औपशमिक भाव हैं ये भी अवधिज्ञान के द्वारा ग्रहण करने में आ जाएगा और कर्म के क्षयोपशम से होने वाले जो क्षयोपशम भाव हैं वे भी अवधिज्ञान बता देगा लेकिन अवधिज्ञान क्षायिक भाव को नहीं बता पाएगा, पारिणामिक भाव को नहीं बता पाएगा, यह अवधिज्ञान की अपनी एक सीमा हो गई इसी को बोलते हैं- 'असर्वपर्यायेषु'। अवधिज्ञान के माध्यम से भी जितनी द्रव्य की (रूपी द्रव्य की) जितनी भी पर्याय हैं वे सारी की सारी ग्रहण करने में नहीं आती, इससे यह सिद्ध हो जाता है।

अब कहने को कर्म के उदय, उपशम से ही औदयिक आदि भाव हो रहे हैं और क्षय से क्षायिक भाव हो रहे हैं तो कर्मजन्य उन भावों को भी पकड़ने का काम यह अवधिज्ञान के माध्यम से हो सकता है लेकिन क्षायिक भावों को पकड़ने का काम अवधिज्ञान के माध्यम से नहीं होता। पारिणामिक भाव भी अवधिज्ञान का विषय नहीं बनता। इसलिए कल आपको बताया था कि भव्य और अभव्य की पहचान अवधिज्ञान का भी विषय नहीं है यह इससे भी जानना। इस तरह से अवधिज्ञान के विषय में जानने के बाद में आगे का सूत्र आता है:

## मन:पर्यय ज्ञान का विषय क्या है?

**तदनन्त-भागे मन:पर्ययस्य ॥1.28॥**

**तत् + अनंत भागे - मन: पर्ययस्य**
**अवधि ज्ञान उत्कृष्ट से, अणुको विषय बनाय।**
**भाग अनन्ते सूक्ष्म को, मनपर्यय बतलाय॥1.28॥**

अब अवधिज्ञान के बाद में मन:पर्यय ज्ञान का विषय आता है। मन:पर्यय ज्ञान किसको जानता है? कितना विषय ग्रहण कर सकता है? आचार्य कहते हैं- उसका अनन्तवाँ भाग, किसका? जो अवधिज्ञान का विषय चल रहा था उसका। अब अवधिज्ञान में भी बहुत प्रकार के अवधिज्ञान बताये थे। देशावधि, परमावधि, सर्वावधि। किसका अनन्तवाँ भाग लेना?

जो सबसे बड़ा अवधिज्ञान होगा, सबसे उत्कृष्ट होगा तो सर्वावधिज्ञान का भी अनन्तवाँ भाग मतलब इतना सूक्ष्म, अनन्तवाँ भाग भी ग्रहण करने में यह मन:पर्यय ज्ञान समर्थ हो जाता है। इससे यह समझने में आता है कि जो पर्याय द्रव्य की अवधिज्ञान पकड़ता है उस पर्याय का यहाँ अनन्तवाँ भाग मन:पर्यय ज्ञान ग्रहण कर लेता है। यानि मन:पर्यय ज्ञान का विषय बहुत ही सूक्ष्मता को लिए हुए है, सूक्ष्म विषय को जानने वाला है और जो अवधिज्ञान का विषय है उससे इसका अनन्तवाँ भाग भी सूक्ष्म होगा तो उसको भी यह ग्रहण करने में समर्थ हो जाता है। इस तरह से मन:पर्यय ज्ञान के विषय में इतना जानना कि यह सर्वावधि ज्ञान के द्वारा जो जाना जाएगा, सर्वावधि ज्ञान को धारण करने वाले मुनि महाराज अपने उस सर्वोत्कृष्ट अवधिज्ञान से जितना द्रव्य और उसकी पर्याय को जानेंगे उसके भी अनन्तवें भाग को ग्रहण करने की क्षमता मन:पर्यय ज्ञानी मुनिराज के पास में होती है।

बताया यह जाता है कि सर्वावधि ज्ञान का उत्कृष्ट द्रव्य, कार्मण द्रव्य कहलाता है, कर्मद्रव्य को ग्रहण करना तो उस कार्मण द्रव्य का भी अनन्तवाँ भाग यह मन:पर्यय ज्ञान ग्रहण करता है इससे यह सिद्ध होता है। इस तरह से यहाँ पर मन:पर्यय ज्ञान के विषय में यह चर्चा पूर्ण हो जाती है "तदनन्तभागे मनः पर्ययस्य" अब आगे बढ़ते हैं-

### सभी द्रव्यों की सभी पर्यायों को ग्रहण करना, यह केवलज्ञान का विषय है-

**सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ।।1.29।।**

## सर्व + द्रव्य + पर्यायेषु - केवलस्य

**सकल द्रव्य के गुण सकल, और सकल पर्याय।**
**केवलज्ञानी को दिखे, निज चेतन सुखदाय।।1.29।।**

यहाँ 'केवल' का मतलब 'केवलज्ञान' केवलज्ञान का विषय क्या है? 'सर्व द्रव्य पर्यायेषु', 'सर्व' शब्द को दोनों के साथ जोड़ना है। 'सर्वद्रव्य' और 'सर्वपर्याय', 'सभी द्रव्यों में और सभी पर्यायों में केवलज्ञान का विषय बनता है।' अब आप देखे कि केवलज्ञान कितना बड़ा ज्ञान है? सभी द्रव्य में मूर्तिक द्रव्य भी आ जाते हैं, अमूर्तिक द्रव्य भी आ जाते हैं। जो मूर्तिक द्रव्य हैं वे पुद्गल आदि द्रव्य कहलाते हैं। पुद्गल द्रव्य को ही एक तरह से पूर्ण रुप से मूर्तिक कहा जाता है और जो शुद्ध जीव द्रव्य हैं, धर्म द्रव्य हैं, अधर्म द्रव्य है, आकाश द्रव्य है, काल द्रव्य है, यह अमूर्तिक द्रव्य हैं। इन अमूर्तिक द्रव्यों को और इनकी सभी पर्यायों यानि इन अमूर्तिक द्रव्यों का भी अनन्त

SCAN TO WATCH

काल में क्या परिणमन हुआ? और अनन्तकाल तक इनकी कैसी पर्याय उत्पन्न होती रहेंगी? यह सब इस केवलज्ञान का विषय बनता है। यह केवलज्ञान इतना बड़ा ज्ञान है कि इस ज्ञान के माध्यम से सभी द्रव्यों की, सभी पर्याय ग्रहण करने में आती है। भूत, भावी, भविता, भूतकाल की भी पर्यायें, आगे होने वाली भविष्यत काल की भी पर्यायें और वर्तमान काल की भी पर्यायें यानि पर्यायों की भी पूर्णता का ज्ञान इस केवलज्ञान में है। मतलब केवल ज्ञान से कोई भी किसी भी तरह का परिणमन छूटा नहीं। क्या इस द्रव्य का परिणमन भविष्य में होगा? यह भी ज्ञान में है और क्या हुआ है, क्या था? यह भी ज्ञान में है। आप यह जाने कि सभी द्रव्यों की सभी पर्यायों को ग्रहण करना है यह केवलज्ञान का विषय है।

## केवलज्ञान अनादि रूप वस्तु को अनादि रूप ही जानेगा-

अब जब हमारे सामने यह बात आती है कि सभी द्रव्यों की सभी पर्याय ग्रहण की जाती हैं तो एक प्रश्न कई बार बड़े भी पूछ लेते हैं और कुछ बच्चों के मन में भी प्रश्न आ जाता है और कई

बार बड़े भी बच्चे सरीखे होते हैं तो वे भी पूछ लेते हैं कि महाराज मान लिया सिद्ध भगवान होते हैं। सिद्ध भगवान कितने होते हैं? आपने कहा अनन्त होते हैं। चलो! यह भी मान लिया, सिद्ध भगवान कब से होते आ रहे हैं? आपने कहा अनादिकाल से होते आ रहे हैं। अब आप हमें यह बताओ कि जो सिद्ध भगवान होते आ रहे हैं, होते आ रहे हैं यह तो ठीक है, आप यहाँ यह बता रहे हो कि केवलज्ञान के द्वारा सब कुछ जाना जाता है और कितना भी कोई भी पदार्थ कैसा भी कहीं भी हो, वह सब उनके ज्ञान में आता है यानि सिद्ध भगवान कब से शुरु हुए? कब उनका प्रारम्भ हुआ? सबसे पहले सिद्ध भगवान कौन थे? यह बताओ। क्या बताओगे आप? केवलज्ञान के द्वारा पूछो, केवलज्ञान में जो आया वह जानो। केवलज्ञान में भी आपको यह जानना है कि जिस द्रव्य का जैसा स्वरूप है, जिस पदार्थ का जैसा स्वरूप है, जिस वस्तु का जैसा स्वरूप है, केवलज्ञान उसको वैसा का वैसा ही जानता है।

अगर किसी भी चीज की आदि नहीं है, अनादि है, तो केवलज्ञान में दिख तो सब रहा है लेकिन जो अनादि रूप है उसको अनादि रूप ही जानेगा, जो अनन्त रूप है उसको अनन्त रूप ही जानेगा। अब आप अनादि की आदि कर दो और यह कहने लग जाओ कि भाई पहले सिद्ध भगवान कौन हुए? फिर यह तो वही बात हो गई कि सबसे पहले कोई न कोई तो हुआ होगा, सबसे पहले कोई न कोई शुरुआत तो हुई होगी। अब केवलज्ञान में तो यह दिख ही रहा होगा क्योंकि केवलज्ञान ने सब कुछ जान लिया है। बताओ! सबसे पहले क्या था? इससे पहले,

इससे भी पहले, इससे भी पहले शाम तक करते रहो। क्या इसका समाधान है? आपको क्या समझ में आ रहा है? जिसका कभी प्रारम्भ ही नहीं है, उसके स्वरूप को हमने उसी रूप में जाना है जैसा उसका स्वरूप है, तो अनादि को अनादि के रूप में ही जाना जाएगा। जिसका प्रारम्भ नहीं है, तो उसका प्रारम्भ बिन्दु कैसे जान लिया जाएगा? केवलज्ञानी भी अनादि को अनादि रूप में ही जानेंगे, अनन्त को अनन्त रूप में ही जानेंगे।

## क्या हर संख्या को एक ही ज्ञान से मापा जा सकता है?

SCAN TO WATCH

यह ज्ञान एक तुला के समान है। तुला जानते हैं! तराजू, तोलने की चीजें होती हैं। हर चीज को तोलने की तुला अलग-अलग होती हैं। स्वर्ण को तोलने की तुला अलग होती है। जिससे गेहूँ को तोला जाता है, उसी में सोना तोल दिया जाता है क्या? स्वर्ण को तोलने की तुला अलग होती है वह सुनार के पास अलग ही होती है, छोटी-सी कटोरी होती है। गेहूँ को जिसमें तोला जाता है वह तुला अलग होती है और गेहूँ में भी जब बोरों के बोरे जहाँ पर तोले जाते हैं, उसको बोरे के बोरे तोलने की वह तुला अलग होती है। कभी-कभी तो जैसे कोई माल गाड़ियाँ जाती हैं, ट्रक के ट्रक जाते हैं, उनको भी तोल लिया जाता है। उसको तोलने की तुला अलग होती है। वह ट्रक वहाँ पर खड़ा हो जाए, पूरा का पूरा तुल जाए, तुम्हें पता ही नहीं पड़ेगा कि कहाँ इसमें तुला? कहाँ इसमें आगे, पीछे हो रहा है? होता है कि नहीं होता है। हर चीज को तोलने की तुला अलग-अलग होती है। ऐसे ही हर संख्या को जानने वाला ज्ञान भी अलग-अलग होता है। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान के माध्यम से यदि हम जानेंगे तो संख्यात संख्या वाली चीजों को ही जान पाएँगे। यह बात अलग है कि श्रुतज्ञान के माध्यम से हम यह ज्ञान कर लेंगे कि अनन्त होता है, असंख्यात होता है लेकिन वास्तव में मतिज्ञान के माध्यम से, श्रुतज्ञान के माध्यम से हम अगर किसी चीज को गिनने बैठेंगे या हम उसको उस संख्या का किसी भी तरह से आकलन करने बैठेंगे तो हम संख्यात में ही अपना ज्ञान लगा पाएँगे, असंख्यात में तो हमारा ज्ञान काम ही नहीं

## हर चीज को तोलने की तुला अलग-अलग होती है

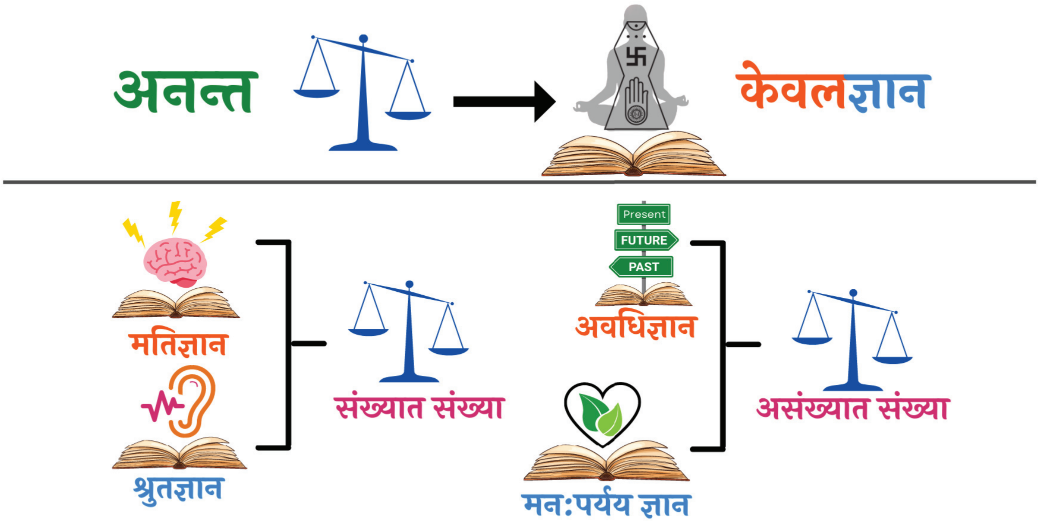


करेगा। जान लेगा process, जान लेगा लेकिन असंख्यात संख्या का नाप-तोल Accurate नहीं कर पाएगा। असंख्यात संख्या को नापने की तुला अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान की है और अनन्त को नापने की तुला केवलज्ञान के पास है। जो भी अनन्त संख्या वाली चीजें हैं उन्हें साक्षात जानना, यह किसके बस का काम है? केवलज्ञान का। हम और आप तो केवल कह सकते हैं, सुन सकते हैं, पढ़ सकते हैं लेकिन वास्तव में अनन्त क्या होता है? उसका कोई भी हमारे अन्दर Visualization नहीं हो सकता। वह तो केवल कौन जानेगा? केवलज्ञानी जानेगा। अलग-अलग चीजों को तोलने के ये अलग-अलग ज्ञान है। अब जिस ज्ञान से जो तुलेगा वह उसी रूप में तुलेगा। अनन्त केवलज्ञान है, तो अनन्त केवलज्ञान में अनन्त वाली चीजें, सब अनन्त रूप में ही जानने में आयेंगी। अब जो अनन्त है, जो जिस तरीके का अनन्त है वह उस तरीके का अनन्त उनके ज्ञान में आएगा। जिसका अन्त ही नहीं है तो उन्हें वह अन्त नहीं है इसी रूप में जानने में आएगा।

## अनन्त के भेदों को तोलने का सामर्थ्य केवल केवलज्ञानी के पास है

फिर आप कहोगे उन्हें सर्व का ज्ञान कैसे हो गया? सर्व का ज्ञान का मतलब यह नहीं है कि उन्हें उसका अन्त दिख रहा है। अनन्त वाली चीज का अगर वे अन्त देखने लग गए तो फिर वह चीज अनन्त कैसे कहलायेगी? जो चीज जैसी ही है, जो स्वरूप जिसका जैसा है उसको वैसा ही जाना जाएगा। जो चीज अनन्त रूप में है उसको अनन्त रूप में जान रहे हैं, अनन्त रूप में दिखाई दे रही है लेकिन कोई भी चीज उनके ज्ञान से बाहर नहीं है। उनके ज्ञान की तुला में वह

अनन्त तुलने की शक्ति आ गई। उस ज्ञान में सब तोल लेंगे, अनन्त में भी विभाजन कर लेंगे कि कौन सा अनन्त कम है? और कौन-सा अनन्त ज्यादा है? क्योंकि अनन्त भी एक प्रकार का नहीं है। सब अनन्त अलग-अलग होते हैं।जीव द्रव्य अनन्त हैं, पुद्गल उससे भी ज्यादा अनन्त होते हैं। जीव द्रव्यों में भी भव्य जीव होते हैं, अभव्य जीव होते हैं। अभव्य भी अनन्त हैं, भव्य भी अनन्त है लेकिन अभव्यों से भी अनन्त गुणे भव्य होते हैं। उसमें भी आपको अनन्त से Multiply करना पड़ेगा। अभव्यों की जो अनन्त है, उसमें भी अनन्त से Multiply करोगे तब जाकर के भव्यों की संख्या आयेगी।

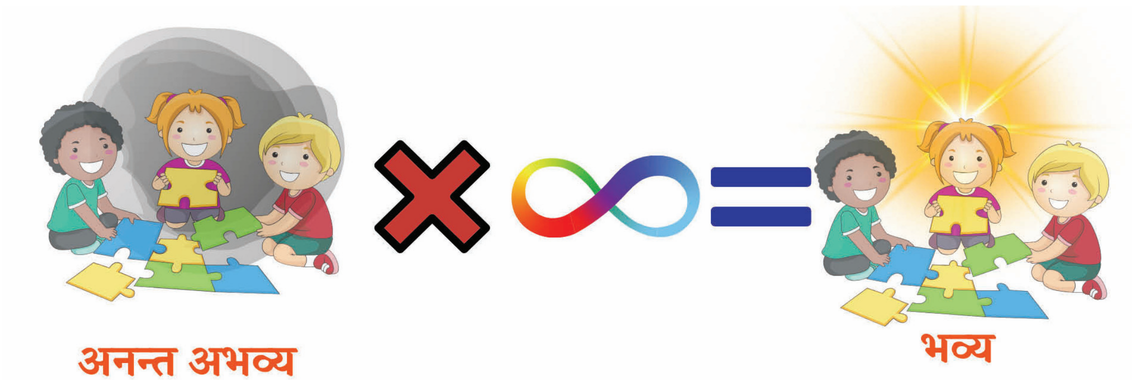


" सिद्ध जीव से गुणे अनन्त, एक निगोद जीव में बसन्त " समझ आ रहा है? यह जो लाईन है 'नई छहढाला' में लिखी गयी हैं। क्या है इसका मतलब? एक निगोद जीव में कितने जीव रहते हैं? अनन्त जीव रहते हैं। सिद्ध कितने जीव हैं? वह सिद्ध भी अनन्त हैं लेकिन उन अनन्त में और एक निगोद जीव के अनन्त में अन्तर है। क्या अन्तर है? एक निगोद जीव में जितने अनन्त जीव रह रहे हैं वे सिद्ध जीवों से भी अनन्त गुणे हैं। यह सब गुणा-भाग भगवान के ज्ञान में आता है। अब अनन्त में ही अनन्त का गुणा करके वह कमती-बढ़ती सब देख रहे हैं।

अब अनन्त का पासंग, पासंग जानते हो क्या समझते हो? एक वजन का जो आभास होता है न, किसी भी चीज का जैसे क्या वजन होगा? जो रोजाना जिस तरीके की दुकान चलाता है, जिस तरीके की पल्लेदारी करता है उसको पता होता है। गुड़ वालों से पूछ लो! गुड़ का आभास करके बता देंगे कि इसमें कितना माल है? इस बोरे में कितना गुड़ है? वे उसको देख के बता देंगे। मतलब कि जिस चीज में जितना वजन है अगर उसका वजन कुछ कम भी हो जाता है, तो उसका जो जानकार होता है वह उसको देख कर ही, जान कर ही हाथ में सामान्य से लेकर के ही बता देगा या उसको देखकर बता देगा कि इसमें वजन कम है, एक quintal तो है लेकिन एक quintal में कुछ कम लग रहा है।

SCAN TO WATCH

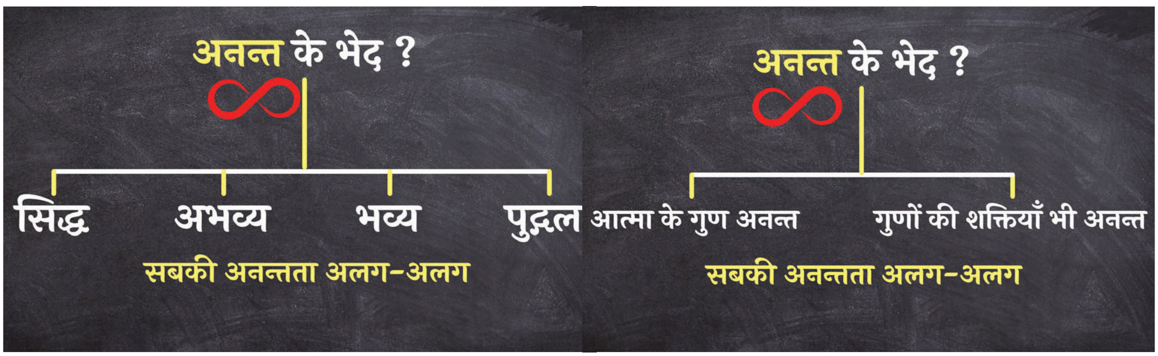


ऐसे अनन्त में भी कितने भेद हो गए? सिद्ध भी अनन्त हैं, अभव्य भी अनन्त हैं, भव्य भी अनन्त हैं, पुद्गल भी अनन्त हैं लेकिन इन सबकी अनन्तता अलग-अलग है और हर एक आत्मा के गुण अनन्त हैं। उन गुणों की अविभागी जो शक्तियाँ हैं वे भी अनन्त हैं और इस सब की तुलना है। कौन-सा अनन्त किससे ज्यादा है? कौन से अनन्त में क्या मिलाने पर कौन-सा अनन्त बन जाएगा? यह सब अनन्त का गणित सामान्य व्यक्तियों के काम का, उसके जानकारी में आने का नहीं है। हम मति और श्रुतज्ञान वाले लोग उस अनन्त के गणित को जो बताया गया है अगर हम उसको थोड़ा भी अपने लिए समझ लेते हैं तो उतना ही पर्याप्त है। दिखाया तो कुछ नहीं जा सकता। सिद्ध जीवों से भी अनन्त गुणे जीव एक निगोद जीव में रहते हैं।

## अवधिज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान ये असंख्यात भवों को, असंख्यात पर्यायों को जानने की क्षमता रखते हैं

भूतकाल जो अनन्त व्यतीत हो चुका है उससे भी अनन्तगुणा काल भविष्य का होता है। हर चीज का गुणा विज्ञान है बिल्कुल गणित है, तो हमें जो बताया जाए हम उसको केवल बस! मान लिया, जान लिया, यह हमारे लिए बहुत बड़ी चीज है। अनन्त को जानने वाला कौन होगा? सर्वज्ञ, केवल -ज्ञानी। वही अनन्त को जानेंगे और उस अनन्त को जानने के बाद हमारे

लिए जो ज्ञान आएगा वह तो केवल एक मौखिक, अक्षरात्मक श्रुतज्ञान हो गया। अक्षरों से हमने सुन लिया, हमने समझा दिया जिनके पास अक्षर का ज्ञान होगा वे थोड़ा-सा समझ लेंगे। नहीं होगा वे कहेंगे- महाराज! यह तत्त्वार्थ सूत्र की कितनी बोरियत class लेते हैं। जिसकी, जितनी समझ होगी। आपके लिए, यह ध्यान में आना चाहिए कि यहाँ पर हर एक ज्ञान का विषय बताया जा रहा है। अब आप यह देखो! कि जैसे केवलज्ञान अनन्त को जानने की क्षमता रखते हैं ऐसी ही अवधिज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान ये असंख्यात भवों को, असंख्यात पर्यायों को जानने की क्षमता रखते हैं। आप असंख्यात भवों पहले क्या थे? यह बता सकते हैं- विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान वाले। असंख्यात भवों का ज्ञान क्या होता है? लेकिन इसका मतलब यह लगा लेना कि जब इनके ज्ञान में असंख्यात भव का पहले का आ रहा है, आगे का आ रहा है, तो सब कुछ निश्चित है, हमें वैसा ही होना है इसलिए हमें कुछ नहीं करना है, यह बात सही नहीं लगती। आपको केवल इतना सोचना चाहिए यह उस ज्ञान का विषय है। अब आप सोचोगे कि जब एक मन:पर्यय ज्ञानी, अवधिज्ञानी भी हमारे आगे के भव बता सकते हैं- सात भव, आठ भव तो हम करे क्या? जब वही बता ही रहे हैं कि आपको ऐसा होना है और ऐसा होना है मतलब ऐसा होना ही है तो अब हम क्या करेंगे? और क्या नहीं करेंगे? इस तरह से जो इस ज्ञान का अपने ज्ञान में ऐसा सोचने लग जाते हैं वे लोग गलती करने लग जाते हैं।

SCAN TO WATCH

## सम्यग्ज्ञान का स्वरूप न तो न्यून न अतिरिक्त

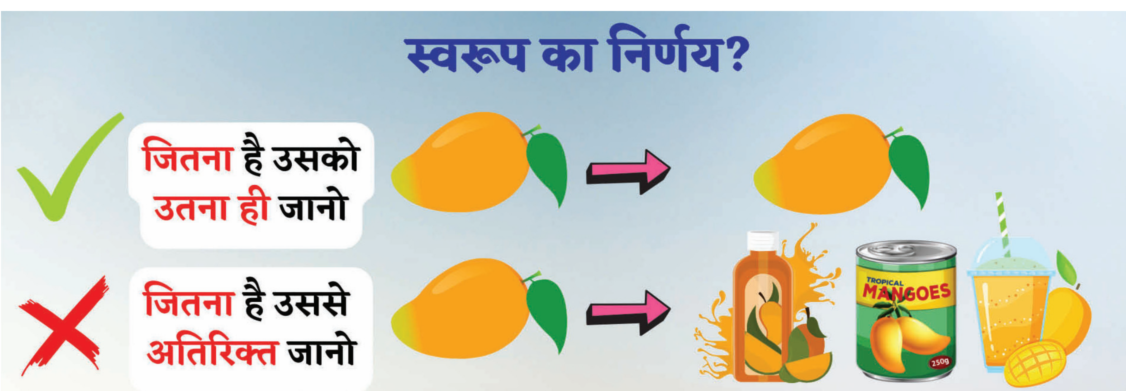


हमें केवल इतना देखना है यह इस ज्ञान की सीमाएँ हैं, इन ज्ञान की ये शक्तियाँ हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि सब कुछ fix हो गया है, इसका मतलब यह नहीं है कि सब कुछ जैसा भगवान ने देखा है वैसा ही हो रहा है। भगवान ने केवलज्ञान में जैसा देखा वैसा ही बिल्कुल निश्चित है। निश्चित उनके ज्ञान में होगा, आपके ज्ञान में कोई निश्चय नहीं है और आपको कोई निश्चय करना भी नहीं चाहिए। उनके ज्ञान का निश्चय, उनके ज्ञान में रहने दो। अपने ज्ञान से, उनके ज्ञान में क्या आया? इसका निश्चय मत करो। उनके ज्ञान का केवल स्वरूप समझो,

स्वरूप का निश्चय करो। केवलज्ञान का स्वरूप क्या होता है? अनन्त द्रव्यों की, अनन्त पर्यायों को जानना बस, इतना सा निश्चय करो, इसी का नाम है- यथार्थ निर्णीति सम्यग्ज्ञान। अब अगर हम इससे ज्यादा आगे बढ़ेंगे, अपना ज्ञान उनमें लगाने लग जाएँगे तो गड़बड़ हो जाएगी।

क्या गड़बड़ हो गई महाराज? अब अपना ज्ञान उनमें लगाने लगोगे, जब सब कुछ आपके ज्ञान में पहले से ही दिख रहा है, जानने में आ रहा है तब हम क्या करें? जब हमारा मोक्ष होना होगा हो जाएगा, अब आपको दिख तो रहा ही है जो हमारे लिए होना है वह तो होना ही है। जो हमारे लिए जब स्वर्ग मिलेगा तो मिल जाएगा, जब नरक मिलेगा तो मिल जाएगा, जो बनना होगा बन जाऊँगा तो मैं क्या करूँ? अब अगर मैं अच्छा कर रहा हूँ तो भी आपके लिए वही निश्चित है और बुरा कर रहा हूँ तो भी आपके लिए वही निश्चित है, तो मेरे जो मन में आएगा सो मैं करूँगा क्योंकि आपके ज्ञान में तो निश्चित है यह; अब मैं क्या करूँ? यह क्या कर लिया आपने? यह आपने extra ज्ञान अपना जोड़ लिया। यह स्वरूप का निर्णय नहीं हुआ, स्वरूप का निर्णय जो जितना है उसको उतना ही जानो। इसका नाम सम्यग्ज्ञान है 'अन्यूनमनतिरिक्तं'

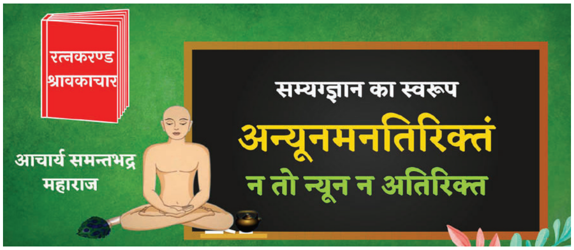


'आचार्य समन्तभद्र महाराज' आपको अभी 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' में आगे बताएँगे कि सम्यग्ज्ञान का स्वरूप, न तो न्यून न अतिरिक्त। अतिरिक्त अपनी तरफ से कुछ मत जोड़ने की कोशिश करो, आपको जितना समझाया जा रहा है, जितना पढ़ाया जा रहा है उसको उतना ही मानो। अतिरिक्त क्या हो गया? एक-एक पर्याय बिल्कुल भगवान के ज्ञान में निश्चित हो चुकी है इसलिए किसी भी जीव को उस ज्ञान

के अलावा कुछ अन्य सोचना ही नहीं चाहिए। जो कुछ था वह भगवान के ज्ञान में निश्चित हो चुका है। एक-एक पर्याय अनन्तकाल तक की भगवान के ज्ञान में निश्चित है। इसलिए हर पर्याय के बाद में क्या आना? हर पर्याय के बाद क्या होगा? यह सब बिल्कुल क्रम से बन्ध गया है इसका नाम है- क्रमबद्ध पर्याय। क्या है यह? यह नाम तो सुना है सबने! हाँ! नाम तो सब सुने रहते हैं क्योंकि जो चीजें market में चल रही हैं और जो नकली चीजें हैं, गलत चीजें हैं, उनके नाम तो सुनने में जरूर आ ही जाएँगे, असली चीज के नाम भले ही सुनने में न आये। आज आदमी केवलज्ञान को न जानता हो, सर्वज्ञता का विषय क्या है? उसको न मालूम हो, केवलज्ञान की सिद्धि न कर पाए, सर्वज्ञता की सिद्धि न कर पाए लेकिन क्रमबद्ध पर्याय की सिद्धि करने बैठ जाएगा। यह क्या है?

## क्रमबद्ध पर्याय कौन-से आगम में लिखा हुआ?

क्रमबद्ध! कौन से आगम में लिखा हुआ है यह क्रमबद्ध पर्याय है? यह हमारा ज्ञान है कि केवलज्ञानियों का ज्ञान है या इस ज्ञान को हमें आचार्यों ने दिया था या हमने अतिरिक्त उस ज्ञान में अपना ज्ञान जोड़कर के एक नई चीज तैयार कर ली- क्रमबद्ध पर्याय। कहाँ है ये चीजें? कोई बताये तो हमें! आज कल तो सब लोग खूब दुनिया में सब सुन रहे हैं। सबको Challenge दे रहा हूँ कोई तो हमें बताये। किसी भी ग्रन्थ में आचार्य के द्वारा लिखी हुई, किसी भी आचार्य के

SCAN TO WATCH

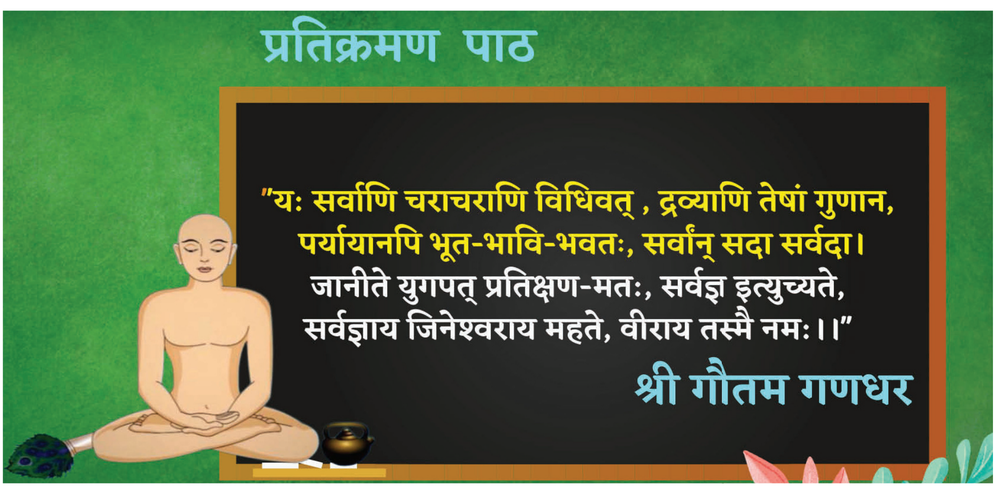


द्वारा लिखी हुई यह पंक्ति कोई हमें निकाल कर दिखाये कि क्रमबद्ध पर्याय इस शब्द को इन आचार्यों ने लिखा है, इसको परिभाषित किया है। सबको challenge दे रहा हूँ। पण्डितों की बातें मत करना मेरे सामने। हाँ! आचार्यों के द्वारा लिखे हुए शास्त्र में बताना कहाँ यह स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि क्रमबद्ध पर्याय क्या होती है? कहाँ इसके बारे में Detail दी गयी है?

कहाँ यह लिखा गया है कि आप इसको इसी रूप में माने, जाने, इसी से ही आपके तत्त्व का निर्णय होगा। आज इसके ऊपर अलग से किताबें बन रही हैं, इसको जानो, सर्वज्ञ को जानो, इसको जाने बिना आपको तत्त्व का निर्णय नहीं होगा, इसके बिना आपको सम्यग्ज्ञान नहीं होगा। इसी से ही सम्यग्दर्शन होगा, न जाने क्या-क्या। क्या है यह? यह अतिरिक्त पना आ गया। जो बताया गया था उससे हमने अपने ज्ञान से कुछ ज्यादा जोड़ लिया, ज्यादा जान लिया। आप सिर्फ जानो, जितना बताया जा रहा है। मैं मान रहा हूँ- केवलज्ञान का विषय अनन्त है, अनन्त द्रव्यों को जानना, अनन्त पर्यायों को जानना है। सब कुछ जानना है...

**"यः सर्वाणि चराचराणि विधिवत् , द्रव्याणि तेषामगुणान, पर्यायानपि भूतभाविभवतः, सर्वान् सदा सर्वदा। जानीते युगपत् प्रतिक्षणमतः, सर्वज्ञ इत्युच्यते, सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते, वीराय तस्मैः नमः।"**

ऐसे वीर भगवान को मैं दिन में तीन बार प्रणाम करता हूँ जिन्होंने सब द्रव्यों की, सब पर्यायों को एक साथ युगपत् जान लिया है। लेकिन क्रमबद्ध पर्याय का कथन, क्रमबद्ध पर्याय के बारे में भगवान ने कभी नहीं कहा।

## केवलज्ञान की विशेषताओं को नए-नए title देकर भटकाया जा रहा है

समझ में आ रहा है? सब पर्याय क्रम से बन्धी हुई हैं इसलिए आप बस! मेरे स्वरूप का निश्चय करके निश्चिन्त हो जाओ, आपको कुछ नहीं करना है। काललब्धि आयेगी, अपने आप कर्मों

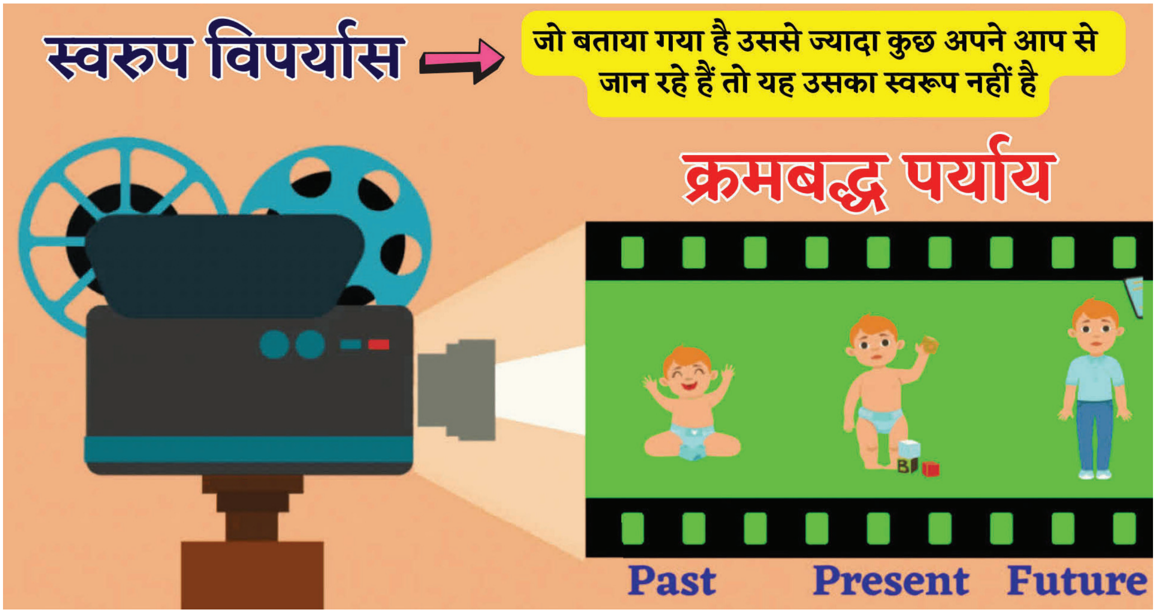

की उठा पटक होगी, स्थिति-अनुभाग घट जाएँगे, अपने आप आपके लिए सम्यग्दर्शन हो जाएगा। सम्यग्दर्शन होने के बाद में फिर अपने आप चारित्र मोहनीय कर्म का क्षयोपशम होकर के आपको चारित्र मिल जायेगा। काललब्धि और निकट आएगी, अर्धपुद्गल परिवर्तन काल जब बचा ही नहीं रहेगा, थोड़ा-सा रह जाएगा तो अपने आप आपको मोक्ष जाने का समय आ जाएगा, मोक्ष हो जाएगा। यह ज्ञान हम भी जानते हैं लेकिन सिद्धान्त: इस तरह के व्याख्यान आगम अनुकूल नहीं होते हैं। समझ में आ रहा है? इस तरह की कोई भी पढ़ाई, कहीं भी संस्थानों में पढ़ाता है तो आपको उसे अपने लिए ग्रहण करने का भाव करना ही नहीं चाहिए। यह सम्यग्ज्ञान नहीं है। ज्यादा ज्ञान को, अपने मतिज्ञान को, श्रुतज्ञान को, केवलज्ञान में मत जोड़ो। आप इतने बड़े ज्ञानी नहीं हो गए हैं कि केवलज्ञान की विशेषताओं को अपने जीवन में इस तरीके से अपने नए-नए title निकाल करके दूसरों को बताने लग गए कि क्रमबद्ध पर्याय सब कुछ निश्चित है, सब कुछ उपादान से ही होता है। ऐसी गलत-गलत चीजें आप लोगों को समझायी जाती हैं। इस जैनों के बाजार में बिकने लगी हैं कि आदमी को सही चीज का तो पता ही नहीं है। बस! वह गलत-गलत चीजों में ही जुड़ा हुआ है। आगे बताने वाले हैं यह क्या है? यह सब स्वरूप विपर्यास कहलाता है। क्या कहलाता है? अगर हम जो बताया गया है उससे ज्यादा कुछ अपने आप को जान रहे हैं तो यह उसका स्वरूप नहीं है। स्वरूप इतना ही था, कितना-सा स्वरूप है? केवलज्ञान का विषय सब द्रव्यों की सभी पर्यायों को जानना है, यह सबको मान्य होना चाहिए। अब इससे आगे अपना ज्ञान चलाना। यह अपने लिए विपर्यास का काम करने वाला है। पुरुषार्थ हीन होना, पुरुषार्थ के नाम पर कर्म का उदय बताना, ये सब बहाने बाजियाँ, ये सब हमारे लिए सम्यग्ज्ञान नहीं है। यह सब हमको सम्यग्ज्ञान से बचाने वाली चीजें हैं। इतना आग्रह हो जाना कि जब तक आप सर्वज्ञ को नहीं जान लोगे, जब तक आपको सर्वज्ञता का निश्चय नहीं हो जाएगा, क्रमबद्ध पर्याय का निश्चय नहीं हो जाएगा तब तक आपको सम्यग्ज्ञान होगा नहीं। इतने आग्रह से बोलते हैं लोग। अतः आपको यह समझना है कि ऐसे लोग जिनको कुछ भी a.b.c.d. किसी चीज की नहीं मालूम होती है उन्हें केवल उतना ही पढ़ाया जाता है, जितना उन्हें प्रवचन के लिए उपयोगी है। पण्डित बनने के नाम पर टोपी लगा-लगा करके ऐसे लोग समाज में तरह-तरह का भ्रम फैलाते हैं। आपको ऐसे लोगों से बचना ही चाहिए। स्वरूप का ज्ञान सिर्फ इतना ही है किस ज्ञान का क्या विषय है बस इतना जानो। इससे ज्यादा अपना ज्ञान लगा करके हमें कोई नया ज्ञान मत दो। तभी आपका ज्ञान सम्यग्ज्ञान रह पाएगा। आचार्य समन्तभद्र ने कहा कि यह सम्यग्ज्ञान की शर्त है।

## आचार्यों ने यह क्रमबद्ध पर्याय नाम का कोई शब्द दिया ही नहीं है

जो बताया गया उससे न तो कम करना और न जो बताया गया उससे ज्यादा बोलना। जो लिखा है उतना ही बोलना, जो नहीं लिखा है वह भी आपकी समझ में यदि आ रहा हो और अगर वह आगम विरुद्ध न हो रहा हो तो ही बोलना। अगर आगम विरुद्ध हो रहा है, तो आप

अपना मुँह बन्द कर लेना। जरूरी नहीं है कि हम अपना ज्ञान सबके सामने बगारें। अगर हमें कोई चीज नहीं आती है तो हम यह भी कहना सीखे कि हमें नहीं मालूम। जब केवलज्ञान होगा या केवलज्ञानी होंगे सामने तब हम पूछ लेंगे लेकिन हम गलत भ्रम न फैलाएँ। आगम में जो शब्द दिए गए हैं, जिन चीजों की व्याख्याएँ की गई हैं, जो सूत्र के रूप में हमारे सामने उपलब्ध हैं, हमें सिर्फ उतना ही ज्ञान दूसरों को देना चाहिए। कहीं पर भी कोई भी सूत्र में किसी भी गाथाओं में कभी भी आचार्यों ने यह क्रमबद्ध पर्याय नाम का कोई शब्द दिया ही नहीं है। आचार्य कुन्द-कुन्द के किसी भी ग्रन्थ में मिले, इन सूत्र ग्रन्थों में मिले, षट्खण्डागम सूत्रों में मिले तो मैं समझूँ कि हाँ! कोई चीज है। किसी भी चीज को मानने में मुझे क्या दिक्कत है। कोई भी आचार्यों के ग्रन्थों में, जो प्रामाणिक आचार्य हैं उनके ग्रन्थों में कहीं कोई स्पष्ट व्याख्यान तो मिले कि क्या है? कहीं शब्द तक नहीं मिलता और किताबों की किताबें, उपदेश के उपदेश झाड़े जा रहे हैं। यह क्या तरीका है?

## निश्चय एकान्त भी अपने आप में मिथ्यात्व कहा गया है

इस तरह से समाज को जागृत करना हमारा कर्तव्य है। यह किसी के प्रति कोई विद्वेष नहीं है लेकिन जो गलत अफवाह, गलत ज्ञान फैला करके लोगों को बरगलाते हैं उनको बचाना। यह हमारे लिए उसी तरह से जरूरी है जैसे कश्मीर में पाकिस्तानी लोगों के लिए, यह भारत के लोगों के लिए, तरह-तरह के आतंकवादी ग्रुप में शामिल करने के लिए उन्हें बरगलाया जाता है और बड़े-बड़े युवाओं को, व्यक्तियों को उसमें शामिल कर लिया जाता है। अतः उसको बचाना पड़ता है, संविधान बनाने पड़ते हैं, पुलिस लगानी पड़ती है, नियम कानून बनाने पड़ते हैं। यह जागृति, यह समाज की समाज खुद अपने आप में जागृत रहे। इससे ज्यादा तो हम कुछ सजा तो आपको दे ही नहीं सकते हैं। लेकिन यह आपको अपनी समाज में जागृति बना करके रखनी है, तो यहाँ कहते हैं कि केवलज्ञान का विषय सब कुछ है लेकिन फिर भी आप निश्चय एकान्त को पकड़कर मत बैठ जाना क्योंकि निश्चय एकान्त भी अपने आप में मिथ्यात्व कहा गया है। एकान्त तो मिथ्यात्व है अगर आपने ऐसी कोई अवधारणा बनाई तो वह निश्चय एकान्त है और उसके कारण से आप कभी भी सम्यक्त्व को उपलब्ध नहीं हो पाएँगे चाहे कितना ही सम्यक्त्व की चर्चा करे।

SCAN TO WATCH

## एक साथ, एक आत्मा में कितने ज्ञान हो सकते हैं?

**एकादिनी भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना चतुर्भ्यः ।।1.30।।**

**एका + आदीनि + भाज्यानि + युगपत् एकस्मिन् + आचतुर्भ्यः**

**आतम में इक साथ हों,**
**एक आदि चौ ज्ञान।**
**क्षायिक केवलज्ञान अन,**
**क्षयोपशम ही जान॥1.30॥**

अब देखो! यहाँ क्या कहते हैं? अब सवाल आता है कि एक साथ, एक आत्मा में कितने ज्ञान

हो सकते हैं? महाराज, आपने तो बहुत ज्ञान बता दिए। पाँच-पाँच ज्ञान बता दिए। एक साथ कितने ज्ञान हो सकते एक आत्मा में? आचार्य कहते हैं- 'एक आदि' एक को प्रमुख बनाओ मतलब एक भी हो सकता है, एक को आदि लेकर के 'भाज्यानि', 'भाज्यानि' का मतलब होता है 'विकल्प' आगे के ज्ञान हो भी सकते हैं, नहीं

भी हो सकते हैं। कैसे? 'युगपद' मतलब एक साथ 'एकस्मिन्न्' मतलब एक आत्मा में 'आ चतुभर्य:' मतलब एक आत्मा में चार ज्ञान तक हो सकते हैं। पाँच ज्ञान एक साथ कभी नहीं होते। इससे क्या सिद्ध हुआ? अब एक ज्ञान होगा तो कौन-सा होगा? केवलज्ञान। केवलज्ञान सिर्फ केवलज्ञान में ही रहेगा। केवलज्ञान, केवलज्ञान के ही साथ रहेगा। केवलज्ञान का और कोई साथी नहीं है, वह अकेला एक तरफ और बाकी का सारा एक तरफ। अब चार ज्ञान बचे। इन चार ज्ञानों में अगर एक, दो, ज्ञान एक साथ होंगे तो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान ये सबको पता पड़ गया है। तीन ज्ञान एक साथ होंगे तो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अथवा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, मन:पर्ययज्ञान।

एक व्यक्ति ने अभी कल-परसों प्रश्न पूछा था- क्या अवधिज्ञान के बिना भी मन:पर्ययज्ञान हो सकता है? हाँ! हो सकता है। तीन ज्ञान मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान के भी साथ हो सकते हैं और तीन ज्ञानों का भंग मतिज्ञान' श्रुतज्ञान और मन:पर्ययज्ञान के साथ भी बन सकता है। जरूरी नहीं कि अवधिज्ञान हो तभी मन:पर्यय ज्ञान हो। कोई उसके लिए कारण-कार्य का सम्बन्ध नहीं है। हाँ! अवधिज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान साथ-साथ होंगे तो चार का भंग बनेगा।

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान, ऐसे चार ज्ञान भी एक साथ होंगे। इस तरह से चार ज्ञान जो हैं, ये क्षयोपशम ज्ञान है, ये एक साथ रह सकते हैं। क्षायिक ज्ञान किसी के साथ नहीं रहता क्योंकि उसकी प्रश्न - uality ही Different है।

उसको क्या बोलते हैं? क्षायिकज्ञान; कर्म के क्षय से उत्पन्न होने वाला ज्ञान एक ही ज्ञान होता है और ये सभी ज्ञान जो हैं वे क्षयोपशमिक है। कर्म के कभी अच्छे क्षयोपशम हो गए तो ज्ञान प्रकट हो गया। कर्म का उदय आ गया तो ज्ञान ढक गया। इस तरह से इनमें कमती-बढ़ती पना चलता रहता है। ऐसे ये ज्ञान क्षयोपशम ज्ञान कहलाते हैं।

## उपयोग की परिणति एक समय पर एक ही ज्ञान की रहेगी

इन्हीं ज्ञानों में एक-दूसरे के साथ रहने की स्थिति बनती है लेकिन यह भी जानना कि अगर किसी के अन्दर चार ज्ञान है या तीन ज्ञान है या दो ज्ञान है, तो हमारे उपयोग में एक ज्ञान ही एक बार में आता है। समझ आ रहा है? हमें लगेगा जरूर कि हम एक साथ सब सुन रहे हैं, समझ रहे हैं, एक साथ सब देख रहे हैं, जान भी रहे हैं लेकिन एक बार में एक ही उपयोग होता है। जब हमारा मतिज्ञान काम करता है श्रुतज्ञान का सद्भाव है, अभी काम नहीं कर रहा है। जब श्रुतज्ञान काम करेगा, मतिज्ञान की लब्धि है उसको बोलते हैं- 'लब्धि' प्राप्ति हो चुकी है, लब्धि रूप में रहेगा लेकिन उपयोग रूप में तो मतिज्ञान आ जाएगा। जब अवधिज्ञान काम करेगा तो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान लब्धि रूप में रहेंगे, उपयोग के रूप में अवधिज्ञान आ जाएगा।

## लब्धि और उपयोग रूप ज्ञान का स्वरूप

दो चीजें हैं- लब्धि और उपयोग। जो ज्ञान से हम काम ले रहे हैं वह कहलाएगा उपयोग रूप और जो ज्ञान हमारे लिए केवल है कर्म का क्षयोपशम होने के कारण से उसका सद्भाव हमारे अन्दर है इसलिए वह कहलाएगा लब्धि रूप।

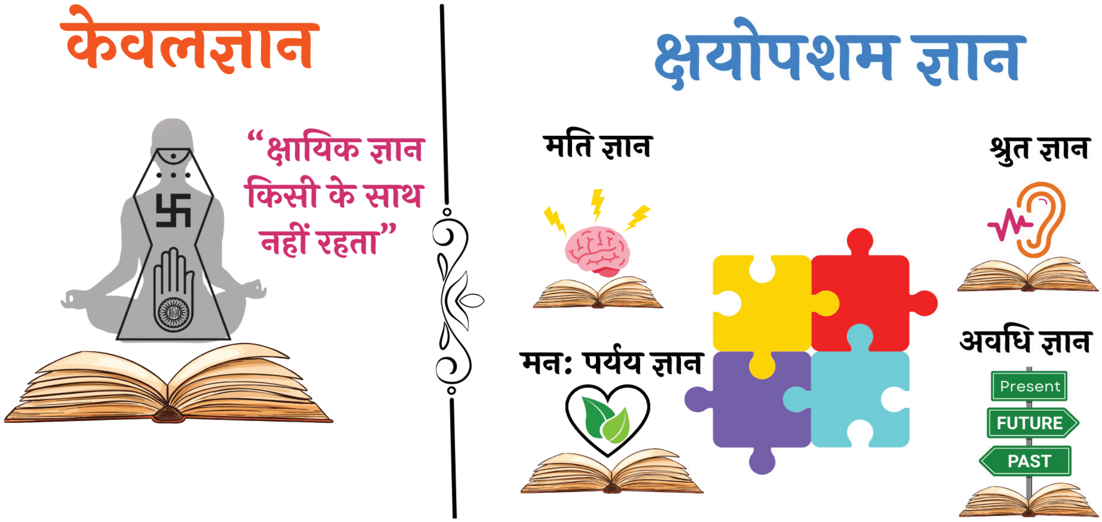


लब्धि का मतलब क्या हो गया? कर्म के क्षयोपशम की शक्ति होना। 'कर्म का क्षयोपशम होना यह लब्धि कहलाती है।' जब हमारे अन्दर इस तरह की लब्धियाँ होती हैं तो उनका उपयोग हम कभी कर भी सकते हैं, नहीं भी कर सकते हैं। जिस समय पर हम उपयोग करेंगे उस समय पर उपयोग की परिणति, एक समय पर एक ही ज्ञान की रहेगी, इसलिए चार ज्ञान का सद्भाव होकर के भी उपयोग में तो एक समय में एक ही ज्ञान होगा ऐसा जानना, ठीक है। केवलज्ञान

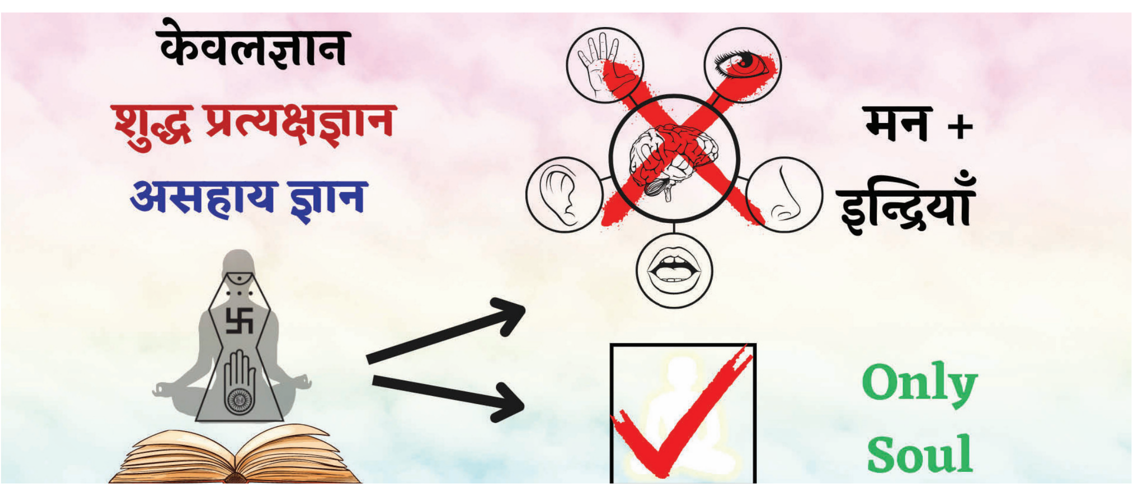

तो हमेशा उपयोग स्वरूप ही है क्योंकि लब्धि तो क्षयोपशम के भावों को कहते हैं। अब वहाँ क्षयोपशम तो है ही नहीं, वहाँ तो क्षायिक भाव आ गया तो वहाँ तो हमेशा उपयोग रूप ही है वहाँ कोई भी चीज लब्धि में है ही नहीं। वहाँ सब कुछ उपयोग स्वरूप है। इसलिए एक केवलज्ञान को यहाँ पर सर्व समर्थ जानना। केवलज्ञान को आचार्यों ने असहाय ज्ञान भी कहा है। क्या बोला है? असहाय। असहाय का मतलब आपके लिए क्या होता है? असहाय मतलब बेचारा कोई सहायता करने वाला नहीं। हाँ! उसी को आप बोलते हैं-Helpless लेकिन असहाय का मतलब क्या? एक तो वह जिसकी कोई सहायता करने वाला नहीं है। वह तो आपके according हो गया लेकिन यहाँ आचार्य जो कहने जा रहे हैं- असहाय का मतलब जिसे किसी की सहायता की जरूरत नहीं, उसको भी असहाय कहेंगे। जिसको सहायता की आवश्यकता ही नहीं। यह ज्ञान कि किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है, आप सामने होंगे तभी हम ज्ञान कर पाएँगे, आप हमारे अभिमुख होंगे तभी हम आपको देख पाएँगे, ऐसा कुछ नहीं है। कोई Condition नहीं किसी भी द्रव्य को जानने की, कहीं भी पर्वतों के पीछे, नदियों के नीचे, समुद्रों के भीतर, जो भी जीव है, पुद्गल है, सब ज्ञान में आता है। कितनी मोटी-मोटी दीवारें हो, गुफाएँ हो, अंधकार हो, कुछ भी हो, उसके अन्दर भी क्या है? एक-एक Point पर क्या-क्या स्थित है? वह सब इस ज्ञान में आता है। इसके लिए उसे किसी भी सहायता की जरूरत नहीं। मन है नहीं, इन्द्रियाँ हैं नहीं, only soul, केवल आत्मा से होने वाला वह शुद्ध प्रत्यक्षज्ञान, जिसे हम असहाय केवलज्ञान कहते हैं तो वह केवलज्ञान एक अकेला ही रहता है।

SCAN TO WATCH

## दृष्टान्तभास, स्वरूप विपर्यास से बचें

एक और आप लोगों के दिमाग में भ्रम हो सकता है उसे भी दूर करना। कुछ लोग कहते हैं देखो! केवलज्ञान तो एक बड़ी halogen हो गई और मतिज्ञान, श्रुतज्ञान छोटे-छोटे बल्ब हो गए। समझ आ रहा है? जब कोई नौसीखिया होता तो वह ऐसे भी सिखा देता है। halogen की light में छोटे-छोटे से पच्चीस-पचास-सौ watt की lights कोई भी महत्व नहीं रखती या नहीं। दिखती है इसलिए halogen की light दिखाई देती है। इसी तरीके से केवलज्ञान में कोई भी मतिज्ञान, श्रुतज्ञान कुछ भी दिखता नहीं। कोई भी जानने वाला, कोई भी काम उससे होता नहीं। इसलिए केवलज्ञान को, केवलज्ञान कहा जाता है। इस तरह से समझाने वालों की समझ भी आप गलत समझना। क्यों गलत है? अब तो आप समझ गए होंगे, क्यों गलत है? बोलो! अब आप ही बोलो हम समझ गए, समझदार हो गये तुम लोग। अरे! इतना सुन रहे हो, इतना पढ़ रहे हो, कुछ तो समझ आया होगा। जब सब lights जल रही हैं और उसमें halogen भी जल रही है यह उदाहरण तो तुम्हारे लिए fit हो सकता है लेकिन केवलज्ञानी में मतिज्ञान भी है, श्रुतज्ञान भी है, अवधिज्ञान भी है, मन:पर्यय ज्ञान भी है और केवलज्ञान भी है ऐसा माने तो फिर ये? इसीलिए तो कह रहा था कि यह lights का उदाहरण तुम इधर अगर

दोगे तो यह fit बैठेगा कि नहीं तो आप क्या उत्तर दोगे? अब तो बोलो! इसी सूत्र से आपको उत्तर देना है कि आपका यह उदाहरण गलत है क्योंकि आगम में अगर हम इस तरह से स्वीकार कर लेंगे तो एक साथ पाँच ज्ञान होने की आपत्ति आ जाएगी। कुछ भी वकालत नहीं पढ़े हो, तर्क करना कुछ भी नहीं आता। अगर हम इस तरह के आपके उदाहरण को स्वीकार करेंगे तो क्या होगा? यह आपका उदाहरण दृष्टान्त आपके व्यवहारिकता में fit भले ही बैठे लेकिन यह केवलज्ञान के साथ fit नहीं बैठ सकता क्योंकि यह दृष्टान्ताभास है क्योंकि यह स्वरूप के विपरीत जा रहा है स्वरूप विपर्यास इसी का नाम है।

## क्षायिकज्ञान के साथ में क्षायोपशमिक ज्ञान नहीं होते हैं

केवलज्ञान के साथ में कोई भी ज्ञान नहीं होते हैं। क्षायिकज्ञान के साथ में क्षायोपशमिक ज्ञान नहीं होते हैं तभी तो एक अकेला कहा जा रहा है। इसलिए अगर कभी कोई ऐसा कहे तो कहना तुम्हें अभी कुछ भी पता नहीं है। तत्त्वार्थ सूत्र तुमने सुना नहीं है, अपने मन से कुछ भी बोले जा रहे हो, हमने तत्त्वार्थसूत्र पढ़ लिया है।

केवलज्ञान रूपी halogen के सामने किसी भी बल्ब की भी कोई आवश्यकता नहीं है। यह वह system है कि जैसे ही केवलज्ञान की halogen जलेगी, सब connection cut-off हो जाएँगे, सब burst हो जाएँगे। ऐसा नहीं है कि वे बल्ब भी जलते रहेंगे, वे सब Burst हो जाएँगे। बोलना इसका force इतना है, उसका voltage इतना है कि बाकी के सारे के सारे बल्ब इसके voltage को सहन ही नहीं कर पाएँगे। ऐसा तो उदाहरण किसी भी चीज का व्यवहारिक रूप में मिल सकता है लेकिन सिद्धान्त से अगर वह उदाहरण match करेगा तब तो उदाहरण हम कहेंगे हाँ! ठीक है! मान रहे हैं अगर वह उदाहरण सिद्धान्त विरुद्ध जा रहा है, तो उदाहरण भी उदाहरण नहीं कहलाता है। हर चीज यूँ नहीं है कि कोई भी हम उदाहरण देकर के किसी भी चीज की सिद्धि कर दे। उदाहरणों से चीजों की सिद्धि नहीं होती है। स्वरूप पहले होता है, सिद्धान्त पहले होता है। सिद्धान्त का समर्थन यदि उदाहरण से हो रहा है तो तो हमें accept है पर अगर सिद्धान्त का समर्थन उससे नहीं हो रहा है तो वह उदाहरण भी गलत है। वह आपके लिए ठीक होगा। उदाहरण बल्ब के लिए ठीक होगा, केवलज्ञान की light के सामने उदाहरण भी burst हो जाएगा। इस तरह से आपके दिमाग बिल्कुल खुले हुए होने चाहिए। दिमाग में हर चीज बिल्कुल स्पष्ट रूप से झलकनी चाहिए। कोई भी कुछ भी कहे उससे पहले सोचना चाहिए कि इस सिद्धान्त के साथ है या सिद्धान्त विरुद्ध है।

SCAN TO WATCH

आपके पास में यह सूत्र इसलिए पढ़ाए जा रहे हैं कि आपको अब तर्क करने की सूत्र के साथ में बोलने की क्षमता आ जाए। अगर ऐसा होगा तो एक साथ पाँच ज्ञान हो जाएँगे। अगर सारे बल्ब भी जल रहे हैं और halogen भी जा रही है तो। सब एक साथ नहीं जल सकते हैं जैसे

ही क्षायिक ज्ञान की halogen जलेगी सारे बल्ब burst हो जाएँगे, क्षयोपशमिक ज्ञान टूट के गिर पड़ेगा। समझ आ रहा है न? इसलिए एक साथ में एक ही रहेगा उसका voltage इतना high है ऐसे इस ज्ञान की परिणतियों को एक साथ बताने के बाद में आचार्य कहते हैं-

## सम्यग्ज्ञान और मिथ्याज्ञान मे अन्तर

**मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ।।1.31।।**

**मति + श्रुत + अवधिय: - विपर्यय: + च**

**मिथ्यादर्शन उदय में, होता मिथ्याज्ञान।**
**मति श्रुत अवधि ज्ञान को, मिथ्या भी पहिचान॥1.31॥**

अब यहाँ पर सम्यग्ज्ञान का वर्णन होने के बाद में last में मिथ्या ज्ञान का भी वर्णन कर रहे हैं और यह बता रहे हैं कि विपर्यय मतलब विपरीत रूप तीन ज्ञान होते हैं। कौन-कौन से? मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान, ये विपरीत रूप भी होते हैं। मतलब कि ये मिथ्याज्ञान भी कहलाते हैं और ये मिथ्याज्ञान होंगे तो क्या होगा? इनके साथ में ज्ञान तो होगा लेकिन ज्ञान विपरीतता को लिए हुए होगा। मान लो मिथ्यादृष्टि भी वही शब्द सुन रहा है जो हम बोल रहे हैं, मिथ्यादृष्टि भी नारियल को नारियल देख रहा है और सम्यग्दृष्टि भी नारियल को नारियल देख रहा है। मिथ्यादृष्टि भी मनुष्य को मनुष्य देख रहा है, जान रहा है, सम्यग्दृष्टि भी मनुष्य को मनुष्य ही जान रहा है। मति, श्रुतज्ञान सम्यग्दृष्टि का भी इसी रूप में काम कर रहा है और मिथ्यादृष्टि का भी वैसा ही जानने में आ रहा है। अवधिज्ञान भी अगर होगा तो वैसा ही जानेगा लेकिन फिर भी अन्तर होगा। अन्तर क्या होगा? वह विपरीतता के साथ जानेगा। विपरीतता किसमें होगी?

आचार्य कहते हैं- तीन चीजों के साथ विपरीतता होती है। स्वरूप का विपर्यास इसी को बोलते हैं- स्वरूप विपर्यास होगा। दूसरा कारण विपर्यास कहलाता है और तीसरा भेदाभेद विपर्यास कहलाता है। इन तीन चीजों की विपरीतता के साथ में उसका ज्ञान होगा। इसको समझने के लिए आपको अभी कल का दिन भी है। जो लोग चिन्ता कर रहे थे एक अध्याय भी पूरा होगा कि नहीं होगा, वे चिन्ता मुक्त हो तो स्वरूप विपर्यास, कारण विपर्यास और भेदाभेद विपर्यास, ये विपर्यास बुद्धि के अन्दर विपरीतता बैठी हुई है भले ही आप जानने वाली चीजों को वैसा

जान रहे हैं। एक simple सा इसका उदाहरण यही है कि जैसे मान लो किसी ने मनुष्य को देखा, सम्यग्दृष्टि होगा तो मनुष्य को मनुष्य देखते हुए भी क्या जानेगा? इसकी आत्मा, इसके कर्म, इसके शरीर, ये सब अलग हैं। आत्मा कर्म के उदय से ये मनुष्य गति को प्राप्त की गयी है। यह कौन जानेगा? सम्यग्दृष्टि जानेगा। मिथ्यादृष्टि क्या जानेगा? भगवान ने इसको मनुष्य बना करके भेज दिया। स्वरूप विपर्यास हो गया या जो आदमी देख रहा है उसकी आत्मा तो वह जानता ही नहीं। वह

तो जो यह आदमी है वही सब कुछ है। आदमी गया सब कुछ गया, इसके बाद में कुछ नहीं है। आत्मा! आत्मा तो कोई चीज होती नहीं है। जो कुछ है सो बस इसका शरीर है, इसका मन है और जैसा मेरा शरीर, मेरा मन है, वैसे इसके पास इसका शरीर, इसका मन है। आत्मा का तो उसको कोई भेद-अभेद, कारण-कार्य स्वरूप कुछ भी उसके ज्ञान में है नहीं। मनुष्य को मनुष्य रूप देखते हुए भी जानते हुए भी मति, श्रुतज्ञान के माध्यम से वह चीज समझते हुए भी, उसके लिए वह विपरीत रूप में जानने में आ रही है, वह विपरीतता गहरी बैठी हुई है। अगर समय मिला तो उसकी Detail फिर करेंगे बोलो महावीर भगवान की जय।

---------------------------------------------------------------

# सारांश

1. हमने एक जरूरी चीज जानी कि सूत्रों में पिछले सूत्रों का अनुसरण चलता है
2. जैसे सूत्र रुपिष्ववधेः में सूत्र मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु की अनुवृत्ति से अवधिज्ञान में भी असर्वपर्याय की सीमा आ जाती है
3. अर्थात अवधिज्ञान सिर्फ रूपी पदार्थों को असर्व पर्याय के साथ जानेंगे
4. अवधिज्ञान रूपी कर्म के माध्यम से आत्मा को जनता है मगर
5. यह आत्मा के सभी भावों को ग्रहण नहीं कर सकता
6. यह सिर्फ

- कर्म के उदय से होने वाले औदयिक भाव
- उपशम से होने वाले औपशमिक भाव
- क्षयोपशम से होने वाले क्षयोपशम भाव को बता देगा

7. लेकिन क्षायिक भाव और पारिणामिक भाव को नहीं बता पाएगा
8. हमने जाना कि भव्य और अभव्य की पहचान भी अवधिज्ञान का विषय नहीं है
9. सूत्र 28 - तदनन्तभागे मनपर्यस्य में हमने जाना कि मनःपर्यय ज्ञान अवधिज्ञान में उत्कृष्ट सर्वावधिज्ञान का अनन्तवाँ भाग भी ग्रहण करने में समर्थ होता है
10. सूत्र 29 - सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य में हमने देखा कि केवलज्ञान सभी द्रव्यों और सभी पर्यायों को ग्रहण करता है
11. केवलज्ञान अनादि रूप वस्तु को अनादि रूप ही जनता है और जो अनन्त रूप है उसको अनन्त रूप ही जानेगा
12. ज्ञान भी एक तुला के समान है और जैसे हर चीज को तोलने की तुला अलग-अलग होती है ऐसे ही हर संख्या को जानने वाला ज्ञान भी अलग-अलग होता है
13. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान के माध्यम से हम संख्यात संख्या वाली चीजों को ही जान पाएँगे
14. अवधिज्ञान और मनःपर्यय ज्ञान से असंख्यात को
15. और केवलज्ञान से अनन्त संख्या को
16. केवलज्ञान से कोई भी चीज बाहर नहीं है
17. अनन्त भी एक प्रकार का नहीं, इनके प्रकार के होते हैं
18. इनका अपना एक गणित होता है
19. जैसे सिद्ध भी अनन्त हैं, अभव्य भी अनन्त हैं, भव्य भी अनन्त हैं, पुद्गल भी अनन्त हैं लेकिन इन सबकी अनन्तता अलग-अलग है
20. सिद्ध जीवों से भी अनन्त गुणे जीव एक निगोद जीव में रहते हैं
21. केवलज्ञानी के अनन्त को जानने के बाद, हमारे लिए जो ज्ञान आएगा वह केवल एक मौखिक, अक्षरात्मक श्रुतज्ञान होता है
22. केवलज्ञान में आगे के भव दिख रहे हैं तो सब कुछ निश्चित है हमें ऐसा नहीं मानना है

23. हमें सिर्फ केवल ज्ञान के स्वरूप को समझना है और उसका ही निश्चय करना
24. आज हमने जाना कि केवलज्ञान का स्वरुप अनन्त द्रव्यों को, अनन्त पर्यायों के साथ जानना है
25. आचार्य समन्तभद्र ने सम्यग्ज्ञान के बारे में कहा है - अन्यूनमनतिरिक्तं अर्थात न तो न्यून न अतिरिक्त; जैसा है वैसा ही जानो
26. हमने एक प्रचलित भ्रान्ति क्रमबद्ध पर्याय को समझा

- इन पंडितों का तर्क है कि यदि अनन्तकाल तक की एक-एक पर्याय भगवान के ज्ञान में निश्चित हैं
- तो हर पर्याय के पहले का और बाद का क्रम fixed है, बन्ध गया है
- चूँकि सभी पर्यायें निश्चित हैं हमें सिर्फ क्रमबद्ध पर्याय का निश्चय करना है और कुछ नहीं
- बाकी सब तो काललब्धि आने से स्वतः ही हो जायेगा
- सब कुछ उपादान से ही होता है

27. इस तरह के तर्क आगम अनुकूल नहीं हैं
28. किसी भी प्रमाणिक आचार्य ने क्रमबद्ध पर्याय को परिभाषित नहीं किया है
29. सिर्फ लोगों को भ्रमित किया जा रहा है
30. स्वरुप विपर्यास का मतलब है जो स्वरुप हमें बताया गया है उससे अधिक जानना, जो स्वरुप के अलावा है
31.जैसे केवलज्ञान का विषय सब द्रव्यों की सभी पर्यायों को जानना है
32. मगर इसमें यह कहना कि सभी पर्यायें निश्चित हैं, क्रम-बद्ध हैं स्वरुप विपर्यास हो गया
33. निश्चय एकान्त भी मिथ्यात्व है
34. सूत्र 30 में हमने समझा कि एक आत्मा में एक साथ चार ज्ञान तक हो सकते हैं

- पाँच ज्ञान एक साथ कभी नहीं होते
- एक ज्ञान होगा तो केवलज्ञान होगा; यह अन्य क्षयोपशम ज्ञानों के साथ नहीं रहता
- दो ज्ञान होंगे तो मतिज्ञान श्रुतज्ञान होंगे
- तीन ज्ञान होंगे तो मतिज्ञान श्रुतिज्ञान के साथ अवधिज्ञान और मनःपर्यय ज्ञान में से एक होगा
- चार ज्ञान होंगे तो मतिज्ञान श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान और मनःपर्यय ज्ञान होंगे

35. हमने जाना कि जिस ज्ञान से हम काम ले रहे हैं वह उपयोग रुप है और
36. जिस ज्ञान का सद्भाव हमारे अन्दर कर्म के क्षयोपशम के कारण है वह लब्धि रुप है

- इसे हम उपयोग कर भी सकते हैं और नहीं भी

37. केवलज्ञान हमेशा उपयोग रुप ही होता है

- यह सर्व समर्थ होता है
- इसे किसी की सहायता की जरूरत नहीं इसलिए इसे असहाय भी कहते हैं

38. मिथ्याज्ञान के बारे में सूत्र 31 में हमने जाना कि मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान

विपरीत रूप भी होते हैं

39. क्योंकि यह ज्ञान विपरीतता लिए होते हैं

40. जैसे मति श्रुत ज्ञान से मनुष्य को सिर्फ मनुष्य जानना, आत्मा नहीं जानना

# अभ्यास प्रश्न पत्र

प्रश्न 1 -अवधि ज्ञान कितनी पर्यायों को जानता है?
1. कुछ पर्याय
2. केवल एक पर्याय
3. सर्व पर्याय

प्रश्न 2 -अवधि ज्ञान कौन से भावों को जान पाएगा ?
1. पारिणामिक
2. औपशमिक
3. क्षायिक

प्रश्न 3 -औदायिक भाव अवधि ज्ञान का विषय नहीं बनता।
1. सही
2. ग़लत

प्रश्न 4 -"तदनंतभागे मन:पर्ययस्य" में "तत् " से क्या अर्थ है ?
1. मति ज्ञान
2. श्रुत ज्ञान
3. अवधि ज्ञान

प्रश्न 5 -सबसे उत्कृष्ट अवधि ज्ञान कौन सा है?
1. देशावधि
2. परमावधि
3. सर्वावधि

प्रश्न 6 -केवल ज्ञान का क्या विषय है?
1. असर्व द्रव्य की असर्व पर्याय
2. सभी द्रव्यों की कुछ पर्याय
3. सभी द्रव्यों की सभी पर्याय

प्रश्न 7 -कौन से द्रव्य मूर्तिक कहलाते है ?
1. पुद्ग़ल द्रव्य
2. काल द्रव्य
3. आकाश द्रव्य

प्रश्न 8 -मति श्रुत ज्ञान से हम क्या जान पाएँगे ?
1. अनन्त
2. संख्यात
3. असंख्यात

प्रश्न 9 -अवधि, मन:पर्यय ज्ञान से हम क्या जान पाएँगे ?
1. संख्यात
2. असंख्यात
3. अनन्त

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

प्रश्न 10 -सम्यग्ज्ञान का स्वरूप "अन्यूनमनतिरिक्तं" किस ग्रंथ जी में बताया?

1. समाधि तंत्र
2. रत्नकरंडक श्रवकाचार
3. प्रवचनसार

प्रश्न 11 -अगर दो ज्ञान होंगे तो कौन से होंगे?

1. मति और श्रुत
2. श्रुत और अवधि
3. मति और अवधि

प्रश्न 12 -एक समय में एक आत्मा में कितने ज्ञान हो सकते है?

1. पाँच
2. तीन
3. चार

प्रश्न 13 -अगर एक ज्ञान होगा तो कौन सा होगा?

1. अवधि ज्ञान
2. मति ज्ञान
3. केवल ज्ञान

प्रश्न 14 -पाँचो ज्ञान एक साथ हो सकते है?

1. हाँ
2. नहीं

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

## अभ्यास प्रश्न पत्र 'विषयक'

प्रश्न - 1 क्या अवधिज्ञान का विषय (रुपी) द्रव्य की सभी पर्याय बनती हैं?

प्रश्न - 2 पाँच प्रकार के भावों में से कौन से भाव अवधिज्ञान का विषय बनते हैं?

प्रश्न - 3 मनःपर्यय ज्ञान कितना विषय ग्रहण कर सकता है?

प्रश्न - 4 आत्मा में एकसाथ कितने ज्ञान हो सकते हैं? एक की अपेक्षा, दो की अपेक्षा, तीन की अपेक्षा, चार की अपेक्षा नाम बताइये।

प्रश्न - 5 लब्धि और उपयोग एक साथ ज्ञान में किस प्रकार कार्य करते हैं?

प्रश्न - 6 स्वरूप विपर्यास किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताएं।

प्रश्न - 7 सभी द्रव्यों की सभी पर्यायों को कौनसा ज्ञान ग्रहण करता है?

प्रश्न - 8 अवधिज्ञान एवं मन:पर्यय ज्ञान में कितने भव और कितनी पर्यायों को जानने की क्षमता है?

प्रश्न - 9 सम्यग्ज्ञान एवं मिथ्याज्ञान में अंतर बताइये ।

# प्रवचन: 10

## मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान विपरीत ज्ञान भी होते हैं

तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम अध्याय के सूत्रों का वाचन करते हुए लगभग इकत्तीस सूत्र आपको बताया जा चुके हैं। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान ये तीनों ज्ञान विपरीत भी होते हैं, यह यहाँ पर 'च' शब्द के द्वारा इस सूत्र में बताया गया है। च शब्द इसलिए आया है कि आप यह जाने कि यह जो शब्द है- मति, श्रुत और अवधि इन शब्दों का उपयोग हमने ऊपर भी किया है और यहाँ पर भी कर रहे हैं।

**मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ।।1.31।।**

यहाँ पर जो 'च' शब्द से कहना चाह रहे हैं वह यह है कि पहले जो हमने कहा था, मतिज्ञान आदि वे सम्यग्ज्ञान थे और 'च' शब्द से यहाँ पर जानना कि यह मिथ्या ज्ञान भी होते हैं इस तरह से इस सूत्र का आगे के सूत्र से भी सम्बन्ध बनता है। उसी को पढ़ते हुए कहते हैं-

## सत् और असत् में अन्तर

SCAN TO WATCH

**सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मतवत् ।।1.32।।**

**सद् + असतो: + अविशेषात् + यदृच्छा + उपलब्धे: + उन्मत्तवत्**

**दर्शन अच्छा ना बुरा, ज्ञान बुरा बन जाय।**
**मिथ्या ज्ञानी मत्त मद, सदसत ना लख पाय॥1.32॥**

**"मिथ्या दृष्टि : पदार्थ जिस रूप में विद्यमान है उसे उसी रूप में कह सकता है और नहीं भी"**

कहा जा रहा है कि जो मिथ्यादृष्टि का ज्ञान होता है, वह मिथ्यादृष्टि जीव सत् और असत् इन दोनों में 'सदसतो अविशेषाद्' इन दोनों में कोई विशेषता को नहीं जानता है अर्थात् मिथ्या दृष्टि जीव के अन्दर सत् मतलब होता है- विद्यमान पदार्थ और असत् मतलब होता

है- अविद्यमान पदार्थ। कोई पदार्थ जिस रूप में विद्यमान है उसको उस रूप में भी कह सकता है और जिस रूप में नहीं है उसको उस रूप में भी कह सकता है। सत् और असत् का मतलब यह भी है कि जो पदार्थ जैसा है वैसा वह विशेषता के साथ में नहीं जानता। सत् और असत् के बीच में जो अन्तर है उस अन्तर को वह नहीं पहचानता। कौन? मिथ्यादृष्टि जीव। इसलिए उसका ज्ञान विपरीत ज्ञान कहलाता है। उसके ज्ञान में विशेषता के साथ में कुछ भी ज्ञान नहीं होता है। कहा जाता है कि जैसे अपनी इच्छा से कोई भी जाने तो वह अपनी इच्छा से किसी भी पदार्थ को सही को सही भी कह सकता है, सही को गलत भी कह सकता है। कभी गलत को भी सही कह सकता है और कभी गलत को गलत भी कह सकता है। अपनी इच्छा से जब कोई जानता है, तो वह यह यदृच्छया कहलाता है। क्या शब्द दिया इसमें आगे? यदृच्छया मतलब जैसी इच्छा बने जैसा जान लिया। जैसा मन हुआ, जो मन में आया, वह जानने में आ गया। जो मन में आया वही हमने समझ लिया। वही हमने बता दिया तो मिथ्या दृष्टि के ज्ञान में यह यदृच्छया चलती है। जैसी इच्छा बन गई, जैसा मन गया वैसा समझ लिया और वैसा बता दिया। सम्यग्दृष्टि का ज्ञान अपनी इच्छा से नहीं चलता। सम्यग्दृष्टि का ज्ञान, तीर्थंकरों की वाणी और जिनवाणी के अनुसार चलता है। यह अन्तर हो जाता है, तो सम्यग्दृष्टि जीव यदृच्छया नहीं होता अपनी इच्छा से कुछ नहीं बोलता, अपनी इच्छा से कोई भी तत्त्व का बखान नहीं करता। जो भी जानने में आ रहा है उसको वह जिस तरह से आगम के अनुसार जानता है उसी तरह से उसका आगम के अनुसार ही व्याख्यान करता है तो वह सम्यग्ज्ञानी होता है और वह अपनी इच्छानुसार कुछ भी करता है, तो वह मिथ्याज्ञानी होता है।

## उन्मतवत्त का मतलब

इस तरह से यहाँ बताया जा रहा है कि जो अपनी इच्छा से करे, वह उन्मत्तवत कहा गया है।

क्या कहा गया? उन्मत्तवत। उन्मत्तवत का मतलब आज सुबह ही बताया था कि उन्मत्त मतलब हाँ! थोड़ा सा जैसे ही कुछ पागलपन सा आ जाता है, तो वह उस उन्मत्त प्राणी कहलाता है। जिस तरह से कोई मदिरापान कर लेता है, तो वह उन्मत्त हो जाता है। फिर उसे सही गलत का कुछ भी ख्याल नहीं रहता है। जिस रास्ते पर खड़ा हो उस रास्ते को यह भी कह सकता है कि यह रास्ता भले ही उसके घर की ओर जा रहा है। वह कहेगा यह रास्ता कहाँ जा रहा है? उससे पूछा जाए तो कहेगा मरघट की ओर जा रहा है। जिस दुकान से आया वह कहेगा उसी दुकान की ओर जा रहा है। कभी-कभार वह सही भी बता सकता है, तो भी आचार्य कहते हैं कि उसका वह ज्ञान प्रामाणिक

नहीं है। अगर कभी-कभार सही भी बोल दे तो। यह सही भी बता दे कि हाँ! चलो! यह रास्ता जो है घर की ओर जा रहा है, तो भी उसका ज्ञान प्रामाणिक नहीं माना जाएगा क्योंकि वह अपनी इच्छा से बोल रहा है, उन्मत्त है। ऐसे व्यक्ति के ज्ञान को मिथ्या ज्ञान की श्रेणी में ही रखा जाता है। उदाहरण दे कर के बताया जाता है कि जैसे जब व्यक्ति ज्यादा उन्मत्त हो जाता है, मदिरापान से अपना विवेक खो देता है, तो वह अपनी माँ को माँ भी कह सकता है, अपनी माँ को पत्नी भी कह सकता है, पत्नी को भी माँ कह सकता है और पत्नी को पत्नी भी कह सकता है। कोई उसका भरोसा नहीं है वह क्या बोल दे?

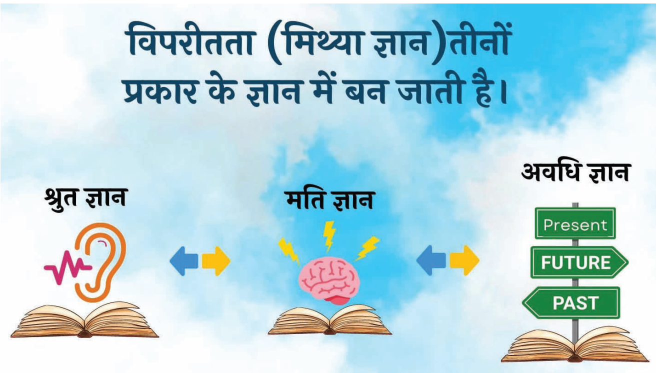


समझ आ रहा है? इसी तरीके से जो उन्मत्त हुए पुरुष के समान अपनी इच्छा से कुछ भी बोल जाए, जिसे सत् और असत् का बिल्कुल ख्याल न रहे कि यह वस्तु है, यह वस्तु नहीं है। सत् का स्वरूप क्या? असत् का स्वरूप क्या? कितने पदार्थ सत् हैं? कितने पदार्थ असत् हैं? यह उसके ज्ञान में नहीं होता इसलिए उसके ज्ञान को मिथ्या ज्ञान या विपरीत ज्ञान कहा जाता है और यह विपरीतता तीनों प्रकार के ज्ञानों में बन जाती है। मतिज्ञान में भी, श्रुतज्ञान में भी और अवधिज्ञान में भी।

## विपर्यास क्या होता है?

आपको बता रहा था कि तीन प्रकार के विपर्यास होते हैं-एक कारण भी विपर्यास होता है, एक भेदाभेद विपर्यास होता है, एक स्वरूप विपर्यास होता है। जितने भी मिथ्यादृष्टि लोग हैं ये तीन प्रकार के विपर्यासो से ही पदार्थों को जानते हैं। कारण विपर्यास का मतलब होता है- जैसे हमें जो भी पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि दिखाई दे रहे हैं तो ये किस कारण से बने हुए हैं? इनके परमाणु किस रूप में होते हैं? उस कारण के प्रति इनके ज्ञान में विपरीतता पड़ी रहती है इसलिए इनके ज्ञान को कारण विपर्यास के साथ में जाना जाता है। बहुत से लोग कहते हैं- पृथ्वी के अन्दर चार गुण होते हैं, चार गुण के जो परमाणु हैं, वही उस पृथ्वी के लिए कारण है। वे यह मानते हैं कि जैसे पृथ्वी के लिए तो चार गुण वाले परमाणु कारण होंगे, जल के लिए तीन गुण वाले परमाणु कारण होंगे, अग्नि के लिए दो गुण वाले परमाणु कारण होंगे और वायु के लिए केवल एक गुण वाले परमाणु ही कारण बनते हैं और ये जिस रूप में हैं उसी प्रकार के रूप में ही रहते हैं और वैसा ही कार्य उत्पन्न करते हैं। मतलब पृथ्वी है, तो पृथ्वी रूप में ही रहेगी, पृथ्वी को ही उत्पन्न

SCAN TO WATCH

करेगी। जल है, तो जल को ही उत्पन्न करेगा। अग्नि, अग्नि को उत्पन्न करेगी, वायु के परमाणु वायु को उत्पन्न करेंगे, ये कभी परिवर्तित नहीं होते हैं। इस तरह की मान्यता को कारण विपर्यास कहा जाता है क्योंकि कभी भी कोई भी चीज हो चाहे पृथ्वी हो या जल हो या अग्नि हो या वायु हो हर तरह के पौद्गलिक पदार्थ में चार प्रकार के जो गुण हैं स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण ये सब में पाए जाते हैं। केवल अग्नि में एक दो गुण मानना, वायु में एक गुण मानना, ये जो है ये कारण विपर्यास में चला जाता है।

## पञ्च भूतात्मक कौन से हैं

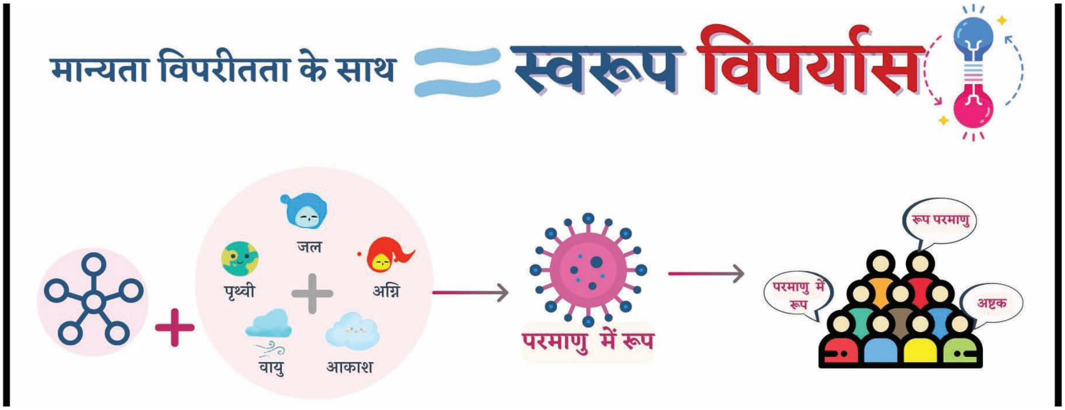


इस तरह की भौतिक जो चीजें हैं उनके प्रति जो उनका ज्ञान है, उस ज्ञान में विपरीतता पड़ी रहती है। अब आपने सुना होगा यह संसार क्या है? पञ्च भूतात्मक है। पाँच भूत होते हैं- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु- एक और जोड़ देते हैं उसमें आकाश। अब यह आकाश क्या भूत हो गया? अब इस तरह का जो विपर्यास है यह स्वरुप विपर्यास कहलाता है। ये पाँच भूतों से जो कुछ

भी हमें दिखाई दे रहा है वह पाँच भूतों का बना हुआ है। अब इसमें विपर्यास क्या है? उनकी मान्यता यह है कि पाँच भूतों से मिलकर के एक रूप परमाणु बनता है, जिसमें रूप आ जाता है। पाँच भूतों से कोई चीज मिलेगी तो उस परमाणु में रूप आएगा, उसको वह रूप परमाणु कहते हैं; उसको अष्टक कहते हैं।

इस तरह की जो यह मान्यता विपरीतता के साथ में चला करती है उस स्वरूप विपर्यास के अन्तर्गत आती है। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो ये कहते हैं कि पृथ्वी तो केवल एक कठिनता का ही गुण धारण करने वाली होती क्योंकि पृथ्वी कठोर होती है, तो पृथ्वी में काठिन्य नाम का ही गुण होता है। जल है, तो जल में द्रव्यत्व नाम का ही गुण होगा। अग्नि है, तो अग्नि में उष्णता नाम का ही गुण होगा और वायु है, तो वायु में केवल ईणत्व मतलब बहने रूप ही गुण होगा। जबकि कोई भी पदार्थ हो उसके अन्दर एक ही गुण नहीं होता, अनेक गुण हुआ करते हैं। पृथ्वी में अगर काठिन्न गुण है, तो कहीं उसके अन्दर और भी अनेक गुण हैं। उसके अन्दर अन्य गुणों को न मान कर के केवल एक गुण मानना यह भी इस पृथ्वी के जो बनाने वाले उस जाति के जो परमाणु हैं, उनके प्रति जो उनका कारण भाव है उस कारण के प्रति उनका हमेशा का हमेशा एक विपरीत भाव बना रहने का नाम ही कारण विपर्यास कहलाता है।

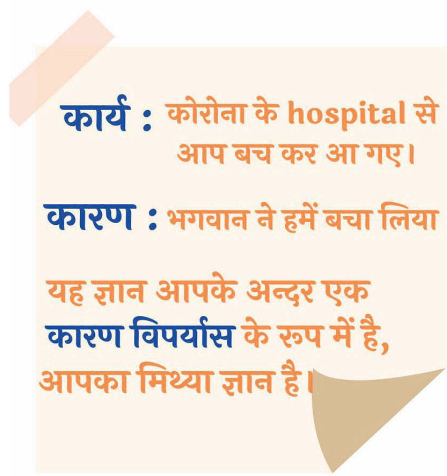


## 1) कारण विपर्यास क्या है?

आपको यह भी बताया था कि अनेक लोग कारण विपर्यास में जैसे मान लो, कोई भी कार्य हुआ। आपको करोना हो गया, करोना हो गया, कोरोना के hospital से आप निकाल कर आ गये, बच कर आ गए। आपको क्या लगा? भगवान ने हमें बचा लिया। अब! यह ज्ञान आपके अन्दर एक कारण विपर्यास के रूप में है, आपका मिथ्या ज्ञान है। क्या है यह? हाँ! आपको यह पता नहीं कि किस कारण से क्या कार्य होते हैं। भगवान के कारण से

कोई कार्य नहीं हो रहे हैं और अगर आप भगवान को कारण बना कर के कोई कार्य बनाते हो तो वह कारण विपर्यास आ जाएगा।कोई भी कार्य होगा आपके कर्म के फल से होगा और आप कर्म को कारण न मान कर के भगवान को कारण बना लिया। इस सृष्टि की रचना किसने की? इसका कारण कौन है, सृष्टि को बनाने वाला? बोलो! कौन है? ईश्वर है। यह क्या हो गया? एक कारण विपर्यास हो गया। इस तरीके का कारण के विषय में विपरीतता को मानना, किस कारण से कोई कार्य हुआ है? अगर हमारे कारण ही विपरीत है, तो हम कार्य को विपरीत रूप से मानेंगे और इस तरह की विपर्यासता को स्वीकार करने का नाम ही मिथ्या ज्ञान कहलाता है। यह उसी का एक स्वरूप है।

## आकाश एक अमूर्त द्रव्य है

यह ध्यान में रखे शरीर को केवल अगर हम यही मानते हैं कि यह पंचभूतों से ही बना है। इस पंचभूत में आकाश नाम का कोई भूत नहीं है। भूत मतलब एक तरह के यह भौतिक परमाणुओं से शब्द बनता है- भूत। इसी से भौतिक शब्द बनता है, भूत से ही। इस तरह के कोई भी परमाणु आकाश के, आकाश तो एक अलग अमूर्त द्रव्य है। उस आकाश को हम इस शरीर में कैसे मान लेंगे? खाली स्थान जो कुछ भी है वह आकाश मान लिया जाता है। पेट में वायु बन रही है, पेट में खाली स्थान है, तो क्या हो गया? आकाश तत्त्व है। यह आकाश को तत्त्व के रूप में मानना, भूत के रूप में मानना, इससे अपना शरीर बना है, यह मानना यह भी कारण विपर्यास में आता है। आकाश से कभी शरीर नहीं बनता। जो शरीर बना है वह आकाश में रहेगा। आकाश का काम केवल उस द्रव्य को अवगाहना देना है, स्थान देना है। इस तरह के ज्ञान हमारे अन्दर पड़े रहते हैं, जो सुन-सुन कर के हमारे अन्दर आ जाते हैं और हम उसी तरीके से बोलते हैं। यह सब हमारे अन्दर कारण विपर्यास की श्रेणी में आ जाता है।

## 2) भेदाभेद विपर्यास का मतलब

फिर होता है- एक भेदाभेद विपर्यास। भेदाभेद का मतलब होता है- द्रव्य है, द्रव्य की अनेक पर्याय निकलती हैं या कोई भी कारण है, कारण से कार्य उत्पन्न होते हैं। उसके विषय में यह निर्णीत नहीं होना कि कारण से कार्य सर्वथा भिन्न होता है या कारण से कार्य में अभेद भी होता है। अभेद का मतलब होता है- मिला रहना और भेद मतलब होता है- भिन्न हो जाना, अलग हो जाना। द्रव्य से पर्याय द्रव्य के परिणमन उस द्रव्य से भिन्न है कि एकान्त रूप से अभिन्न हैं, इस तरह का कोई भी सही स्पष्ट ज्ञान नहीं होना भी भेदाभेद विपर्यास नाम का ज्ञान कहलाता है। जैसे कि आपने प्रमाण सुना; प्रमाण! 'सम्यक् ज्ञानं प्रमाणं' यह सुना न कि ज्ञान ही प्रमाण है। अब कोई आपसे पूछे कि आप जो ज्ञान ले रहे हो इस ज्ञान का फल क्या है? ज्ञान का फल आप से भिन्न

SCAN TO WATCH

है कि आप से अभिन्न है क्योंकि ज्ञान ही प्रमाण है। आपने प्रमाण को जान लिया तो प्रमाण जान लिया तो आपके अन्दर उसका क्या फल आ गया? अगर फल आया तो वह आपसे अलग है कि वह उसी में है। उसी में है, तो कोई मतलब नहीं और अलग है, तो वह आपको कभी प्राप्त होता नहीं। कैसा फल होगा? भेद रूप है कि अभेद रूप है। इस तरीके का कोई भी जो ज्ञान नहीं होना, यह कहलाता है- भेदाभेद विपर्यास। आचार्य इसका समाधान देते हैं कि कभी भी हमें जो ज्ञान होता है, उस ज्ञान का फल हमारे ज्ञान में ही होता है। ज्ञान का फल कहाँ होता है?

## ज्ञान का फल कहाँ होता है?

ज्ञान में ही होता है। ज्ञान में क्या फल मिल गया? आचार्य कहते हैं- जो हमें ज्ञान में यह पहले पता नहीं था, तत्त्व का कोई निर्णय नहीं था, अब हमें निर्णय हो गया। तत्त्व का हमारे लिए निश्चय हो गया। इससे हमें उस पदार्थ के प्रति जो प्रीति उत्पन्न हो जाती है, यही उसका फल

है। क्या उत्पन्न हो जाती है? प्रतीति नहीं प्रीति। प्रीति नहीं जानते हो? प्रीति मतलब लगाव, प्रेम। उस पदार्थ के प्रति हमारा प्रेम हो जाता है। किस पदार्थ के प्रति? जिसको अभी तक हम जानते नहीं थे; अब हमने उसको जान लिया। तत्त्वार्थसूत्र, तत्त्वार्थसूत्र सुनते तो रहते थे, पढ़ा भी था कई बार लेकिन अर्थ सहित कभी ऐसा पढ़ने में नहीं आ रहा था। अब उसका अर्थ खुलने लगा तो बहुत लोगों को ज्ञान में आने लगा। ज्ञान में आने लगा तो ज्ञान से ही ज्ञान में क्या फल मिल रहा है? एक प्रीति उत्पन्न हो जाती। नहीं! हमें तत्त्वार्थ सूत्र अब और पढ़ना है, अब और पढ़ना है, अब और पढ़ना है। कैसे पढ़ोगे? आज तो दसवाँ दिन पूरा हो ही गया? अब पढ़ लेना तत्त्वार्थसूत्र तो हर एक पूजन पाठ प्रदीप में लिखा ही रहता है, जिनवाणी में तो लिखा ही रहता है।

## प्रीति उत्पन्न होना क्या है?

अब प्रीति तो उत्पन्न हो गयी। अब! वह प्रीति पूरी हो जाए। ऐसा भाव कब आएगा? जब प्रीति उत्पन्न हो जाएगी। प्रीति को अगर उत्पन्न हमने कर लिया है, तो इसका मतलब है हमने कुछ पदार्थ को जान लिया। कुछ निश्चय कर लिया तभी हमारे अन्दर कोई प्रीति उत्पन्न हो जाती है। एक जो पहला अध्याय है, यह तो बहुत कठिन सा था और आपने इतना कठिन अध्याय ही सुन लिया। आगे के तो बड़े सरल भी हैं, समझ में भी आने वाले हैं। पहला ही इतना कठिन है कि हमें तो यह लगता है कि कई बार अगर कोई तत्त्वार्थसूत्र पढ़ने बैठे और अगर वह पहला ही अध्याय पढ़ने बैठे तो वह किताब को बन्द किए बना उठेगा नहीं। हाँ! वह पहला अध्याय कठिन है। बाकी दूसरे अध्याय में तो जीव का वर्णन आएगा। बड़ा सरल हो जाता है, थोड़ा समझ में आता, कुछ practically भी कुछ दिखाई देता है। जीवों के बारे में फिर लोक विज्ञान आ जाता है, फिर भावों का ज्ञान आता है, फिर संवर निर्जरा का वर्णन आता है, सब चीजें practically देखने में, सुनने को अच्छी लगती हैं तो बाकी सब आगे का विषय सरल है, interesting है लेकिन पहला अध्याय ही कठिन है और वही आपने सुन लिया और वही आपके लिए अगर interesting हो गया तो अब तो पूरा तत्त्वार्थ सूत्र interesting हो ही जाएगा।

यह प्रीति अगर उत्पन्न हो गई होगी तो आपको आगे बढ़ने का भाव आएगा। प्रीति का मतलब क्या हो गया? इसको ज्ञान का फल कहा है। क्या बोलते हैं इसको? हाँ! आप सोचो हम ज्ञान ले रहे हैं। इस ज्ञान का फल क्या मिल रहा है? हमें उसका कुछ फल मिलता है कि नहीं मिलता तो इस ज्ञान का यह फल होता है। अगर आपके अन्दर किसी भी चीज का ज्ञान आ रहा है, तो उससे आपके अन्दर एक प्रीति उत्पन्न हो जाए तो समझ लेना इसका फल हमको मिल गया। यह ही फल बताया गया, प्रमाण का फल है- प्रीति की उत्पत्ति हो जाना। जब यह प्रीति हो जाएगी तो क्या होगा? जो उसका एक फल बताया उस सम्बन्धी जो हमारा अज्ञान था, उस अज्ञान का नाश हो जाना। अज्ञान का नाश हुआ! हम तत्त्वार्थ सूत्र के पहले अध्याय का कोई भी सूत्र का अर्थ हम से पूछ लो हमको ज्ञान हो गया। हमारे लिए जो पहले अज्ञान पड़ा था, प्रथम अध्याय का हमको ज्ञान नहीं था उस अज्ञान का नाश हो गया। यह भी हमारे अन्दर उसका क्या फल मिल गया? यह ज्ञान के फल है।

## अभेद रूप फल क्या है?

ज्ञान का फल अपने अन्दर यह अभेद रूप फल कहलाता है। इसको क्या बोलते हैं? अभेद रूप फल। यह अभेद फल है। समझ आया? अब अभेद रूप फल भी होता है कथंचित भेद रूप फल भी होता है। भेद रूप फल कैसे? ज्ञान का फल हमें भेद रूप में भिन्न रूप से हमें कुछ दिखाई दे तो भिन्न रूप से क्या दिखाई देगा? यह इस तरह से दिखाई दिया जा सकता है। कथंचित भेद

है, कथंचित अभेद है। भेद क्या हो गया है? अगर आप अपने शब्दों से उस ज्ञान को किसी को दे रहे हैं तो देखो! ज्ञान अलग हो गया, शब्द अलग हो गए तो कथंचित भेद हो गया। क्योंकि ज्ञान ही शब्द नहीं है, ज्ञान अलग है और शब्द अलग है और उन शब्दों से जो दूसरों को फल मिल रहा है, अनेकों हजारों लोग सुन रहे है, उनके अज्ञान का जो नाश हो रहा है वह भी उस ज्ञान का ही फल है।

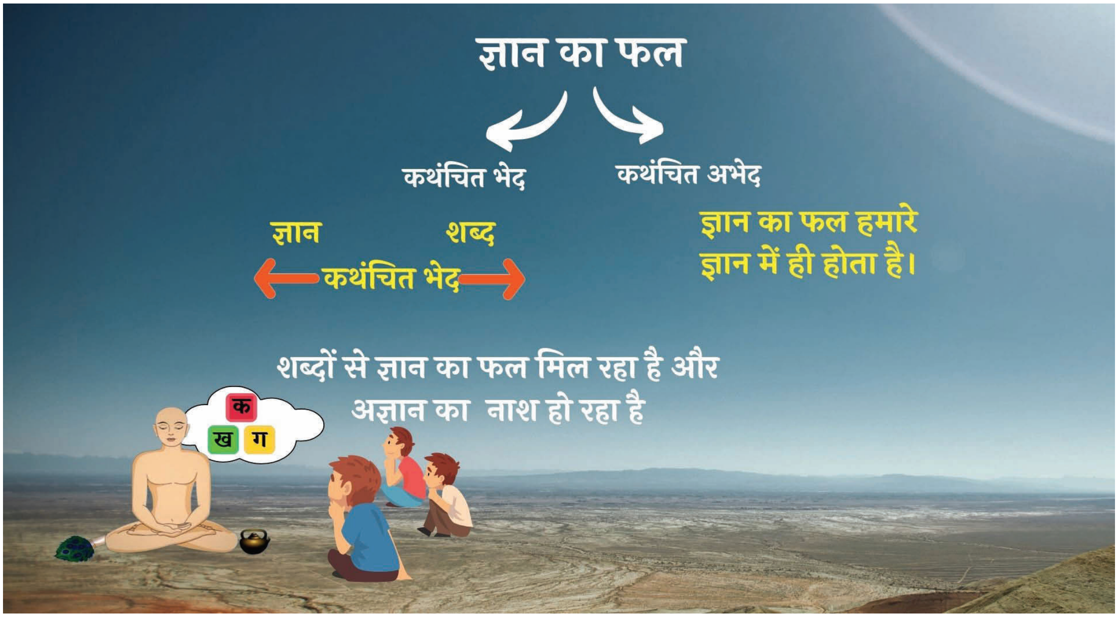


## भेद रूप फल

हम उसे भेदरूप फल कह सकते हैं। अतः कथंचित भेद रूप भी प्रमाण का फल होता है, कथंचित अभेद रूप भी प्रमाण का फल होता है। इस तरह से कथंचित के साथ में जो जानेगा, वह तो सम्यग्ज्ञानी होगा और जो एकान्त रूप से भेद ही है या अभेद ही है ऐसा माने तो उसको आचार्य विपर्यास की कोटि में गिनने लग जाते हैं। यह एक स्वाध्याय है और स्वाध्याय का फल यही होता है कि लोगों के अज्ञान का नाश हो। ज्ञान का फल यही होता है कि लोग अपने भ्रमों को दूर करे, अज्ञान का नाश करे, यह उसका प्रारम्भिक फल है। यह फल यदि आपको प्राप्त हो रहा है, तो हमारे मन में भी भाव आता है कि हम भी आपको इस तरह से तत्त्वार्थ सूत्र आगे भी स्वाध्याय के विषय के रूप में लगाए रखेंगे। जब तक कि आप लगे रहोगे, कोशिश करते हैं कि कितना आपका भाव रहता है और कितना अपनी अनुकूलताएँ रहती है, तो स्वाध्याय के क्रम को जारी रखा जा सकता है। इसमें कोई दिक्कत की बात नहीं है क्योंकि अगर आपका मन एक बार प्रीति को उत्पन्न हुआ है और एक बार आपके अज्ञान का नाश हुआ है, तो एक बार पूरा अज्ञान नाश हो जाना चाहिए। अधूरा छूटा जाएगा तो वह भी दिक्कत का काम होगा।

अतः यह अज्ञान का नाश बहुत जरूरी है।

## 3) स्वरूप विपर्यास

यही ज्ञान का फल है। ज्ञान का फल कथंचित भेद रूप और कथंचित अभेद रूप, ऐसा जानना। तीसरा विपर्यास बताया गया- स्वरूप विपर्यास। क्या बोलते हैं? स्वरूप विपर्यास। आपको पता नहीं दुनिया में तीन सौ पैंसठ मत हैं और तरह-तरह के एकान्तवादी लोग हैं। कैसे-कैसे ज्ञान रखते हैं? प्ररूपणा करते हैं।

## विज्ञान अद्वैतवाद क्या है?

एक मत है जिसका नाम है- विज्ञान अद्वैतवाद। क्या बोलते हैं? विज्ञान अद्वैतवाद। अद्वैत का मतलब होता है- दो चीजें नहीं मानना, एक ही चीज को मानना। एक चीज को मानना यह अपने आप में एकान्त मत कहलाता है। यह स्वरूप विपर्यास में आता है। विज्ञान अद्वैतवाद क्या कहता है? दुनिया में बाह्य पदार्थ तो कुछ है ही नहीं, रूप आदि तो कुछ होता ही नहीं। कोई भी पदार्थ ज्ञेय रूप आदि के साथ तो होता ही नहीं। केवल ज्ञान होता है; बस! ज्ञान। ज्ञान उसको अपने आकार में ढाल लेता है इसलिए ज्ञान हर पदार्थ को जानता है। पदार्थ कोई चीज नहीं है, ज्ञान ही सबसे बड़ी चीज है। वह ज्ञेय को नहीं मानता। वह क्या कहेगा? केवल ज्ञान ही होता है बस! वह कहलाता है- विज्ञान अद्वैतवादी। अद्वैत का मतलब दो नहीं है, एक ही चीज है। जिसको विज्ञान अद्वैत बोलते हैं। ऐसे ब्रह्म अद्वैतवादी होता है-

अद्वैत का मतलब दो नही एक ही ब्रह्म है। 'एकं खलु ब्रह्म:' बस! इस दुनिया में केवल एक ही ब्रह्म है और कोई चीज नहीं है। ब्रह्म के अलावा न कोई पदार्थ है, न कुछ है। समझ आ रहा है? ऐसा मानने वाला क्या कहलाएगा? ब्रह्म अद्वैतवादी। इसको बोलते हैं- स्वरूप विपर्यास। यह सब किस में आएगा? स्वरूप विपर्यास। आप जिसके बारे में बता रहे हो उसका स्वरूप ही उल्टा बता रहे हो। कोई भी ज्ञान बिना ज्ञेय के नहीं होता, बाह्य पदार्थों के बिना कभी भी ज्ञान नहीं होता और अगर केवल कोई बाह्य पदार्थ है ही नहीं तो अनेक बाह्य पदार्थों का हम आलम्बन लेकर के तरह-तरह का ज्ञान कैसे पैदा कर सकते हैं? यह अपने आप में स्वरूप विपर्यास- उल्टा ज्ञान कहलाता है। आप यह जाने कि उल्टे ज्ञान दुनिया में कितने तरीके के चल रहे हैं? हर जगह ब्रह्म है, ब्रह्म है, ब्रह्म है, बस! जीव पदार्थ है, अजीव पदार्थ है कुछ नहीं है। सब जगह ब्रह्म है। ब्रह्म का ही सब काम है, ब्रह्म के ही सब पर्याय हैं। यह नारियल के गोले हैं, यह भी ब्रह्म है। यह mike में भी ब्रह्म है, यह हाथ में भी ब्रह्म है। इस और यह जो शरीर है इसके अन्दर भी ब्रह्म है बस! सब जगह ब्रह्म ब्रह्म फैला हुआ है। light में भी ब्रह्म है, आकाश में भी ब्रह्म है बस! ब्रह्म अद्वैत वाद इसका नाम है। यूँ नहीं कहेंगे कि ये जीव पदार्थ हैं, ये अजीव पदार्थ हैं, ऐसा नहीं। सब ब्रह्म है, एक मात्र ब्रह्म। इसको बोलते हैं- ब्रह्म अद्वैतवात। ये बड़े-बड़े मिथ्यात्व हैं जिन में हम डूबे हुए हैं।

कभी एक जैन व्यक्ति ने प्रश्न किया था न कण-कण में भगवान होता है। ऐसे यह ब्रह्म अद्वैतवाद हमारे अन्दर बिना सिखाए पड़ा हुआ है। तब यह कहने में आता है कि कण-कण में भगवान मतलब सब जगह भगवान फैला हुआ है। इस तरह के अज्ञान विपर्यास, विपरीत बुद्धियाँ जब हम छोड़ेंगे तभी हमारे अन्दर से यह मिथ्याज्ञान छूटेगा। तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ कर अगर आप लोगों के अज्ञान का नाश हो रहा हो तब तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी और अगर आप अपने

अज्ञान को भी न छोड़ पाएँ तो हम बाहरी चीजों को छोड़ने की तो आपसे कोई अपेक्षा कर ही नहीं सकते हैं। अगर आप कर भी दोगे तो वह कोई प्रयोजनीय नहीं होगा क्योंकि आपने पहले अपने अज्ञान का तो नाश किया नहीं तो आप बाहरी चीजें क्या छोड़ोगे? पहले अपने ज्ञान को सम्यक्त्व बनाओ, मिथ्याज्ञान छोड़ो। इसमें क्या कष्ट हो रहा है? चलो! आपसे चाय, coffee और कोई भी चीजें पिज्जा, burger, आलू, भटूरे कुछ भी तुमसे नहीं छुड़ा रहा। क्या छोड़ना है आपको? अपने अज्ञान को तो छोड़ो कम से कम, अपने अज्ञान का नाश करो।

## अज्ञान का नाश

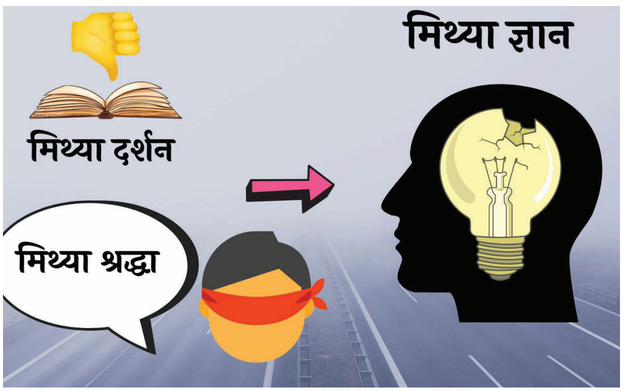


इतना तो अपने मन में भाव करो कि यह अज्ञान की बातें हम नहीं करेंगे, यह अज्ञान की धारणाएँ अपने अन्दर नहीं रखेंगे जो हमें बताया जा रहा है। यही सबसे बड़ी चीज है और यह हो गया तो आपके लिए आगे सब कुछ सहज सरल होगा। क्योंकि अज्ञान का नाश होने पर ही राग-द्वेष का नाश सम्भव है अन्यथा राग-द्वेष का नाश कभी होता है नहीं। इस तरह से यह विपर्यासों के साथ में जो जीव जीते हैं वे कभी सही को सही भी बोल देंगे तो भी उनका सही सही नहीं कहलाएगा। क्यों नहीं कहलाएगा? क्योंकि उनके भीतर तत्त्व का निर्णय नहीं है। जो व्यक्ति पिए हुए है, वह अगर माँ को माँ भी बोल दे तो भी समझना यह सही नहीं बोल रहा। वह कभी भी कुछ भी बोल सकता है। इस तरह के उन्मत्त व्यक्तियों के ज्ञान की तरह मिथ्याज्ञान का जो अपने अन्दर सद्भाव रखते हैं, उनके लिए यह पर कहा जा रहा है कि ये विपरीतता के साथ में ऐसा करते हैं। ये सब विपरीतता क्यों आती है?

मिथ्यात्व के कारण से विपरीतता आ जाती है। जैसे- दूध है, अगर उस दूध को आपने किसी

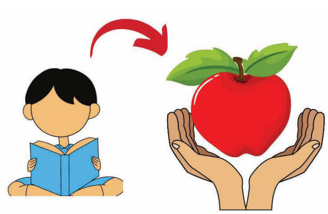

प्रमाण से जो हमने सम्पूर्ण वस्तु को जान लिया

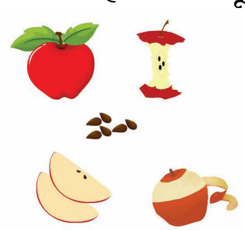

अब हम नयों के द्वारा उसके एक एक धर्म को एक एक कार्य को जानते हैं

ऐसे बर्तन में रख दिया, जो बर्तन कड़वा है। एक कड़वी तुम्बी होती है या मान लो कोई बर्तन ऐसा था कि जिसमें आपने पहले दही रखा हुआ था, उसी में आपने दूध डाल दिया। उसी भगोनी में दिन भर दही रखा रहा। आपने सोचा उस को धोने की क्या जरूरत है? पूरा

दही तो खा पी कर खाली हो ही चुका था, शाम को धोने से पहले दूध का ही तो है। दूध का दही है, दही का ही दूध है। उसी में आपने दूध डाल दिया। बोले बेटा दो किलो दूध आया है उसको रख दे। सुबह काम में लेंगे, चाय बनाएंगे। सुबह क्या मिलेगा? समझ आ रहा है? दूध विकृत हो गया। दूध! दूध के रूप में नहीं रहा अथवा वह कुछ भी बन सकता है। अगर जिस पात्र में आपने उस दूध को रखा है, उसमें अगर कहीं फिटकरी डली है, नमक डाला हुआ है, तो सुबह आपको दूध नहीं मिलेगा वह फटा मिलेगा। छेना मिलेगा आपको! दूध नहीं मिलेगा। यह क्या हो गया? विकृत हो गया। दूध तो दूध था लेकिन पात्र खराब था इसलिए दूध विकृत हो गया। इसी तरीके से ज्ञान तो ज्ञान है लेकिन मिथ्या दर्शन के कारण से वह ज्ञान खराब हो जाता है। मिथ्या श्रद्धा के कारण से वह ज्ञान, मिथ्या ज्ञान कहलाता है। इस तरह से मिथ्या ज्ञान को भी छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।
आगे का अन्तिम सूत्र पढ़ते हैं

**नैगम-संग्रह-व्यवहारर्जु-सूत्र-शब्द-समभि-रूढैवं-भूता नयाः ॥1.33॥**

**नैगम + संग्रह + व्यवहार + ऋजूसूत्र + शब्द + समभिरुढ + एवंभूता - नयाः**

**नैगम संग्रह शब्द सह, ऋजूसूत्र व्यवहार।**
**समभिरुढ नय सात है, एवंभूत प्रकार॥1.33॥**

## नयों का ज्ञान

अब यह यहाँ पर नयों का ज्ञान बताया जा रहा है। प्रमाण का ज्ञान तो हो चुका है। अगर आप देखें तो इस तत्त्वार्थ सूत्र की detail दो ही चीजों में समाप्त हो गई। एक तो पहले सूत्र में मोक्ष मार्ग बताया, फिर सम्यग्दर्शन की थोड़ी सी चर्चा हुई और फिर "प्रमाण नयै रधिगमः" इस सूत्र की चर्चा प्रारम्भ हुई तो प्रमाण की चर्चा में ही पूरा अध्याय हुआ और अन्तिम सूत्र जो नय बचा था; प्रमाण और नय से अधिगम होता है मतलब ज्ञान होता है, तो यह पहला जो अध्याय है वह हमारे ज्ञान को पहले सम्यग्ज्ञान बनाने के लिए है। इसका मतलब यह समझ में आता है। सम्यग्दर्शन पर ध्यान दो और ज्ञान को सम्यक् बनाओ, तत्त्व का निर्णय करो तो नयों के माध्यम से भी हमें सम्यग्ज्ञान होता है। जैसे प्रमाण के माध्यम से होता है वैसे भी नयों के माध्यम से भी होता है। प्रमाण से ही नय निकलते हैं। प्रमाण से जो हमने वस्तु को ढंग से जान लिया, सम्पूर्ण वस्तु को जान लिया उसी को अब हम नयों के द्वारा उसके एक एक धर्म को एक एक कार्य को जानकर के हम नयों से भी वस्तु का ज्ञान करते हैं तो प्रमाण के द्वारा ग्रहण की हुई वस्तु का ही हम जब किसी उस वस्तु के एक अंश का ज्ञान करने के लिए जब हम तत्पर होते हैं तो उस एक अंश का ज्ञान या एक धर्म का ज्ञान ही नय कहलाता है। वह ज्ञान हमें नय के माध्यम से होगा।

SCAN TO WATCH

अभी तो हमने यह जाना प्रमाण से, कि हर वस्तु अनेकान्त रूप है। कैसी है? अनेकान्त मतलब अनेक धर्म वाली है। हर वस्तु में अनेक मतलब अनन्त धर्म है लेकिन अगर हम उसका कथन करेंगे तो हमें एक-एक नय के माध्यम से एक-एक वस्तु के गुण धर्म को समझना पड़ेगा। अतः अंश और अंशी के ज्ञान की तरह अंशी का ज्ञान मतलब पूर्ण वस्तु का ज्ञान तो प्रमाण कहलाता है और उसके किसी एक अंश को ग्रहण करके जब हम उस वस्तु के किसी एक गुण धर्म को जानते हैं तो वह नय ज्ञान कहलाता है। जब हम प्रमाण और नय दोनों से ही वस्तु का ज्ञान करना सीख जाते हैं तभी वह सम्यग्ज्ञान कहलाता है। ऐसे सम्यग्ज्ञान को बढ़ाने के लिए इन नयों का ज्ञान भी आवश्यक है। नयों में सबसे पहला नय यहाँ पर लिखा है- 'नैगम नय'। क्या लिखा है? अब हम नयों के द्वारा उसके एक एक धर्म को एक एक कार्य को जानते हैं ।

## 1) नैगमनय का मतलब

नैगम का मतलब होता है- निगम मतलब होता है- संकल्प। जो संकल्प कर लेता है और संकल्प करके ही उस तरह की वस्तु का कथन करने लग जाता है, उस ज्ञान को कहते हैं- नैगम नय से जानी हुई वस्तु। ऐसा बहुत कुछ होता है कि हम जिस वस्तु का केवल संकल्प कर लिए हैं, अब वस्तु में सब चीजें आ जाएँगी। जिस चीज का हम संकल्प कर लिए हैं बस! वह संकल्प ही हमारे लिए बताएगा कि हम वैसा हैं या हम वैसा हो रहे हैं लेकिन अभी हम वैसा नहीं है। आप यहाँ से दिल्ली जा रहे हो और अभी आप दिल्ली जाने के लिए क्या कर रहे हो? कपड़े पहन रहे हो। आपसे पूछा जाए क्या कर रहे हो? अभी मत बोलो, time नहीं है, दिल्ली जा रहा हूँ। अभी कहाँ दिल्ली जा रहे हो? अभी क्या कर रहे हो? अभी तो आप कपड़े पहन रहे हो और बोल क्या रहे

SCAN TO WATCH

हो? दिल्ली जा रहा हूँ। यह जो आपके अन्दर दिल्ली जाने का संकल्प है, यह भी एक नय की दृष्टि से सत्य है। कोई कहे आप झूठ बोल रहे हो; कपड़े तो पहन रहे हो, कह रहो हो दिल्ली जा रहे हैं। उससे कहना नैगम नय की अपेक्षा से मैं दिल्ली जा रहा हूँ। नैगम नय से यह हमारा कथन सत्य है। तुम्हें नयों का ज्ञान नहीं है। आई बात समझ में? आप भात बना रहे हो। क्या बोलते हैं? भात तो सब जानते ही हैं न! आप अभी क्या कर रहे हो? चावल बीन रहे हो या पानी लेकर के आये या अग्नि लगा दी। मम्मी क्या कर रही है? भात बना रही है। अभी कहाँ भात बन गया भाई? अभी तो चावल पानी में मिलाया जा रहा है, अंगीठी पर रखा जा रहा है। अभी कहाँ भात बन गया? भात तो बाद में बनेगा। बोलने में क्या आता है? भात बना रहे हैं। यह कौन से नय से सत्य है? नैगम नय से। एक तरह से हम कह सकते हैं कि नैगम नय हमारे संकल्प को ग्रहण करके हमें ज्ञान देता है। जैसा हमारा मन में संकल्प-विकल्प होता है हम वैसा ही यदि बोलते हैं तो नैगम नय उसे स्वीकारता है, इसको नैगम नय के माध्यम से जाना जाता है।

## नैगम नय के भेद

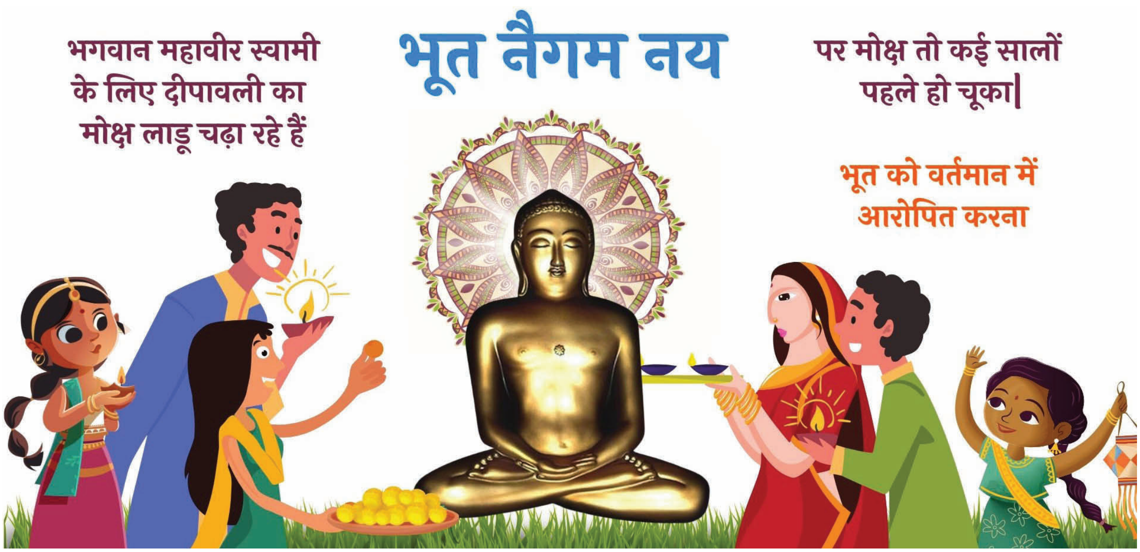


नैगम नय के तीन भेद बताए गए हैं

1. भूत नैगम नय होता है,
2. वर्तमान नैगम नय होता है,
3. भावी नैगम नय होता है।

थोड़ा सा जान लो, interesting है। क्या है? भूत नैगम नय क्या कहेगा? भूत मतलब past का संकल्प। अब इस में क्या होता है? जैसे हमारे अतीत में कोई चीज हुई है और वही चीज

हम आज कर रहे हैं। जैसे आज वासुपूज्य भगवान का मोक्ष कल्याणक है, तो वासुपूज्य भगवान का आज आप मोक्ष कल्याणक मना रहे हो। वासुपूज्य भगवान कब हुए थे? भूतकाल में। लेकिन वह आज अनन्त चतुर्दशी को हुए थे इसलिए आज लड्डु चढ़ा रहे हैं। कोई आप से पूछ बैठे तो यह सत्य है कि असत्य है? यह नैगम नय की अपेक्षा से इसको बोलेंगे- भूत नैगम नय। समझ आ रहा है? मोक्ष सप्तमी आई, दीपावली आई, भगवान महावीर स्वामी के लिए दीपावली का मोक्ष लाडू चढ़ा रहे हैं, पारसनाथ के लिए लाडू चढ़ा रहे हैं। अरे! वह तो बहुत पहले हो चुके हैं। आज क्या है? आज वही सप्तमी जो पहले थी, वही चौदस जो पहले कभी थी, उसको हम आज आरोपित कर रहे हैं। भूत में हम वर्तमान को आरोपित कर रहे हैं तब हम मान रहे हैं कि यह वही है जो आज है। इसको बोलते हैं- भूत नैगम नय।

भावी नैगम नय जो भविष्य में होगा। अभी है नहीं लेकिन हम उसको भी पहले से ही कह देते हैं। जैसे कि मान लो कोई अरिहन्त बन गए हैं। अब जो अरिहन्त हैं तो वह नियम से सिद्ध बनेंगे ही तो हम उन अरिहन्त को कह रहे हैं- ये सिद्ध ही हैं, ये सिद्ध हैं। यह अरिहंतो को सिद्ध कहना यह सब क्या है? मुनि महाराज हैं, उनको शुक्ल ध्यान होगा। अभी नहीं हो रहा होगा लेकिन भावी नैगम नय की अपेक्षा से वह शुक्ल ध्यानी हैं, केवल ज्ञानी हैं। यह सब भावी नैगम नय की अपेक्षा से कहा जा सकता है। आप भी कह सकते हो हम सब क्या कर रहे हैं? मोक्ष जा रहे हैं। कहाँ जा रहे हैं? मोक्ष जाएँगे। जाएँगे कि नहीं जाएँगे? संकल्प है कि नहीं? भावी नैगम नय की अपेक्षा से सब कहाँ जा रहे हैं? मोक्ष जा रहे हैं। घर से यहाँ आ रहे हैं। बोले, कहाँ जा रहा हैं? मोक्ष जा रहे हैं। अभी कहाँ मोक्ष मिल रहा है? जहाँ मोक्ष का मार्ग मिल रहा है वहीं पर मोक्ष मिल रहा है, मोक्ष का मार्ग तो मोक्ष में ले जाएगा। भावी नैगम नय की अपेक्षा से इस

तरीके के कथन बन जाते हैं।

फिर ऐसे ही होता है वर्तमान नैगम नय! वर्तमान नैगम नय में कोई भी वस्तु बन गई है या अधूरी है हम उससे जो अभी उदाहरण दिए गए थे वे वर्तमान नैगम नय के समझ लेना। भात बनाने का उदाहरण है। यह भात बन रहा है, अभी बना नहीं है अभी दो मिनट हुए थे और वह अंगीठी पर पतीली रक्खी हुई थी और उस पर जो वह कहने लगे, क्या बन रहा है? इसमें भात बन रहा है। अभी तो कहाँ बना? अभी दो मिनट हुए, दो मिनट में कहाँ भात बन जाएगा? यह भात है। इस तरीके से उसमें संकल्प के वश से कहना कि यह भात है, यह भी अपने आप में वर्तमान नैगम नय है, तो इस तरह से इन नैगम नयों का ज्ञान करना।

## 2) संग्रह नय का मतलब

दूसरा होता है- संग्रह नय। संग्रह नय का मतलब होता है- सब वस्तुओं का एक साथ संग्रह

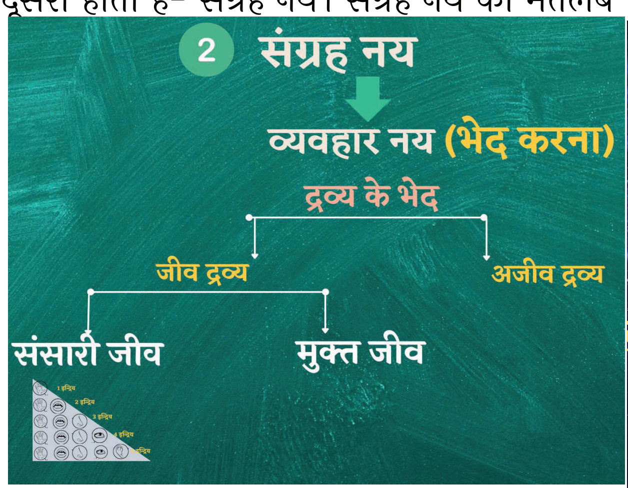

करके कोई चीज कही जाए तो उसको संग्रह नय में गर्वित किया जाता है। जैसे कि दुनिया में द्रव्य है। क्या बोला? हाँ! विश्व के अन्दर क्या फैला हुआ है? द्रव्य फैले हुए हैं। द्रव्य मात्र इतना कहना यह संग्रह नय का विषय हो गया। अब उस संग्रह में हम जो व्यवहार करेंगे वह व्यवहार नय का विषय हो जायेगा। व्यवहार का मतलब होता है- भेद करना। अब आपने यह तो बता दिया कि द्रव्य फैला हुआ है। अब यह तो बताओ कि वह द्रव्य एक ही द्रव्य है कि और भी द्रव्य है कि उस द्रव्य के कोई भेद भी है कि नहीं है? द्रव्य के भेद जब तक सम्भव हो तब तक क्या चलेगा? व्यवहार नय। हमने कहा पहले द्रव्य के दो भेद हैं। कौन-कौन से? 'जीवमजीवं दव्वं' पढ़ चुके हैं न सब लोग द्रव्य संग्रह भी। हाँ! तभी यह तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ पाओगे जिन लोगों ने द्रव्य संग्रह पढ़ लिया है। एक जीव द्रव्य और एक अजीव द्रव्य होता है। जीव द्रव्य क्या सब एक जैसे हैं? आगे दूसरे अध्याय में बताएँगे। सब अभी बता दे? जीव द्रव्य के भी दो भेद होते हैं- एक संसारी जीव होते हैं, मुक्त जीव होते हैं। क्या सब संसारी एक ही जैसे होते हैं? अब भाई! जितना हमें इसका dividation कर सकेंगे वह हम आपको आगे दूसरे अध्याय में बताएँगे। इसका dividation बहुत है। यह सब कब तक? जब तक हम कर सकें।

## संसारी जीवों के भेद

संसारी जीवों के भी भेद करेंगे- एक इन्द्रिय, दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय, पाँच इन्द्रिय। पाँच इन्द्रिय के भी भेद, एक इन्द्रिय के भी भेद, जब तक कर सके तब तक सब क्या चलेगा? व्यवहार नय।

## 3) व्यवहार नय

SCAN TO WATCH

व्यवहार नय के माध्यम से जो आप जानेंगे यह सम्यग्ज्ञान है। यह क्या है? हाँ! व्यवहार तो कोई काम का होता नहीं। ऐसा कहने वालों को नयों का कोई ज्ञान होता नहीं। यह व्यवहार नय किस का भेद है? सम्यग्ज्ञान का भेद है। इस सम्यग्ज्ञान में व्यवहार नय भी आता है। इस तरह से व्यवहार नय से भी वस्तु का व्यवहार करके, भेद करके जाना जाता है। वस्तु एक अभेद रूपी नहीं होती है। निश्चय तो वस्तु के केवल एक अभेद स्वरूप को बताता है। अगर वस्तु का केवल एक ही अभेद स्वरूप मान लोगे और व्यवहार का जो भेद स्वरूप है उसको झूठा मान लोगे तब तो फिर आपने वस्तु को एकान्त रूप से अभेद मान लिया। उसका भेद तो आपने झूठा समझ कर के स्वीकार नहीं किया तो आप तो प्रकट रूप से मिथ्या दृष्टि हो। एक बच्चा भी अगर थोड़ा सा नयों का ज्ञान रख लेगा तो वह भी बता देगा। यह तो बहुत बड़ा अज्ञान है, जो अभेद एकान्त है वह भी मिथ्यात्व की श्रेणी में आता है और जो भेद रूप एकान्त है, वह भी मिथ्यात्व की श्रेणी में आता है, तो एकान्त नहीं है। अभेद और भेद रूप ही वस्तु है। अगर हम उसे अभेद रूप ही मान रहे हैं तो यह भी हमारा एकान्त मिथ्यात्व है। जो केवल समयसार पढ़ते हैं उन्हें वस्तु केवल एक

अखण्ड ही दिखाई देती है, अभेद ही दिखाई देती है। निश्चय में वस्तु वैसे ही होती है, तो उन्हें वही दिखाई देती है। जहाँ से भेद किया व्यवहार आया वह उनके दिमाग में "ववहारोभूदत्थो" व्यवहार अभूतार्थ हो गया, मिथ्या हो गया, यह उन्हें पढ़ाया जाता है। ये सब एकान्त मिथ्या दृष्टि बनते जा रहे हैं। आपको समझना है कि भेदा-भेद विपर्यास इसलिए रखा गया है। एकान्त रूप से भेद मानना, एकान्त रूप से अभेद मानना यह भी भेदा-भेद विपर्यास में आता है। इसलिए जब तक आप भेद-अभेद रूप दोनों तरह की वस्तु नहीं मानोगे कथंचित भेद कथंचित अभेद रूप वस्तु तब तक आपके लिए यह नयों का ज्ञान सम्भव नहीं है क्योंकि अभेद माना पहले हमने। द्रव्य है! द्रव्य क्या हो गया? यह एक अभेद कथन हो गया। अब इस द्रव्य के हमने भेद किए- जीव-अजीव। फिर जीव के अलग, अजीव के तो ये भेदा, भेदात्मक जो वस्तु हैं, यह सब हमारे ज्ञान में आएगी तभी आपको सही ज्ञान होगा। अतः संग्रह का ज्ञान भी होना और व्यवहार का ज्ञान भी होना, यह सब सम्यक् नय है और ये नय आपस में एक दूसरे की अपेक्षा रखने वाले हैं, एक के साथ एक का विषय जुड़ा हुआ है और आगे-आगे के नय अपने-अपने और सूक्ष्म होते चले जा रहे हैं। सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय को पकड़ते चले जा रहे हैं तो नैगम नय के बाद में संग्रह नय आया। संग्रह नय के बाद में व्यवहार आया, व्यवहार के बाद में ऋजू सूत्र नय।

## 4) ऋजुसूत्र का मतलब

ऋजु सूत्र- ऋजु मतलब होता है- सीधा। जो सूत यानि होता है धागा तो बिल्कुल धागे की तरह जो केवल, जिस समय पर वह धागा सीधा हो करके केवल अपनी एक समय की परिणति को, जिस समय पर वह एक समय की परिणति को कोई भी ज्ञान जानेगा तो वह एक समय की परिणति को ऋजु कहा जाएगा। उसको बोलते हैं- ऋजु सूत्र नय। इसके भी दो भेद हो जाते हैं- एक सूक्ष्म और एक स्थूल। अब एक समय की परिणीति तो किसी को पकड़ में आएगी नहीं। स्थूल ऋजु सूत्र नय से वह जो एक धागा, एक मोती में या कई मोतियों में पिरोया हुआ है, वह धागा जब तक एक लाइन पर रहेगा, एक ही हमें पदार्थ का ज्ञान कराएगा। तब तक वह स्थूल ऋजु सूत्र नय कहलाएगा। जैसे आप मनुष्य हैं। आपकी मनुष्य की आयु है। मानो आपकी आयु अस्सी वर्ष की है, तो स्थूल ऋजु सूत्र नय से आप हर समय मनुष्य हो रहे हैं, हर समय मनुष्य ही रहोगे, मनुष्य के अलावा कुछ नहीं हो पाओगे तो अस्सी वर्ष तक अगर हम आपके सब समयों को जोड़ कर के देखें तो भी आप अस्सी वर्ष तक मनुष्य और हर समय देखें तो हर समय भी मनुष्य हो तो हर समय का मनुष्य तो आपको पकड़ में आएगा नहीं। वह कहलाएगा- सूक्ष्म ऋजु सूत्र नय का विषय। लेकिन

जब आप के लिए एक साल हो जाएगी, एक वर्षगाँठ मनाने जाओगे तब आपको पता पड़ेगा, बेटा, एक साल का हो गया। इस स्थूल ऋजु सूत्र नय से इसे आप कहने लग जाते बेटे की दूसरी वर्षगाँठ आ गई। यह ऋजु सूत्र नय सूक्ष्मता की अपेक्षा से देखा जाये तो यह केवल एक समयवर्ती पर्याय को ही पकड़ता है। इस ऋजु सूत्र नय का विषय बहुत लम्बा चौड़ा है। इसको आप केवल अभी शब्दों के माध्यम से इतना ही जाने और फिर ऋजु सूत्र नय के बाद में शुरू हो जाते हैं- शब्द नय। यानि इन नयों में भी नैगम, संग्रह, व्यवहार और ऋजू सूत्र नय ये कहलाते हैं- अर्थ नय। इनको क्या बोलते हैं? अर्थ नय।

## 5) अर्थ नय और शब्द नय

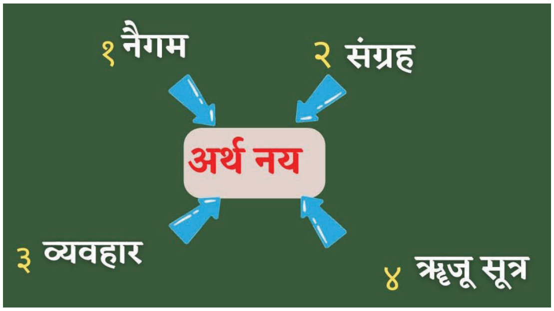

आगे के जो नय हैं ये कहलाते हैं- शब्द नय। यह शब्दों के ऊपर आधारित है, इनका ज्ञान शब्दों से सम्बन्धित है। जैसे शब्द नय हैं तो शब्द नय में आता है कि अगर आपने कभी व्याकरण पढ़ी हो तो यह शब्द नय आपको समझ में आएगा। व्याकरण होती है, शब्द शास्त्र होते हैं। तरह-तरह की वाक्य रचनाएँ की जाती हैं तो उनमें अनेक प्रकार के शब्दों का, धातु क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है।

SCAN TO WATCH

यह शब्द नय कहता है कि जो शब्द जिस लिंग का है वह अपने उस लिंग को ही रखें। उसमें व्यभिचार न करे मतलब दोष न लगाए तो इसको बोलते हैं- शब्द नय। उस शब्द के अन्दर लिंग, साधन, पुरुष इत्यादि जो शब्द में प्रयुक्त हो रहे हैं उन सबके दोषों की निवृत्ति करे। कैसे निवृत्ति करे? जैसे- आपने कभी शब्द सुना हो पट! क्या बोलते हैं? पट! मतलब होता है- वस्त्र। पट भी एक शब्द है और वस्त्र भी एक शब्द है लेकिन पट जो शब्द है वह पुल्लिंग का है पटः और वस्त्र शब्द है वह नपुंसक लिंग का है वस्त्रं। अगर कोई यह कहे 'पटः वस्त्रं' तो शब्द नय उससे कहेगा यह गलत है क्योंकि एक शब्द दूसरे लिंग का हो गया, दूसरा शब्द दूसरे लिंग का हो गया। एक ही जैसे लिंग के शब्द होने चाहिए तो यह शब्द नय स्वीकार करेगा। मतलब जो चीज व्याकरण में भी चलती है उसको भी यह शब्द नय एक तरह से स्वीकार नहीं करता। इसको वह लिंग व्यभिचार में ले लेगा। इसी तरीके से अब मान लो कोई चीज बहुत संख्या में हैं। वर्षाः और हमने आगे लिख दिया ऋतु। ऋतु तो एक वचन में हो गई और वर्षा बहुवचन में हो गई। अब आप इससे इसका का सम्बन्ध जोड़ो। वर्षा है, वही उसकी ऋतु के कारण से उसको वर्षा ऋतु कहा जा रहा है, तो यह शब्द नय कहता है यह बात ठीक नहीं है। बहुवचन की चीज के साथ में एक वचन की चीज जोड़ना ठीक नहीं है। बहुवचन की चीज के साथ में एक वचन की चीज जोड़ना ठीक नहीं है। कोई भी चीज जैसे यह तो हो गया उसका एक तरह से वचन व्यभिचार। क्योंकि इसमें एक वचन आ गया उसमें बहुवचन आ गया। इसको संख्या व्यभिचार के नाम से भी कहा जाता है। इसी तरीके से आपने जैसे इसी अध्याय का पहला सूत्र पढ़ा "सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्ष मार्गः" इधर हम लिख रहे हैं - बहुवचन में चारित्राणि और उधर कह रहे हैं मोक्ष मार्गः एक वचन में तो जब तीन चीजें हैं तो एक चीज कैसे हो सकती है? तीन चीजों का मिलकर के एक चीज कैसे बन सकती है? तीन चीजें हैं तो फिर उसको एक कहना यह अपने आप में सब वचन व्यभिचार कहलाता है।

## लिंग व्यभिचार किसे कहते हैं?

कई तरह की धातुएँ होती हैं, क्रियाएँ होती हैं, उनको साधन के दोष के रूप में माना जाता है। अगर आपने जैसे कभी सुना हो। नमः शब्द होता है। नमः शब्द के साथ में हमेशा चतुर्थी

विभक्ति का प्रयोग होता है। व्याकरण नहीं भी पढ़ हो तो भी सुन लो थोड़ी सी है। कोई भी नमः शब्द है, तो कोई भी नमः शब्द के साथ में चतुर्थी विभक्ति लगेगी। जैसे 'तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति-हराय', हराय! यह जो हराय है, यह क्या है? रामाय यह चतुर्थी विभक्ति है। नाथ यह तो उनका सम्बोधन हो गया।

अब यह जो है वह कहता है ऐसे हम नियम नहीं मानते है। यह व्याकरण का नियम नहीं मानता क्योंकि इसमें तो चलो ठीक है चल गया। अब आप हर जगह नियम बना दो। "तुभ्यं नमः" तुम्हारे लिए नमस्कार हो। यहाँ तो चलो ठीक बन रही है बात। कैसे भगवान हैं? त्रिभुवनार्ति हराय तीन भुवन का दुःख दूर करने वाले हे! नाथ! आप के लिए नमस्कार हो। यह तो ठीक है। कभी-कभी ऐसे भी शब्द बन जाते हैं जिनमें sense सही नहीं आ रहा होता है लेकिन फिर भी हमें जबरदस्ती चतुर्थी विभक्ति नमः के योग में लगानी पड़ती है।

## शब्द नय का आश्रय लिया

SCAN TO WATCH

जैसे मैंने एक काव्य रचना की तो जान-बूझ कर हमने उसमें नमः के साथ में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग नहीं किया। क्यों नहीं किया? इसलिए नहीं किया कि उसमें वह चीज fit नहीं बैठ रही तो फिर हमने शब्द नय का आश्रय लिया। अब कोई व्याकरण आचार्य कहे कि यह नय यह गलत है। आपने नमः के साथ में चतुर्थी का प्रयोग नहीं किया। मेरी दृष्टि में वह सही है क्योंकि मैंने शब्द नय के अनुसार उसका प्रयोग किया है।मैंने एक काव्य ज्ञानाष्टक आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज के ऊपर बनाया था। उसमें एक अन्तिम पंक्ति में लिखा "तज्ज्ञान सागरयते:पादयोर्नमोऽस्तु" हर line में यह आता है। 'तज्ज्ञानसागरयते:पदयोर्नमोऽस्तु" मैने जान बूझ कर लिखा था। उन ज्ञान सागर यति के चरणों में नमोस्तु करना है कि चरणों के लिए नमोस्तु करना है? अगर नमः के साथ हम अपनी व्याकरण देखेंगे तो अर्थ क्या निकलेगा? उस ज्ञान सागर यति के चरणों के लिए नमोस्तु हो। हमें तो यह बात जम नहीं रही थी, चरणों के लिए नमोस्तु, चरणों में नमोस्तु। अब जब चरणों में करा तो चरणयो तज्ज्ञान सागरयते: पदयो, पदयो यह हो गया सप्तमी का द्वीवचन और उसके साथ में नमः का प्रयोग हो गया। व्याकरण आचार्यों की दृष्टि में तो यह

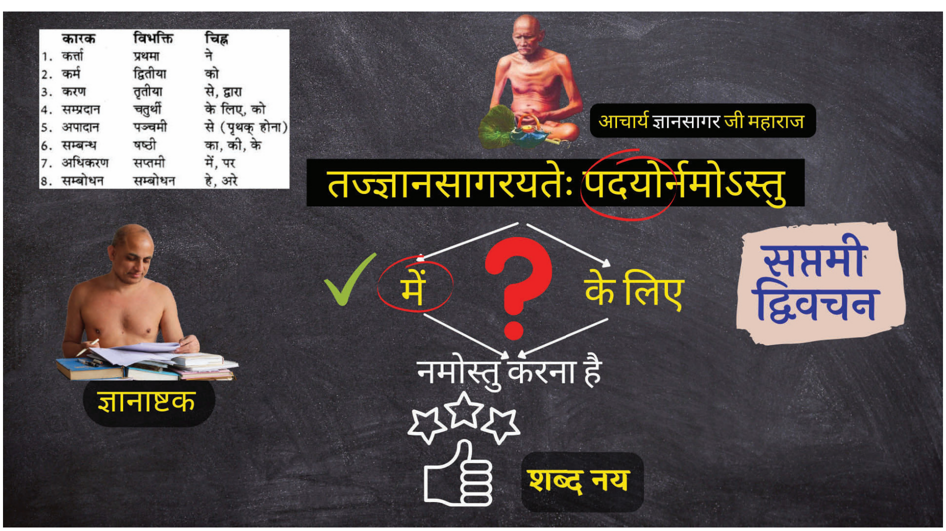

गलत हो गया। बना रहे हैं गलत हमें क्या फर्क पड़ रहा है। हमें वह चीज ही नहीं जम रही तो यह कहलाता है- शब्द नय। हमको शाबासी देगा हाँ! तुमने बिल्कुल सही किया। कोई न दे, कोई व्याकरण शास्त्री न माने हमारी बात लेकिन शब्द नय कहेगा हाँ! बिल्कुल यह प्रयोग ऐसे ही होना चाहिए। अब वह सुनने में ही अच्छा नहीं लग रहा है लेकिन व्याकरण जो होती है वह अपनी जिद पर रहती है। नहीं! नमः का प्रयोग हुआ है, तो आपको चतुर्थी का ही प्रयोग करना है। या तो पदाए करो या पदेभोः करो। अब वह उस में कुछ भी fit नहीं बैठ रहा है, तो पदयो! जान-बूझ कर किया। चरणों में नमोस्तु, चरणों में ही तो नमोस्तु हुई चरणों के लिए क्या नमोस्तु? इस तरीके के प्रयोग जो व्याकरण सम्बन्धी होते हैं उनको शब्द नय स्वीकारता नहीं। शब्द नय को डर नहीं है, वह तो कहता है जो सही होगा हम उसी को सही कहेंगे। आप कुछ का कुछ भी करते रहो यह सब नहीं चलेगा। व्याकरण शास्त्र की दृष्टि से यह शब्द नय भले ही विपरीत बैठे लेकिन अपनी दृष्टि से वस्तु का प्रतिपादन करने के लिए शब्द नय सत्य होता है। अब क्या बचा?

## 6) समभिरूढ़ नय

समभिरूढ़ नय का मतलब होता है कि अब जैसे कोई भी शब्द हैं तो हर शब्द के कई पर्यायवाची शब्द होते हैं। हर शब्द के पर्यायवाची शब्द होते हैं तो इस समभिरूढ़ नय कहता है कि ऐसा नहीं होता। जिस शब्द का जो अर्थ है, वह शब्द उसी के अर्थ के रूप में ग्रहण करना चाहिए। एक शब्द के अनेक पर्यायवाची शब्दों को मानता नहीं है। यह नय का अपना अभिप्राय है। नय अपने ज्ञान को, अपने attitude से देखता है। जैसे कि मान लो उदाहरण दिया जाता है कि इन्द्र के कई नाम होते हैं। इन्द्र का एक नाम इन्द्र भी होता है। एक नाम उसका शक्र भी होता है, एक नाम उसका पुरन्दर भी होता है। यह समय विरूण नय कहेगा हर जगह पर आप कहीं भी आपको अपने छन्द शास्त्र में उपयोग लाना है, तो कोई भी पर्यायवाची नाम उठा कर के कहीं भी आप उस को fit कर लेते हो। जो छन्द बनाने वाले होते, काव्य बनाने वाले होते तो उनके

लिए पर्यायवाची शब्द काम में आते हैं। इन्द्र लिखना है, तो इन्द्र लिख दिया। वसु लिखना है, तो वसु लिख दिया। शक्र लिखना है, तो शक्र लिख दिया। यह समभिरूढ़ नय कहता है- ऐसा नहीं! जो शब्द है उसका अपना एक ही अर्थ होता है। इन्द्र उसी के लिए कहा जाएगा जो ऐश्वर्य की स्थिति में हो। जो क्रीड़ा कर रहा हो, आनन्द में मगन हो, उसी के लिए इन्द्र कहा जाएगा। शक्र उसी को कहा जाएगा

जो कुछ समर्थता का कार्य कर रहा है, उसी के लिए उस समय पर शक्र कहा जाएगा। पुरन्दर उसी को कहा जाएगा जो पूर्व मतलब नगर को उजाड़ रहा हो तब उसका नाम पुरन्दर कहा जाएगा। हर जगह आप उसको पुरन्दर नहीं लगा सकते हो। ऐसे यह समभिरूढ़ नय अलग-अलग शब्दों के अलग-अलग अर्थों को कहता है। कोई भी शब्द है अब आप जल को जल भी बोलते हो, नीर भी बोलते हो। जल को अप्प भी बोला जाता है। कम, का भी बोला जाता है। तरह-तरह के शब्द हैं। इन शब्दों का अपना अलग-अलग अर्थ है। यह कहने का साहस करता है- समभिरूढ़ नय। अन्त में आता है- एवं भूतनय

## 7) एवं भूत नय

एवं भूत नय यह कहता है- जब वस्तु जिस कार्य के रूप में परिणत होती हुई दिखाई देगी आप उस समय उसको वैसा कहेंगे तो हम स्वीकारेंगे। इसका नाम है- एवं भूत नय। अब तो एवं भूतनय क्या करेगा? जैसे मान लो आप यहाँ पर व्यापारी हो। अभी आप यहाँ पढ़ रहे हो, अभी आप व्यापारी नहीं हो। अभी आप कौन सी क्रिया में लग रहे हो? पढ़ने की क्रिया में। अभी आप क्या हो? पाठक हो, श्रोता हो। अभी आपको कहूँ मैं सोने का व्यापारी हूँ। अभी आप सोने के व्यापारी नहीं हो। अभी तो आप क्या हो? श्रोता हो। क्योंकि अभी आप किस क्रिया में लग रहे हो? सुनने की क्रिया में लग रहा है सो श्रोता। बोलने की क्रिया में लग रहा है, वह वक्ता। आप कहो मैं तो पुजारी हूँ। कहाँ पूजा कर रहे हो तुम? जब पूजा करोगे तभी पुजारी कहलाओगे, जिस समय पूजा करोगे। कौन से नय की अपेक्षा से? एवं भूत की अपेक्षा से। अब देखो! कहाँ नैगम नय था? पर कहाँ एवं भूत नय आ गया? नैगम नय तो घर से जब कोई वस्त्र पहन कर भी चल रहा है तो भी वह कह रहा है, मैं पूजा करने जा रहा हूँ, मैं पुजारी हूँ और एवं भूत नय

कब कहेगा कि मैं पुजारी हूँ? जब तू पूजा करेगा तभी पुजारी कहेगा। हमें यह नय इतनी स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर ले आया है। इसको बोलते हैं- इन नयों को जो हमें स्थूल से सूक्ष्म अर्थ का ज्ञान कराते चले जाते हैं, ऐसे ये नय शुरु से संकल्प जहाँ से लिया था वहाँ से एवं भूत नय तक अपने संकल्प लिया कि मुझे सिद्ध होना है और जब तक सिद्ध न हो जाओगे तब तक एवं भूत नय की अपेक्षा से सिद्ध नहीं कहलाओगे। यह यात्रा हमें पूरी एक नय करना सिखाते हैं, शुरु से लेकर नैगम नय से लेकर के एवं भूत नय तक की। जिस समय आप सिद्ध पर्याय से परिणत होंगे उसी समय सिद्ध कहलाओगे और उस समय जो है एवं भूत नय से वह सिद्ध कहलाएँगे। इस तरह से इसमें यह जो नैगम, संग्रह, व्यवहार और ऋजू सूत्र ये तो कहलाते हैं- चार अर्थ नय और शब्द, समभिरुढ़ और एवं भूत ये तीन नय कहलाते हैं- शब्द नय।

## चार अर्थ नय और तीन शब्द नय इस प्रकार से सात नय होते हैं

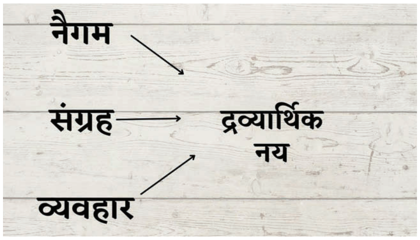


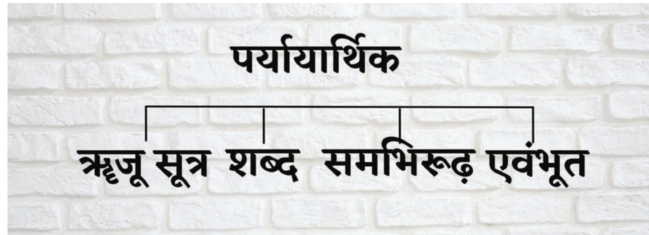


इस तरह से इन सात नयों के माध्यम से आप वस्तु के स्वरूप का ज्ञान करें। इनका विभाजन द्रव्यार्थिक और पर्ययार्थिक नय में भी होता है। नैगम, संग्रह और व्यवहार ये तीन कहलाते हैं- सब द्रव्यार्थिक नय। ऋजु सूत्र, शब्द समभिरुढ़ और एवं भूत ये चार नय कहलाते हैं- पर्यायार्थिक नय। कोई भी वस्तु है, वह द्रव्य और पर्याय दो चीजों के साथ ही चलती है। जो द्रव्य को ग्रहण करें वह द्रव्यार्थिक, जो पर्याय को अपना विषय बनाये वह पर्यायार्थिक तो द्रव्य जो है इन तीन नयों के माध्यम से जाना जाता है- नैगम, संग्रह और व्यवहार। फिर उसके बाद में ऋजु सूत्र नय से उसकी पर्यायों का ज्ञान होने लग जाता है तो वह पर्याय को पकड़ लेता है। इसलिए उसको कहते हैं- पर्यायार्थिक नय। इस तरह से इनका विभाजन द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नय के भेद से भी जानना और शब्द नय और अर्थ नय के भेद से भी जानना।

संख्या एक आगे पीछे होगी उसको आप ध्यान में रखना। बस इतना ही पर्याप्त है।

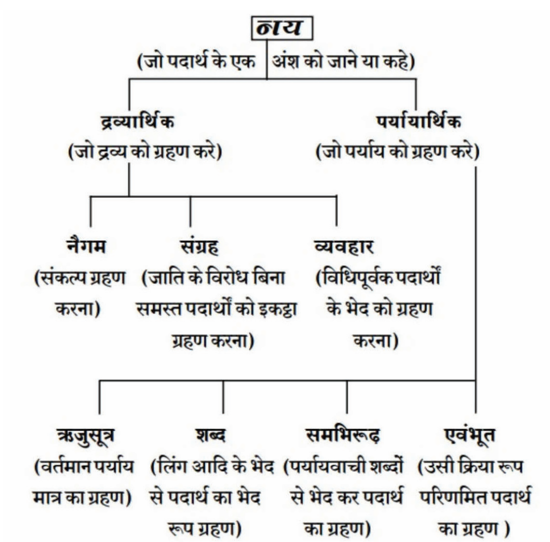

# सारांश

1. हमने जाना कि मिथ्यादृष्टि जीव सत् यानि विद्यमान पदार्थ और असत् यानि अविद्यमान पदार्थ के बीच में अन्तर नहीं पहचानता इसलिए उसका ज्ञान विपरीत होता है
2. यह विपरीतता मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान तीनों में हो सकती है
3. मिथ्यादृष्टि जहाँ अपनी इच्छा अनुसार चलता है मतलब जैसा मन किया वैसा बता दिया
4. उसका ज्ञान प्रामाणिक नहीं होता और उसे उन्मत्त्वत कहते हैं
5. वहीं सम्यग्दृष्टि तीर्थंकरों की वाणी और जिनवाणी के अनुसार ही चलता है
6. मिथ्यादृष्टि तीन प्रकार के विपर्यासो से ही पदार्थों को जानते हैं - कारण, स्वरुप और भेदाभेद
7. कारण विपर्यास में कारण के विषय में विपरीतता होती है कि किस कारण से कोई कार्य हुआ है
8. अगर हमारे कारण ही विपरीत है, तो हम कार्य को विपरीत रूप से मानेंगे

- जैसे पृथ्वी, जल आदि के होने में उनके अलग-अलग तरह के परमाणुओं को मानना जो परिवर्तित नहीं होते
- या किसी भी कार्य को कर्म के कारण से हुआ है ना मानकर; भगवान् के कारण हुआ है ऐसा मानना
- या यह शरीर पञ्च भूतात्मक है जबकि आकाश से कभी शरीर बनता नहीं, वह आकाश में रहता है
- या सृष्टि का रचयिता भगवान् है ऐसा मानना

9. स्वरूप विपर्यास में वस्तु के स्वरूप के विषय में विपरीत मान्यता होती है

- जैसे पृथ्वी में केवल काठिन्न गुण है ऐसा मानना जबकि किसी भी पदार्थ में अनेक गुण होते हैं

10. भेदाभेद विपर्यास में यह निर्णीत नहीं होता कि कारण से कार्य सर्वथा भिन्न होता है या कारण से कार्य में अभेद भी होता है

- जैसे द्रव्य से पर्याय, उसके परिणमन उस द्रव्य से भिन्न है कि एकान्त रूप से अभिन्न हैं
- या जो ज्ञान हम ले रहे हैं इस ज्ञान का फल क्या है? क्या ज्ञान का फल आप से भिन्न है कि आप से अभिन्न है?

11. ज्ञान का फल कथंचित अभेद रूप भी है और अथंचित भेद रूप भी
12. अभेद रूप में ज्ञान का फल ज्ञान में ही होता है

- हमें ज्ञान में पहले जिस तत्त्व का निर्णय नहीं था, अब हमें निर्णय हो गया
- उस पदार्थ को जानने से हमें उसके प्रति प्रीति उत्पन्न हो गयी
- और उस पदार्थ सम्बन्धी जो हमारा अज्ञान था, उसका नाश हो गया

13. यदि हम अपने ज्ञान को किसी दूसरे को शब्दों के माध्यम से देते हैं तो यह ज्ञान का भेद

रूप फल हो गया
- क्योंकि ज्ञान अलग है और शब्द अलग है तो कथंचित भेद हो गया
- उन शब्दों से जो दूसरों को फल मिल रहा है, उनके अज्ञान का जो नाश हो रहा है वह भी उस ज्ञान का ही फल है

14. ज्ञान के फल को एकान्त रूप से भेद या अभेद मानना विपर्यास की कोटि में आता है
15. आज हमने जाना कि ज्ञान का फल कथंचित भेद रूप है और कथंचित अभेद रूप
16. कारण विपर्यास और भेदाभेद विपर्यास के बाद तीसरा विपर्यास है -

- स्वरूप विपर्यास अर्थात वस्तु के स्वरूप के विषय में विपरीत मान्यता
- जैसे विज्ञान अद्वैतवाद का मानना है कि ज्ञेय कुछ भी नहीं है, ज्ञान ही सब कुछ है
- किन्तु ज्ञान बिना ज्ञेय के नहीं होता
- अद्वैत का मतलब है कि दो नहीं है, एक ही चीज है
- ऐसे ही ब्रह्म अद्वैतवादी मानते हैं कि एक ब्रह्म ही है; उसके अलावा कुछ नहीं है

17. ऐसी मिथ्या श्रद्धा के कारण से ये मिथ्या ज्ञान कहलाते हैं
18. अज्ञान का नाश होने पर ही राग-द्वेष का नाश सम्भव है
19. जो जीव विपर्यासों के साथ जीते हैं उनके अंदर मिथ्यात्व के कारण से विपरीतता आ जाती है
20. सूत्र-३३ में हमने नयों के बारे में जाना
21. प्रथम अध्याय में मोक्षमार्ग बताने के बाद सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान पर चर्चा हुई

- सम्यग्ज्ञान में हमने जाना कि "प्रमाण नयै रधिगम:"
- वस्तु को प्रमाण और नय दोनों से जानने से ही अधिगम अर्थात सम्यग्ज्ञान होता है
- अतः यह अध्याय हमें ज्ञान को सम्यक् बनाने के लिए सम्यग्दर्शन पर ध्यान देने और तत्त्व निर्णय करने के लिए प्रेरित करता है

22. हमने जाना पूर्ण वस्तु का ज्ञान प्रमाण कहलाता है
23. और वस्तु के किसी एक अंश को ग्रहण करके, उसके किसी एक गुण धर्म को जानना नय ज्ञान कहलाता है
24. पहला नय है 'नैगम नय'

- नैगम अर्थात संकल्प
- इसमें अपने मन में संकल्प करके वस्तु में वे संकल्पित गुण मानकर कथन करते हैं

25. भूत नैगम नय में past में हुई चीजों को वर्तमान में संकल्प करके करते हैं जैसे भगवान महावीर के लिए दीपावली पर मोक्ष लाडू चढ़ाना
26. भावी नैगम नय में जो भविष्य में होगा उसको पहले से ही कह देते हैं जैसे हम दिल्ली जा रहे हैं जबकि हम अभी तैयार हो रहे थे
27. वर्तमान नैगम नय में कोई भी वस्तु बन गई है या अधूरी है उसको पूरा मान कर कहना जैसे भात अभी अंगीठी पर है मगर संकल्प के वश से कहना कि यह भात है

28. हमने समझा कि संग्रह नय में सब वस्तुओं का एक साथ संग्रह करके कहते हैं
- जैसे दुनिया में द्रव्य

29. तो व्यवहार नय में संग्रह में व्यवहार अर्थात भेद करते हैं
- जैसे द्रव्य के भेद हैं जीव और अजीव
- इसी तरह जीव के भेद हैं संसारी और मुक्त
- ऐसे ही जब तक भेद सम्भव हो तब तक व्यवहार नय चलेगा

30. प्रमाण ज्ञान के पश्चात् नय ज्ञान को समझते हुए हमने जाना कि संग्रह नय में सब वस्तुओं का एक साथ संग्रह करके कहते हैं
- जैसे दुनिया में द्रव्य

31. तो व्यवहार नय में संग्रह में व्यवहार अर्थात भेद करते हैं
- जैसे द्रव्य के भेद हैं जीव और अजीव
- इसी तरह जीव के भेद हैं संसारी और मुक्त
- ऐसे ही जब तक भेद सम्भव हो तब तक व्यवहार नय चलेगा

32. वस्तु कथंचित भेद रूप है और कथंचित अभेद रूप
33. जो वस्तु को एकान्त से भेद या अभेद रूप मानता है वह एकांत मिथ्यादृष्टि है
34. एकान्त रूप से भेद या अभेद मानना भी भेदा-भेद विपर्यास में आता है
35. ऋजु मतलब है सीधा और सूत्र का अर्थ है धागा
36. ऋजु सूत्र नय से हमें एक समय की परिणति का ज्ञान होता है
37. इसके दो भेद होते हैं
- पहला सूक्ष्म यानि प्रति समय हो रही परिणति का ज्ञान
- दूसरा स्थूल जैसे किसी मनुष्य की अस्सी वर्ष की आयु है, तो स्थूल ऋजु सूत्र नय से वह 80 साल तक मनुष्य ही है

38. शब्द नय के अनुसार जो शब्द में प्रयुक्त हो रहे हैं वे लिंग, वचन, साधन, पुरुष, इत्यादि दोषों की निवृत्ति करें
- जैसे पट वस्त्रम में लिंग व्यभिचार है
- वर्षः ऋतु में वचन व्यभिचार

39. सूत्र “सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्ष मार्गः” में भी वचन व्यभिचार है
- क्योंकि चारित्राणि बहुवचन है और
- मोक्ष मार्गः एक वचन है

40. समभिरूढ़ नय के अनुसार जिस शब्द का जो अर्थ है, वह शब्द उसी के अर्थ के रूप में ग्रहण करना चाहिए उसके अन्य पर्यायवाची शब्दों को नहीं
- जैसे इन्द्र उसी के लिए कहा जाएगा जो ऐश्वर्य की स्थिति में हो और
- शक्र उसी को कहा जाएगा जो कुछ समर्थता का कार्य कर रहा है

41. एवंभूत नय यह कहता है जब वस्तु जिस कार्य के रूप में परिणत होती हुई दिखाई देगी

आप उस समय उसको वैसा कहेंगे तो हम स्वीकारेंगे

- जैसे मंदिर के पुजारी को सिर्फ तभी पुजारी कहेंगे जब वह पूजा कर रहा होगा

42. हमने जाना इन सात नयों के माध्यम से वस्तु के स्वरूप का ज्ञान किया जाता है
43. नैगम, संग्रह, व्यवहार और ऋजू सूत्र अर्थ नय होते हैं
44. वहीं शब्द, समभिरूढ़ और एवंभूत शब्द नय होते हैं

- क्योंकि इनका ज्ञान शब्दों से सम्बन्धित है

45. इसी तरह नैगम, संग्रह और व्यवहार द्रव्यार्थिक नय की श्रेणी में आते हैं क्योंकि ये द्रव्य को ग्रहण करते हैं
46. ऋजु सूत्र, शब्द, समभिरुढ़ और एवंभूत को पर्यायार्थिक नय क्योंकि ये पर्याय को अपना विषय बनाते हैं

# अभ्यास प्रश्न पत्र

प्रश्न 1- सम्यग्दृष्टि का ज्ञान क़ैसा नहीं होता ?
1. यद्दच्छ
2. जिनवाणी के अनुसार
3. तीर्थंकरो की वाणी के अनुसार

प्रश्न 2-"सत्" से क्या तात्पर्य है?
1. सत्य
2. विद्यमान पदार्थ
3. अर्क

प्रश्न 3-विपर्यास कितने प्रकार के होते है?
1. तीन
2. चार
3. पाँच

प्रश्न 4- यह सृष्टि भगवान ने बनायी। यह कौन सा विपर्यास है?
1. कारण विपर्यास
2. भेदाभेद विपर्यास
3. स्वरूप विपर्यास

प्रश्न 5-पौद्गलिक पदार्थ में कौन सा गुण नहीं है।
1. चेतना
2. गंध
3. स्पर्श

प्रश्न 6- प्रमाण से जानी हुई वस्तु के एक गुण धर्म का ज्ञान नय कहलाता है।
1. ग़लत
2. सही

प्रश्न 7-प्रमाण से हमने क्या जाना?

1. वस्तु ब्रह्म स्वरुप है
2. वस्तु एकांत रुप है
3. वस्तु अनेकांत रुप है

प्रश्न 8- इनमे से विज्ञान अद्धैतवाद क्या है ?

1. दुनिया में केवल एक ब्रह्म ही है
2. ज्ञान के अलावा कुछ नहीं
3. कण-कण में भगवान है

प्रश्न 9-एक ही चीज़ को मानना क्या है?

1. एकान्त
2. स्याद्वाद
3. अनेकान्त

प्रश्न 10- संकल्प को ग्रहण कर जो ज्ञान होता है वह क्या कहलाता है?

1. नैगम नय
2. संग्रह नय
3. एवंभूत नय

TO GET ANSWERS SOLVE ONLINE

उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न - QR कोड स्कैन करें प्रश्न पत्र हल करें

SCAN TO WATCH

# अभ्यास प्रश्न पत्र 'विषयक'

प्रश्न - 1. प्रत्यक्ष व परोक्ष ज्ञान में क्या अंतर हैं?

प्रश्न - 2. "पर" कितने प्रकार का होता है? कौन कौन सा? उदाहरण सहित व्याख्या करें।

प्रश्न - 3 सत् और असत्य में क्या अन्तर है?

प्रश्न - 4 मिथ्यादृष्टि पदार्थों को किस प्रकार जानते हैं?

प्रश्न - 5 इस सृष्टि की रचना ईश्वर ने की। यह कौन सा विपर्यास है?

प्रश्न - 6 ज्ञान का फल भेदाभेद रुप कहाँ होता है?

प्रश्न - 7 नय ज्ञान किसे कहते हैं? नय कितने होते हैं नाम बताएं।

प्रश्न - 8 अर्थ नय और शब्द नय से सातों नय का विभाजन करें।

प्रश्न - 9 द्रव्यार्थिक नय और पर्यायार्थिक नय में नयों का विभाजन करें।

प्रश्न - 10 कौनसे ज्ञान विपरीत ज्ञान भी होते हैं?

प्रश्न - 11 विपर्यास किसे कहते हैं?

प्रश्न - 12 विपर्यास कितने होते हैं? नाम बताइये ।

प्रश्न - 13 नय कितने होते हैं?

प्रश्न - 14 एवंभूत नय को समझाइये।

# जिणवाणी थुदि

सिरि जिणवाणी जग कल्लाणी
जगजणमदतममोहहरी ,
जणमणहारी गणहरहारी
जम्मजराभवरोगहरी ।
तित्थयराणं दिव्वझुणिं जो
पढइ सुणइ मईए धारइ ,
णाणं सोक्खमणंतं धरिय
सासद-मोक्खपदं पावइ ॥

– मुनि श्री १०८ प्रणम्य सागर जी

# अर्हं टीम

## Editors Team

1. Arpana Jain, Bhopal
2. Ankur Jain, Roorkee
3. Bhawana Jain,Delhi
4. Br. Rani Jain, Jabalpur
5. Deepti Jain, Delhi
6. Jolly Jain, Shamli
7. Kamal naini Jain,Delhi
8. Priyanaka Jain, Merrut
9. Ruchika Jain
10. Supriya Jain, Indore

## Animation Team

1. Aarchi Shah, Gujrat
2. Anant Jain, Delhi
3. Anjali Jain,Delhi
4. Aditi Jain, Delhi
5. Nikita Jain, Muzaffarnagar
6. Nayan Jain, Delhi
7. Prateek Jain, Delhi
8. Shrashti Jain, Muzaffarnagar
9. Soumya Jain, Delhi
10. Vibha Jain, Mumbai

## Summary

Nayan Jain, Delhi
Bhawna Jain, Delhi
Aditi Jain, Delhi
Soumya Jain (Voice Over), Delhi

## Questions Preparation Team

11. Sheetal Jain, Indore
12. Kamal naini Jain, Delhi
13. Priyanka Jain, Indore
14. Vibha Jain, Mumbai
15. Smita Jain, Pune

## Final Compilation

16. Ankita Jain, Jabalpur
17. Vibha Jain, Mumbai
18. Prateek jain, Delhi

# अर्हं योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज द्वारा साहित्य सृजन

**संस्कृत भाषा में टीका ग्रन्थ**

१. लिङ्गपाहुड़ (नन्दिनी टीका)
२. शील पाहुड़ (नन्दिनी टीका)
३. समाधि तन्त्र (आर्हतभाष्य)
४. चैतन्य चन्द्रोदय (चन्द्रिका टीका)
५. बारसाणुवेक्खा (कादम्बिनी टीका)
६. आत्मानुशासन (स्वस्ति टीका)
७. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय (मंगला टीका)
८. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका ('नीति-पथ')
९. तत्त्वार्थ सूत्र (तत्त्व संदीपिनी टीका, संस्कृत-प्राकृत)
१०. संस्कृत एवं प्राकृत भक्ति (आठ भक्तियों की टीका)

**हिन्दी में अनुवादित ग्रन्थ**

१. सत्सकर्म पंजिका
२. दश भक्ति टीका
३. प्रवचनसार (सरोज भास्कर टीका)
४. कथा कोश
५. सत्य शासन परीक्षा
६. युक्त्यनुशासन
७. नाममाला (भाष्य)
८. सत्संख्यादि अनुयोगद्वार
९. पात्रकेसरी स्तोत्र
१०. अद्याष्टक स्तोत्र
११. संन्यास एषोस्तु किमात्मघातः
१२. चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति (आ. माघनन्दि)
१३. नियमसार
१४. समयसार
१५. परीक्षामुख
१६. प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी

**पद्यानुवाद**

१. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय
२. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका
३. तत्त्वार्थ सूत्र
४. पात्र केसरी स्तोत्र
५. कल्याणमन्दिर स्तोत्र
६. श्री वर्धमान स्तोत्र
७. मंगलाष्टक
८. माघनन्दी कृत अभिषेक पाठ
९. उपयोग शतक

**प्रवचन ग्रंथ**

१. बारसाणुवेक्खा
२. नई छहढाला प्रवचन
३. परमात्म योग (समाधि तन्त्र)
४. जीव विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय - २ )
५. मनोविज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-६)
६. लोक विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-३, ४)
७. व्रत विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-७)
८. अध्यात्म योग (इष्टोपदेश)
९. प्रवचनसार का सार (गाथा १-२६)
१०.प्रवचनसार का सार(गाथा २७-६०)
११. प्रवचनसार का सार (गाथा ६१-१०१)
१२. प्रवचनसार का सार (गाथा १०२-१३६)
१३. प्रवचनसार का सार (गाथा १३७-१७५)
१४. कर्म बंध विज्ञान
१५. धर्म का मर्म (अपने को समझें)
१६. राम कथा
१७. पञ्च लब्धि
१८. स्त्री को मोक्ष क्यों नहीं

*** संस्कृत भाषा में मौलिक काव्य ग्रन्थ**

१. स्तुति पथ
२. श्रायस पथ
३. सिद्धोदयाष्टकम्
४.श्री वर्धमान स्तोत्र
५.अनासक्त महायोगी (आचार्य श्री का जीवनवृत)
६. उपयोग शतकम्
७. अर्हं अष्टाङ्ग योग शतकम्
८. आ. श्री शान्तिसागर स्तुति शतकम्
९. श्री शान्तिनाथ स्तोत्र (शतकम्)
१०. महामह नन्दीश्वर विधान
११. गोवैभवशतकम् (आयुर्वेद सम्बन्धी)
१२. चतुर्विंशति-जिनस्त्रोत्रम् (पूजा एवं विधान)

*** प्राकृत भाषा में मौलिक ग्रन्थ**

१. तित्थयर भावणा (सोलहकारण भावनाओं पर प्राकृत गाथाएँ)
२. दार्शनिक प्रतिक्रमण
३. अष्टपाहुड़ (प्राकृत टीका १६)
४. धम्मपह
५. प्राकृत रचना भास्कर
६. प्राकृत शिक्षा भाग १-२-३-४
७. गोम्मटेस पडिमा भत्ति

*** अन्य मौलिक कृतियाँ**

१. युगद्रष्टा (भगवान ऋषभदेव पर उपन्यास)
२. जैन सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य
३. खोजो मत पाओ (लाइफ मैनेजमेंट)
४. आलेख पथ (२० सैद्धान्तिक आलेख )
५. समयसार का ज्ञानी आत्मा कौन?
६. अन्तर्गूंन्ज (भजन एवं हायकू)
७. लहर पर लहर (कविता संग्रह)
८. बेटा! (शिक्षाप्रद सूक्तियाँ)
९. नई छहढाला
१०. लक्ष्य (जीवंधर चरित्र)
११. मुनिसुव्रतनाथ विधान
१२. अर्हं दोहावली
१३. अर्हं ध्यान योग
१४. जिंदगी क्या है? (प्रवचन ग्रन्थ)

**संकलन**

१. संवाद (आचार्य श्री और बाबा रामदेव की चर्चा )
२. A Talk (संवाद का अंग्रेजी अनुवाद) ३. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय अनुशीलन

*** अंग्रेजी भाषा में**

१. Fact of Fate (Article)
२. Twelve Contemplation
३. I Love You My Soul